कुँआरी धरती

इवान तुर्गनेव

दिल्ली
रणजीत प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स

"Virgin Soil" का हिन्दी रूपान्तर

मूल लेखक : इवान तुर्गनेव
रूपान्तरकार : नेमि चन्द जैन

मूल्य : छः रुपये आठ आने

प्रकाशक : रणजीत प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स
४८७२, चाँदनी चौक, दिल्ली

मुद्रक : श्री गोपीनाथ सेठ,
नवीन प्रेस, दिल्ली

'कुँआरी धरती को जोतने के लिए सतह
को खुरचने वाले सरावन की नहीं,
गहरा खोदने वाले हल की
आवश्यकता होती है।'

—एक किसान की
डायरी से।

एक

सन् १८६८ की वसंत ऋतु में एक दिन दोपहर को एक बजे पीटर्सबर्ग में, सत्ताईस वर्ष की आयु का एक व्यक्ति, बडी लापरवाही से मैले-कुचैले कपड़े पहने, अफ़सरों की सड़क पर एक पाँच मंज़िले मकान के पिछवाड़े की सीढ़ी पर चढ़ रहा था। एड़ी पर घिसे हुए बूटों से भारी-भारी कदम रखता और अपने विशालकाय बेडौल शरीर को धीरे-धीरे हिलाता-डुलाता वह सीढ़ी के एकदम ऊपर जा पहुँचा। चूलों से वाहर निकलकर लटके हुए अध-खुले दरवाज़े के आगे वह रुका और फिर विना घंटी बजाये ज़ोर की साँस लेकर एक छोटे-से अँधेरे कमरे में घुस पड़ा।

"नेज़दानौफ़ घर पर है ?" उसने गहरी बुलन्द आवाज़ में पुकारा।

"नहीं है—मैं हूँ, अन्दर आ जाओ," दूसरे कमरे मे किमी रूखे स्त्री-कण्ठ से उत्तर आया।

"मशूरिना ?" आगंतुक ने पूछा।

"हाँ, मैं ही हूँ। और तुम—आस्त्रोदूमौफ़ न ?"

"पीमेन आस्त्रोदूमौफ़," उसने उत्तर दिया। उसने पहले साव-

धानी से अपने रबड़ के ऊपरी जूते उतारे और फिर अपने पुराने तार-तार लबादे को एक खूँटी पर टाँगकर वह उस कमरे में चला आया जहाँ से स्त्रीकंठ की आवाज़ आई थी।

नीची छतवाले इस गंदे-से कमरे की दीवारों पर मटमैला हरा रंग पुता हुआ था और उसमें दो धूलभरी खिड़कियों से धुँधली-धुँधली रोशनी आ रही थी। फर्नीचर के नाम पर उसमें एक कोने में एक चारपाई पड़ी थी, बीच में एक मेज़, कुछ कुर्सियाँ और किताबों से ऊपर तक भरी एक खुली आलमारी रक्खी थी। मेज़ के पास एक स्त्री बैठी थी जिसकी अवस्था तीस के लगभग होगी। उघड़े सिर और काला ऊनी गाउन पहने वह सिगरेट पी रही थी। आस्त्रोदूमौफ़ को अन्दर आते देखकर उसने बिना कुछ बोले ही अपना चौड़ा लाल हाथ आगे बढा दिया। आगंतुक ने भी बिना कुछ बोले ही हाथ मिलाया और एक कुर्सी में धम से बैठकर अपनी बगल की जेब से एक अध-जला सिगार निकाल लिया। मशूरिना ने दियासलाई उसकी ओर बढा दी तो वह सिगार पीने लगा। वे दोनों एक शब्द भी बोले या एक-दूसरे की ओर दृष्टिपात किये बिना कमरे की बन्द हवा में, जो पहले से ही तम्बाकू के धुएँ से ठसाठस भरी-सी थी, नीले धुएँ के छल्ले उड़ाते रहे।

इन दोनों व्यक्तियों में कुछ समानता अवश्य थी, यद्यपि उनकी आकृतियाँ, रूप-रंग तनिक भी एक-से न थे। उनकी मैली-कुचैली आकृति पर, असुन्दर होठों, नाक और दांतों पर—आस्त्रोदूमौफ़ के मुख पर चेचक के दाग भी थे—एक प्रकार की ईमानदारी, संयम और परिश्रम की छाप थी।

"नेज्दानौफ़ से मुलाकात हुई तुम्हारी?" युवक ने आखिरकार पूछा।

"हाँ, वह अब आता ही होगा। किताबें लेकर पुस्तकालय गया है।"

आस्त्रोदूमौफ़ ने सिर घुमाकर थूका।

"बात क्या है, आजकल वह चक्कर ही काटता रहता है? कभी उसके दर्शन ही नहीं होते।"

मशूरिना ने एक और सिगरेट निकाल ली।

"वह कुछ उकताया हुआ है," उसने सावधानी से सिगरेट सुलगाते हुए घोषणा की।

"उकताया हुआ!" आस्त्रोदूमौफ़ ने कुछ भर्त्सना के स्वर में दुहराया। "मानो हमारे पास उसके लिए कोई काम ही न बचा हो! हम लोग तो यहाँ इस बात की खैर मना रहे हैं कि काम किसी तरह अच्छे-भले पूरा हो जाय, और वह उकताया हुआ है!"

"मास्को से कोई पत्र आया?" थोड़ी देर चुप रहने के बाद मशूरिना ने पूछा।

"हाँ···परसों।"

"तुमने पढ़ लिया?"

आस्त्रोदूमौफ़ ने केवल सिर सिलाकर स्वीकृति जताई।

"तो······क्या खबर है?"

"ओह—किसी को वहाँ जल्दी ही जाना पड़ेगा।"

मशूरिना ने मुख से सिगरेट निकाल ली।

"यह क्यों? मैंने तो सुना था वहाँ सब ठीक है।"

"हाँ, सब ठीक तो है। बस एक आदमी के बारे में लगता है कि उसका भरोसा नहीं करना चाहिए। इसलिए···या तो उसे कहीं और भेजना होगा, या फिर उसे एकदम हटा देना पड़ेगा। ओफ़! और भी कुछ बातें हैं। उन्होंने तुम्हारी भी माँग की है।"

"चिट्ठी में ही?"

"हाँ।"

मशूरिना ने अपने भारी घने बालों को पीछे झटक दिया। वे एक छोटी-सी गाँठ में लापरवाही के साथ पीछे बँधे थे और अब सामने

उसके माथे और भौंहों पर बिखर आये थे ।

"ठीक है," उसने कहा, "जब हुक्म हो ही गया है तो उस पर बहस करना बेकार है !"

"बेशक । बस बिना धन के हुक्म पूरा नहीं हो सकता । धन हमें कहाँ मिलेगा ?"

मशूरिना सोच में पड़ गई । "नेज़दानौफ़ को ही कहीं से पैदा करना पड़ेगा," उसने बहुत ही धीमी आवाज़ में कहा मानो अपने आपसे कह रही हो ।

"ठीक इसी काम के लिए तो मैं आया हूँ," आस्त्रोदूमौफ़ ने कहा ।

"चिट्ठी तुम्हारे पास यहाँ है ?" मशूरिना ने एकाएक पूछा ।

"हाँ । पढ़ना चाहती हो ?"

"हाँ, दो मुझे······या, नहीं, रहने दो । साथ-साथ ही पढ़ेंगे······ बाद में ।"

"मैंने सच ही बताया है," आस्त्रोदूमौफ़ ने बुदबुदाकर कहा । "सन्देह की जरूरत नहीं है ।"

"नहीं, मैं सन्देह नहीं कर रही हूँ ।"

फिर दोनों चुप हो गये । पहले की भाँति ही उनके मौन होठों से केवल धुएँ के छल्ले निकलकर तैरते रहे और हलके-से चक्कर काटते हुए उनके अस्तव्यस्त सिरों के ऊपर उठते रहे ।

बूटों की धम्-धम् सामने के कमरे से सुनाई पड़ी ।

"आ गया !" मशूरिना ने फुसफुसा कर कहा ।

दरवाज़ा तनिक-सा खुला और दरार में से कोई झाँक उठा । नेज्दानौफ़ नहीं, कोई और था ।

झाँकने वाले का सिर छोटा-सा और गोल था जिस पर रूखे काले बाल, चौड़ा झुर्रियोंदार माथा, घनी भौहों के नीचे बहुत पैनी छोटी-छोटी भूरी आँखें, बत्तख की भाँति सामने निकली हुई नुकीली नाक और एक छोटा-सा लाललाल हास्यास्पद मुख दिखाई पड़ता था । सिर चारों ओर एक

नज़र डालने के बाद हिला, मुस्कराया, जिससे बहुत से छोटे-छोटे सफ़ेद दाँत चमक उठे—और फिर उसने अपने दुबले-पतले छोटे से शरीर, छोटी-छोटी बाहों और थोड़े से मुड़े हुए, लँगड़ाते-से पैरों के साथ कमरे में प्रवेश किया। उस पर नज़र पड़ने के साथ ही मशूरिना और आस्त्रोदूमौफ़ के चेहरों पर एक प्रकार का घृणा का भाव उभर आया मानो दोनों मन-ही-मन कह रहे हों, "अरे ! यह निकला !" किन्तु उन्होंने एक शब्द भी नहीं कहा, उनके शरीर की एक नस भी नहीं हिली। इस अभ्यर्थना से आगंतुक को न केवल कोई संकोच नहीं हुआ, बल्कि बाह्यतः लगा जैसे उसे निश्चित संतोष प्राप्त हुआ हो।

"क्या मामला है?" उसने चिचियानी-सी आवाज़ में कहा। "दो ही हैं ? तिगड्डा नहीं ? तीसरी मूर्ति कहाँ गई ?"

"क्या आप नेज़्दानौफ़ की तलाश कर रहे हैं, मि० पाकलिन ?" आस्त्रोदूमौफ़ ने गम्भीर मुद्रा से पूछा।

"अवश्य, मि० आस्त्रोदूमौफ़, में उन्हीं के बारे मैं कह रहा था।"

"मुमकिन है वह बस आता ही हो, मि० पाकलिन।"

"यह बात सुनकर बड़ी खुशी हुई, मि० आस्त्रोदूमौफ़।"

इसके बाद लँगड़े ने मशूरिना की ओर नज़र डाली। वह भौंहें चढ़ाये वैठी थी और जान बूझकर अपनी सिगरेट का धुआँ छोड़ रही थी।

"आप कैसी हैं, आप······क्या कहते हैं······देखिये कितनी बुरी बात है ! मैं हमेशा आपका और आपके पिताजी का नाम भूल जाता हूँ।"

मशूरिना ने मुँह बिचकाया।

"उन्हें जानने की कोई ज़रूरत भी नहीं है ! मेरा अन्तिम नाम आप जानते ही हैं, और क्या चाहिये ? क्या सवाल पूछा है ! आप कैसी हैं ! आपको दिखाई नहीं पड़ता कि मैं अच्छी भली

ज़िन्दा बैठी हूँ !"

"सच है, एकदम सच है !" पाकलिन ने चीखकर कहा, और उसके नथुने फूल उठे और भौंहें फड़कने लगीं। "अगर आप ज़िन्दा न होतीं तो आपके इस दास को आपके यहाँ दर्शन करने और आपसे वार्तालाप करने का सौभाग्य कैसे प्राप्त होता ! मेरे इस प्रश्न को दकियानूसी बुरी आदत का परिणाम ही समझिये ! किन्तु जहाँ तक आपके और आपके पिताजी के नाम का सम्बन्ध है······आप जानती हैं तनिक संकोच लगता है, तड़ाक से कह देना, 'मशूरिना !' यह सही है, मैं जानता हूँ, कि आप अपने पत्रों पर भी यही हस्ताक्षर करती हैं : बोनापार्ट ! अर्थात् मशूरिना ! पर तो भी बातचीत में—"

"कौन कहता है कि आप मुझसे बातचीत कीजिये ?"

पाकलिन कुछ परेशानी के साथ हँसा मानो उसका दम घुट रहा हो।

"अच्छा, अच्छा, इतना ही काफी है। आओ, हाथ मिला लें। नाराज़ न हो; मैं क्या जानता नहीं कि तुम्हारा दिल सोने का है ! और दिल मेरा भी अच्छा है······ ऐं ?"

पाकलिन ने अपना हाथ बढ़ा दिया···मशूरिना ने क्रुद्ध दृष्टि से उसकी ओर देखा, किन्तु उससे हाथ मिला लिया।

"यदि आप मेरा नाम जाने बिना चैन नहीं लेना चाहते," उसने वैसे ही अप्रसन्न भाव से कहा, "तो सुनिये : मेरा नाम है फेकला।" —

"और मेरा पीमेन" आस्त्रोदूमौफ़ ने भी अपनी मोटी भारी आवाज़ में जोड़ा।

"आह ! यह तो बहुत ही···बहुत ही ज्ञानवर्धक है ! पर यदि ऐसा है, तो मुझे बताओ, ओ फेकला ! और तुम, ओ पीयेन ! बताओ तुम क्यों मेरे साथ इतना अमैत्रीपूर्ण, निरन्तर अमैत्रीपूर्ण व्यवहार करते हो, जबकि मैं—"

"मशूरिना सोचती है," आस्त्रोदूमौफ़ ने बात काटते हुए कहा,

और केवल वही ऐसा नहीं सोचती, कि तुम हर बात का केवल हास्यास्पद पक्ष ही देखते हो। इसलिए तुम्हारे ऊपर भरोसा नहीं किया जा सकता।"

पाकलिन तेज़ी से अपनी एड़ियों के बल घूम गया।

"यहीं तो वह—लोग मेरी आलोचना करने में हमेशा यही गलती करते रहते हैं, परम सम्माननीय पीमेन जी ! पहली बात तो यह है कि मैं सदा हँसता नहीं रहता। दूसरे, उससे आप लोगों के मेरे ऊपर भरोसा करने में कोई बाधा नहीं पड़नी चाहिये, जो कि इसी बात से सिद्ध है कि आपके बीच कई बार विश्वासभाजन समझे जाने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हो भी चुका है। मैं ईमानदार आदमी हूँ, परम श्रद्धास्पद, पीमेन जी !"

आस्त्रोदूमौफ़ ने होठों-ही-होंठों में कुछ बड़बड़ाकर कहा। पाकलिन अपना सिर हिलाकर, मुस्कराहट की हल्की-सी भी छाया के बिना बार-बार यही दोहराता रहा, "नहीं ! मैं सदा हँसता ही नहीं रहता ! मैं गैरज़िम्मेदार आदमी किसी तरह नहीं हूँ। मेरे चेहरे पर नज़र डालते ही यह तो समझा जा सकता है।"

आस्त्रोदूमौफ ने सचमुच उसके चेहरे पर नजर डाली। वास्तव में जब पाकलिन हँसता नहीं होता और चुप होता, तब उसके चेहरे पर लगभग हताशा का, बल्कि आतंक का सा भाव छाया रहता। जैसे ही वह अपना मुँह खोलता उसके चेहरे का भाव हास्योत्पादक बल्कि द्वेषपूर्ण हो जाता था। किन्तु आस्त्रोदूमौफ ने कुछ कहा नहीं।

पाकलिन फिर मशूरिना की ओर उन्मुख हुआ।

"अच्छा, तुम्हारी पढ़ाई-लिखाई कैसी चल रही है ? क्या तुम अपने उस वास्तविक परोपकार की कला में सफल हो रही हो ? मुझे तो लगता है दिन के प्रकाश में पहली बार प्रवेश करने के लिए अनुभवहीन नागरिक की सहायता करने में खासी कठिनाई होती होगी ?"

"नहीं, बिलकुल नहीं होती, जब तक वह तुमसे बहुत अधिक बड़ा

न हो ?" मशूरिना ने उत्तर दिया और वह इत्मीनान के साथ मुस्कराई। उसने हाल ही में दाईगीरी का डिप्लोमा प्राप्त किया था। कोई डेढ़ बरस पहले वह दक्षिणी रूस से अपने गरीब जमींदारों के परिवार को छोड़कर केवल छः रूबल जेब में लेकर पीटर्सबर्ग आई थी। आकर वह एक संस्था में भरती हो गई थी और अपने अनवरत कठोर परिश्रम के फलस्वरूप उसने यह डिप्लोमा प्राप्त कर लिया था। वह अविवाहित थी···और बहुत ही शीलवती स्त्री थी। इसमें ऐसे आश्चर्य की कोई बात भी नहीं, कुछ सन्देहवादी, विशेषकर उसके बाह्य रूप-रंग के पिछले वर्णन को याद करके कहेंगे। पर हमें यह कहने की आज्ञा दीजिए कि यह सचमुच ही बड़ी अपूर्व और आश्चर्यजनक बात थी।

उसके उत्तर को सुनकर पाकलिन फिर हँसा।

"तुम हो बड़ी तेज !" उसने कहा। "यह तुमने मेरी अच्छी कमजोरी पकड़ी ! मैं हूँ भी इसके योग्य। मैं क्यों रहा इतना दुबला-पतला सूखा-सा ! पर हमारे दोस्त का अभी तक कोई पता क्यों नही है ?"

पाकलिन ने जानबूझकर विषय बदल दिया। वह अपने बौने कद और कुरूप चेहरे के विषय में अभी तक पूरी तरह तटस्थ नहीं हो सका था। यह बात उसको इसलिए और भी खटकती थी कि वह स्त्रियों का बड़ा भारी प्रशंसक था। उन्हें आकर्षित करने के लिए वह क्या न करने को तैयार हो जाता ! अपने दयनीय रूप-रंग की चेतना उसके लिए अपने दरिद्र परिवार अथवा समाज में अपनी क्षुद्र स्थिति की चेतना से कहीं अधिक तीखी और कड़वी थी। पाकलिन का पिता एक साधारण व्यापारी था जो तरह-तरह की तिकड़मों के सहारे बढ़कर काउंसिल की सदस्यता के पद तक पहुँच गया था। कानूनी व्यवसाय में उसने सफल मध्यस्थ का काम किया था और साथ ही वह सट्टेबाजी और घरों तथा जायदाद की दलाली भी करता था। इस प्रकार उसने अच्छा पैसा पैदा कर लिया था। पर अन्तिम दिनों में वह पीने बहुत

लगा था। इसलिये मरते समय बिलकुल कुछ न छोड़ गया। बालक पाकलिन ने—(उसका नाम रखा गया था सीला मामसोविच, जिसका अर्थ होता 'सामसन का लड़का शक्ति', जिसे भी वह अपने साथ एक प्रकार का मज़ाक ही मानता था)—एक व्यावसायिक स्कूल में पढ़ाई लिखाई की जहाँ उसने जर्मन भाषा भली प्रकार सीखी। बहुत से कटु अनुभवों के बाद अंत में उसे एक व्यापारी के यहाँ डेढ़ सौ पौंड सालाना पर एक नौकरी मिल गई। इस आमदनी पर उसे अपने सिवाय एक बीमार बूढ़ा और एक कुबड़ी बहन का भी पालन करना पड़ता था। हमारी इस कहानी के समय वह केवल अट्ठाईस बरस का था। पाकलिन की बहुत से विद्यार्थियों से और नवयुवकों से जान-पहचान थी, जो उसकी निष्ठाहीन वाक्चातुरी, उसकी उद्धत बातचीत, सरल-हृदय प्रखरता तथा उसके एकांगी पर वास्तविक तथा व्यावहारिक ज्ञान के लिए उसे पसन्द करते थे। केवल कभी-कभी ही उसे उनके हाथों कष्ट सहन करना पड़ता था। एक दिन किसी कारण वश उसे एक राजनीतिक सभा में पहुँचने में देर हो गई···और अन्दर प्रवेश करते ही उसने जल्दी-जल्दी बहाने बनाने शुरू कर दिये···

"बेचारा पाकलिन डर के मारे घबरा गया है !" किसी ने कोने में से कहा, और वे सब ठहाका मार कर हँस पड़े। अन्त में स्वयं पाकलिन भी हँस दिया, यद्यपि वह भीतर ही भीतर क्रुद्ध था। "बात सच ही कही है, बदमाश ने !" उसने मन ही मन सोचा। नेज्दानौफ़ से उसका परिचय एक यूनानी ढाबे में हुआ था जहाँ वह भोजन करने जाया करता था और जहाँ वह अक्सर अपने बड़े स्वतन्त्र और निर्भीक विचार प्रगट किया करता था। वह कहा करता था कि उसकी जनवादी विचार-धारा का मुख्य कारण था घृणित यूनानी भोजन, जिससे मेदा खराब हो जाता है।

"हाँ···सचमुच···हमारे दोस्त को क्या हो गया ?" पाकलिन ने दोहराया।"कुछ दिनों से मैंने देखा है कि वह कुछ अनमना-सा रहता

है। कही प्रेम मे तो नही पड़ गया ? भगवान न करे !"

मशूरिना के माथे में वल पड़ गये।

"वह पुस्तकालय में कुछ कितावें लेने गया है; उसके पास न तो इतना समय है न कोई ऐसा व्यक्ति ही वह जिसके प्रेम में पड़ सके।"

"क्यों, तुम तो हो ?" पाकलिन के होठों पर आकर रह गया। "मैं उससे मिलना चाहता था," उसने ज़ोर से कहा, "मुझे उससे एक ज़रूरी मामले पर बातचीत करनी है।"

"कैसा मामला ?" आस्त्रोदूमौफ़ ने पूछा। "हम लोगों का मामला है ?"

"शायद तुम लोगों का ही···यानी अपना सबका मामला।"

आस्त्रोदूमौफ़ कुछ गुनगुनाने लगा। मन में उसे सन्देह तो था, पर वह सोचने लगा, "क्या पता ? उसका हाथ में आना भी तो इतना मुश्किल है !"

"लो, आ पहुँचा वह भी आखिरकार !" एकाएक मशूरिना ने कहा, और उसकी छोटी-छोटी भद्दी आँखों में, जो बाहर के कमरे के दरवाजे पर जमी हुई थी, कोई चीज़ चमक उठी, सुकुमार और स्नेहसिक्त, किसी गहरे आन्तरिक प्रकाश-स्थल की भाँति···

दरवाज़ा खुला और इस बार उसमें से तेईस बरस के एक युवक ने, सिर पर टोपी रक्खे और बगल में पुस्तकों का एक बंडल दबाये, प्रवेश किया। यही था स्वयं नेज्दानौफ़।

दो

अपने कमरे में कुछ आगन्तुकों को देखकर वह दरवाजे पर ही ठिठक गया, फिर एक नजर उन सब पर डाली, टोपी उठाकर फेंकी, किताबें सीधे फर्श पर डाल दीं, और एक भी शब्द कहे बिना पलंग के पास जाकर उसकी एक पाटी पर बैठ गया। उसके सुन्दर गोरे चेहरे पर जो उसके घुँघराले बालों के गहरे लाल रंग के कारण और भी गोरा लग रहा था, असन्तोष और क्रोध स्पष्ट झलक आया था।

मशूरिना ने होठ चबाते हुए अपना मुँह थोड़ा-सा फेर लिया। आस्त्रोदूमौफ़ ने क्रुद्ध स्वर में कहा। "आख़िरकार आये तो !"

पाकलिन ही सबसे पहले नेज्दानौफ़ की ओर आया।

"क्या मामला है, अलेक्सी दिमित्रिच, रूस के हेमलैट ? क्या किसी ने आपको नाराज़ कर दिया है ? या यह अकारण उदासी है ?"

"दया करके बकवास बन्द कीजिये, रूस के मैफिस्टोफेलीस!" नेज्दानौफ़ ने चिढ़े हुए स्वर में उत्तर दिया। "नीरस रसिकता में मै आपकी बराबरी के योग्य नहीं हूँ।"

पाकलिन हँसने लगा।

"बात तुमने ज़रा ठीक-ठीक नहीं कही। रसिकता नीरस नहीं हो सकती।"

"अच्छा-अच्छा"···आप बड़े चतुर व्यक्ति हैं, यह हम सभी अच्छी तरह जानते हैं।"

"और तुम बहुत उत्तेजित अवस्था में हो!" पाकलिन ने कहा। "या सचमुच कुछ हो गया है?"

"खास कुछ नहीं हुआ है; बस यही हुआ है कि इस गन्दे शहर पीटर्सबर्ग में सड़क पर पैर रक्खा नहीं कि किसी-न-किसी तरह के कमीनेपन, मूर्खता, अन्याय, गन्दगी से सामना हुआ नहीं! जीना अब यहाँ दूभर हो गया है।"

"अच्छा, तो इसीलिए तुमने अखबार में शिक्षक के काम के लिए विज्ञापन दिया है और चल देने को तैयार हो गये हो?" आस्त्रोदूमौफ़ ने फिर गुर्राते हुए कहा।

"सोचता तो यही हूँ। मैं यहाँ ज़िन्दगी की सब नियामतों को छोड़कर भाग जाना चाहता हूँ! बस कोई आँख का अन्धा मुझे काम भर दे दे!"

"पहले तुम्हें यहीं अपना कर्तव्य पूरा करना चाहिये," मशूरिना ने अब भी दूसरी ओर ताकते हुए ही गूढ़ अर्थ भरी ध्वनि में कहा।

"कौन सा कर्तव्य?" नेज्दानौफ़ ने तेज़ी से उसकी ओर मुड़ते हुए पूछा।

मशूरिना ने अपने होठ कसकर भींच लिये। "आस्त्रोदूमौफ से पूछो।"

नेज्दानौफ़ आस्त्रोदूमौफ़ की ओर मुड़ा। पर उसने सिर्फ खकार कर अपना गला साफ किया और बोला, "ज़रा ठहरो।"

"सच, हँसी छोड़ो," पाकलिन ने बीच ही में कहा; "कोई दुर्घटना हो गई है क्या?"

नेज़दानौफ़ पलंग पर उछल पड़ा मानो कोई शक्ति उसे ऊपर उछाल रही हो।

"और कौन-सी दुर्घटना चाहिये तुम्हें ?", उसने चीखकर कहा, उसकी आवाज़ अचानक बड़ी बुलन्द हो गई थी। "आधा रूस भूखों मर रहा है। 'मास्को गज़ट' प्रसन्न है। अब दकियानूसीपन का फिर से बोलबाला होगा; विद्यार्थी-सहायक क्लब बंद हो जाएँगे; हर जगह जासूसी, हत्या, विश्वासघात, झूठ, फरेब, दग़ा का राज है—किसी तरफ एक क़दम रखने की गुञ्जाइश नहीं है।······यह सब तुम्हारे लिये काफी नहीं है—तुम्हें कुछ और दुर्घटना चाहिये! तुम्हें लगता है मैं हँसी कर रहा हूँ·········बासानौफ़ गिरफ्तार हो गया है," उसने अपने स्वर को थोड़ा धीमा करते हुए कहा। "पुस्तकालय में लोग कह रहे थे।"

आस्त्रोदूमौफ़ और मशूरिना दोनों ने तुरन्त सिर उठाकर उसकी ओर देखा।

"अलैक्सी दिमित्रिच, भले आदमी" पाकलिन ने कहना शुरू किया, "क्या ताज्जुब है कि तुम इतने उत्तेजित हो! ······पर क्या तुम भूल गये थे कि हम लोग कैसे जमाने में और कैसे देश में रह रहे हैं? अरे, हमारी तो यह हालत है कि डूबते हुये आदमी को जिस तिनके का सहारा चाहिये, वह भी स्वयं उसी को बनाना पड़ता है। इस बारे में अधिक भावुक होने से क्या लाभ? हमें बुरी-से-बुरी परिस्थिति का सामना करने को तैयार रहना चाहिये, बच्चों की तरह गुस्से से लाल तत्ते होना ठीक नहीं······"

"आह, बंद भी करो।" नेज़दानौफ ने क्षुब्ध होकर बीच ही में कहा। उसके चेहरे से लगता था जैसे बड़ी यातना में हों। "हम सब जानते हैं कि तुम बड़े शक्तिमान व्यक्ति हो, तुम्हें न किसी चीज़ का डर है न किसी आदमी का······"

"मैं किसी से नहीं डरता······!" पाकलिन ने फिर शुरू करना चाहा।"

"पर बासानौफ़ के साथ किसने विश्वासघात किया होगा ?" नेज़्दानौफ़ ने कहा, "यह मेरी समझ में बिल्कुल नहीं आता।"

"कोई मित्र ही होगा ! यार लोग इस काम में बड़े चुस्त होते हैं। तुम्हें भी उन पर नज़र रखनी चाहिये। उदाहरण के लिए, मेरा एक दोस्त था जो बड़ा बढ़िया आदमी लगता था। मेरे बारे में, मेरी प्रतिष्ठा के बारे में उसे बड़ी भारी चिन्ता रहा करती थी। एक दिन वह मेरे पास आया······'ज़रा देखो !' कहने लगा, 'तुम्हारे बारे में कैसी-कैसी बे-सिर-पैर की बदनामी लोग उड़ा रहे हैं। कहते हैं तुमने अपने चचा को जहर दे दिया; या कहते हैं कि तुम्हारा किसी घर में परिचय कराया गया तो तुम प्रवेश करते ही घर की मलकिन की ओर पीठ करके बैठ गये और सारी शाम उसी तरह बैठे रहे। यहाँ तक कि वह इस अपमान पर रोने लगी, हाँ, सच रोने लगी ! कितनी वाहियात बात है ! बचकानी ! कोई सिड़ी ही ऐसी बात पर यकीन करेगा।' और जानते हो फिर क्या हुआ ? एक वर्ष बाद मेरा उस मित्र से झगड़ा हो गया······तो उसने मुझे अंतिम पत्र में लिखा, 'तुम तो अपने चचा तक को मार चुके हो। तुम्हें तो एक सम्भ्रान्त महिला की ओर पीठ करके बैठे रहने और इस भाँति उसका अपमान करने तक में संकोच नहीं हुआ।······' इत्यादि-इत्यादि। ऐसे ही होते हैं ये मित्र !"

आस्त्रोदूमौफ़ ने मशूरिना की ओर देखा। "अलैक्सी दिमित्रिच !" उसने अपनी भारी मोटी आवाज़ में कहना शुरू किया। स्पष्ट ही वह शब्दों के इस आसन्न व्यर्थ विस्फोट को रोकना चाहता था। "मास्को से वैसिली निकोलाएविच का एक पत्र आया है।"

नेज़्दानौफ़ थोड़ा चौंक गया और नीचे देखने लगा।

"क्या लिखा है ?" उसने आखिरकार पूछा।

"असल में···वे लोग मुझे और इन्हें बुला रहे है ।" आस्त्रोदूमौफ़ ने मशूरिना की तरफ इशारा करते हुए कहा ।

"क्या ? इन्हें भी बुला रहे है ?"

"हाँ ।"

"ठीक है, कठिनाई क्या है ?"

"क्यों, कठिनाई पैसे की है ।"

नेज़्दानौफ़ पलंग से उठकर खिड़की के पास आ गया ।

"बहुत पैसा चाहिए ?"

"पचास रूबल···इससे कम में काम नहीं चल सकता ।"

नेज़्दानौफ़ कुछ देर चुप रहा ।

"इस समय तो मेरे पास हैं नहीं," आखिरकार उसने खिड़की के काँचों को उँगलियों से बजाते हुए धीरे से कहा, "पर···मैं प्रवन्ध कर सकता हूँ । ला दूंगा मैं । चिट्ठी तुम्हारे पास है ?"

"चिट्ठी ? वह···यानी···हां अवश्य है ।"

"पर आप लोग मुझसे क्यों हर चीज़ छिपाते रहते हैं ?" पाकलिन ने चीखकर कहा ।" क्या मैं तुम्हारे विश्वास के योग्य नहीं रहा हूँ ? यह ठीक है कि मैं पूरी तरह से सहमत नहीं हो पाता······आप लोगों के कार्य से; पर क्या आपको डर है कि मैं दगावाज़ी करूँगा या चर्चा कर बैठूँगा ?"

"बिना चाहे ही···शायद !" आस्त्रोदूमौफ़ ने अपनी उसी भारी आवाज़ में कहा ।

"न चाहकर, न विना चाहे । वह मशूरिना जी मेरी ओर देखकर मुस्करा रही हैं ।···पर मैं कहता हूँ—"

"मैं नहीं मुस्करा रही हूँ," वात काटते हुए मशूरिना ने कहा ।

"पर मैं कहता हूँ," पाकलिन ने अपनी बात ज़ारी रखी, "कि आप सब भले आदमियों में सूझ तो कुछ है ही नहीं । आप लोग अपने सच्चे हितैषियों को पहचानना नहीं जानते । अगर कोई हँसता है तो

आप समझते हैं वह गम्भीर नहीं है···"

"निस्संदेह !" मशूरिना ने फिर बात काटकर कहा ।

"उदाहरण के लिए, इसी बात को ले लीजिये," पाकलिन ने दुगने जोश के साथ जल्दी में कहा और इस बार उसने मशूरिना को उत्तर भी नहीं दिया । "आप लोगों को रुपये की आवश्यकता है······और नेज़्दानौफ़ के पास इस इस समय हैं नहीं······अच्छा, मैं भी तो आपको दे सकता हूँ ।"

नेज़्दानौफ़ ने जल्दी में खिड़की की ओर से घूमते हुए कहा :

"नहीं······नहीं······इसकी क्या ज़रूरत है ? मैं ला दूँगा······ मैं अपना थोड़ा-सा भत्ता पेशगी ही निकाल लूँगा······यदि मुझे ठीक से याद है तो मेरा कुछ पावना भी है । पर आस्त्रोदूमौफ़, चिट्ठी तो दिखाओ ।"

आस्त्रोदूमौफ़ कुछ देर तक तो पहले निश्चल बैठा रहा । उसने चारों ओर नज़र डाली, फिर वह खड़ा होकर एक दम झुक गया और अपनी पतलून को ऊँचा करके अपने ऊँचे बूटों के भीतर से होशियारी से मोड़ा हुआ एक नीला काग़ज निकाल लिया । काग़ज निकालने के बाद किसी अज्ञात उद्देश्य से उसने उस पर फूँक मारी और उसे नेज़्दानौफ़ को दे दिया ।

नेज़्दानौफ़ ने काग़ज लेकर खोला, ध्यानपूर्वक पढ़ा और फिर मशूरिना की ओर बढ़ा दिया······वह पहले अपनी कुर्सी से खड़ी हो गई, फिर उसने भी पढ़ा और पढ़कर नेज़्दानौफ़ को लौटा दिया, यद्यपि पाकलिन ने अपना हाथ उसकी ओर बढ़ा रखा था । नेज़्दानौफ़ ने कुछ लाचारी के भाव से वह रहस्यपूर्ण पत्र पाकलिन की ओर बढ़ा दिया । पाकलिन ने उसके ऊपर नज़र दौड़ाई और बड़ी गूढ़ता के साथ होठों को भीचते हुए बड़े गम्भीर मौन के साथ उसे मेज़ पर रख दिया । तब आस्त्रोदूमौफ़ ने उसे उठा लिया, एक दियासलाई जलाई जिससे गन्धक की तेज़ गन्ध चारों ओर भर गई और फिर पहले कागज को अपने सिर

के ऊपर उठाकर, मानो सब उपस्थित व्यक्तियों को दिखा रहा हो, उसने उसे पूरी तरह जला दिया, यहाँ तक कि उसकी उँगलियाँ भी झुलसी-सी हो गई। कागज की राख उसने अंगीठी में फेंक दी। इस प्रक्रिया के बीच में किसी ने एक शब्द भी मुँह से न निकाला और न कोई हिला-डुला ही। सबकी आँखें नीचे झुकी हुई थीं। आस्त्रोदूमौफ़ के चेहरे का भाव सघन और उत्तेजनाहीन सा-था। नेज़्दानौफ़ का चेहरा क्षुब्ध लगता था; पाकलिन कुछ परेशान नज़र आता था; और मशूरिना को देखकर लगता था मानो किसी गम्भीर उपासना में बैठी हो।

इसी तरह दो मिनिट बीत गये···फिर एक हलका-सा अचकचाहट का भाव उन सब पर छा गया। सबसे पहले पाकलिन ने मौन भंग करने की आवश्यकता अनुभव की।

"अच्छा, तो फिर," उसने शुरू किया, "मातृभूमि की वेदी पर मेरा त्याग स्वीकृत हुआ या यहीं? क्या मुझे आज्ञा है कि मैं पचास रूबल नहीं तो कम-से-कम पच्चीस-तीस तो इस सामान्य उद्देश्य के लिए अर्पित कर सकूँ?"

नेज़्दानौफ़ एकदम क्रोध से उबल पड़ा। मालूम होता था कि उसका क्षोभ धीरे-धीरे बढ़ता रहा था···पत्र को इस गम्भीरता के साथ जलाने से भी वह क्षोभ कम नहीं हुआ था। उसके फूट पड़ने के लिए किसी बहाने-भर की जरूरत थी।

"मैंने कह तो दिया तुमसे कि नहीं चाहिए, नहीं चाहिए, नहीं चाहिए! मैं यह नहीं होने दूँगा, और न स्वीकार करूँगा। रुपया मैं ले आऊँगा और फौरन ले आऊँगा। मुझे किसी की सहायता की ज़रूरत नहीं है!"

"ठीक है भई, ठीक है," पाकलिन ने कहा। "मैं समझ गया कि तुम क्रांतिकारी तो हो पर जनवादी नहीं हो!"

"हाँ, फौरन यह कह दो कि मैं रईसज़ादा सामंत हूँ!"

"सचमुच तुम हो रईसज़ादे ही···किसी हद तक तो हो ही।"

नेज़्दानौफ़ ज़बर्दस्ती हँसा।

"तो तुम मेरे एक अवैध संतान होने की ओर संकेत कर रहे हो। यह तकलीफ करने की जरूरत नहीं, मेरे मेहरबान दोस्त···तुम्हारी सहायता के बिना ही उस बात के मेरे भूल जाने की कोई संभावना नही है।"

पाकलिन ने बड़े हताश भाव से हाथ गिरा दिये।

"अल्योशा, ईमान से, आज तुम्हें हो क्या गया है ? मेरी बात का यह अर्थ तुम कैसे निकाल सके ! आज तुम्हारी बात ही मेरी समझ में नहीं आ रही है।" नेज़्दानौफ़ ने हाथों और कंधों से अधीरता की मुद्रा बनाई। "बासानौफ़ की गिरफ्तारी ने तुम्हें विचलित कर दिया है, पर तुम जानते हो, वह इतनी गैर-जिम्मेदारी का व्यवहार करता था···"

"वह अपने विचारों को छिपाता नहीं था," मशूरिना ने चिढ़े हुए स्वर में कहा; "उसके दोष ढूँढ़ना हमारे लिए उचित नहीं है।"

"यह तो ठीक है। पर उसे दूसरों का तो कुछ ख्याल रखना चाहिए था, जो अब उसके कारण मुसीबत में पड़ जायेंगे।"

"ऐसी बात तुम उसके बारे में क्यों सोचते हो ?"···इस बार आस्त्रोदूमौफ़ ने कहा। "बासानौफ़ बड़े दृढ संकल्प वाला आदमी है; वह किसी का नाम न बतायेगा। और जहाँ तक होशियारी का सवाल है,···याद रखिये, हम सब एक-से होशियार नहीं हो सकते, मि॰ पाकलिन !"

पाकलिन नाराज़ होकर उत्तर में कुछ कहने ही वाला था कि नेज़्दानौफ़ ने उसे रोक दिया।

"सज्जनो !" उसने ज़ोर से कहा, "कृपा करके थोड़ी देर के लिए राजनीति की चर्चा को छुट्टी दीजिये।"

सब लोग चुप हो गये।

"आज पेरी स्कोरोपीहीन ऐं", पाकलिन ने ही कुछ क्षण बाद फिर

बात शुरू की, "अपने उस महान् राष्ट्रीय आलोचक और सौंदर्यशास्त्री से भेंट हुई थी। कितना असह्य आदमी है! वह हमेशा उबलता और फेन निकालता रहता है, बिलकुल हमारी खराब खट्टी श्वास शराब की बोतल की तरह···बेयरा कार्क की बजाय उँगली से उसे दबाये हुए लाता है, बोतल की गर्दन में कुछ गाढ़ा गोंद-सा इकट्ठा हो जाता है, पर बोतल फुफकारती और बुदबुदाती ही रहती है; और फिर जब उसका सारा झाग निकल चुकता है तो नीचे बचती हैं रद्दी खट्टे पानी की-सी बूँदें, जिनसे किसी की प्यास नहीं बुझती, बस पेट के दर्द की प्राप्ति हो जाती है।···नौजवानों के लिए तो वह खास तौर से बड़ा वाहियात आदमी है।"

पाकलिन की यह तुलना बड़ी सच्ची और चुस्त थी, पर उससे किसी के चेहरे पर मुस्कराहट न आ सकी। केवल आस्त्रोदूमौफ़ ने इतना कहा कि जो नौजवान सौंदर्यवादी आलोचना में दिलचस्पी ले सकते हैं, उनके लिए कोई दया दिखाने की ज़रूरत नहीं है, चाहे फिर स्कोरोपीहीन उन्हें भटका ही क्यों न देता हो।

"पर पल-भर थमिये", पाकलिन ने कुछ जोश के साथ कहा, "उसे जितनी कम सहानुभूति मिलती वह उतना ही गरम होता जाता था, यहाँ एक प्रश्न उठता है जो निस्संदेह राजनीतिक तो नहीं है पर तो भी बहुत ही महत्वपूर्ण है। स्कोरोपीहीन की बात सुनिये तो प्रत्येक प्राचीन कलाकृति निकम्मी है, केवल इसीलिए कि वह प्राचीन है···यदि यह ठीक है तो कला तो निरी फैशन की चीज़ हो गई, उसके बारे में फिर गम्भीरता-पूर्वक बात करना बेकार है। यदि उसमें कोई स्थायी, शाश्वत चीज़ नहीं है तो फिर उसको मारिये गोली! विज्ञान में, गणित में, उदाहरण के लिए, तुम यूलर, लाप्लेस, हॉस को दकियानूसी सिड़ी नहीं मानते न, या मानते हो? उन्हें तो आचार्य मानने को तैयार हो, पर राफेल और मोज़ार्ट मूर्ख हैं। क्या उनके विरुद्ध आपका आत्माभिमान विद्रोह करता है? कला के मानदण्डों का निर्धारण

विज्ञान के नियमों की खोज से कहीं कठिन कार्य है···मान लिया; पर वे मानदण्ड होते तो हैं, जो उन्हें नहीं देख सकता उसे अंधे से अधिक नहीं कहा जा सकता, चाहे वह जान-बूझकर बने चाहे बिना जाने, इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता।"

पाकलिन रुका···पर किसी ने एक शब्द तक मुँह से न निकाला, मानो सब-के-सब मुँह में पानी भरे बैठे हों, मानो वे सब उसके कारण लज्जित हों। केवल आस्त्रोदूमौफ़ गुर्राकर बोला—"इस सबके बावजूद मुझे उन नौजवानों के लिए तनिक भी सहानुभूति नहीं है जो स्कोरोपीहीन के बहकावे में आकर भटक जाते हैं।"

"ओह, भाड़ में जाओ तुम!" पाकलिन ने सोचा। "मैं अब चल दिया।"

वह नेज़्दानौफ़ को यह बताने के उद्देश्य से आया था कि वह विदेश से 'ध्रुवतारा' मँगाने का इरादा कर रहा है ('घंटी' तो बंद ही हो चुकी थी), पर बातचीत ने ऐसा रुख ले लिया था कि उस विषय को उठाना भी उसने ठीक न समझा। पाकलिन जाने के लिए अपनी टोपी की ओर हाथ बढ़ा ही रहा था कि इतने में एकाएक, किसी प्रारम्भिक शब्द अथवा खटखटाहट के बिना ही, बाहर के कमरे से एक अद्भुत रूप में मीठी, पुरुषोचित किन्तु मद्धिम-सी आवाज़ सुनाई दी। उस आवाज़ की ध्वनि में ही असाधारण संस्कृति, शिक्षा, बल्कि उत्तम सुगन्ध की-सी छाप थी।

"मि० नेज़्दानौफ़ घर पर हैं?"

वे सब एक-दूसरे की ओर चकित होकर देखने लगे।

"मि० नेज़्दानौफ़ घर हैं क्या?" उस स्वर ने फिर दुहराया।

"हाँ", आखिरकार नेज़्दानौफ़ ने उत्तर दिया।

दरवाज़ा बड़ी सावधानी और शिष्टता के साथ खुला, और धीरे से अपने छैरे हुए बालों भरे सिर के ऊपर से अपनी चमकीली टोपी उतारते हुए, लगभग चालीस वर्ष की अवस्था के एक लम्बे कद के सुडौल और

रोबीले व्यक्ति ने कमरे में प्रवेश किया। वह एक बहुत ही सुन्दर कपड़े का कोट और बढ़िया कालर पहने हुए था, यद्यपि अप्रैल का महीना खत्म होने पर था। उसके व्यक्तित्व के संयम और उसके गले की मैत्रीपूर्ण सहजता ने सबको, नेज़दानौफ़ को, पाकलिन को, मशूरिना को भी··· आस्त्रोदूमौफ़ तक को, प्रभावित किया। उसके प्रवेश करते ही वे सब अपने आप खड़े हो गये।

तीन

सुसज्जित व्यक्ति नेज़्दानौफ़ की ओर बढ़ा और अनुकम्पापूर्ण मुस्कराहट के साथ कहने लगा, "मुझे पहले भी आपसे मिलने और थोड़ी-बहुत बातचीत करने तक का सौभाग्य प्राप्त हो चुका है, मि० नेज़्दानौफ़, परसों ही थियेटर में, यदि आपको स्मरण हो।" इतना कहकर आगंतुक पलभर थमा, मानो किसी बात की प्रतीक्षा करने लगा हो। नेज़्दानौफ़ ने अपना सिर हलका-सा झुकाया और उसका चेहरा लाल हो उठा, "ठीक है न?······आज मैं आपके उस विज्ञापन के सिलसिले में आपसे मिलने आया हूँ। आपसे थोड़ी-सी बात करके मुझे बड़ी प्रसन्नता होती, यदि मैं यहाँ उपस्थित महिला और महानुभावों के बीच विघ्न न डाल रहा होऊँ" (आगंतुक ने मशूरिना को झुककर अभिवादन किया और पाकलिन तथा आस्त्रोदूमौफ़ का अपने एक फीके रंग के स्वीडन के बने दस्तानों से ढँके हाथ से)—मैं उनकी बात में बाधा तो नहीं डाल रहा हूँ······"

"नहीं, नहीं,······क्यों······" नेज़्दानौफ़ ने कुछ कठिनाई के साथ उत्तर दिया, "मेरे बन्धु बुरा न मानेंगे······कृपया विराजिये।"

आगन्तुक ने बड़ी सुघरता के साथ अपने शरीर को हलका-सा मोड़ा और शिष्टता के साथ एक कुर्सी को पीछे से पकड़कर अपनी ओर खींच लिया। किन्तु वह बैठा नहीं, क्योंकि उसने देखा कि कमरे में सभी लोग खड़े हुए हैं। उसने केवल अपनी निर्मल किन्तु अधमुंदी आँखों से चारों ओर देखा।

"नमस्कार, अलेक्सी दिमित्रिच," मशूरिना ने अचानक कहा, "फिर आऊँगी।"

"और मैं," आस्त्रोदूमौफ़ ने जोड़ा, "मैं भी······बाद में ही··· आऊँगा।"

मशूरिना आगंतुक के पास से ऐसे निकली मानो जान-बूझकर उसकी उपेक्षा कर रही हो। उसने नेज़्दानौफ़ से ज़ोरों से हाथ मिलाया और बिना किसी का अभिवादन किये हुए बाहर चली गई। आस्त्रोदूमौफ़ भी उसके पीछे-पीछे ही चला। जाते-जाते वह अपने बूटों से बहुत सा शोर मचाता गया और एकाधिक बार उसने नथुनों से कुछ आवाज भी निकाली मानो कह रहा हो, "आपके फैशनेबल कालर की ऐसी की तैसी!"

आगंतुक उन दोनों को बड़ी शिष्टतापूर्ण किन्तु जिज्ञासु दृष्टि से जाते देखता रहा। तब उसने पाकलिन की ओर दृष्टि डाली मानो आशा कर रहा हो कि वह भी दोनों बहिर्गामी अतिथियों का ही पदानुसरण करेगा। किन्तु पाकलिन, जिसने अपने मुख पर आगंतुक के पधारने के बाद से ही एक विचित्र-सी अस्वाभाविक मुस्कान धारण कर रखी थी, एक कोने की ओर चुपचाप चला गया। इसके बाद आगंतुक कुर्सी पर बैठ गया। नेज़्दानौफ़ ने भी एक कुर्सी ले ली।

"मेरा नाम है सिप्यागिन—शायद आपने सुना हो," आगंतुक ने सगर्व विनम्रता से प्रारम्भ किया।

पर पहले आपको यह तो बता दें कि नेज़्दानौफ़ की उससे थियेटर में कैसे मुलाक़ात हो गई थी।

मास्को से प्रसिद्ध अभिनेता सादोव्स्की के आगमन के उपलक्ष्य में आस्त्रोव्स्की का एक नाटक 'दूसरे की गाड़ी में मत बैठो' दिखाया जा रहा था। जैसा कि सुविदित ही है, इस प्रसिद्ध अभिनेता को रूसाकौफ़ का अभिनय करना बड़ा ही प्रिय था। सवेरे जब नेज़्दानौफ़ टिकट लेने के लिए पहुँचा तो थियेटर में बड़ी भीड़ थी। वह छोटी सीट का ही टिकट ख़रीदना चाहता था, पर जैसे ही वह खिड़की पर पहुँचा, उसी समय उसके पीछे खड़े हुए एक अफ़सर ने नेज़्दानौफ़ के ऊपर से एक तीन रूबल का नोट बढ़ाते हुए क्लर्क से चिल्लाकर कहा, "उसे (अर्थात् नेज़्दानौफ़ को), रेज़गारी की ज़रूरत होगी, पर मुझे नहीं है, इसलिए महरबानी करके मुझे पहली पंक्ति का एक टिकट फ़ौरन दे दीजिये··· मैं जल्दी में हूँ।"

"क्षमा कीजिये," नेज़्दानौफ़ ने नीरस स्वर में तुरन्त उत्तर दिया, "मुझे भी पहली ही पंक्ति का टिकट चाहिये," और उसने उस छोटी-सी खिड़की में तीन रूबल फेंक दिये—उसके पास कुल इतने ही पैसे उस समय थे। क्लर्क ने उसे टिकट दे दिया और शाम को यथासमय वह अलैक्ज़ेन्ड्रिन्स्की थियेटर के धनी लोगों के कक्ष में जा उपस्थित हुआ।

उसके कपड़े बड़े अव्यवस्थित थे, जूतों पर कीचड़ सना हुआ था और दस्ताने तो थे ही नहीं। वह बहुत कुछ परेशान-सा अनुभव कर रहा था और साथ ही अपनी इस प्रतिक्रिया पर चिढ़ भी रहा था। उसकी दाहिनी ओर पदकों और सितारों से लदा एक जनरल बैठा था; बायीं ओर वही सुन्दर वस्त्रधारी व्यक्ति राज्यसभासद सिप्यागिन था, दो-दिन बाद जिसके आगमन ने मशूरिना और आस्त्रोदूमौफ़ को इतना परेशान कर दिया था। बीच-बीच में वह जनरल नेज़्दानौफ़ की ओर एक नज़र इस भाँति डाल लेता मानो वह कोई अनुचित, अप्रत्याशित, बल्कि अप्रिय वस्तु हो। इसके विपरीत सिप्यागिन उसकी ओर उड़ती हुई नज़रों से देख रहा था जो किसी प्रकार भी क्रोधपूर्ण न थी।

नेज़्दानौफ़ के चारों ओर बैठे सभी व्यक्ति साधारण नहीं, सम्माननीय व्यक्ति लग रहे थे। और फिर वे लोग एक-दूसरे से भली-भाँति परिचित थे और आपस में छोटी-मोटी बातें करते जाते थे और कभी आश्चर्यसूचक ध्वनि से, कभी स्वागतपूर्ण शब्दों से एक-दूसरे से अपना परिचय प्रगट करते जाते थे—उनमें से कुछ तो नेज़्दानौफ़ के दोनों ओर बैठे बातें कर रहे थे। नेज़्दानौफ़ अपनी आरामदेह चौड़ी कुर्सी में एक प्रकार के अछूत की भाँति निश्चल और विजड़ित-सा बैठा था। उसके हृदय में कड़वाहट, लज्जा और क्षोभ उमड़ रहे थे; उसे आस्त्रोव्स्की के नाटक और सादोव्स्की के अभिनय में भी कुछ आनन्द न आ रहा था और तभी अचानक एक ऐक्ट खत्म होने के बाद उसके बायीं ओर के पड़ौसी ने, पदक-सज्जित जनरल नहीं, बल्कि दूसरे ने, जिसने किसी प्रकार के उच्च पद का कोई चिह्न न धारण कर रक्खा था, उसे बहुत ही धीमे से और शिष्टता के साथ, एक प्रकार की लुभावनी मधुरता के साथ सम्बोधन किया। उसने आस्त्रोव्स्की के नाटक के विषय में बातचीत शुरू की और यह जानने की इच्छा प्रगट की कि 'नई पीढ़ी के प्रतिनिधि की हैसियत से, नेज़्दानौफ़ की उसके विषय में क्या राय। नेज़्दानौफ़ पहले तो चकित हुआ, बल्कि कुछ भयभीत भी हुआ और कुछ अटकता-सा एकाध शब्द में उत्तर देता रहा……उसका दिल ज़ोरों से धड़क रहा था; पर फिर उसे अपने ऊपर क्रोध आने लगा; इतना उत्तेजित वह क्यों हो उठा है? वह भी क्या औरों की भाँति ही मनुष्य नहीं है? और फिर वह अपनी सम्मति निर्द्वन्द्व होकर, बिना कुछ छिपाये प्रगट करने लगा और अन्त में इतने ज़ोर-ज़ोर से और इतने जोश के साथ बात करने लगा कि उसका फौजी-पड़ौसी स्पष्ट ही अप्रसन्न हो उठा। नेज़्दानौफ़ आस्त्रोव्स्की का बड़ा गहरा प्रशंसक था; पर इस नाटक में लेखक की प्रतिभा का कायल होते हुए भी वीहौरौफ़ के विदूषक जैसे चरित्र द्वारा सभ्यता की निन्दा करने के लेखक के अभिप्राय को वह अच्छा न समझता था। उसके शिष्ट पड़ौसी ने बड़े ध्यान से और बड़ी सहानुभूति

से उसकी बात सुनी और अगले ऐक्ट के बाद फिर उससे बात करने लगा। इस बार उसने आस्त्रोव्स्की के नाटक के नहीं, दूसरे सामान्य विषयों की, जीवन की, विज्ञान की, राजनीति की चर्चा छेड़ दी। स्पष्ट ही वह इस ओजस्वी युवक की बातों से प्रभावित था। नेज़्दानौफ़ ने कुछ हिचक अनुभव करना तो दूर, बल्कि कुछ-कुछ अपने दिल का गुबार निकाल डाला, मानो कह रहा हो, 'अच्छी बात है, तुम जानना ही चाहते हो तो यह लो, सम्हालो !' उसकी बातों से पड़ौस के जनरल महोदय को साधारण असुविधा ही नहीं, सुनिश्चित क्षोभ और संदेह पैदा हो रहा था। खेल समाप्त होने पर सिप्यागिन ने बड़े मैत्रीपूर्ण ढंग से नेज़्दानौफ़ से विदा ली, पर न तो उसने नेज़्दानौफ़ से ही उसका नाम पूछा न अपना ही बताया। पर जब वह सीढ़ियों पर अपनी गाडी की प्रतीक्षा कर रहा था, उसकी अपने एक मित्र राजा ग०, ज़ार के एक दरबारी से भेंट हो गई।

"मैं अपने बाक्स से तुम्हें देख रहा था," अपनी सुगन्धित मूछों के बीच से मुस्कराते हुए राजा साहब ने कहा। "जानते हो तुम किससे बात कर रहे थे ?"

"नहीं, तुम जानते हो ?"

"लड़का बेवकूफ़ नहीं है न, ऐं ?"

"बिल्कुल भी नहीं; कौन है वह ?"

तब राजा साहब ने उसके कानों तक झुककर फ्रेंच भाषा में धीमे से कहा, "मेरा भाई—हाँ; वह मेरा भाई ही है, मेरे पिता का अवैध पुत्र............उसका नाम है नेज़्दानौफ़। उसके बारे में मैं फिर किसी दिन सब बात बताऊँगा। ....पिताजी को उसके होने की उम्मीद नहीं थी; इसीलिए उन्होंने उसका नाम रखा 'नेज़्दानौफ़', यानी 'अप्रत्याशित'। किन्तु वह उसकी आजीविका का प्रबन्ध कर गये हैं, ...हम लोग उसे कुछ भत्ता देते हैं। पर है वह दिमागदार आदमी......... पिताजी की कृपा से उसे शिक्षा भी अच्छी मिल गई

है, पर वह एकदम खब्ती हो गया है, कुछ-कुछ प्रजातन्त्रवादी। ....हम लोगों के यहाँ उसका आना-जाना नहीं है......यह बिलकुल असम्भव है। अच्छा नमस्कार, मेरी गाड़ी आ गई!" राजा साहब इतना कहकर चले गए। पर अगले ही दिन सिप्यागिन ने अखबार में नेज़्दानौफ़ का विज्ञापन देखा और वह उससे मिलने चला आया..........

"मेरा नाम है सिप्यागिन" उसने नेज़्दानौफ़ से कहा और वह कुर्सी पर बैठा अपनी लुभावनी आँखों से नेज़्दानौफ़ की ओर देखने लगा। "मैंने अखबारों में पढ़ा कि आपको शिक्षक का काम चाहिए, और मैं उसी का प्रस्ताव लेकर आपके पास आया हूँ। मैं विवाहित हूँ; मेरा एक लड़का है, नौ बरस का, और सच कहूँ तो वह बहुत ही प्रखर बुद्धि का बालक है। हम लोग गर्मी और शरद्ऋतु के अधिकांश दिन देहात में बिताते हैं, स—प्रांत में, प्रांतीय राजधानी से करीब चालीस मील की दूरी पर। क्या आप छुट्टी के दिनों में हम लोगों के साथ वहाँ चल सकेंगे, मेरे बेटे को रूसी भाषा और इतिहास पढ़ाने के लिए? आपने अपने विज्ञापन में इन्हीं विषयों का उल्लेख किया था न? मैं यह कहने का साहस कर सकता हूँ कि आप मुझे और मेरे परिवार को, और हमारे स्थान को भी, अवश्य ही पसन्द करेंगे। वहां एक प्रथम श्रेणी का बागीचा है, झरने हैं। खुली शानदार हवा है, बड़ा भारी मकान है... राजी हैं आप? यदि हों तो मैं आपकी शर्तें जानना चाहूँगा, यद्यपि मेरा अनुमान नहीं है" सिप्यागिन ने हलका-सा मुँह बनाते हुए जोड़ा, "कि उस बात को लेकर हमारे बीच कोई कठिनाई पैदा हो सकती है।"

जितनी देर सिप्यागिन बोल रहा था, नेज़्दानौफ़ उसकी ओर एकटक ताक रहा था—उसके छोटे-से सिर को, जो थोड़ा-सा पीछे को झुका हुआ था, उसके नीचे और सँकरे किन्तु चतुर माथे को, उसकी सुकुमार रोमन नाक और सुन्दर आँखों को, उसके सुडौल होठों को जिनसे मैत्रीपूर्ण शब्द धाराप्रवाह आसानी से निकले चले आ रहे थे, उसके अँग्रेजी काट

के बालों को वह एकटक ताक रहा था और कुछ हतबुद्धि-सा अनुभव कर रहा था। "इसका क्या अर्थ हो सकता है ?" वह सोचने लगा। "यह आदमी क्यों इस प्रकार मुझे मनाने पर तुला हुआ है ? यह ठहरा एक कुलीन बड़ा आदमी—और मैं ! कैसे हम लोग एकत्र हो गए ? और किसलिए वह आया है मेरे पास ?"

वह अपने विचारों में इतना डूब गया था कि जब सिप्यागिन अपनी बात समाप्त करके कुछ उत्तर पाने के लिए पलभर को रुका, तो भी नेज़्दानौफ़ ने अपना मुख तक न खोला। सिप्यागिन ने एक बार चुपके-से कोने में दुबके पाकलिन की ओर भी दृष्टि डाली। वह भी नेज़्दानौफ़ की भाँति ही उसी के ऊपर दृष्टि गड़ाये हुए था। क्या इस तीसरे व्यक्ति की उपस्थिति के कारण नेज़्दानौफ़ कुछ नहीं बोल रहा है ? सिप्यागिन ने अपनी भौंहें ऊँची उठाईं मानो इस बात को स्वीकार कर रहा हो कि स्वयं अपने ही कार्य के फलस्वरूप वह ऐसे अपरिचित परिवेश में आ पहुँचा है, और फिर अपनी आवाज को हल्का-सा ऊँचा करते हुए उसने अपना प्रश्न दुहराया।

नेज़्दानौफ़ चौंक पड़ा।

"निस्संदेह," उसने कुछ जल्दी से कहा, "मुझे स्वीकार है······ सहर्ष······हालाँकि यह मैं मानता हूँ······कि मुझे थोड़ा ताज्जुब हो रहा है······खास तौर पर जबकि मेरे पास कोई सिफ़ारिश नहीं है··· बल्कि परसों थियेटर में जो अपने विचार मैंने प्रगट किये थे वे तो ऐसे ही थे कि आपको विमुख करते······"

"यहाँ आप एकदम बड़ी भूल करते हैं, अलेक्सी······अलेक्सी दिमित्रिच जी ! नाम ठीक ही लिया न मैंने ? सिप्यागिन ने मुस्कराते हुए कहा, "मुझे इस बात का गर्व है कि उदार और प्रगतिशील विचारों के आदमी के रूप में ही सब लोग मुझे जानते हैं; इसके विपरीत, आपके विचार—उनकी तरुण-सुलभ विशेषता को छोड़कर—मेरी बात का बुरा न मानें तो कहूँ कि उनकी तरुण-सुलभ प्रतिवादिता को छोड़कर—

आपके विचार मेरे विचारों के किसी प्रकार विरोधी नहीं हैं; और सचमुच मैं उनके तरुण-सुलभ जोश से बड़ा प्रसन्न हूँ।"

सिप्यागिन तिलमात्र भी हिचक के बिना बातचीत कर रहा था; उसके एक-से सुव्यवस्थित शब्द तेल के ऊपर शहद की-सी स्निग्धता के साथ निकल रहे थे।

"मेरी पत्नी भी मेरे जैसे ही विचारों की हैं," उसने आगे कहा, "बल्कि शायद उनके विचार आपके विचारों के और भी अधिक समीप हों; यह काफी स्वाभाविक भी है, वह हैं भी तो अवस्था में मुझसे कम! जब अपनी पिछली भेंट के बाद अगले दिन मैंने आपका नाम अखबारों में देखा—आपने अपना नाम अपने पते के साथ-ही-साथ दे दिया था, जो साधारणतः लोग नहीं करते, यद्यपि मुझे आपका नाम थियेटर में ही पता चल गया था—तो इस बात ने मेरे मन पर असर डाला। मैंने इसमें—इस संयोग में······इस अंधविश्वासी बात के लिए क्षमा कीजिये······भाग्य का विधान महसूस किया। आपने अभी सिफारिशों का जिक्र किया; पर मुझे किसी सिफारिश की जरूरत नहीं है। आपके व्यक्तित्व ने मुझे आकर्षित किया है। मेरे लिए यह काफी है। मैं अपनी आँखों पर भरोसा करने का अभ्यस्त हूँ। इसलिए—तो क्या मैं इस बात को पक्का समझूँ ? आप राजी हैं ?"

"हां·········निस्संदेह·········" नेज़दानौफ़ ने उत्तर दिया, "और मैं आपके इस भरोसे के उपयुक्त सिद्ध होने का प्रयत्न करूँगा। किन्तु एक बात मैं अभी कह देना चाहता हूँ : मैं आपके पुत्र को तो पढ़ाने को तैयार हूं, पर उसकी देखभाल मैं न कर सकूँगा। उसके लिए मैं योग्य नहीं हूँ—वास्तव में मैं अपने आपको बाँधना नहीं चाहता, मैं अपनी आजादी नहीं खोना चाहता।"

सिप्यागिन ने बड़ी लापरवाही से हवा में हाथ हिलाया मानो किसी मक्खी को भगा रहा हो।

"परेशान मत होइये······आप उस धात के ही नहीं बने हैं और

न मैं ही उसकी देखभाल के लिए किसी को रखना चाहता हूँ—मैं तो एक शिक्षक की ही तलाश में था जो मुझे मिल गया। अच्छा तो फिर, और शर्तें क्या रहेंगी ? आर्थिक प्रश्न, गर्हित द्रव्य ?"

नेज़्दानौफ़ की समझ में ही न आया कि क्या कहे।

"चलिये," सिप्यागिन ने अपना समूचा शरीर आगे को झुकाकर अपली उँगलियों की नोंकों से नेज़्दानौफ़ के घुटने को स्नेह से छूते हुये कहा, "भले आदमियों में ऐसे प्रश्न दो शब्दों में तय हो जाते हैं। सौ रूबल प्रतिमास रख लीजिए, आने-जाने का खर्च तो मेरे जिम्मे रहा ही। स्वीकार है आपको ?"

नेज़्दानौफ़ फिर लाल हो उठा।

"मैं जो कुछ चाहता था उससे यह तो कहीं ज्यादा है............ मैं—"

"बहुत ठीक, बहुत ठीक......" सिप्यागिन ने बीच ही में कहा... "तो फिर मैं बात पक्की मानें लेता हूँ......और आपको अपने परिवार का एक अंग।" वह कुर्सी से उठ खड़ा हुआ और एकाएक बहुत ही उत्फुल्ल और मुखर हो उठा मानो उसे कोई भेंट मिल गई हो। उसकी समस्त मुद्राओं में एक प्रकार की मैत्रीपूर्ण घनिष्ठता, बल्कि विनोद-प्रियता प्रगट हो उठी। "हम लोग एक-दो दिन में चल पड़ेंगे," उसने सहज कण्ठ से कहा, "मुझे बसन्त से देहात में ही भेंट करना अच्छा लगता है, यद्यपि अपने कारबार के परिणामस्वरूप मैं अत्यन्त ही नीरस व्यक्ति हूँ और शहर से ही बँधा हुआ हूं। तो आपका पहला महीना आज से ही शुरू हुआ मान लिया जाय। मेरी पत्नी और पुत्र तो मास्को जा ही चुके हैं। वे लोग मुझसे पहले ही चले गए। उनसे हम लोगों की देहात में ही, प्रकृति की गोद में, भेंट होगी। हम लोग साथ-साथ यात्रा करेंगे......अविवाहितों की भाँति......हे, हे।" सिप्यागिन ने हल्की आनुनासिक बनावटी हँसी हँसी, और अब—

उसने अपने ओवरकोट की जेब से एक रुपहले काम की काली पाकेट-

बुक निकालकर उसमें से एक कार्ड बाहर निकाला।

"यह रहा मेरा यहाँ का पता। आइये उधर······कल। हाँ······ बारह बजे। हम लोग कुछ और बातचीत करेंगे। मैं आपके सामने अपने कुछ शिक्षा-सम्बन्धी विचार भी रखूँगा···ओह—और हम लोग यहाँ से रवाना होने का दिन भी पक्का कर लेंगे।" सिप्यागिन ने नेज़दानौफ़ का हाथ अपने हाथों में ले लिया। "एक बात और" उसने अपनी आवाज को धीमा और सिर को थोड़ा टेढ़ा करते हुए कहा, "यदि आपको कुछ पेशगी रुपये-पैसे की जरूरत हो···तो कुछ संकोच मत कीजियेगा! एक महीने का पेशगी ले लीजिये!"

नेज़दानौफ़ की समझ में ही न आया कि क्या कहे और वह उसी असमंजस के साथ उस चेहरे की ओर ताकता रह गया जो इतना हँसमुख और मिलनसार होने पर भी उसके लिए कितना अपरिचित था और जो इस समय इतने समीप झुका हुआ और इतने स्नेह के साथ उसकी ओर मुस्कराता हुआ देख रहा था।

"तो नहीं चाहिये आपको? ऐं?" सिप्यागिन ने धीमे से कहा।

"यदि आप आज्ञा दें, तो मैं कल इस विषय में आपको बता दूंगा, नेज़दानौफ़ ने आखिरकार किसी तरह कहा।

"बहुत ठीक! अच्छी बात है—तो फिर चलूँ! कल तक के लिए आज्ञा!"

सिप्यागिन ने नेज़दानौफ़ का हाथ छोड़ दिया और चला जाने ही वाला था······

"एक बात पूछ सकता हूँ?" एकाएक नेज़दानौफ़ ने कहा, "आपने अभी कहा कि मेरा पूरा नाम आपको थियेटर में ही पता चल गया था? किससे पता चला आपको?"

"किससे? ओह, आप ही के एक मित्र से, बल्कि एक सम्बन्धी राजा······राजा ग० से।"

"जो ज़ार के दरबारी हैं?"

"हाँ।"

नेज़्दानौफ़ का मुख पहले से भी अधिक लाल हो उठा। उसका मुख खुला······पर उसने कुछ कहा नही। सिप्यागिन ने इस बार चुपचाप ही उसका हाथ दवाया और फिर पहले उसका और फिर पाकलिन का झुककर अभिवादन करके दरवाजे में उसने अपनी टोपी सिर पर रखी और मुख पर अपनी वही सहज मुस्कान लिये हुए बाहर चला गया। उसके चेहरे पर इस चेतना की पूरी छाप थी कि उसने यहाँ पर कितना गहरा प्रभाव छोड़ा है।

चार

सिप्यागिन मुश्किल से देहली के पार गया होगा कि पाकलिन अपनी कुर्सी से उछल पड़ा और झपटकर नेज़्दानौफ़ के पास आकर उसे बधाई देने लगा।

"तुमने अच्छी मुर्गी फाँसी है।" उसने हँसते हुए और अपने पैरों को लय में पटकते हुए कहा। "अरे, तुम जानते हो कौन है वह? सिप्यागिन, हर आदमी उसे जानता है, समाज का स्तम्भ, भावी मंत्री।"

"मैं उसके बारे में एकदम कुछ नहीं जानता", नेज़्दानौफ़ ने अप्रसन्नभाव से उत्तर दिया।

"यही तो हमारा दुर्भाग्य है, अलेक्सी दिमित्रिच, कि हम किसी को जानते ही नहीं! हम लोगों पर असर डालना चाहते हैं, सारी दुनिया को ऊपर से नीचे कर देना चाहते हैं, पर रहते हैं हम उस दुनिया से बाहर; बस दो-तीन मित्रों से हमारा काम चल जाता है, और हम उसी छोटी-सी दुनिया में चक्कर काटते—"

"क्षमा कीजिये," नेज़्दानौफ़ ने बात काटते हुए कहा, "यह सही नहीं है। अपने दुश्मनों से मेलजोल बढ़ाने की हम परवाह ही नहीं

करते। जहाँ तक अपनी बिरादरी के लोगों का प्रश्न है, जहाँ तक जनता का प्रश्न है, हम लोग निरन्तर उनसे सम्पर्क स्थापित करते रहते हैं।"

"ठहरो, ठहरो, ठहरो, ठहरो!" इस बार पाकलिन ने बीच ही में कहा। "पहला प्रश्न है दुश्मनों का। किन्तु अपने दुश्मनों से बचना, उनके तौर-तरीको और आदतों का न जानना हास्यास्पद बात है। हा-स्या-स्प-द!···हाँ! हाँ! यदि मै जंगल में भेडिये को मारना चाहता हूँ तो मुझे उसकी सब माँदों का पता रखना पड़ेगा!···दूसरे, अभी-अभी तुमने जनता से सम्पर्क स्थापित करने की बात कही।···मेरे दोस्त! सन् १८६२ मे पोलैण्ड वालों ने "जंगल में प्रवेश किया था" और अब हम लोग भी उसी जंगल में घुसे जा रहे हैं; अर्थात् जनता के पास, जो हमारे लिए उतनी ही अंधकारपूर्ण और अज्ञात है जितना कोई जंगल होता है!"

"तो फिर क्या करना चाहिए, तुम्हारी राय में?"

"हिन्दू जगन्नाथ के रथ के नीचे जा गिरते हैं," पाकलिन खिन्न स्वर में कहता गया, "वह उन्हें कुचल देता है और वे मर जाते हैं—परमानन्द में। हमारा भी जगन्नाथ का रथ मौजूद है····वह हमें कुचलता तो अवश्य है, पर कोई परमानन्द नहीं प्रदान करता!"

"पर फिर तुम क्या कहते हो? क्या करना चाहिए?" नेज़दानौफ़ ने करीब-करीब चीखते हुए फिर दोहराया। "दृष्टिकोणवादी उपन्यास लिखना चाहिए, या क्या करना चाहिए?"

पाकलिन ने अपनी बाँहें पूरी फैला दीं और अपना सिर बायें कंधे की ओर झुका लिया।

"उपन्यास मगर तुम लिख ही सकते हो, क्योंकि तुम्हारी साहित्यिक रुझान है····देखो, नाराज़ होते हो तो मैं नहीं कहूँगा। मैं जानता हूँ इस बात का ज़िक्र तुम्हें अच्छा नहीं लगता; इसके अतिरिक्त मै तुमसे सह-मत भी हूँ। उस तरह की चीजें 'भीतर से उभारकर' रचना और फिर

तमाम नये फैशन की शब्दावली में:—"'आह ! मैं तुम्हें प्यार करती हूँ !" उसने उछाला।···"मुझे उसकी परवाह नहीं", उसने खींचा। यह कोई ज़िन्दादिली का काम नहीं है। इसीलिए मैं फिर कहता हूँ, ऊँचे-से-ऊँचे से लगाकर नीचे-से-नीचे तक से, हर वर्ग से सम्बन्ध स्थापित करो। हमें अपनी सारी आशा आस्त्रोदूमौफ़ जैसे लोगों के ऊपर ही नहीं लगा देनी चाहिए। वे लोग ईमानदार, बढ़िया आदमी हैं अवश्य ! पर उनकी अक्ल मोटी है, मोटी ! ज़रा अपने इस योग्य मित्र को ही ले लो। अरे, उसके जूते के तले तक उस प्रकार के नहीं हैं जिन्हें होशियार लोग पहनते हैं। अच्छा, क्यों चला गया वह इस समय यहाँ से ? इसलिए न कि जिस कमरे में एक कुलीन धना आदमी बैठा हो वहाँ वह बैठने को तैयार नहीं, उस हवा में साँस लेने में भी उसे आपत्ति है !"

"आस्त्रोदूमौफ़ के बारे में अपमानजनक बात मेरे सामने तुम मत करो, मैं कह देना चाहता हूँ", नेज़्दानौफ़ ने ज़रा ज़ोर देकर कहा। "वह मोटे बूट इसलिए पहनता है कि वे सस्ते होते हैं।"

"मेरा मतलब यह नहीं था—" पाकलिन ने शुरू किया।

"और यदि वह सम्भ्रांत लोगों के साथ एक कमरे में नहीं बैठता", नेज़्दानौफ़ अपने कंठस्तर को ऊँचा करके कहता गया, "तो मैं इसके लिए उसकी प्रशंसा ही करता हूँ; बड़ी बात यह है कि वह अपना बलिदान करना जानता है; जरूरत होने पर वह मौत का भी सामना कर सकता है, जो तुम और मैं कभी नहीं करेंगे !"

पाकलिन ने कुछ दयनीय-सी मुद्रा बनाई और अपने छोटे-छोटे पंगु पैरों की ओर संकेत करने लगा।

"क्या लड़ाई-झगड़ा मेरे क्षेत्र की चीज़ है, मेरे दोस्त अलेक्सी दिमित्रिच ? हे भगवान् ! पर वह सब छोड़ो····मैं फिर कहता हूँ कि मुझे मि० सिप्यागिन से तुम्हारा सम्पर्क होने से बड़ी खुशी है, और मुझे दिखाई पड़ता है कि उस सम्पर्क से भविष्य में, हमारे लक्ष्य के लिए

बहुत-कुछ फ़ायदा होगा। तुम उच्च समाज मे प्रवेश पा जाओगे! तुम्हें उन शेरनियो को, 'स्पेन के पत्र' के शब्दों में, 'इस्पात के स्प्रिंग से संचालित, मखमली शरीर' वाली स्त्रियों को देखने का मौका मिलेगा; उनका अध्ययन करना, दोस्त उनका अध्ययन करना! अगर तुम ऐयाश तबियत के आदमी होते तो मुझे तुम्हारे लिए सचमुच भय लगता···· ईमान से, ज़रूर भय लगता! पर यह काम लेने में तुम्हारा तो ऐसा कोई उद्देश्य है नही न ?"

"मैं यह काम," नेज्दानौफ़ ने कहा, "दाने-पानी की खातिर ले रहा हूँ···और कुछ समय के लिए तुम सब लोगों से छुट्टी पाने के लिए भी!" उसने मन-ही-मन जोड़ा।

"जरूर! ज़रूर! और इसीलिए मै तुमसे कहता हूँ कि उन्हें पहचानने की कोशिश करना! वह शरीफ़ आदमी कैसी सुगन्ध छोड़ गया है!" पाकलिन ने हवा को अपनी नाक से सूँघते हुए कहा।

"उसने राजा ग० से मेरे बारे में पूछताछ की थी," नेज्दानौफ ने फिर खिड़की के पास जाकर कुछ भारी स्वर में कहा, "शायद वह अब मेरी सारी कहानी जान चुका होगा।"

"शायद नही, जरूर! पर इससे क्या होता है? शर्त्त बदता हूँ कि ठीक इसी बात के कारण उसने तुम्हे शिक्षक रखना तै किया होगा। कहो तुम चाहे जो, पर तुम जानते हो कि रक्त से तुम भी हो तो सम्भ्रांत ही। और इसका अर्थ है कि तुम उन्ही में से एक हो! पर मुझे तुम्हारे यहाँ बड़ी देर हो गई; अब मुझे जल्दी से अपने शोषक दफ्तर, के पास पहुँच जाना चाहिए! अच्छा नमस्कार, दोस्त!"

पाकलिन दरवाज़े की ओर बढ़ रहा था पर एकाएक रुक गया और घूम पड़ा।

"सुनो अल्योशा," उसने बड़ी मीठी आवाज़ में कहा, "तुम अभी थोडी देर पहले मना कर चुके हो। अब मै जानता हूँ कि तुम्हें रुपया मिल ही जायगा, तो भी थोड़ा-बहुत मुझे भी सामान्य लक्ष्य के लिए

त्याग करने दो ! और किसी प्रकार से तो मैं सहायता कर नहीं सकता, तो मुझे रुपये-पैसे की सहायता ही करने का अवसर दो ! देखो, मैं दस रूबल का नोट मेज़ पर रखे दे रहा हूँ ! स्वीकार है ?"

नेज्दानौफ़ ने कोई उत्तर नहीं दिया और वह हिलाडुला भी नहीं।

"मौनं सम्मति लक्षणम् ! धन्यवाद !" पाकलिन ने प्रसन्नता से कहा और वह ग़ायब हो गया।

नेज्दानौफ़ अकेला रह गया।.........वह खिड़की के काँच में से अँधेरे तंग आँगन की ओर ताकता रहा जिसमें गर्मी के दिनों में भी धूप की एक किरण तक न आती थी। उसका चेहरा भी वैसा ही अँधियारा था।

नेज्दानौफ़, जैसा कि हम जानते ही हैं, एक धनी जनरल राजा ग० और उसकी बेटी की मास्टरनी का पुत्र था। मास्टरनी एक सुन्दर लड़की थी पर उसकी बालक के प्रसव में ही मृत्यु हो गई थी, नेज्दानौफ़ को प्रारम्भिक शिक्षा एक योग्य तथा कड़े स्विस स्कूल मास्टर से मिली थी और बाद में वह विश्वविद्यालय में भरती हुआ था। स्वयं वह कानून पढ़ना चाहता था, पर उसके सैनिक पिता ने, जो शून्यवादियों से घृणा करता था, उसे 'कला विभाग में', जैसा कि कड़वी मुस्कान के साथ नेज्दानौफ़ कहा करता था, इतिहास और भाषा-विज्ञान के विभाग में प्रवेश करने पर मजबूर किया था। नेज्दानौफ़ के पिता साल में तीन-चार बार ही उससे मिलते थे, पर उसकी उन्नति में वह दिलचस्पी लेते रहते थे, और जब वह मरे तो 'नास्त्रेन्का' (उसकी माँ) की स्मृति में उसके नाम ६०००) रूबल कर गये थे जिसका ब्याज उसे अपने भाइयों से पेंशन के रूप में मिला करता था। पाकलिन उसे कुलीन और सम्भ्रांत झूठ-मूठ ही नहीं कहता था; उसकी हर बात पर ऊँचे घराने छाप थी। उसके छोटे-छोटे कान, हाथ और पैर, सुकुमार किन्तु छोटे-छोटे उसके चेहरे के अंग-प्रत्यंग, उसकी मुलायम खाल, उसके सुन्दर बाल

और उसकी संयत किन्तु सुरीली आवाज़ पर भी। वह बहुत ही जल्दी परेशान हो जाता था, बहुत ही आत्मसजग था और जल्दी ही प्रभावित हो जाने वाला, और कुछ-कुछ झक्की भी था। बचपन से ही एक प्रकार की अपमानजनक परिस्थिति में रहने के कारण वह बहुत ही चिड़चिड़ा हो गया था और जल्दी ही नाराज़ हो जाता था; पर उसकी जन्मजात विशालहृदयता ने उसे शंकालु और शक्की होने से बचा लिया था। नेज्दानौफ़ के जीवन की यह अपमानजनक स्थिति ही उसके चरित्र की परस्पर-विरोधी प्रवृत्तियो का कारण थी। वह बहुत ही सफाई-पसन्द था, यहाँ तक कि वह छोटी-से-छोटी बात पर नाक-भौं सिकोड़ने लगता था, पर अपनी बोलचाल में वह जानबूझकर अशिष्ट और लापरवाह हो जाता था। स्वभाव से वह आदर्शवादी, भावुक और सच्चरित्र था; एक साथ उसमें साहस और दब्बूपन दिखाई पड़ते थे। साथ ही वह अपने दब्बूपन और चारित्रिक निर्मलता के लिए उसी प्रकार लज्जित रहता था मानो ये कोई लज्जाजनक दुर्गुण हों और प्रायः आदर्शों की खिल्ली उड़ाया करता था। उसका हृदय कोमल था और वह अपने साथियों से बचता रहता था; क्रुद्ध वह बड़ी जल्दी हो जाता था। पर कभी किसी दुर्भावना को मन मे नहीं रखता था। वह अपने पिता से 'कला' के अध्ययन के लिए बाध्य करने के कारण बड़ा क्रुद्ध था, ऊपर से जहाँ तक दूसरों को दिखाई पड़ता था, वह केवल राजनीतिक और सामाजिक प्रश्नों में ही दिलचस्पी लेता था और उग्रतम विचारों का समर्थक था (उसके साथ वे केवल शब्दजाल से अधिक ही थे!) पर भीतर-ही-भीतर वह कला से, कविता से, सौंदर्य के सभी रूपों से आनन्द प्राप्त करता था······यहाँ तक कि स्वयं भी कविता लिखा करता था। जिस कापी पर वह कविता लिखा करता था उसे वह बड़े यत्नपूर्वक छिपाकर रखता था; और पीटर्सबर्ग के उसके तमाम मित्रों में से केवल पाकलिन को ही—और वह भी अपनी उस विशिष्ट सूझ के कारण ही—उस कापी के अस्तित्व का सन्देह था। उसकी काव्य-

रचना का, जिसे वह अक्षम्य, दुर्बलता मानता था, हलके से हलका उल्लेखमात्र नेज्दानौफ़ को बुरी तरह अप्रसन्न कर देने, उसे पूरी तरह क्रुद्ध कर देने के लिए पर्याप्त था। अपने स्विस अध्यापक की कृपा से उसका साधारण ज्ञान बहुत विस्तृत था और वह कठोर परिश्रम से घबराता न था। बल्कि काम वह निश्चित उत्साह के साथ ही करता था, यद्यपि वह होता अनियमित था और बीच-बीच में बंद हो जाता था। उसके साथी उससे बड़ा स्नेह रखते थे······वे उसके चरित्र की दृढ़ता, उसकी सज्जनता और निर्मलता से आकर्षित होते थे, पर नेज्दा-नौफ़ ने किसी शुभ मुहूर्त में जन्म न लिया था; जीवन उसके लिए आसान नहीं रह सका था। इस बात की उसे स्वयं भी बड़ी तीव्र चेतना रहती थी और जानता था कि मित्रों के स्नेह के बावजूद भी वह अकेला ही है।

वह अब भी खिड़की के आगे खड़ा सोच रहा था, आने वाली यात्रा तथा अपने जीवन के इस नये अप्रत्याशित मोड़ के बारे में उदासी और नीरसता से सोच रहा था। उसे पीटर्सबर्ग छोड़ने का अफ़सोस न था—उसमें वह कोई अपनी मूल्यवान वस्तु छोड़कर नहीं जा रहा था; इसके अतिरिक्त वह जानता था कि शरद ऋतु में वह लौट आयेगा। पर तो भी भय और सन्देह का भाव उसके ऊपर छा गया था; अनचाहे ही एक प्रकार की निराशा का अनुभव उसे हो रहा था।

"बड़ा बढ़िया शिक्षक सिद्ध हूँगा मैं भी !" उसके मन में आया, "बड़ा बढ़िया स्कूल-शिक्षक !" वह शिक्षा का काम अपने ऊपर ले लेने के लिए अपने को भला-बुरा कहने को तैयार था, यद्यपि यह भर्त्सना अनुचित ही होती। नेज्दानौफ़ की जानकारी काफी विस्तृत थी और उसके अनिश्चित स्वभाव के बावजूद भी बच्चे उससे प्रसन्न रहते थे और वह शीघ्र ही उनसे स्नेह करने लगता था। नेज्दानौफ़ के भीतर घिरने वाली उदासी वैसी ही थी जो किसी भी स्थान को छोड़कर जाने में मन पर छा जाती है—वह भाव जिससे सभी उदास और अन्तर्मुखी

प्रवृत्ति के लोग भली-भाँति परिचित होते हैं। साहसिक कर्मशील स्वभाव के लोग उससे परिचित नहीं होते; वे तो जीवन के दैनिक कार्यक्रम के भंग होने पर, अपनी सुपरिचित परिस्थितियों में परिवर्तन होने पर, उल्टे आनन्दित हो उठते हैं। नेज्दानौफ़ अपने भावों में ऐसा गहरा डूब गया कि धीरे-धीरे अनजाने ही, वह उनको शब्दबद्ध करने लगा; उसको घेरने वाली भावनाएँ लयबद्ध होती जा रही थीं।

"ओफ़, शैतान कहीं का!" उसने ज़ोर से कहा, "अवश्य ही मैं किसी कविता की ओर बढा जा रहा हूँ!"

उसने अपने-आपको झकझोरा और खिड़की से हट आया। मेज़ के ऊपर पाकलिन के दस रूबल के नोट पर नज़र पड़ते ही उसने उसे जेब में ठूँस लिया और कमरे में इधर-से-उधर टहलने लगा।

"पेशगी जरूर ले लेना चाहिए", उसने सोचा, "अच्छा ही है कि यह भला आदमी इसके लिए तैयार है। सौ रूबल......और अपने भाइयों से—श्रीमान लोगों से—भी सौ रूबल...पचास अपने देनदारों के लिए और पचास या सत्तर यात्रा के लिए......और बाकी आस्त्रोदूमौफ के लिए और जो पाकलिन ने दिया है वह भी आस्त्रोदूमौफ ही ले ले और कुछ मर्कुलौफ से भी लाना होगा।"

यह सब हिसाब लगाते समय वे सब लयबद्ध पंक्तियाँ फिर उसके भीतर जाग उठी थीं। वह रुक गया और स्वप्नों में डूब गया.........
और दूर वहीं आँखें गड़ाये वह उसी स्थान पर गड़ा-सा खड़ा रह गया। फिर उसके हाथों ने मानो टटोल-टटोल कर मेज़ की दराज़ ढूँढ़ी और उसे खोलकर उसमें से बिल्कुल नीचे से एक कापी बाहर निकाल ली।

फिर वह एक कुर्सी पर बैठ गया और आँखें दूसरी ओर गड़ाये हुए ही कलम हाथ में लेकर धीरे-धीरे कुछ गुनगुनाने लगा। कभी-कभी वह अपने बालों को पीछे झटक देता। बहुत-कुछ काटा-फाँसी करने और लिखने-मिटाने के बाद उसने अलग-अलग पंक्तियाँ लिख डालीं।

बाहर के कमरे का दरवाजा आधा खुला और उसमें से मशूरिना

का सिर झाँक उठा। नेज्दानौफ़ की उस पर नज़र नहीं पड़ी और वह अपने काम में डूबा रहा। बहुत देर तक आँखें गड़ाये मशूरिना उसकी ओर ताकती रही और फिर अपने सिर को दायें-बायें झटककर पीछे हट गई······पर उसी समय अचानक नेज्दानौफ़ का ध्यान भंग हुआ, उसने चारों ओर देखा और कुछ कष्ट के साथ "ओह, तुम !" कहते हुये उसने कापी को दराज़ के भीतर फेंक दिया।

तब मशूरिना दृढ़ कदमों से कमरे में बढ़ आई।

"आस्त्रोदूमौफ़ ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है," उसने कुछ अटकते हुए कहा, "यह जानने के लिए कि रुपया तुम कब तक ला दोगे। अगर आज मिल जाय तो हम लोग शाम को ही रवाना हो सकते हैं।"

"आज तो नहीं ला सकता," नेज्दानौफ़ ने उत्तर दिया और उसकी भौहें तन गईं। "कल आ जाना।"

"कितने बजे ?"

"दो बजे।"

"बहुत अच्छा।"

मशूरिना कुछ देर चुप रही। फिर एकाएक उसने नेज्दानौफ़ की ओर अपना हाथ बढा दिया।

"शायद मैंने तुम्हारे काम में बाधा डाल दी—मुझे क्षमा करो; और इसके अतिरिक्त······मैं अब चली जा रही हूँ। कौन जानता है अब फिर हम लोगों की मुलाकात होगी या नहीं ? मैं तुम्हें अन्तिम नमस्कार करने आई थी।"

नेज्दानौफ़ ने उसकी ठण्डी लाल उँगलियों को दबाया।

"तुमने उस काले आदमी को यहाँ देखा था न ?" उसने शुरू किया। "हम लोगों में बात पक्की हो गयी। मैंने उसके यहाँ शिक्षक का काम ले लिया है। उसकी जमींदारी स······प्रांत में है, स·······नगर के पास ही।"

एक प्रसन्नताभरी मुस्कराहट मशूरिना के चेहरे पर चमक गयी।

"स ·····के पास ! तब तो शायद हम लोगो की फिर मुलाकात हो। हम लोगो को शायद वही भेजा जायगा।" मशूरिना ने ठडी साँस ली। 'आह, अलेक्सी दिमित्रिच······"

"क्या बात है ?" नेज्दानौफ ने पूछा।

मशूरिना के मुख पर एक प्रकार की एकाग्रता छा गयी।

"कुछ नही। अच्छा नमस्कार। कुछ नही।"

एक बार फिर उसने नेज्दानौफ का हाथ दबाया और चली गयी।

"सारे पीटर्सबर्ग में और कोई ऐसा नही है जो मेरी इतनी चिन्ता करता हो······अजीब लडकी है !" नेज्दानौफ के मन मे आया। "पर उसने क्यो बाधा डाल दी मेरे काम मे ?···हालाँकि अच्छा ही हुआ !"

अगले दिन सबेरे नेज्दानौफ़ सिप्यागिन के घर पहुँच गया और उदारपथी राजनीतिज्ञ और आधुनिक व्यक्ति के गौरव के अनुकूल सादे ढग के सुन्दर फर्नीचर से सुसज्जित अध्ययन-कक्ष मे एक बडी भारी मेज के सामने बैठाया गया, जिस पर बडे करीने से बहुत से कागज-पत्र रखे थे, जिनका किसी के लिए कोई उपयोग न था और उनके बगल मे रखे थे बडे बडे हाथीदाँत के चाकू जिनसे कभी कोई चीज नही काटी जाती थी। पूरे एक घण्टे तक वह उदार दृष्टिकोण वाले गृहस्वामी की बाते सुनता रहा और उसके चतुराई-भरे, मीठे और कृपापूर्ण शब्दो के स्निग्ध प्रवाह में डूब गया। अत में उसे एक सौ रूबल पेशगी मिल गये और दस दिन बाद नेज्दानौफ इस चतुर उदारपथी राजनीतिज्ञ तथा आधुनिक शरीफ आदमी की बगल में एक सुरक्षित प्रथम श्रेणी के डिब्बे के मखमली सोफे पर अधलेटा, निकोलास्की रेलवे की हिलती-डुलती गाडियो में मास्को की ओर चला जा रहा था।

पांच

पत्थर के बने एक बड़े मकान के ड्राइंगरूम में, जिसके खम्भे और सामने का हिस्सा यूनानी शैली का था और जिसे सिप्यागिन के पिता ने इस शताब्दी के प्रारम्भ में बनवाया था, जो प्रसिद्ध जमींदार थे, और अपने कृषि-प्रेम तथा मारपीट के लिए प्रसिद्ध थे एक अत्यन्त सुन्दर महिला, सिप्यागिन की पत्नी वेलेन्तिना मिहालोव्ना, हर घंटे अपने पति के आने की प्रतीक्षा कर रही थी जिसकी उसे तार द्वारा सूचना मिल चुकी थी। ड्राइंगरूम की सजावट पर एक आधुनिक-परिष्कृत रुचि की छाप थी; उसमें हर चीज सुन्दर और आकर्षक थी, हर चीज, कमरे के फूलदार सोफों-गद्दों के तथा परदों के कपड़ों के नेत्रों को सुखदायी विभिन्न रंगों से लगाकर मेजों तथा आलमारियों पर बिखरी हुई चीनी, पीतल और शीशे की चीजों की विभिन्न रेखाओं तक—सबमें एक प्रकार की सुसंगति थी और वे सब ऊँची तथा चौड़ी खुली हुई खिड़कियों से उन्मुक्त आने वाली मई की उज्ज्वल धूप में एक दूसरे से मिली-जुली सी जान पड़ती थीं। कमरे की हवा लिली फूलों की गंध से भरी थी जिनके बड़े-बड़े गुलस्ते कमरे में इधर-उधर सफेद धब्बों से दीख पड़ते थे। बीच-

बीच में बाग की सघन पत्तियों पर हलकी-सी फरफराती हवा का झोंका कमरे की हवा को प्रकंपित कर जाता था।

सुन्दर चित्र था! और गृहस्वामिनी, वैलेन्तिना मिहालोवना इस चित्र को सम्पूर्ण कर देती थी—उसे जीवन और अर्थ प्रदान करती हुई जान पड़ती थी। वह तीस बरस की अवस्था की एक लम्बे कद की स्त्री थी, घने भूरे बाल, साँवला-सा किन्तु एक से वर्ण का उत्फुल्ल मुख जिसे देखकर सिस्टीन मैडोना का स्मरण हो आता था, अद्भुत गहरी मखमली आँखें। उसके होठ कुछ फैले हुए और विवर्ण थे, कंधे कुछ अधिक ऊँचे और बाहें कुछ अधिक बड़ी थीं।······किन्तु इस सबके बावजूद जो भी उसे उन्मुक्तता तथा शालीनता के साथ ड्राइंग-रूम में आते-जाते देखता—कभी अपने हलके, कुछ-कुछ खिंचे हुए से शरीर को फूलों के ऊपर झुकाये और उन्हें मुस्कराकर सूँघते हुए, और कभी किसी चीनी फूलदान को किसी स्थान से हटाकर रखने के बाद तुरन्त ही शीशे के सामने अपनी सुन्दर आँखों को आधा मूँदकर अपने चमकीले बालों को ठीक करते हुए—सचमुच जो भी उसे देखता वह, चाहे मन-ही-मन चाहे जोर से, यह कहे बिना न रहता कि इतनी सुन्दरता उसने पहले कहीं नहीं देखी!

एक सुन्दर घुँघराले बालों वाला, नौ बरस का बालक, स्कॉच घघरिया-सी पहने, नंगे पैरों और मुख तथा सिर पर बहुत-सा वैसलीन वगैरह लगाये हुए, ड्राइंग-रूम में भागता हुआ घुस आया और वैलेन्तिना को देखकर एकाएक रुक गया।

"क्या है, कोल्या?" उसने पूछा। उसकी आवाज़ भी धीमी और उसकी आँखों की भाँति ही मखमली थी।

"अच्छा, ममी," बालक ने कुछ अचकचाहट के साथ कहा, "मुझे बूआजी ने भेजा है···उन्होंने मुझसे कुछ लिली फूल लाने के लिए कहा था···अपने कमरे के लिए···उसमें बिल्कुल नहीं हैं।"

वैलेन्तिना ने अपने नन्हे पुत्र की ठुड्डी पकड़कर उसका नन्हा-सा

वैसलीन लगा सिर उठाया।

"अपनी बूआजी से कहना कि लिली फूलों के लिए माली से कहें; ये फूल मेरे हैं···मैं नहीं चाहती उन्हें कोई छुए। उनसे कहना कि मैं अपनी चीज़ों में कोई उलट-पुलट पसन्द नहीं करती। याद रहेगी न तुम्हें सारी बात ?"

"हाँ, रहेगी···" बालक ने कहा।

"अच्छा तो बताओ···क्या कहोगे।"

"मैं कहूँगा···मैं कहूँगा···तुमने नहीं लाने दिया।"

वैलेन्निना हँस पड़ी। उसकी हँसी भी धीमी थी।

"तुम्हारे द्वारा कोई सन्देश भेजना बेकार है। अच्छा, ठीक है, जो तुम्हारे मन में आये वही कह देना।"

बालक ने जल्दी से अपनी माँ का हाथ चूमा, जो पूरी अँगूठियों से भरा हुआ था, और सीधा झपटता हुआ चला गया।

वैलेन्निना आँखों से उसका अनुसरण करती रही, फिर एक साँस लेकर एक सोने के तार वाले पिंजरे की ओर बढ़ गई जिसमे एक हरा तोता अपनी चोंच और पंजों को होशियारी से अटकाता हुआ ऊपर चढ़ रहा था। वह उसे अपनी उँगलियों से चिढानी लगी। फिर एक नीचे सोफे में धँस गई और सामने एक खुदाई के काम वाली गोल मेज़ से कोई पत्रिका उठाकर उसके पन्ने उलटने लगी।

किसी के आदर सहित खाँसने से उसने सिर घुमाकर देखा। दरवाजे में एक सुन्दर वर्दीधारी और सफेद गुलूबन्द पहने नौकर खड़ा था।

"क्या है अगाफ़ौन ?" वैलेन्निना ने उसी मृदु स्वर में पूछा।

"सेम्योन पेत्रोविच कैलोम्येत्सेफ़ आये हैं। उन्हें ऊपर भेज दूँ ?"

"ज़रूर भेज दो। और मेरियाना विकेन्त्येव्ना को भी ड्राइंग-रूम में आने के लिए खबर भिजवा देना।"

वैलेन्निना ने पत्रिका एक छोटी-सी मेज पर फेंक दी और सोफे

पर पीछे टिककर आँखे ऊपर करके विचारमग्न दिखाई पड़ने लगी। यह मुद्रा उसको बहुत ही फबती थी।

जिस प्रकार बत्तीस बरस की अवस्था के युवक कैलोम्येत्सेफ़ ने आसानी और लापरवाही के साथ धीरे-धीरे कमरे में प्रवेश किया, जिस प्रकार वह एकाएक शिष्टता के साथ मुस्कराया, एक ओर तनिक-सा झुककर अभिवादन किया, और फिर अलास्टिक की भाँति फिर सीधा खड़ा हो गया, जिस भाँति, थोड़े कृपा भाव से, थोड़ी कृत्रिमता के साथ उसने वैलेन्तिना मे बातचीत शुरू की और सम्भ्रमपूर्वक उसका हाथ पकड़कर भावुकता के साथ चूमा—इस सभी से यह स्पष्ट था कि आगन्तुक इस प्रान्त का निवासी, देहात का धनी-से-धनी पड़ौसी भी नही है, बल्कि पीटर्सबर्ग के उच्च फैशनेबल सभ्य समाज का कोई पक्का बड़ा सदस्य है। उसने वस्त्र भी सर्वोत्तम अंग्रेजी ढंग के पहन रखे थे, सफ़ेद कैम्ब्रिक के रूमाल की रंगीन किनारी एक छोटे-से त्रिकोण की शक्ल में उसके ट्वीड के कोट की जेब में से झाँकती दिखाई पड़ रही थी; एक आँख वाला चश्मा एक चौड़े काले फीते से लटक रहा था; उसके स्वेड के दस्तानों का फीका पीला रंग उसके चारखाने के फीके भूरे रंग के पतलून से ठीक मेल खाता था। मि० कैलोम्येत्सेफ़ के बाल भली भाँति छँटे हुए थे और दाढी साफ़ चिकनी बनी थी। उसके स्त्रियों जैसे चेहरे पर, पास-पास छोटी-छोटी आँखों, दबी हुई पतली-सी नाक और पूरे लाल होठों पर, सम्भ्रांत कुल में पले व्यक्ति की आकर्षक सहजता की छाप थी। इस समय वह शिष्टता की मूर्ति बना हुआ था···पर बहुत आसानी से वह प्रतिहिंसापूर्ण और बदतमीज़ भी हो सकता था। किसी व्यक्ति या वस्तु से उनके चिढ़ने भर की देर है, उनके दकियानूसी, देशभक्ति के तथा धार्मिक सिद्धान्तों पर चोट होने भर की देर है—ओह! फिर तो वह निर्मम हो जाता! उसकी तमाम शिष्टता तुरन्त हवा हो जाती; उसकी कोमल आँखें एक दुष्टतापूर्ण चमक से भर उठतीं, उसका छोटा-सा सुन्दर मुख गंदे

शब्दों की बौछार उगलने लगता और प्रार्थना करने लगता, दयनीय रिरियाते स्वर में सरकार की प्रबल शक्ति की सहायता की प्रार्थना करने लगता।

उसका परिवार पहले सीधे-सादे मालियों का था। उसका पड़दादा जिस प्रदेश से आया था वहाँ कालोमैत्त्सौफ़ कहलाता था·······पर उसके दादा ने ही, अपना नाम बदलकर काल्योमैत्सौफ़ कर लिया था; उसका पिता कैलोमेत्सेफ़ लिखा करता और अब अन्त में सेम्योन पेत्रोविच ने केलोम्येत्सेफ़ बना लिया था और वह सचमुच अपने-आपको सर्वथा शुद्ध रक्त का उच्चकुलीन मानने लगा था। वह ऐसा भी संकेत किया करता था कि उसका परिवार तो फान गैलेनमिएर के राजकुमारों की परम्परा का है, जिनमें एक तीसवर्षीय युद्ध में आस्ट्रिया का प्रधान सेनापति था। सेम्योनपेत्रोविच दरबार का सदस्य था और उसे सरदार का पद भी मिला हुआ था। अपनी देशभक्ति के कारण ही उसने कूटनीति-सम्बन्धी नौकरी नहीं ली थी, यद्यपि वह अपनी शिक्षा-दीक्षा, दुनिया की जानकारी, स्त्रियों के बीच लोकप्रियता, अपनी आकृति तक हर चीज़ से उस कार्य के लिए सर्वथा उपयुक्त जान पड़ता था। उसकी जायदाद भी अच्छी थी, उसके सम्बन्ध भी। उसकी विश्वसनीय और कर्त्तव्यपरायण व्यक्ति के रूप में ख्याति थी; पीटर्सबर्ग के सरकारी क्षेत्रों के एक प्रमुख व्यक्ति प्रसिद्ध राजा ब० की उसके बारे में यही धारणा थी। कैलोम्येत्सेफ़ स—प्रांत में दो महीने की छुट्टी लेकर अपनी जायदाद की देखभाल करने, अर्थात् 'कुछ को डराने और कुछ को निचोड़ने के लिए' आया हुआ था। स्पष्ट है कि यह सब किये बिना कोई काम नहीं चला करता।

"मैंने तो सोचा था कि बोरिस ऐन्द्रीइच अब तक आ गये होंगे," उसने शिष्टतापूर्वक एक पैर से दूसरे पर ज़ोर देते हुए और किसी बहुत ही महत्वपूर्ण व्यक्ति की नक़ल में एकाएक किसी दूसरी ओर देखते हुए कहना शुरू किया।

वैलेन्टिना ने हलका-सा मुँह बनाया।

"नही तो आप नही आते न ?"

कैलोम्येत्सेफ पीछे गिरते-गिरते बचा, इतना अन्यायपूर्ण, इतना सचाई के विपरीत वैलेन्टिना का प्रश्न उसे जान पडा।

"वैलेन्टिना !" उसने जोर से कहा, "हे भगवान् ! क्या आप कुछ सोच सकती हैं……"

"अच्छा-अच्छा, बैठ जाइये। बोरिस अभी-अभी आते ही होगे। मैंने उनके लिए गाडी स्टेशन भेज दी है। थोडा-सा इन्तजार कीजिये…… अभी उनसे मुलाकात हो जायगी। क्या बजा होगा अब ?"

"ढाई," कैलोम्येत्सेफ ने अपनी वेस्टकोट की जेब से मीना की हुई एक बडी-सी सोने की घडी निकालते हुए कहा। घडी उसने श्रीमती सिप्यागिन को भी दिखाई, "आपने मेरी घडी देखी ? यह मुझे मिहाइल, ओब्रेनोविच ने……जानती है, सर्बिया के राजकुमार ने भेट की थी। यह रहा उनका चिह्न, देखिये। हम लोगो की बडी मित्रता है। हम साथ-साथ शिकार को जाया करते थे। बढिया आदमी है ! और कठोर भी, जैसा कि राजा को होना चाहिए ! ओह, वह कोई बकवास नही बर्दाश्त करता ! कभी नही !"

कैलोम्येत्सेफ एक आरामकुर्सी मे धँस गया, एक के ऊपर एक पैर रख लिया और बड़े इत्मीनान के साथ अपने बायें हाथ का दस्ताना उतारने लगा।

"यहाँ हमारे इस प्रात मे मिहाइल जैसा कोई होता !"

"क्यो ? क्या आप किसी चीज से असतुष्ट है ?"

कैलोम्येत्सेफ ने अपनी नाक सिकोडी।

"हाँ, हमेशा वही प्रातीय परिषद् ! वही प्रातीय परिषद् ! क्या फायदा है उसका ? वह बस इन्तजाम को कमजोर बनाती है और… बेकार के ख्यालात……" (कैलोम्येत्सेफ ने अपना दस्ताने के बन्धन से मुक्त बायाँ हाथ हिलाया) "……और असम्भव आशाएँ पैदा करती

है ।" (कैलोम्येत्सेफ़ ने अपने हाथ पर फूँक मारी) । "मैंने पीटर्सबर्ग में भी यह सवाल उठाया था······पर आजकल हवा ही दूसरी है। आपके पति महोदय भी········कल्पना कीजिये ! किन्तु वह तो प्रसिद्ध उदारपंथी हैं ही !"

श्रीमती सिप्यागिन अपने सोफ़े पर सीधी बैठ गईं।

"क्या ? आप मि० कैलोम्येत्सेफ़, आप सरकार के विरोधी !"

"मैं ? सरकार का विरोधी ? कभी नहीं ! किसी कारण भी नहीं ! मैं बस कभी आलोचना कर लेता हूँ, पर सदा स्वीकार कर लेता हूँ !"

"मैं ठीक इसका उल्टा करती हूँ; मैं आलोचना भी नहीं करती और स्वीकार भी नहीं करती।"

"खूब ! अगर आप आज्ञा दें तो आपके इस वाक्य को मैं अपने मित्र लादिला को सुना दूँगा। वह एक सामाजिक उपन्यास लिख रहा है और कुछ अध्याय मुझे सुना भी चुका है। बड़ा बढ़िया होगा !"

"कहाँ छपेगा ?"

" 'रूसी संदेश' में और कहाँ ? हम लोगों की वही पत्रिका है। आप भी तो कोई पत्रिका पढ़ रही हैं।"

"हाँ, पर यह तो अब बहुत ही नीरस होता जा रहा है।"

"शायद······शायद········'रूसी संदेश' भी अब कुछ पिछले कुछ दिनों से ज़रा डगमगाने लगा है।"

यह कहकर वह हँसा।

"वैसे मैं, रूसी साहित्य में अधिक दिलचस्पी नहीं लेता। आजकल तो वह प्रजातन्त्रवादियों से भरा हुआ है। अब तो यह हालत हो गई है कि उपन्यास की नायिका रसोइनें होने लगी हैं। एकदम रसोइनें ! पर लादिला का उपन्यास मैं अवश्य पढ़ूँगा। और उसमें शून्यवादियों की भी खबर ली जायगी। इस विषय में लादिला के विचारों को मैं भली भाँति जानता हूँ।"

"उसके पिछले जीवन के बारे में यह बात कम-से-कम नहीं कही जा सकती।" श्रीमती सिप्यागिन ने कहा।

"आह! जवानी के दिनों की भूलों का छिपा रहना ही ठीक है!" कैलोम्येत्सेफ़ ने कहा और उसने अपना दाहिना दस्ताना भी उतार लिया।

फिर वैलेन्निना ने हलका-सा अपनी बरौनियों को मिचमिचाया। वह अपनी अद्भुत आँखों का बड़ी उन्मुक्तता से उपयोग करने की अभ्यस्त थी।

"सेम्योन पेत्रोविच," उसने कहा, 'क्या मै पूछ सकती हूँ कि आप अपनी बातचीत में इतने फ्रेंच भाषा के शब्द क्यों इस्तेमाल करते हैं? मेरा ख्याल है···क्षमा कीजिये···अब तो उसका फैशन नहीं रहा।"

"क्यों? क्यों? मातृभाषा के ऊपर हरएक का वैसा पक्का अधिकार नहीं है जैसा उदाहरण के लिए आपका। जहाँ तक मेरा सवाल है मैं रूसी भाषा को शाही फर्मानों और सरकारी कानूनों की भाषा मानता हूँ; उसकी शुद्धता का मैं भक्त हूँ। कारामज़िन के प्रति में श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ!······पर रूसी, यानी रोज़मर्रा की ज़बान······क्या सचमुच ऐसी कोई चीज़ मौजूद है? आप मेरे बहुत-से वाक्यांशों का रूसी में ठीक तर्जुमा कर सकती हैं?"

"मै समझती हूँ हो सकता है।"

कैलोम्येत्सेफ़ हँसा!

"हो सकता अवश्य है; पर आपको नहीं लगता कि रूसी में अनुवाद होते ही फ़ौरन कुछ पंडिताऊपन आ जाता है···सारी खानगी चली जाती है।···"

"छोड़िये, आप मुझे इस विषय में नहीं समझा सकेंगे। पर मैरियाना क्या कर रही है?" उसने घण्टी बजाई; एक नौकर हाज़िर हो गया।

"मैंने मेरियाना विकेन्त्येव्ना को नीचे आने के लिए सन्देश भेजने

का हुक्म दिया था। क्या मेरी बात उन तक नहीं पहुँचाई गई ?"

इसके पहले कि नौकर कोई उत्तर दे सके, उसके पीछे दरवाजे में एक ढीला गहरे रंग का ब्लाउज पहने और बाल छँटाये हुए एक किशोरी दिखाई पड़ी। यही थी सिप्यागिन की भांजी मेरियाना विकेन्त्येव्ना।

छः

"क्षमा कीजिये," उसने श्रीमती सिप्यागिन की ओर बढ़ते हुए कहा; "मैं ज़रा व्यस्त थी और अटकी रह गई।"

फिर उसने कैलोम्येत्सेफ़ को झुककर नमस्कार किया, और एक तरफ हटकर तोते के पास एक छोटी-सी गद्दार कुर्सी पर बैठ गई। तोते ने उसे देखते ही पंख फटफटाना और उसकी ओर चोंच बढ़ा-बढ़ा कर देखना शुरू कर दिया था।

"इतनी दूर क्यों जा बैठी हो मेरियाना," श्रीमती सिप्यागिन ने अपनी आँखों से कुर्सी तक उसका अनुसरण करते हुए कहा। "क्या अपने नन्हें मित्र के समीप बैठने की इच्छा है? ज़रा कल्पना कीजिये सेम्योन पेत्रोविच," उसने कैलोम्येत्सेफ़ की ओर मुड़ते हुए कहा, "वह तोता प्यारी मेरियाना के प्रेम में एकदम पागल है।"

"मुझे इस बात से कोई आश्चर्य नहीं हुआ।"

"और मेरी वह सूरत नहीं देख सकता।"

"यह बात अवश्य आश्चर्य की है! आप उसे चिढ़ाती रहती हैं शायद?"

'कभी नहीं; बल्कि इसका ठीक उलटा है। मैं उसे चीनी देती हूँ। पर मुझसे वह कुछ नहीं लेता। नहीं……बात सहानुभूति और असहानुभूति की है।"

"मेरियाना ने अपनी पलकों के नीचे से ही श्रीमती सिप्यागिन पर एक नज़र डाली……और श्रीमती सिप्यागिन ने भी उसकी ओर देखा।

इन दोनों महिलाओं में तनिक भी बनती न थी। अपनी मामी की तुलना में मेरियाना को करीब-करीब बदसूरत ही कहा जा सकता था। उसका गोल चेहरा था, बड़ी-सी गिद्ध जैसी नाक, भूरी आँखें, बड़ी-बड़ी और स्पष्ट पतली भौंहें और पतले होंठ। उसने अपने गहरे भूरे बालों को छँटवाकर छोटा कर लिया था और वह देखने में मिलनसार नहीं लगती थी। पर उसके समूचे व्यक्तित्व में कोई बड़ी प्राणवान और साहसी, कुछ झकझोरने वाली और भावप्रवण चीज मौजूद थी। उसके हाथ और पैर छोटे-छोटे थे; उसका मजबूती से गुँथा हुआ लचकीला शरीर देखकर सोलहवीं शताब्दी की फ्लोरेंस की बनी मूर्त्तियों की याद आ जाती थी; उसकी चाल हलकी और आकर्षक थी।

सिप्यागिन परिवार में मेरियाना की स्थिति कुछ कठिन ही थी। उसके पिता अर्द्ध-पोलिश जाति के बड़े चतुर और कार्यशील व्यक्ति थे। जिसने जनरल का पद प्राप्त कर लिया था; पर एकाएक सरकार के साथ बड़ी भारी जालसाज़ी के अपराध में पकड़े जाकर वह बिलकुल बर्बाद हो गया; उसका मुकदमा हुआ…और दण्ड भी मिला, उसका पद और सरदारी छीन ली गई और उसे साइबेरिया भेज दिया गया। बाद में उसे क्षमा कर दिया गया और वापिस भी बुला लिया गया; पर वह फिर उन्नति करने में सफल न हो सका और बेहद गरीबी में उसकी मृत्यु हुई। उसकी पत्नी, सिप्यागिन की बहन और मेरियाना की माँ (उसकी और कोई संतान न थी), इस आघात को सहन न कर सकी जिसने उसकी सारी समृद्धि को ढा दिया था, और वह भी

अपने पति के बाद शीघ्र ही चल बसी। सिप्यागिन ने अपनी भान्जी को अपने घर में आश्रय दिया; पर वह इस पराधीनता के जीवन से तंग थी; वह अपने स्वाधीन और उन्मुक्त स्वभाव के कारण पूरी शक्ति के साथ आज़ाद होने का प्रयत्न करती थी, और उसके तथा उसकी मामी के बीच निरंतर छिपा हुआ संघर्ष चलता रहता था। श्रीमती सिप्यागिन उसे शून्यवादी और नास्तिक समझती थीं; उधर मेरियाना श्रीमती सिप्यागिन को अपने ऊपर अनजाना अत्याचार करने वाला मानकर उससे घृणा करती थी। अपने मामा से वह अलग ही रहती थी। वैसे, वास्तव में वह सभी से ही ऐसा करती थी। वह सभी से बचती रहती, वह किसी से डरती न थी; उसका स्वभाव दब्बू न था।

'अ-सहानुभूति,' कैलोम्येत्सेफ़ ने दुहराया; "हाँ, वह ज़रूर अजीब चीज है। उदाहरण के लिए हर आदमी जानता है कि मैं बहुत ही धार्मिक, पूरी तरह पुराने विचारों का व्यक्ति हूँ; पर पादरी के लम्बे-लम्बे बालों को, उसकी अयाल को—देखते ही मेरा मन भड़क उठता है; मेरा एकदम जी मिचलाने लगता है।"

और कैलोम्येत्सेफ़ ने अपनी बँधी हुई मुट्ठी को फिर से हिलाकर अपने जी मिचलाने के भाव को प्रकट करने का प्रयत्न किया।

"बाल आम तौर पर ही आपको परेशान करते जान पड़ते हैं। सेम्योन पेत्रोविच," मेरियाना ने कहा; "मुझे पूरा यकीन है कि मेरे जैसे बाल छँटे हुए किसी व्यक्ति को देखकर भी आपका मन भड़के बिना न रहता होगा।"

श्रीमती सिप्यागिन ने धीरे से अपनी भौहें उठायीं और अपना सिर टेढ़ा किया, मानो इस बात से चकित हों कि आजकल की लड़कियाँ कितनी आसानी और आजादी के साथ बातचीत शुरू कर लेती हैं। कैलोम्येत्सेफ़ बड़े कृपापूर्ण भाव से मुस्कराया।

"निस्संदेह," उसने उत्तर दिया, "आपके जैसे सुन्दर घुँघराले बालों के लिए मुझे अफ़सोस हुए बिना नहीं रहता, मेरियाना विकेन्त्येव्ना

कि उन्हें भी निर्मम कैंचियों के नीचे जाना पड़ता है। पर मुझे कोई विरोध नहीं है; और, कम-से-कम···आपके उदाहरण तो मेरे···मेरे भी मत-परिवर्तन के लिए काफ़ी हैं।"

विचार बदलने के लिए कैलोम्येत्सेफ़ को ठीक-ठीक रूसी शब्द नहीं मिल रहा था और अपनी आतिथेया के टोकने के बाद से वह फ्रेंच शब्द इस्तेमाल न करना चाहता था।

"भगवान् की कृपा है, कि मेरियाना ने अभी चश्मा पहनना शुरू नहीं किया है," श्रीमती सिप्यागिन ने कहा, "और न कफ तथा कालरों का ही परित्याग किया है, यद्यपि मुझे दुःख है कि वह भौतिक विज्ञान का अध्ययन तो करने लगी है। और वह नारी-समस्या में भी दिलचस्पी लेती है···लेती हो न मेरियाना ?"

यह सब मेरियाना को नीचा दिखाने के लिए ही कहा गया था; पर वह तनिक भी परेशान न हुई।

"हाँ, मामी," उसने उत्तर दिया, "इस विषय में जो कुछ भी निकलता है मैं सब पढ़ती हूँ। मैं यह समझने का प्रयत्न करती रहती हूँ कि आखिर वास्तव में यह समस्या है क्या।"

"इसी को तो नौजवान होना कहते हैं!"—श्रीमती सिप्यागिन ने कैलोम्येत्सेफ़ की ओर उन्मुख होते हुए कहा; "आप और मैं अब इन चीजों के बारे में परेशान नहीं होते—है न ?"

कैलोम्येत्सेफ़ सहानुभूति के साथ हँसा; गृहस्वामिनी के परिहास से सहमत होना उसके लिए अनिवार्य ही था।

"मेरियाना विकेन्त्येव्ना," उसने शुरू किया, "आदर्शवाद से··· यौवन के रोमांसवाद से भरपूर है···धीरे-धीरे···।"

"पर मैं बेकार अपनी बदनामी कर रही हूँ," श्रीमती सिप्यागिन ने बीच में टोककर कहा; "मैं भी इन सब समस्याओं में दिलचस्पी लेती हूँ। मैं अभी इतनी बड़ी-बूढ़ी नहीं हुई हूँ।"

"मैं तो ऐसे सभी विषयों में दिलचस्पी रखता हूँ," कैलोम्येत्सेफ़

ने भी जल्दी से जोडा "मै बस उनके बारे मे बातचीत करने की मनाही करना पसन्द करूँगा ।"

"आप उनके बारे मे बातचीत करने की मनाही करते है ?" मेरियाना ने प्रश्नसूचक स्वर मे दुहराया ।

"हाँ ! मै लोगो से कहूँगा . मै आपके दिलचस्पी लेने मे बाधा नही डालना चाहता···पर जहाँ तक उसकी चर्चा का सवाल है··· चुप !"—उसने अपनी उँगली होठो पर रखी—"कम-से-कम छापे मे चर्चा—उस पर तो मै रोक लगाना चाहूँगा—बिना शर्त !"

श्रीमती मिप्यागिन हँसने लगी ।

"क्या ? तुम किसी विभाग मे इस समस्या को हल करने के लिए कोई कमीशन नियुक्त करा दोगे, ठीक है न ?"

"कमीशन में क्या बुराई है ! क्या आप समझती है हम उन सब पैसे में पँक्ति लिखने वालो से खराब निर्णय करेगे, जिन्हे अपनी नाक के आगे कुछ नही दिखाई पडता और जो समझते है···कि वे प्रथम श्रेणी के प्रतिभावान व्यक्ति है ? हम लोग बोरिस ऐन्द्रीइच को कमीशन का सभापति नियुक्त कर देगे ।"

श्रीमती सिप्यागिन और भी ज़ोर से हँसने लगी ।

"ज़रा होशियार रहियेगा, बोरिस ऐन्द्रीइच कभी-कभी ऐसे जैकोबिन (प्रजातन्त्रवादी) सिद्ध होते है······

"जैको, जैको, जैको," तोते ने पुकारा ।

वैलेन्निना ने अपना रूमाल उसकी तरफ हिलाया ।

"भले आदमियो की बातचीत में बाधा मत डालो !···मेरियाना, जरा उसे चुप तो करो ।"

मेरियाना ने पिजडे की तरफ घूमकर तोते की गर्दन सहलाना शुरू कर दिया, जो उसने तुरन्त आगे कर दी ।

"सच," श्रीमती सिप्यागिन ने बात जारी रखते हुए कहा," बोरिस ऐन्द्रीइच कभी-कभी मुझे भी विस्मय में डाल देते है। उनमें कुछ···

कुछ प्रजातन्त्रवादी है अवश्य ।"

"वक्ता है वक्ता !" कैलोम्येत्सेफ़ ने जोश के साथ फ्रेंच में कहा, "आपके पति महोदय को शब्दों का ऐसा वरदान मिला हुआ है जैसा किसी दूसरे को प्राप्त नहीं; उन्हें सफलता का भी अभ्यास है···उसमें लोकप्रियता का प्रेम और जोड़ दीजिये······पर उस सबसे वह कुछ दूर रहते हैं, है न?"

श्रीमती सिप्यागिन ने मेरियाना की ओर एक दृष्टि फेंकी ।

"मैंने तो ध्यान नहीं दिया," उसने थोड़ी देर रुककर कहा ।

"हाँ", कैलोम्येत्सेफ़ ने कुछ विचार-मग्न स्वर में कहा, "उनकी ओर कुछ कम ध्यान दिया गया जान पड़ता है ।"

श्रीमती सिप्यागिन ने फिर मेरियाना की ओर अर्थपूर्ण दृष्टि डाली ।

कैलोम्येत्सेफ़ ने मुस्कराकर मुँह बना लिया मानो कह रहा हो, "समझता हूँ ।"

"मेरियाना विकेन्त्येव्ना !" उसने एकाएक अनावश्यक रूप से जोरदार आवाज में कहा, "क्या आप इस वर्ष फिर स्कूल में पढ़ाने वाली हैं ?"

मेरियाना पिंजड़े की ओर से घूम गई ।

"और क्या उसमें भी आपकी दिलचस्पी है, सेम्योन पेत्रोविच ?"

"निस्सन्देह; वास्तव में उसमें तो मेरी बहुत ही दिलचस्पी है ।"

"उसकी तो मनाही आप नहीं करेंगे न ?"

"शून्यवादियों को तो मैं स्कूलों के बारे में सोचने तक की मनाही करना चाहूँगा । पर धार्मिक निर्देशन, पादरियों के संरक्षण में मैं स्वयं स्कूल स्थापित करना चाहूँगा !"

"सचमुच ? मैं जानती नहीं कि इस साल क्या करूँगी । पिछले साल हर चीज इतनी खराब रही । इसके अलावा गर्मियों में तो स्कूल चलता भी नहीं है ।"

बात करने में मेरियाना का रंग धीरे-धीरे गहरा होता जा रहा था

मानो बोलने में उसे कष्ट हो रहा हो, मानो वह जबरदस्ती बोल रही हो। अभी भी वह बहुत ही आत्म-सजग थी।

"तुम काफी तैयार नहीं हो ?" श्रीमती सिप्यागिन ने पूछा; उसकी आवाज में हलकी-सी व्यंग की ध्वनि थी।

"शायद नहीं हूँ।"

"क्या ?" कैलोम्येत्सेफ ने आश्चर्य से कहा। "मै क्या सुन रहा हूं ? भगवान् भला करे ! क्या छोटी-छोटी किसान छोकरियों को वर्ण-माला पढ़ाने के लिए तैयारी की जरूरत होती है ?"

किन्तु उसी समय कोल्या चिल्लाता हुआ ड्राइंगरूम में दौड़ा आया, "ममी ! ममी ! पापा आ गये !" और उसके पीछे-पीछे अपने मोटे-मोटे छोटे पैरों से लुढकती हुई आई एक महिला जिसने एक टोपी और पीला शाल पहन रखा था। उसने भी घोषणा की कि बोरिस बस अंदर पहुँचने ही वाला है ! यह महिला सिप्यागिन की बूआ थीं, नाम था अन्ना जाहारोव्ना। ड्राइंगरूम में उपस्थित सभी व्यक्ति अपने-अपने स्थानों से उछल पड़े और सामने के कमरे में और फिर वहाँ से सीढ़ियों से उतरकर मुख्य प्रवेश-द्वार तक झपटते हुए चले गये। सरोंके छँटे हुए पेड़ों से दोनों ओर से घिरी एक लम्बी-सी सड़क बड़ी सड़क से इस द्वार तक आती थी। उस पर एक चार घोड़ों की गाड़ी जल्दी-जल्दी आ रही थी। वैलेन्निना सबसे आगे खड़े होकर अपना रूमाल हिलाने लगी, कोल्या के मुँह से एक ज़ोर की चीख निकल गई। कोचवान ने चतुराई से घोड़ों को रोका, नौकर जल्दी से कूदकर आया और उसने जल्दी में करीब-करीब गाडी के दरवाज़े को ताले, कब्जे समेत उतार ही लिया। और अपने होठों, आँखों पर, बल्कि समूचे मुख पर एक मीठी मुस्कान लिए हुए बोरिस ऐन्द्रीविच उतरे और एक ही हलके से झटके से लबादा उतार फेंका। जल्दी से और बड़ी सुघराई से वैलेन्निना ने अपनी दोनों बाहें उसके गले में डाल दीं और उसे तीन बार प्यार किया। कोल्या पीछे से अपने पिता के कोट को पकड़े पैर फटफटा रहा

था···पर उसने पहले अन्ना जाहारोव्ना को प्यार किया और भूमिका के तौर पर अपनी बहुत ही कष्टदायक और बदसूरत स्काच यात्रा की टोपी को उतार लिया; फिर उसने मेरियाना और कैलोम्येत्सेफ़ का— वे भी बाहर दरवाजे पर आ गये थे—अभिवादन किया—(कैलोम्येत्सेफ़ से उसने ज़ोर से अँग्रेजी ढंग से हाथ मिलाया और अपने हाथ इस तरह से ऊपर-नीचे किये मानो किसी घंटी की रस्सी को खींच रहा हो)— और तब वह अपने बेटे की ओर मुड़ा। उसे उसने अपनी गोद में उठा लिया और अपने मुख के पास खींच लिया।

जिस समय यह सब हो रहा था, नेज्दानौफ़ चुपचाप अपराधी की भाँति गाड़ी से निकलकर सामने के पहिये के पास खड़ा हो गया था। उसने टोपी पहन ही रखी थी और अपनी भौंहों के नीचे से ताक रहा था······वैलेन्तिना ने अपने पति का आलिंगन करते समय इस नई मूर्ति पर पैनी-सी दृष्टि डाली थी; सिप्यागिन ने उसे पहले से ही सूचित कर दिया था कि वह अपने साथ एक शिक्षक ला रहा है।

सारा दल नवागत गृहस्वामी का स्वागत करता और हाथ मिलाता हुआ ऊपर सीढ़ियों पर चढ़ रहा था, जिसके दोनों ओर मुख्य-मुख्य नौकर-नौकरानियाँ खड़े हुए थे। उन्होंने उसका हाथ नहीं चूमा—वह 'एशियायीपन' बहुत दिन से त्यागा जा चुका था—वे केवल आदर से झुक कर अभिवादन कर रहे थे; सिप्यागिन उनके अभिवादनों का उत्तर सिर की अपेक्षा नाक और भौंहों से अधिक देता जा रहा था।

नेज़्दानौफ़ भी धीरे-धीरे उन चौड़ी सीढ़ियों पर ऊपर चढ़ा। जैसे ही उसने बाहर के कमरे में प्रवेश किया, सिप्यागिन ने, जो उसकी तलाश ही कर रहा था, उसका अपनी पत्नी से, अन्ना जाहारोव्ना से और मेरियाना से परिचय कराया; कोल्या से उसने कहा, "ये तुम्हारे मास्टरजी हैं, इनका कहना मानना! उनसे हाथ मिलाओ!" कोल्या ने कुछ डर के साथ अपना हाथ नेज्दानौफ़ की ओर बढ़ा दिया और फिर उसकी ओर ताकने लगा; पर उसमें कोई विशेष अथवा आकर्षक

चीज न पाकर फिर अपने पापा से लिपट गया। नेज्दानौफ़ को वैसी ही परेशानी अनुभव हो रही थी जैसी उस दिन थियेटर में हुई थी। उसने एक पुराना, कुछ बदसूरत-सा बड़ा कोट पहन रखा था और उसके हाथों और चेहरे पर रास्ते की धूल जमी हुई थी। वैलेन्तिना ने उससे कोई मैत्रीपूर्ण बात कही भी, पर वह उसे ठीक से समझ न पाया और उसने कोई उत्तर न दिया; उसने केवल यही लक्ष्य किया कि वह एक विचित्र चमक और प्यार से अपने पति की ओर ताक रही है और उसकी बगल मे पास-पास ही चल रही है। उसे कोल्या का वैसलीन लगा और बनावटी लटों वाला सिर अच्छा न लगा; कैलोम्येत्सेफ़ को देखकर उसने सोचा "कैसा घमंडी चेहरा है!" बाकी लोगों की ओर उसने कोई ध्यान नही दिया। सिप्यागिन ने दो बार बड़े रोब के साथ पीछे सिर घुमाया मानो अपने घरेलू देवताओं पर चारों ओर एक दृष्टि डाल रहा हो। इस मुद्रा में उसके लम्बे लटकते हुए बाल और छोटा-सा गोल-मटोल सिर बडा प्रभावशाली लग उठता था। फिर उसने अपनी गूँजती हुई सशक्त आवाज़ में, जिसपर यात्रा की थकान की कोई छाप न थी, एक नौकर को पुकारा: "इवान! इन सज्जन को हरे कमरे में ले जाओ और उनका बक्स ऊपर पहुँचा दो," और नेज्दानौफ़ से उसने कहा कि अब वह जाकर आराम कर लें, सामान खोलकर कुछ निश्चिन्त हो लें, भोजन ठीक पाँच बजे होगा। नेज्दानौफ़ ने झुककर अभिवादन किया और इवान के पीछे-पीछे 'हरे कमरे' की ओर चला जो दूसरी मंजिल पर था।

सब लोग ड्राइंगरूम में आ गये। एक बार फिर स्वागत के शब्द दुहराये गए; एक आधी अन्धी नर्स एक लाठी के सहारे अन्दर आई। उसकी बुजुर्गी का ख्याल करके सिप्यागिन ने उसे अपना हाथ चूमने की अनुमति दे दी, और तब, कैलोम्येत्सेफ़ से क्षमा-याचना करके वह अपनी पत्नी के साथ अपने कमरे में चला गया।

सात

जिस बड़े और आरामदेह कमरे में नौकर नेज्दानौफ़ को ले गया, उसमें से बगीचा दिखाई पड़ता था। उसकी खिड़कियाँ खुली हुई थीं और हलकी-सी हवा में सफेद परदे धीमे-धीमे फरफरा रहे थे; वे पालों की भाँति फूल उठते और फिर गिर जाते। सुनहरी रोशनी की किरणें छत के ऊपर धीमे-धीमे तैर रही थीं; समूचा कमरा बसंत की ताज़ा, कुछ गीली सुगंध से भरा हुआ था। नेज्दानौफ़ ने नौकर को छुट्टी देकर सबसे पहले अपना बक्स खोला और हाथ-मुँह धोकर कपड़े बदल डाले। यात्रा ने उसे बिल्कुल चूर-चूर कर दिया था; दो समूचे दिनों तक एक अजनबी की उपस्थिति का, जिसके साथ वह हर तरह की उद्देश्य-हीन बातचीत करता रहा था, उसके ऊपर थका देने वाला असर हुआ था। एक तरह की कड़वाहट, एकदम उकताहट भी नहीं और न क्षोभ ही, उसके अंतस्तल में चुपचाप सरसरा रहा था। वह अपने हृदय की कमज़ोरी पर क्षुब्ध था तो भी उसका हृदय बैठा ही जा रहा था।

वह खिड़की के पास पहुँचकर बाग को देखने लगा। बाग पुराने जमाने का था, बढ़िया काली मिट्टी का, ऐसा बाग मास्को के इस

श्रोर देखने में नहीं आता। वह एक लम्बी पहाड़ी के ढाल पर लगा हुआ था और उसके चार सुस्पष्ट विभाग थे। मकान के सामने करीब दो सौ कदम तक तो फुलवारी थी, जिसमें छोटे-छोटे सीधे बालू के रास्ते थे, एकैसिया और लाइलक के समूह थे और गोल फूलों की क्यारियाँ थीं। बाई ओर अस्तबल थे, मैदान के सामने से ठीक खलिहान तक फलों का बगीचा था जिसमें सेब, नाशपाती और बेरों के घने लगे हुए पेड़, किशमिश और रसभरी की बेलें थीं। मकान के दूसरी ओर एक-दूसरी को काटती हुई सड़कों के दोनों ओर नीबू के पेड़ों की पंक्तियाँ थीं जिनसे मिलकर एक बड़ा-सा चारों ओर से घिरा चौकोर स्थान बन गया था। दाईं ओर के दृश्य की सीमा पर सड़क थी जो पापलर के रूपहले वृक्षों की दुहरी पंक्ति के पीछे छिपी रहती थी; बर्च के वृक्षों के एक झुंड के पीछे एक हरे घर की गोल छत दिखाई पड़ती थी। समूचे बगीचे पर बसंत के पहले पत्तों की कोमल हरियाली छाई हुई थी; अभी तक गर्मी के कीड़ों की उच्च स्तरीय भिनभिन शुरू नहीं हुई थी; नई पत्तियाँ फरफरातीं और चिड़ियाँ कहीं गा उठती थीं, और दो कबूतर लगातार एक ही पेड़ पर गुटरगूँ कर रहे थे; एक अकेली कक्कू हर आवाज़ पर अपनी जगह बदल कर गा उठती थी; और कारखाने के तालाब के पार दूर से बहुत से कौओं की सम्मिलित आवाज़ बहुत से गाड़ी के पहियों की चूँ-चूँ जैसी सुनाई पड़ रही थी। और इस समय शांत, एकांत और ताज़ा जिन्दगी पर बादल आलसी चिड़ियों की भाँति छाती फुलाये धीमे-धीमे तैर रहे थे। नेज्दानौफ़ अपने खुले हुए शीतल होठों से हवा को पीता हुआ एकटक ताकता रहा, सुनता रहा।

और उसका दिल धीरे-धीरे हलका हो गया; उसके ऊपर भी एक प्रकार का शांति का भाव छा गया।

उधर नीचे शयनगृह में उसी की चर्चा हो रही थी। सिप्यागिन अपनी पत्नी को सुना रहा था कि कैसे उसकी उससे भेंट हुई, राजा ग० ने

उसके बारे में क्या बताया, और यात्रा में उससे क्या-क्या बातचीत होती रही।

"दिमाग़ अच्छा है !" उसने दुहराया, "और जानकारी भी बहुत है; यह सही है कि वह लाल प्रजातन्त्रवादी है; पर तुम जानती ही हो उसका मेरे लिए कोई महत्व नहीं; इन लोगों में कम-से-कम महत्वाकांक्षा तो होती है। और इसके अतिरिक्त कोल्या अभी उससे कोई वाहियात बात सीखने के लिए बहुत छोटा है।"

वैलेन्निना अपने पति की बातें एक प्यारभरी किन्तु व्यंगपूर्ण मुस्कराहट से सुन रही थी, मानो वह कोई बहुत अजीब किन्तु मज़ेदार शैतानी करना स्वीकार कर रहा हो। यह बात उसको निश्चित रूप से सुखद लगती थी कि उसका स्वामी, इतना ठोस व्यक्ति, इतना महत्वपूर्ण अधिकारी होकर भी बीस बरस के नौजवान की भाँति अचानक ही कोई शैतानी कर बैठने की क्षमता रखता था। बर्फ जैसी सफेद कमीज और नीले रेशम के पजामे में शीशे के सामने खड़ा होकर सिप्यागिन अपने बालों को अंग्रेजी कायदे से दो ब्रशों से ठीक करने लगा और वैलेन्निना अपने नन्हे से जूते एक नीची तुर्की कोच पर रखकर बहुत-सी स्थानीय खबरें सुनाने लगी, कागज के कारखाने के बारे में जो—अफसोस की बात है—उतनी अच्छी न चल रही थी जैसी चलनी चाहिए थी, रसोइन के बारे में जिसे निकालना होगा, गिरजा के बारे में जिसका प्लास्टर उखड़ने लगा था, मेरियाना के बारे में, कैलोम्येत्सेफ़ के बारे में·······

पति-पत्नी के बीच वास्तविक स्नेह और विश्वास था; वे सचमुच पुराने जमाने की भाषा में, 'प्यार से और परस्पर सम्मान के साथ' ही रहते थे; और जब सिप्यागिन ने अपना प्रसाधन समाप्त करके पुराने ढंग से वैलेन्निना से 'उसका नन्हा हाथ' माँगा, तब उसने अपने दोनों हाथ बढ़ा दिये और बड़े प्यार भरे गर्व के साथ सिप्यागिन को एक-एक करके दोनों को चूमते देखती रही, तो दोनों चेहरों पर

झलकने वाला भाव सच्चा और उत्तम था, यद्यपि वैलेन्तिना में वह राफेल के उपयुक्त नैनों में झलक रहा था, और सिप्यागिन में एक नागरिक जनरल की साधारण आँखों में।

ठीक पाँच बजे नेज्दानौफ़ भोजन के लिए नीचे उतरा, जिसकी घोषणा घण्टी के द्वारा नहीं, एक चीनी घण्टे की प्रलम्बित गूँज के द्वारा हुई थी। सब लोग भोजन-गृह में एकत्र हो चुके थे। सिप्यागिन ने, अपने ऊँचे गुलूबन्द के ऊपर से, उसका घनिष्ठता के साथ अभिवादन किया, और उसे मेज पर कोल्या और अन्ना जाहारोव्ना के बीच स्थान पर बैठने का संकेत किया। अन्ना ज़ाहारोव्ना सिप्यागिन के स्वर्गवासी पिता की बूढ़ी बहिन थी; उसके बदन से बहुत दिनों से रखे हुये कपड़ों की-सी कपूर की गंध आ रही थी, और उसके मुख पर कुछ चिन्ता और निराशा का-सा भाव था। परिवार में उसका स्थान कोल्या की धाय या मास्टरनी का था; कोल्या और उसके बीच नेज्दानौफ़ को बिठाये जाने से उसके झुरियों भरे चेहरे पर अप्रसन्नता का भाव स्पष्ट झलक आया था। कोल्या अपने इस नये पड़ौसी को आँखों के कोनों से निहार रहा था; तेज़ बालक ने जल्दी ही भाँप लिया कि उसका शिक्षक कुछ परेशानी और घबराहट-सी महसूस कर रहा था; उसने अपनी नज़र ऊपर नहीं उठाई थी, न कुछ खा ही रहा था। कोल्या इस बात से प्रसन्न हुआ, तब तक उसे डर था कि कही उसका शिक्षक चिड़चिड़ा और कठोर न हो। वैलेन्तिना भी नेज्दानौफ़ की ओर बीच-बीच में देख लेती थी।

"बिलकुल विद्यार्थी जैसा लगता है," उसके मन में आ रहा था, "और दुनिया भी उसने अधिक नहीं देखी है, पर उसका चेहरा दिलचस्प है और उसके बालों का रंग असली है, उस पैगम्बर की भाँति जिसे पुराने इटली के कलाकार सदा लाल बालों वाला ही चित्रित किया करते थे और उसके हाथ साफ हैं।" वास्तव में मेज़ पर बैठा हर व्यक्ति नेज्दानौफ़ की ओर ही ताकता था और फिर मानो उस पर तरस खाकर

फिलहाल परेशान न करने के विचार से उसे छोड़ देता था। नेज्दानौफ़ इस बात को अनुभव कर रहा था और प्रसन्न था तथा साथ ही किसी-न-किसी कारण इस बात से क्षुब्ध भी था। मेज़ पर बातचीत कैलोम्येत्सेफ़ और सिप्यागिन ही कर रहे थे। उनकी बातें हर विषय की थीं—प्रान्तीय परिषद्, राज्यपाल के बारे में, सड़कों के किराये, छुटकारे की शर्तों, पीटर्सबर्ग और मास्को के अपने दोनों के परिचितों, उन्हीं दिनों प्रभावशाली हो उठने वाले मि० कातकौफ़ के स्कूल के बारे में, मजदूर मिलने की कठिनाई और मवेशियों द्वारा होने वाले नुकसान और उसके जुर्मानों के बारे में, और साथ ही बिस्मार्क के १८६६ के युद्ध तथा नेपोलियन तृतीय के बारे में भी जिसे कैलोम्येत्सेफ़ बढ़िया आदमी कहता था। युवक अफ़सर अधिक-से-अधिक दकियानूसी विचार प्रकट कर रहा था, यहाँ तक कि उसने—सही है कि ऊपर से यह बात मज़ाक में ही कही जा रही थी—अपने एक मित्र के एक जन्म-दिवस की दावत पर कही गई एक बात भी दुहराई—"मै तो केवल उन्हीं सिद्धान्तों के लिए पीता हूँ जिन्हे मै मानता हूँ और वे हैं कोड़ा और डण्डा।"

वेलेन्तिना की भौहें चढ गईं। उसने कहा कि यह कथन बहुत ही कुरुचि-सूचक है। इसके विपरीत सिप्यागिन ने बहुत ही उदार मत प्रगट किया; बड़े ही हँसते-हँसते, बल्कि कुछ लापरवाही से, उसने कैलोम्येत्सेफ़ का विरोध किया; बल्कि उसका थोड़ा-बहुत मज़ाक भी उड़ाया।

"आजादी के बारे में आपकी आशंकाओं से, जनाब सेम्योन पेत्रोविच" दूसरी बातों के अलावा सिप्यागिन ने कहा, "मुझे सम्माननीय और उत्तम मित्र अलेक्सी इवानिच त्वेरितीनौफ़ के उस स्मारक की याद आती है जो उसने १८६० में लिखा था और पीटर्सबर्ग के हर ड्राइंगरूम में सुनाया गया था। उसमें एक बड़ा बढ़िया वाक्य था जिसमें बताया गया था कि किस प्रकार आजाद किसान हाथ में मशाल लेकर समूचे देश में निर्बाध

घूमेगा; जिस प्रकार अलेक्सी इवानिच, अपने फूले हुये गालों और गोल-गोल आँखों के साथ अपने बच्चों जैसे मुख से 'म···म·· मशाल ! म···म···मशाल ! मशाल लेकर घूमेगा !' कहता था, वह देखने की ही चीज़ थी। पर अब तो किसान आजाद हो गये······कहाँ है मशाल लिये हुये वे किसान ?"

"त्वेरितीनौफ़," कैलोम्येत्सेफ़ ने कुछ कुपित स्वर में उत्तर दिया, "कि गलती सिर्फ इस बात में थी, किसान नहीं, दूसरे लोग मशालें लिये घूम रहे हैं।"

इन शब्दों पर नेज़्दानौफ़ की अचानक मेरियाना से नजर मिल गई—वह दूसरी ओर के कोने पर बैठी थी और अभी तक नेज़्दानौफ़ ने उसकी ओर ध्यान ही नहीं दिया था—और तुरन्त उसे लगा वे दोनों, वह गुमसुम लड़की और वह स्वयं, एक से विश्वास वाले, एक ही शिविर के प्राणी हैं। जिस समय सिप्यागिन ने नेज़्दानौफ़ का उससे परिचय कराया था उस समय उसने उसके मन पर कोई छाप नहीं डाली थी; इसी समय उसकी नजर क्यों मिल गई; नेज़्दानौफ़ ने उस समय अपने मन में यह प्रश्न किया : क्या यह लज्जाजनक, अपमानजनक नहीं था कि वह इस प्रकार बैठा, बिना विरोध किये चुपचाप ऐसी बातों को सुने चला जा रहा है, और अपने मौन द्वारा इस विश्वास की संभावना पैदा कर रहा है कि वह भी उन्हीं में विश्वास करता है ? नेज़्दानौफ़ ने दूसरी बार मेरियाना की ओर नज़र डाली; और उसे लगा कि मेरियाना की आँखों में उसके प्रश्न का उत्तर मौजूद है। "थोड़ा सबर करो," वे कहती जान पड़ती थी, "अभी अवसर नही आया है··· अभी कोई लाभ नहीं···फिर कभी; बहुत मौका मिले गा······"

नेज़्दानौफ़ को यह सोचकर प्रसन्नता हुई कि वह उसके मन की बात समझती है। वह फिर वार्तालाप को सुनने लगा···वैलेन्निना ने अपने पति का स्थान ले लिया था तथा वह और भी आज़ादी के साथ, और भी उग्र विचारों को प्रगट कर रही थी। वह समझ ही न पाती

थी, 'निश्चित ही स···म···झ ही नहीं पाती हूँ,' कि किस प्रकार एक शिक्षित व्यक्ति, जो अभी जवान ही है, इस प्रकार पुराने ढंग के दक़ियानूसीपन से चिपका रह सकता है।

"हालाँकि एक बात का मुझे विश्वास है," उसने जोड़ा, "कि आप ऐसी बातें केवल कहने के लिए ही कह देते हैं। जहाँ तक, अक्लेसी दिमित्रिच, आपका प्रश्न है," उसने मैत्रीपूर्ण मुस्कान के साथ नेज़्दानौफ़ की ओर उन्मुख होते हुए कहा (उसे भीतर-ही-भीतर आश्चर्य हुआ कि वह उसका और उसके पिता का नाम भी जानती है), "मैं जानती हूँ कि आप सेम्योन पेत्रोविच की आशंकाओं से सहमत नहीं हैं; बोरिस मुझे आपके साथ रास्ते में अपनी बातचीत के बारे में बता चुके हैं।"

नेज़्दानौफ़ का चेहरा लाल हो गया, उसने अपनी प्लेट के ऊपर झुककर कुछ बुड़बुड़ाकर कहा जो समझ में नहीं आया। इतने बड़े-बड़े लोगों से बात करने में संकोच उसे इतना नहीं था जितना वह अभ्यस्त था। श्रीमती सिप्यागिन अभी उसकी ओर देखकर मुस्करा रही थीं, उनके पति कृपापूर्वक उनका समर्थन कर रहे थे···पर कैलोम्येत्सेफ़ ने जान-बूझकर अपना गोल एक आँख वाला चश्मा अपनी नाक और भौं के बीच अटकाया और इस विद्यार्थी की ओर आँख गड़ाकर देखने लगा जो उसकी 'आशंकाओं' से असहमत होने की जुर्रत करता था। पर नेज़्दानौफ़ को उस तरह से आतंकित करना कठिन काम था, वह तुरन्त सीधा बैठ गया और उलटकर वह भी उस फैशनेबल सरकारी अफ़सर को घूरने लगा। और जिस प्रकार अचानक ही मेरियाना को देखकर उसे साथिन का अनुभव हुआ था, उसी प्रकार कैलोम्येत्सेफ़ को देखकर उसे शत्रु का अनुभव भी हुआ! कैलोम्येत्सेफ़ भी यह बात पहचान गया; उसने अपना चश्मा निकाल लिया और मुँह फेरकर हँसने की कोशिश करने लगा···पर सफल न हो सका। केवल अन्ना जाहरोव्ना ने, जो मन-ही-मन उसकी भक्त थी, भीतर-ही-भीतर उसका पक्ष लिया, और इस अनचाहे पड़ौसी से और भी कुपित हो गई

जो उसे कोल्या से अलग कर रहा था।

कुछ देर बाद ही भोजन समाप्त हो गया। सब लोग कॉफ़ी पीने के लिए छत पर चले आये; सिप्यागिन और कैलोम्येत्सेफ़ ने सिगार सुलगा लिये। सिप्यागिन ने नेज़्दानौफ़ की ओर भी एक असली बढ़िया रिगेलिया सिगार बढ़ाया, पर उसने वह अस्वीकार कर दिया।

"ओहो! निस्सदेह!" सिप्यागिन ने कहा, "मैं तो भूल ही गया था; आप तो अपनी सिगरेट ही पीते हैं!"

"अजब रुचि है," कैलोम्येत्सेफ़ ने दाँत भीचे हुए ही कहा।

नेज्दानौफ़ करीब-करीब बरस पड़ने को ही था।" मै रिगेलिया और सिगरेट में अन्तर भली भाँति जानता हूँ, पर मैं किसी का उपकार नहीं लेना चाहता," उसके ओंठों पर आकर रह गया;...उसने अपने-आपको रोक लिया; पर उसने इस दूसरी बदतमीज़ी को भी अपने मन में 'कर्ज़ के रूप में टाँक लिया, जिसे कभी-न-कभी अपने शत्रु को चुका ही देना होगा।

"मेरियाना!" श्रीमती सिप्यागिन ने एकाएक बड़ी ज़ोर से कहा, "तुम्हें भी किसी आगन्तुक के कारण संकोच करने की ज़रूरत नहीं है......तुम भी अपनी सिगरेट पियो। इसके सिवाय," उसने नेज्दानौफ़ की ओर घूमते हुए कहा, "मैंने सुना है कि आपकी मण्डली में सब लड़कियाँ सिगरेट पीती है?"

"है तो ऐसा ही," नेज्दानौफ़ ने नीरस स्वर में उत्तर दिया। श्रीमती सिप्यागिन से उसने यह पहला वाक्य कहा था।

"जो हो, मैं नहीं पीती," उसने अपनी मखमली आँखों में लुभावनी चमक के साथ कहा......"मैं पुराने ज़माने की हूँ।"

बड़े इत्मीनान और होशियारी के साथ, मानो अपनी मामी को चिढ़ाते हुए, मेरियाना ने एक सिगरेट और दियासलाई का बक्स निकाला और पीने लगी। नेज्दानौफ़ भी मेरियाना की सिगरेट से जलाकर सिगरेट पीने लगा।

शाम बहुत ही सुन्दर थी। कोल्या और अन्ना बाग में चले गये; बाकी लोग एक घण्टे तक छत पर ही हवा का आनन्द लेते रहे। वार्तालाप और भी सजीव हो उठा······कैलोम्येत्सेफ़ साहित्य की निन्दा करने लगा; सिप्यागिन ने इस विषय में भी अपने को उदारपन्थी ही प्रगट किया, साहित्य की स्वाधीनता का पक्ष लेकर उसकी उपयोगिता का उल्लेख किया और शातोब्रियाँ की भी चर्चा करते हुए कहा कि सम्राट् एलैक्जेण्डर पावलोविच ने उसे सन्त ऐंद्री प्रथमस्मरणीय का पदक प्रदान किया था। नेज्दानौफ़ ने बहस में भाग नहीं लिया। श्रीमती सिप्यागिन उसे ऐसे भाव से देखती रहीं जिससे एक ओर तो उसके बुद्धिमत्तापूर्ण संयम की प्रशंसा प्रगट होती थी और दूसरी इस बात से थोड़ा-सा आश्चर्य भी।

फिर सब लोग चाय के लिए ड्राइंगरूम में लौट गये।

"हम लोगों में एक बड़ी बुरी आदत है, अलैक्सी दिमित्रिच," सिप्यागिन ने नेज्दानौफ़ से कहा; "हम लोग रोज़ शाम को ताश खेलते हैं, यही नहीं बल्कि वर्जित खेल खेलते हैं······ज़रा सोचिये! मैं आपको तो शामिल होने के लिए नहीं कहूंगा······पर मेरियाना अवश्य ही कृपा करके हमें प्यानो पर कुछ न कुछ सुनायेगी। संगीत से प्रेम होगा आपको, आशा करता हूँ, ऐं?" और उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना ही सिप्यागिन ने एक ताश की गड्डी उठा ली। मेरियाना प्यानो पर जा बैठी और न भला न बुरा, मेन्डलेसन के कुछ "शब्द हीन गीत" बजाती रही। "सुन्दर! सुन्दर! वाह! वाह!" कैलोम्येत्सेफ़ दूर ही से ऐसे चीख़ उठा मानो वह किसी चीज से झुलस गया हो। पर उसकी यह प्रशंसा शिष्टता के कारण ही अधिक थी। नेज्दानौफ़ भी, सिप्यागिन के आशा प्रगट करने के बावजूद, संगीत का खास प्रेमी न था।

इस बीच सिप्यागिन और उसकी पत्नी, अन्ना और कैलोम्येत्सेफ़ ताश खेलने बैठ गये······कोल्या सोने के पहले नमस्कार करने आया,

और अपने माता-पिता का आशीर्वाद और चाय के बदले एक बड़े गिलास में दूध पाकर सोने चला गया। उसके पिता ने पीछे से चिल्लाकर कहा कि कल से अलैक्सी दिमित्रिच के साथ पढाई शुरू करनी है। उसके बाद जल्दी ही, नेज्दानौफ़ को कमरे के बीच निरुद्देश्य लटकते हुए और कुछ संकोच के साथ एक फोटो-एलबम उलटते-पलटते देखकर सिप्यागिन ने उससे कहा, "सकोच की ज़रूरत नही है, अब आप जाइये और आराम कीजिये क्योकि यात्रा के बाद काफी थके हुए होगे।" उसने यह भी कहा कि उसके घर का सबसे बड़ा सिद्धान्त है आज़ादी।

नेज्दानौफ़ ने इस अनुमति का लाभ उठाकर हर एक को नमस्कार किया और चला गया। दरवाजे में वह मेरियाना से टकरा गया, और फिर उसकी आँखो को देखकर उसे विश्वास हो गया कि वह उसी जैसी ही है, यद्यपि वह मुस्कराई न थी, बल्कि निश्चित रूप से उसकी भौहे तन गई थी।

उसने अपने कमरे को सुगधित ताज़गी से भरा हुआ पाया; खिड़कियाँ सारा दिन खुली रही थी। बाग में ठीक उसकी खिड़कियो के सामने बुलबुल अपने धीमे मीठे गीत गुनगुना रही थी; पेडो की गोल सी फुनगियो के ऊपर रात्रि के आसमान मे स्निग्ध फीकी-सी आभा छाई हुई थी; चाँद ऊपर को तैर निकलने की तैयारी कर रहा था। नेज्दानौफ़ ने एक मोमबत्ती जलाई; भूरे-भूरे रात के कीड़े झुण्ड-के-झुण्ड बाग में से भीतर घुस आये और प्रकाश की ओर झपटे, पर हवा उन्हे फिर बाहर उड़ा ले गई और मोमबत्ती की नीली-पीली लौ को काँपती छोड़ गई।

"अजीब है!" नेज्दानौफ़ बिस्तर पर लेटे-लेटे सोचने लगा······ "ये लोग भले, उदार, निश्चित रूप से सहृदय जान पड़ते है······पर तो भी मेरा मन जाने कैसा विक्षुब्ध सा है। सरदार······अफसर······ जो हो, सबेरा सदा शुभ सन्देश लेकर आता है······भावुक होने से कोई लाभ नहीं।"

पर उसी समय एक चौकीदार ने बाग में अपने तख्ते को ज़ोर-ज़ोर से बार-बार पीटा और एक लम्बी-सी पुकार गूँज गई।

"हो······शि······या······र······रहो !"

"ख······ब······र······दा······र !"

"प्लोफ़ ! हे भगवान् !—लगता है जेल में हों !"

आठ

नेज़्दानौफ़ सबेरे जल्दी ही जाग गया और किसी नौकर के आने की राह देखे बिना ही उसने कपड़े पहने और बाग़ में निकल गया। बहुत बड़ा और सुन्दर था यह बाग़, और बड़ी व्यवस्थापूर्वक रखा गया था; किराये के मज़दूर रास्तों को फावड़े से छील रहे थे; झाड़ियों के गहरे हरे रंग के बीच-बीच में झाँपियाँ लिये हुए किसान-लड़कियों के लाल रूमाल झाँक उठते थे। नेज़्दानौफ़ झील की ओर जा पहुँचा। उसके ऊपर से बहुत सबेरे का कुहरा ग़ायब हो चुका था पर हलका कुहासा किनारों के छायादार कुञ्जों में अभी भी कहीं-कहीं अटका हुआ था। सूरज अभी आसमान में ऊँचा नहीं उठा था, उसकी गुलाबी किरणें झील के चौड़े रेशमी, सीसे के रंग के तल पर पड़ रही थीं। कुछ बढ़ई नहाने के चबूतरे पर काम करने में व्यस्त थे; एक नई, हाल में रंगी हुई नाव वहाँ पड़ी थी और हलकी-सी इधर-से-उधर डोलती हुई पानी में छोटी-सी भँवरें पैदा कर रही थी। मज़दूरों की आवाज़ें कभी-कभी ही और बहुत दबी-दबी-सी सुनाई पड़ती थीं। हर चीज़ के ऊपर सबेरे की, सबेरे के कार्य की, शांति और गति की, जीवन की व्यवस्था और

नियमितता के भाव की छाप थी। और यह लो, सड़क के एक मोड़ पर नेज़दानौफ़ ने देखा कि व्यवस्था और नियमितता की साक्षात् मूर्त्ति—सिप्यागिन खड़ा है।

उसने मटर जैसे हरे रंग का एक ओवरकोट पहन रखा था जो ड्रेसिंग गाउन जैसा बना हुआ था, सिर पर एक धारीदार टोपी थी। वह एक अंग्रेजी बाँस की छड़ी के ऊपर झुका हुआ था, और उसका हाल में शेव किया हुआ चेहरा संतोष से दमक रहा था। वह अपनी रियासत पर एक नजर डालने निकला था। सिप्यागिन ने बड़ी भद्रता से नेज़दानौफ़ का अभिवादन किया।

"आहा!" उसने कहा, "देखता हूँ आप भी जवान हैं और जल्दी आये हैं!" (अपने इस किंचित् अनुपयुक्त कथन से शायद उसका अभिप्राय अपनी प्रसन्नता प्रकट करने का था कि नेज़दानौफ़ भी स्वयं उसी की भाँति देर तक सोया नहीं रहा)।" हम लोग सब आठ बजे भोजन-गृह में एक साथ चाय पीते हैं; और भोजन बारह बजे। दस बजे आप कोल्या को रूसी की शिक्षा दीजिये और दो बजे इतिहास की। कल, नौ मई को उसका नामकरण दिवस है, इसलिए कोई पढ़ाई न हो सकेगी। पर मैं चाहूँगा कि आज आप शुरू कर दें।"

नेज़दानौफ़ ने झुककर अभिवादन किया, और सिप्यागिन ने फ्रेंच रीति से कई बार जल्दी-जल्दी अपना हाथ होठों और नाक तक उठाकर बिदा ली और बड़ी खूबसूरती से अपनी छड़ी घुमाते हुए और मुँह से सीटी बजाते हुए, एक महत्त्वपूर्ण अधिकारी की भाँति नहीं, बलि मनमौजी रूसी रईसजादे की भाँति, आगे बढ़ गया।

आठ बजे तक नेज़दानौफ़ बाग में पुराने पेड़ों की छाया, हवा की ताजगी, चिड़ियों के संगीत का आनंद उठाता रहा। गाँग की आवाज पर वह घर की ओर चला; तब तक सब लोग भोजनगृह में आ चुके थे। वैलेन्तिना ने उसके साथ बहुत ही मैत्रीपूर्ण व्यवहार किया, अपने सबेरे के वस्त्रों में वह उसे अपूर्व सुन्दरी लग रही थी। मेरिया के मुख

पर सदा का खोया और क्षुब्ध-सा भाव था। ठीक दस बजे पहली पढ़ाई वैलेन्निना की उपस्थिति में हुई; उसने नेज्दानौफ से पहले से ही पूछ लिया था कि उसकी उपस्थिति से बाधा तो न पड़ेगी, और शुरू से अंत तक उसने बड़े संयम से व्यवहार किया। कोल्या बुद्धिमान बालक था; प्रारम्भिक संकोच और अचकचाहट के बाद पढ़ाई संतोषजनक रीति से चली। वैलेन्निना स्पष्ट ही नेज्दानौफ़ से बहुत सन्तुष्ट थी और कई बार उसने बड़े मीठे ढंग से नेज्दानौफ को सम्बोधित किया। किन्तु वह कुछ खिंचा ही रहा······यद्यपि बहुत अधिक नहीं। वैलेन्निना रूसी इतिहास की पढाई के समय भी मौजूद थी। उसने मुस्कराते हुए घोषणा की कि इस विषय में तो शिक्षक की आवश्यकता उसे कोल्या से कम नहीं है और वह पहली पढाई के समय की भाँति ही बड़े संयम और शांति के साथ बैठी रही। तीन बजे से लगातार पाँच तक नेज्दानौफ़ अपने कमरे में रहा और पीटर्सबर्ग को चिट्ठियाँ लिखी। उसे न बहुत अच्छा ही लग रहा था न बहुत बुरा ही। वह न उकताहट ही अनुभव कर रहा था न उदासी, उसके मन का तनाव धीरे-धीरे कम हो रहा था। पर भोजन के समय वह फिर क्षुब्ध हो उठा, यद्यपि कैलोम्येत्सेफ़ अनुपस्थित था और गृहस्वामिनी का लुभावना मैत्रीभाव वैसा ही था। पर शायद इस मैत्रीभाव से ही नेज़्दानौफ़ को चिढ़ हो रही थी। इसके अतिरिक्त उसके बगल में बैठी बूढ़ी महिला अन्ना जाहारोव्ना स्पष्ट ही चिढ़ी हुई और विरोधपूर्ण थी। मेरियाना अभी भी गम्भीर थी और कोल्या भी उसको कुछ बड़ी लापरवाही से लातें मार रहा था। इसके अलावा सिप्यागिन भी कुछ चिढ़ा हुआ सा नजर आता था। वह अपने कागज के कारखाने के ओवरसियर से—एक जर्मन जिसे उसने बड़ी ऊँची तनख्वाह पर रख छोड़ा था—बहुत ही असंतुष्ट था। सिप्यागिन ने आमतौर पर जर्मनों को गाली देना शुरू किया, और बोला कि वह किसी हद तक स्लावभक्त है, यद्यपि कट्टरपंथी नही। उसने एक रूसी युवक सालोमिन का भी नाम लिया। यह अफ़वाह थी कि उसने पड़ोसी

व्यवसायी के कारखाने को बहुत ही अच्छा बना दिया है। सिप्यागिन ने इस सालोमिन से परिचय प्राप्त करने की बड़ी इच्छा प्रकट की। शाम के समय कैलोम्येत्सेफ भी, जिसकी जमींदारी सिप्यागिन के गाँव अरझानो से केवल आठ मील दूर थी, आ पहुँचा। साथ ही एक मध्यस्थ भी, एक वैसा ज़मींदार जिसका लरमन्तोफ्त ने दो ही पंक्तियों में इतना सच्चा चित्र खींच दिया है, आ गया :

"कान तक गुलूबन्द, पैरों तक कोट,

मूँछें और चेंचें और कीचड़-भरी मोटी-मोटी आँखें······" एक और पड़ौसी भी, बड़ा निराश-सा और दंतहीन मुख लिये किन्तु बहुत ही साफ़-सुथरे कपड़े पहने आ गया, और ज़िले का डाक्टर भी जो बहुत ही निकम्मा था पर भारी-भरकम शब्द कहकर अपना ज्ञान बघारा करता था; उदाहरण के लिए वह कहा करता था कि उसे पुश्किन से कुकोलनिक अधिक पसन्द है क्योंकि कुकोलनिक में 'प्रोटोप्लाज़्म' अधिक है। वे लोग सब ताश खेलने बैठ गये। नेज़्दानौफ़ अपने कमरे में चला आया और आधी रात तक पढ़ता-लिखता रहा।

अगला दिन, ९ मई कोल्या के संरक्षक संत का दिन था। सारा परिवार तीन खुली गाड़ियों में, जिन पर पीछे तख्ते पर वर्दीधारी नौकर खड़े हुए थे, गिरजाघर गये, यद्यपि गिरजाघर दो फर्लांग भी न होगा। हर चीज़ शानदार और भारी-भरकम ढंग से की गई। सिप्यागिन ने अपने पद का फीता लगाया था; वैलेन्निना ने एक हलके बनफशी रंग का पैरिस के फैशन का गाउन पहन रखा था और गिरजाघर में पूजा के समय उसने प्रार्थना एक किरमिज़ी रंग की मखमल की जिल्द में बँधी छोटी-सी पुस्तक से ही पढ़ी। इस छोटी-सी पोथी ने बहुत से बूढ़ों को भी बिलकुल अवाक् कर दिया। एक से न रहा गया तो उसने अपने पड़ौसी से पूछ ही लिया, "क्या यह कोई डायन का जादू-टोना है जो वह, भगवान् उसे क्षमा करें, इस्तेमाल कर रही है, या क्या बात है, एँ ?" गिरजाघर में फैली हुई फूलों की सुगन्ध किसानों के नये

कोटों से निकलने वाली गंधक की तीव्र गंध के साथ, कोलटार लगे बूटों और जूतों की गंध के साथ मिलकर एकाकार हो रही थी, और इन सब गंधों के ऊपर उठ रही थी धूप की मस्त कर देने वाली मिठास-भरी सुगन्ध। गाने वाले बड़ी विस्मयकारी लगन के साथ गा रहे थे, कुछ कारखाने के कर्मचारी भी उनके साथ गाने में सम्मिलित होकर उनकी सहायता कर रहे थे। उन्होंने बीच-बीच में अलग-अलग गाने का भी प्रयत्न किया! ऐसा भी अवसर आया कि जितने लोग उपस्थित थे सबको बड़ी दहशत महसूस हुई। एक ऊँची आवाज़ (वह एक कारखाने के कर्मचारी बिलमा की थी जो बढ़ते हुए क्षय रोग से ग्रस्त था और जो एकदम अकेला और बिना किसी सहायता के गा रहा था) बीच-बीच में उसकी आवाज़ फट जाती थी और उससे कुछ निचले-से स्वर निकल पड़ते थे। इन स्वरों को गाना सचमुच बड़ा कठिन कार्य था, पर साथ ही यदि वह अंश काट दिया जाता तो पूरी रचना ही व्यर्थ हो जाती·······खैर, किसी तरह वह पूरी हुई। अपना पूरा लिबास पहने एक अत्यन्त ही सम्भ्रांत लगने वाले पादरी, फ़ादर सिप्रियान ने एक हस्तलिखित पुस्तक से बहुत ही लाभदायक उपदेश दिया; दुर्भाग्यवश ईमानदार पादरी ने अपने उपदेश में कुछ बुद्धिमान असीरी राजाओं के नाम लेना आवश्यक समझा जिनके उच्चारण में उन्हे बड़ी कठिनाई हो रही थी। और यद्यपि वह अपनी विद्वत्ता प्रमाणित करने मे तो अवश्य सफल हुए, किन्तु परिश्रम के कारण वे पसीना-पसीना हो गये। नेज़्दानौफ़ जो बहुत दिनों से किसी गिरजाघर नही गया था, एक कोने में किसान-स्त्रियों के बीच छिप गया था। उन लोगों ने उसके ऊपर शायद ही कोई दृष्टि डाली हो, वे बार-बार क्रॉस का चिह्न बनातीं, नीचे झुककर प्रणाम करती और होशियारी से अपने बच्चों की नाक पोंछती। पर नये कोट पहने और अपने माथे पर काँच के मोतियों की माला लगाये किसान-लड़कियाँ और बढ़े हुए कंधे वाली तथा तस्मों और लाल पट्टियों वाली पेटीदार कुरतियाँ पहने किसान लड़के आँखे

गड़ाये और ठीक उसके सामने मुँह करके इस नये भक्त को ताक रहे थे······नेज़्दानौफ़ भी उनको देखता रहा और उसके विचार बहुत सी दिशाओं में भागते रहे।

पूजा के बाद, जो बहुत देर तक चली—क्योंकि चमत्कारी संत निकोलाई को धन्यवाद देने की पूजा प्राचीन परम्परा की सबसे लम्बी, पूजा है—सब पुजारी, सिप्यागिन के निमन्त्रण पर, उसके घर की ओर चल पड़े। कुछ और अवसरोचित संस्कार पूरे करने के बाद—पवित्र जल कमरों में छिड़कना आदि—उन्हें भरपेट भोजन कराकर संतुष्ट किया गया। भोजन के समय ऐसे अवसरों के लिए उपयुक्त लाभदायक किन्तु थकाने वाला वार्त्तालाप चलता रहा। गृहस्वामी और स्वामिनी दोनों ने भी, यद्यपि वे लोग इस समय भोजन के अभ्यस्त न थे, थोड़ा-थोड़ा खाया-पिया। सिप्यागिन ने तो यहाँ तक किया कि अत्यन्त ही शिष्ट किन्तु हँसी का एक चुटकुला भी सुना दिया, जिसने, उसके पद-सूचक फीते और रुतवे को देखते हुए, कुछ ऐसा प्रभाव उत्पन्न किया जिसे आश्वासनकारी कहा जा सकता था, फ़ादर सिप्रियान के मन में इस बात ने एक प्रकार का विस्मय और कृतज्ञता का भाव उत्पन्न किया। बदले में, और यह दिखाने के लिए भी कि अवसर आने पर वह भी कुछ ज्ञानवर्धन कर सकते हैं, फ़ादर सिप्रियान ने मुख्य पादरी (बिशप) से होने वाला अपना एक वार्त्तालाप सुना दिया। मुख्य पादरी जब उस क्षेत्र का दौरा करने आये थे तो उन्होंने नगर के मठ में ज़िले के सब पुरोहितों को मिलने के लिए बुलाया था। "वह बड़े सख्त थे, हम लोगों के ऊपर वह बड़े सख्त थे, फ़ादर सिप्रियान ने कहा; "पहले तो उन्होंने हमसे हमारे क्षेत्रों के बारे में तथा हमारी व्यवस्था के बारे में प्रश्न पूछे, और फिर उन्होंने बाकायदा परीक्षा लेना शुरू कर दिया ······मेरी ओर मुड़े तो पूछने लगे, 'तुम्हारी गिरजा का समर्पण दिवस कौन-सा है ?' मैंने कहा, 'हमारे उद्धारक का रूपपरिवर्तन।' 'उस दिन का पूजा-गीत तुम्हें याद है ?' 'अवश्य है !' 'तो गाओ !' खैर, मैंने

फौरन शुरू कर दिया। एक ही लाइन मैंने गायी होगी कि बोले, 'बंद करो! रूपपरिवर्तन क्या है, और हमें उसे किस प्रकार समझना चाहिए!' 'एक शब्द में', मैंने कहा, 'ईसा मसीह अपने शिष्यों को भगवान् की महिमा दिखाना चाहते थे!' 'ठीक,' उन्होंने कहा, 'यह लो यह एक मूर्ति है जिसे तुम मेरी स्मृति में पहनना।' मैं उनके चरणों पर गिर पड़ा। 'मैं आपकी कृपा के लिए कृतज्ञ हूँ!'......'मुझे उन्होंने इस भाँति खाली हाथ वापस न भेजा।"

"मुझे भी उनसे व्यक्तिगत परिचय का सौभाग्य प्राप्त है," सिप्यागिन ने बड़े राजसी ढंग से कहा। "बहुत ही योग्य धर्माचार्य हैं!"

"सचमुच बहुत ही योग्य हैं!" फ़ादर सिप्यागिन ने दोहराया। "यद्यपि वह निरीक्षकों पर बहुत अधिक विश्वास करके बड़ी भूल करते हैं......"

वैलेन्तिना ने किसानों के स्कूल की बात चलाई और मेरियाना के स्कूल की भावी शिक्षक होने का जिक्र किया। स्कूल का इन्तज़ाम छोटे पादरी के जिम्मे था। वह बड़े भारी डीलडौल का व्यक्ति था और उसके लम्बे लहराते बालों से औरलौफ़ घोड़े की कंघी की हुई पूँछ की हल्की-सी याद आती थी। उसने वैलेन्तिना के प्रस्ताव का समर्थन करने का प्रयत्न किया पर अपने फेफड़ों की शक्ति का ठीक अनुमान न होने के कारण उसने ऐसी गहरी आवाज़ निकाली कि वह स्वयं तो डर ही गया, दूसरे भी चौंक पड़े। इसके बाद जल्दी ही पादरी लोग चले गये।

अपनी सोने के बटन वाली नई छोटी सदरी में कोल्या ही आज का दूल्हा था; उसे उपहार भी मिल रहे थे और बधाइयाँ भी; उसके हाथ सामने की सीढ़ियों पर भी चूमे जा रहे थे और पिछवाड़े की सीढ़ियों पर भी—कारखाने के मज़दूरों द्वारा, घर के नौकरों द्वारा, बूढ़ी स्त्रियों और जवान स्त्रियों द्वारा। और किसान तो पुराने ग़ुलामी के दिनों की भाँति घर के सामने रखी मेजों के चारों ओर, जिन पर वोदका और मिठाई रखी थी, भिन-भिन करते नाच रहे थे। कोल्या एक साथ ही शरमाया

हुआ, प्रसन्न, गर्वित और संकुचित था; वह अपने माता-पिता को प्यार करके कमरे के वाहर भाग जाता। भोजन के समय सिप्यागिन ने शैम्पेन मँगवाई और अपने बेटे की स्वास्थ्य-कामना के लिए पीने के पहले उसने एक भाषण दिया। उसने 'अपने देश की सेवा करने' के महत्व का जिक्र किया; उसने कहा कि वह अपने निकोलाइ से (वह कोल्या को ऐसे ही पुकारता था) क्या आशा रखता है······और उसका क्या कर्तव्य है! पहले, अपने परिवार के प्रति; दूसरे, अपने वर्ग, अपने समाज के प्रति; तीसरे जनता के प्रति—हाँ, सज्जनो जनता के प्रति; और चौथे सरकार के प्रति! धीरे-धीरे जोश बढ़ने के साथ-साथ सिप्यागिन अन्त में अपने वास्तविक ओजस्वी स्वर में वक्तृता देने लगा। उसने रावर्ट पॉल की भाँति अपना एक हाथ कोट की जेब में डाल लिया, विज्ञान शब्द का उच्चारण करने के साथ ही वह प्रभावशाली हो गया और अपने भाषण का अन्त उसने एक लैटिन भाषा के शब्द से किया जिसका उसने तुरन्त रूसी में अनुवाद भी कर दिया। कोल्या को ग्लास हाथ में लिये हुए मेज़ के दूसरे सिरे पर अपने पिता को धन्यवाद देने के लिए और हर व्यक्ति द्वारा प्यार किये जाने के लिए जाना पड़ा। फिर ऐसा हुआ कि नेज्दा-नौफ़ और मेरियाना ने एक-दूसरे को एक-साथ देखा······वे दोनों ही शायद एक ही बात महसूस कर रहे थे······पर दोनों में से किसी ने कुछ नहीं कहा।

किन्तु नेज्दानौफ़ जो कुछ भी देख रहा था वह उसे कष्टदायक और अरुचिकर की अपेक्षा मनोरञ्जक बल्कि दिलचस्प लग रहा था; शिष्ट गृहस्वामिनी वैलेन्तिना उसे एक चतुर स्त्री जान पड़ी जो जानती थी कि वह एक अभिनय कर रही है और जो साथ ही मन-ही-मन यह जानकर प्रसन्न भी थी कि कोई दूसरा व्यक्ति भी इतना चतुर और तेज़ दृष्टि वाला है कि उसके मन को समझता है।······नेज्दानौफ़ स्वयं यह नहीं जान पा रहा था कि वैलेन्तिना के अपने प्रति इस दृष्टिकोण से उसके आत्माभिमान को कितना संतोष मिल रहा था।

अगले दिन से पढ़ाई फिर शुरू हो गई और दैनिक जीवन अपने परिचित रास्ते पर चल निकला।

एक सप्ताह अनजाने ही बीत गया.........इस बीच नेज़्दानौफ़ के अनुभव और विचार क्या थे यह उसके अपने मित्र सीलिन को एक पत्र के अंश से भली भाँति समझा जा सकता है, जो उसका स्कूल के दिनों में उसका जिमनाशियम में सहपाठी था। सीलिन पीटर्सबर्ग में नहीं, बल्कि दूर के एक प्रान्तीय नगर में अपने एक सम्पन्न सम्बन्धी के साथ रहता था जिसके ऊपर वह पूरी तरह आश्रित था। उसकी स्थिति कुछ ऐसी थी कि उसके लिए वहाँ से कहीं चले जाने की कल्पना करना भी बेकार था; वह एक कमज़ोर, डरपोक और सीमित किन्तु असाधारण रूप से निर्मल स्वभाव का व्यक्ति था। राजनीति में उसे तनिक भी दिलचस्पी न थी, कुछ थोड़ी-बहुत साधारण-सी पुस्तकें उसने पढ़ी थीं, समय काटने के लिए बाँसुरी बजा लिया करता था और युवती स्त्रियों से घबराता था। सीलिन नेज़्दानौफ़ को बहुत प्यार करता था—वह आमतौर पर अपने स्नेह-सम्बन्धों में बहुत भावुक था। नेज़्दानौफ़ जितने निःसंकोच भाव से अपने मन की बात ब्लादीमीर सीलिन से कह पाता था उतना और किसी से नहीं। उसे पत्र लिखते समय हमेशा उसे लगता मानो वह किसी दूसरी दुनिया में रहने वाले प्रिय और अंतरंग व्यक्ति से अथवा स्वयं अपने आप भाव-विनिमय कर रहा हो। नेज़्दानौफ़ सीलिन के साथ एक ही नगर में साथी के रूप में रह सकने की संभावना की तो कल्पना भी नहीं कर सकता था.........बहुत सम्भव है कि वह उसके प्रति तुरन्त ही उदासीन हो उठता, उन दोनों में सामान्य इतना कम था। पर वह उसे बड़ी आतुरता और पूरे खुलेपन के साथ बहुत कुछ लिखा करता था। दूसरों के साथ—कम-से-कम कागज पर—वह या तो बनता रहता या बनावटी बात कहता; पर सीलिन के साथ—कभी नहीं! सीलिन कसम का वैसा धनी न था, वह बहुत ही कम, छोटे-छोटे भौंडे वाक्यों में ही लिख पाता था; न नेज़्दानौफ़ को ही बड़े

उत्तरों की जरूरत थी। उसके बिना ही वह यह जानता था कि उसका मित्र उसके प्रत्येक शब्द को पीता रहा था, वैसे ही जैसे सड़क की धूल मेंह की बूँद को पीती जाती है; वह उसके दिल की बातों को पवित्र धरोहर की भाँति छिपाये रखता और अपने उदासी भरे एकान्त में डूबा हुआ, जिससे वह कभी न निकल सकता था, केवल अपने मित्र की जिन्दगी को ही जीता रहता था। नेज़्दानौफ़ ने दुनिया में किसी से भी उसके साथ अपने सम्बन्ध की चर्चा न की थी; वह उसके लिए बहुत ही मूल्यवान था।

"प्यारे दोस्त, मेरे सच्चे व्लादीमीर," उसने लिखा—वह हमेशा उसे सच्चा कहता और यह उचित ही था—"मुझे बधाई हो। मैं अब आराम की जगह में आ पड़ा हूँ, और अब आराम करके अपनी शक्ति फिर से जुटा सकूँगा। एक अमीर आदमी सिप्यागिन के मकान में शिक्षक के रूप में रह रहा हूँ। मैं उसके छोटे-से बेटे को पढ़ाता हूँ, बढ़िया-बढ़िया खाना खाता हूँ (जीवन में इतना जी भरकर कभी नहीं खाया होगा!), गहरी नींद सोता हूँ, सुन्दर देहात में जी भरकर घूमता हूँ, और, जो सबसे बड़ी बात है, कुछ समय के लिए अपने पीटर्सबर्ग के दोस्तों की देख-भाल से भाग सका हूँ। और हालाँकि शुरू-शुरू में तो बड़ा जी उकताता था, अब मुझे अच्छा लगने लगा है। अब जल्दी ही मैं वह काम शुरू करना चाहता हूँ जिसके बारे में तुम जानते ही हो (कहावत है न कि कुकुरमुत्ता बनते हो तो फिर चलो टोकरी में), और ठीक इसीलिए उन्होंने मुझे यहाँ आने भी दिया है। पर तब तक आराम की ज़िन्दगी बिता लूँगा, मोटा-तगड़ा हो लूँगा और अगर सनक सवार हुई तो शायद कुछ कविताएँ भी लिखूँगा। इस प्रदेश के बारे में फिर कभी लिखूँगा। जायदाद का इंतज़ाम अच्छा है, हालाँकि कारखाने की हालत कुछ खराब मालूम होती है। जहाँ तक किसानों का सवाल है, कुछ तो बिल्कुल ही दूर-दूर रहते हैं; और तनख्वाह पाने वाले नौकर हमेशा इतना विनम्र मुख बनाये रहते हैं। पर उन सबका

हाल बाद में लिखूँगा। घर के लोग सब सुसंस्कृत हैं, उदार हैं; सिप्यागिन तो हमेशा इतना कृपालु रहता है—ओह ! इतना कृपालु; और फिर अचानक ही ओजस्वी वक्तृता भी झाड़ने लगता है, पर है बहुत ही शिक्षित और सुसंस्कृत ! गृहस्वामिनी तो सुन्दरता की देवी है—पर मेरे ख्याल से मक्कार बिल्ली है; वह हरएक के ऊपर तेज़ नज़र रखती है; और कोमल तो ऐसी है मानो शरीर में एक भी हड्डी न हो ! उससे मुझे डर लगता है; तुम जानते ही हो, महिलाओं से मेरा व्यवहार कैसा होता है ! कुछ पड़ौसी भी हैं—पर सब कमबख्त हैं—और एक बुढिया से तो मुझे बड़ी चिढ़ छूटती है···पर मेरी सबसे अधिक दिलचस्पी है एक लड़की में—वह कोई रिश्तेदार है या मित्र भगवान् जाने, पर मुझे लगता है जैसे वह उसी मिट्टी की बनी हो जिसका मैं······"

इसके बाद मेरियाना के रूप-रंग और उसके स्वभाव का वर्णन था। आगे उसने लिखा था :

"वह दुखी, अभिमानिनी, झेंपू, एकान्तप्रिय और सबसे अधिक दुखी है, इसमें तो मुझे कोई सन्देह नहीं। पर वह क्यों है दुखी, यह मैं अभी तक नहीं जानता। वह ईमानदार है यह भी मेरे आगे स्पष्ट है; पर नेकदिल भी है या नहीं यह अभी अनिश्चित है। क्या कोई एकदम नेकदिल स्त्रियाँ ऐसी भी होती हैं, जो बुद्धू न हों ? और क्या यह ज़रूरी ही है कि हों ? किन्तु मैं आम तौर पर स्त्रियों के बारे में बहुत ही कम जानता हूँ। गृहस्वामिनी उस लड़की से चिढ़ती है···और वह लड़की गृहस्वामिनी से···पर उन दोनों में कौन सही है, यह मैं नहीं जानता। मेरा अनुमान है कि ग़लती गृहस्वामिनी की ही है···खासतौर पर इसलिए कि वह लड़की के साथ तनिक भी शिष्टता का व्यवहार नहीं करती, जबकि लड़की की अपनी सरक्षिका से बातचीत करते समय भौंहे तक परेशानी से फड़कने लगती है। सचमुच वह बहुत ही घबराई-सी रहती है; इस बात में भी वह मेरी जैसी ही है। और वह भी मेरी

ही तरह, हालाँकि ठीक उसी प्रकार से नहीं, जिन्दगी से उखड़ी-उखड़ी-सी रहती है।

"जब सब बातें कुछ और अधिक स्पष्ट हो जायेंगी तो मैं तुम्हें विस्तार से लिखूँगा······"

"मैंने अभी बताया ही कि मुझसे वह शायद ही कभी बोलती हो; पर जो थोड़े-बहुत शब्द उसने मुझे सम्बोधन करके कहे हैं (हमेशा अचानक और अप्रत्याशित रूप में ही), उनमें एक प्रकार की अनगढ़ निश्छलता है···मुझे यह अच्छा लगता है।

"अच्छा, इसी सिलसिले में, क्या तुम्हारा रिश्तेदार अभी भी तुम्हे उसी तरह रखता है? क्या अभी उसने अपने अंजाम की बात सोचना शुरू नहीं किया?

"क्या तुमने ओरनबर्ग प्रांत के अन्तिम राज्याभिलाषियों के बारे में 'यूरोप सदेश' का लेख पढ़ा? वह १८३७ में हुआ था, दोस्त! मैं उस पत्रिका को पसंद नहीं करता, और लेखक भी पुरागपंथी ही है; पर बात दिलचस्प है और विचारोत्तेजक है······"

नौ

मई का महीना भी आधा बीत गया। गर्मी के दिन आ पहुँचे।

एक दिन अपनी इतिहास की पढ़ाई खत्म करके नेज़दानौफ़ बगीचे में चला गया और वहाँ से बर्चवन में जो बगीचे के ही एक ओर था। इस जंगल का कुछ हिस्सा तो पंद्रह बरस पहले लकड़ी के व्यापारियों ने कटवा डाला था, पर उन सभी जगहों पर बर्च के नये-नये पेड़ घने उग आये थे। पेड़ों के तने नरम फीके रंग के चाँदी के खम्भों की तरह पास-पास खड़े थे, जिन पर भूरे रंग के छल्लों की धारियाँ पड़ी थीं। छोटी-छोटी पत्तियाँ एक-से चमकीले हरे रंग की थीं, मानो किसी ने उन्हें धोकर ऊपर वारनिश कर दी हो। वसंत ऋतु की नई घास पिछले साल की गिरे हुए पत्तों की एक-सी काली सतह के उपर छोटी-छोटी पतली-सी जीभें निकाल रही थी। छोटी-छोटी पगडंडियाँ सारे जंगल में जाल की तरह इधर-उधर फैली हुई थीं; पीली चोंच वाली काली चिड़ियाँ, मानो डर से एकाएक चीखकर पगडंडियों के ऊपर, धरती के समीप ही पर फड़फड़ाती हुई झाड़ियों में पागलों की तरह झपटकर घुस जातीं। आधे घण्टे तक चलने के बाद आखिरकार नेज़दानौफ़ एक

गिरे हुए पेड़ के तने पर बैठ गया। उसके चारों ओर एक भूरे पुराने बक्कलों का ढेर लगा था और वे कुल्हाड़ी के उखाड़े हुए जिस प्रकार गिरे थे वैसे ही ढेरों मे पड़े हुए थे। जाड़ों की बरफ़ बार-बार उन्हें ढक लेती थी और फिर वसंत ऋतु में उनके ऊपर मे पिघल कर बह जाती और कोई उन्हें छूता न था। नेज़दानौफ़ नये वर्च वृक्षों के एक घने कुञ्ज की घनी नरम छाया में बैठा था। वह कुछ भी नहीं सोच रहा था, उसने वसंत के उस विचित्र अनुभव के आगे अपने आपको पूरी तरह समर्पित कर दिया था, जिसमें बूढ़े और जवान सबके लिए ममान रीति से, एक प्रकार का पीड़ा का भाव रहता है···जवानों में आशा की बेचैनी भरी पीड़ा···बूढ़ों में खेद का जमा हुआ-सा दर्द···।

एकाएक नेज़दानौफ़ को पास आती हुई किसी की पदचाप सुनाई पड़ी।

कोई एक आदमी नहीं आ रहा था, न तो जूते या भारी बूट पहने कोई किसान ही, और न नंगे पैरों कोई किसान स्त्री ही। ऐसा लगता था मानो दो व्यक्ति धीमी एक-सी चाल से टहल रहे हों···किसी स्त्री के वस्त्रों की हलकी-मी सरसराहट सुनाई पडी···।

अचानक ही एक खोखली-सी किसी पुरुष-कण्ठ की आवाज़ सुनाई पडी, "तो यही तुम्हारा अंतिम निर्णय है?—कभी नहीं?"

"कभी नहीं!" दूसरे नारी-कण्ठ ने कहा। यह आवाज़ नेज़दानौफ़ को कुछ परिचित-सी लगी। दूमरे ही क्षण पगडण्डी के मोड़ पर, जहाँ वह बर्च वृक्षों के पास से घूमती थी, एक साँवले, चोट से नीली आँख वाले पुरुष के साथ, जिसे नेज़दानौफ़ ने आज से पहले कभी न देखा था, मेरियाना निकल आई।

नेज़दानौफ़ को देखकर दोनों ठिठक गये, मानो किसी ने उन्हें गोली मार दी हो, और वह स्वयं तो इतना हतबुद्धि हो गया कि जहाँ वह बैठा था, उस पेड़ के तने से उठना भी भूल गया···मेरियाना के बालों की जड़ तक लज्जा मे लाल हो उठी, पर दूमरे क्षण वह हिकारत से

मुस्करा उठी। किसके लिए थी वह मुस्कराहट—लज्जित हो उठने के कारण अपने लिए या नेज्दानौफ़ के लिए ?···उसके संगी की घनी भौहे तन गईं, और उसकी बेचैन आँखों की पीली-सफेदी में एक चमक-सी दिखाई दी। फिर उसने मेरियाना की ओर देखा और दोनों नेज्दानौफ़ की ओर से पीठ मोडकर चुपचाप उसी धीमी चाल से बढते चले गये, और नेज्दानौफ़ स्तम्भित एकटक दृष्टि से उनका अनुसरण करता बैठा रहा।

आध घण्टे बाद वह घर लौटा और अपने कमरे मे चला गया, और जब गांग की आवाज सुनकर वह भोजनगृह मे पहुँचा तो उसने वहाँ उस साँवले अजनबी को बैठे देखा जिससे उसकी जंगल मे मुठभेड़ हो गई थी। सिप्यागिन ने नेज़दानौफ़ को उसके पास ले जाकर उसका परिचय कराया, "मेरे साले साहब, वैलेन्निना के भाई—सर्जी मिहालोविच मार्केलौफ़।"

"आशा करता हूँ आप लोगों मे अच्छी मित्रता होगी, सज्जनो!" सिप्यागिन ने अपनी विशिष्ट गौरवपूर्ण ढग से हँसमुख किन्तु खोई-सी मुस्कान के साथ कहा।

मार्केलौफ ने चुपचाप झुककर अभिवादन किया; नेज़दानौफ़ ने उसी प्रकार उसका प्रत्युत्तर दिया···सिप्यागिन अपने छोटे-से सिर को हलका-सा झटका देता हुआ और कन्धों को सिकोड़ता हुआ वहाँ से हट गया मानो कह रहा हो, 'मैंने अपना कर्तव्य पूरा कर दिया······ अब आप लोगों में मित्रता हो या न हो इससे मुझे कोई वास्ता नही।"

वे दोनों निश्चल खड़े थे, तभी वैलेन्निना उनकी ओर बढ आई और फिर दोनो का एक-दूसरे से परिचय करा दिया, तथा उस खास थपथपाती-सी चमक के साथ, जो चाहे जब वह अपनी खूबसूरत आँखों में भर सकती जान पड़ती थी, उसने अपने भाई से कहा—

"क्या बात है, प्यारे सर्जी, तुम तो हम लोगों को बिल्कुल ही भूल गये ? तुम तो कोल्या के नाम-दिवस पर भी नहीं आये। क्या आजकल

बहुत काम-काज में लगे हुये हो ? यह अपने यहाँ किसानों में कुछ नई व्यवस्था कर रहे हैं", उसने नेज़्दानौफ़ की ओर मुड़कर कहा, "बिल्कुल नई, हर चीज का तीन-चौथाई उनके लिए और एक-चौथाई अपने लिए और तो भी इन्हें लगता है कि आप बहुत ज्यादा लिये ले रहे हैं।"

"मेरी बहन को हँसी करने की आदत है," मार्केलौफ़ ने नेज़्दानौफ़ से कहा, "पर मैं उसकी इस बात से सहमत हूँ कि जो चीज कम-से-कम सौ आदमियों की है, उसमें से एक-चौथाई एक ही आदमी का ले लेना, अवश्य ही बहुत ज्यादा है।"

"अच्छा क्या आपने, अलैक्सी दिमित्रिच, आपने भी मुझे हँसी करते देखा है ?" श्रीमती सिप्यागिन ने अपनी आँखों और आवाज की उसी सहलाने वाली मिठास से पूछा।

नेज़्दानौफ़ से कोई उत्तर न बना और उसी समय कैलोम्येत्सेफ़ के आने की घोषणा हुई। गृह-स्वामिनी उससे मिलने चली गई और कुछ ही समय बाद खानसामा ने उपस्थित होकर अपनी गुनगुनाती-सी आवाज में सूचित किया भोजन मेज पर लगाया जा चुका है।

भोजन के समय नेज़्दानौफ़ मार्केलौफ़ और मेरियाना की ओर ध्यान दिये बिना न रह सका। दोनों आस-पास बैठे थे, आँखें नीची किये हुए, होंठ भींचे, एक कठोर, उदास, लगभग क्रुद्ध भाव से। नेज़्दानौफ़ भी आश्चर्य में पड़ा रहा कि मार्केलौफ़ श्रीमती सिप्यागिन का भाई कैसे है। उन दोनों के बीच इतनी कम समानता थी। एक बात शायद थी कि दोनों का ही रंग साँवला था। किन्तु वैलेन्तिना में उसके मुख, बाँहों और कंधों का एक-सा पक्का रंग उसकी सुन्दरता का एक स्रोत था… जबकि उसके भाई का रंग इतना काला था, जिसे शिष्ट लोग ताँबे के रंग का कहते हैं, पर रूसी दृष्टि से जिसे देखकर अनिवार्य रूप से पैरों में लपेटने के चमड़े की याद आती हो। मार्केलौफ़ के बाल घुँघराले, कुछ अधिक टेढ़ी नाक, मोटे होंठ, धँसे हुए गाल, सिकुड़ी हुई छाती और नसों से भरे हाथ थे। उसका सारा बदन नसों से भरा हुआ और रूखा

था; और वह कठोर, अटकती-सी तेज आवाज में बोलता था। उसकी आँखें उनीदी-सी और चेहरा अक्खड था और वह बहुत ही चिडचिडा लगता था। उसने बहुत ही कम खाया-पिया और रोटी की छोटी-छोटी गोलियाँ बनाने में व्यस्त रहा, बस कभी-कभी वह कैलोम्येत्सेफ पर एकाध नजर डाल लेता। कैलोम्येत्सेफ अभी हाल ही में शहर से एक अप्रिय सिलसिले में गवर्नर से मुलाकात करके लौटा था। इस विषय में वह बडी सचेष्टता के साथ चुप था, यद्यपि दूसरे विषयो पर वह बहुत आजादी के साथ बाते कर रहा था।

सिप्यागिन, सदा की भाँति ही, जब भी वह बहुत बहकने लगता तो उसे सम्भाल लेता। उसके चुटकुलो पर वह बहुत हँसता था, हालाँकि वह उन्हे बहुत ही प्रतिक्रियावादी कहता था। कैलोम्येत्सेफ ने सुनाया कि एक बार किसानो के स्कूल में उसने विद्यार्थियों से पूछा, "बतबिलाव क्या होता है ?" और क्योकि कोई भी, शिक्षक तक, कोई उत्तर न दे सका तो उसने दूसरा प्रश्न पूछा, "वेन्डारू क्या होता है ?" और हेम्नित्सर की पंक्ति का उद्धरण भी दे दिया, 'मूर्ख वेन्डारू जो दूसरे जानवरो की नकल करता है।' और उस प्रश्न का भी कोई उत्तर न दे सका। यह तो आपके किसान स्कूलो की हालत है !

"पर क्षमा कीजिये", वैलेन्तिना ने कहा, "यह तो मै भी नही जानती कि ये जानवर कैसे होते है।"

"देवी जी!" कैलोम्येत्सेफ ने कहा, "आपको जानने की तिलमात्र भी आवश्यकता नही है ?"

"तो फिर किसानो को ही जानने की क्या जरूरत है ?"

"क्यो, क्योकि उनके लिए प्रूधों या ऐडम स्मिथ की अपेक्षा बत-बिलाव या वेंडारू के बारे में जानना ज्यादा अच्छा है।"

पर यहाँ सिप्यागिन ने फिर उसकी डोर खीची और कहा कि ऐडम स्मिथ मानव ज्ञान का बडा भारी ज्योति-स्तम्भ है और उसके सिद्धान्तो को सब लोग······(उसने अपने लिए एक ग्लास मे बढिया शराब ढाल

ली) अपनी माँ के दूध के साथ ही (ग्लास को नाक से लगाकर उसने सूँघा, आत्मसात् कर सके तो बहुत ही उत्तम हो !.........उसने ग्लास खाली कर दिया; कैलोम्येत्सेफ ने भी पीकर शराब की तारीफ की।

मार्केलौफ़ पीटर्सबर्ग के इस अफ़सर की लम्बी-चौड़ी बातों की ओर खास ध्यान नहीं दे रहा था, पर दो-एक बार उसने प्रश्नसूचक दृष्टि से नेज़्दानौफ़ की ओर ताका और रोटी की गोली उछालकर उसे बकवासी आगंतुक की नाक पर मारते-मारते ही रह गया......

सिप्यागिन ने अपने साले की चुप्पी में बाधा नहीं डाली, वैलेन्तिना ने भी कुछ न कहा। स्पष्ट था कि पति-पत्नी दोनों मार्केलौफ़ को सनकी मानने के आदी थे, जिसे न छेड़ना ही अच्छा है।

भोजन के बाद मार्केलौफ़ बिलियर्ड के कमरे में जाकर सिगार पीने लगा और नेज्दानौफ़ अपने कमरे के लिए चला। बरामदे में उसकी मेरियाना से भेंट हो गयी। वह उससे बचकर निकल जाने ही को था ......पर उसने एक बड़ी अटपटी मुद्रा से उसे रोक लिया।

"मि० नेज़्दानौफ़," वह कहने लगी; उसकी आवाज़ सर्वथा स्थिर न थी। "वैसे इस बात से मेरा कुछ आता-जाता नहीं कि आप मेरे बारे में क्या सोचते हैं; पर तो भी मैं समझती हूँ...मैं समझती हूँ..." (उसे शब्द नहीं मिल रहा था)—"मैं आपको यह बता देना ठीक समझती हूँ कि आज जब जंगल में मि० मार्केलौफ़ के साथ मेरी आपसे मुलाकात हुई...कहिये, निःसन्देह आप ताज्जुब कर रहे होंगे कि हम लोग दोनों इतने घबरा क्यों गये, और हम दोनों क्यों वहाँ इस प्रकार मानो पहले से तय करके पहुँचे थे ?"

"अवश्य ही यह मुझे थोड़ा अजीब तो लगा था," नेज्दानौफ़ ने शुरू किया।

"मि० मार्केलौफ़ ने," मेरियाना ने बीच ही में कहा, "मुझसे विवाह का प्रस्ताव किया था जिसे मैंने अस्वीकार कर दिया। यही मैं आपको बताना चाहती थी; इसलिए—नमस्कार। आपको आज़ादी है

मेरे बारे में जो चाहे सोचें ।"

वह तेजी से मुडी और लम्बे-लम्बे डग रखती हुई बरामदे में आगे बढ गई ।

नेज्दानौफ अपने कमरे में चला आया और अपनी खिडकी के आगे बैठकर सोचने लगा । कैसी अजीब लडकी है ! और यह आकस्मिक उफान, यह अनामन्त्रित रहस्योद्घाटन किस लिए ? क्या है यह—मौलिक होने की इच्छा, केवल ढोंग या अभिमान ? बहुत सभव है अभिमान । वह छोटे-से-छोटा भी सन्देह बर्दाश्त नही कर सकती ।··· उसे यह विचार भी असह्य लगता है कि कोई उसके बारे मे गलत धारणा बनाये । अजीब लडकी है !"

नेज्दानौफ यही सब सोचता रहा, नीचे छत पर उसी के बारे मे वार्तालाप हो रहा था जो उसे एकदम साफ-साफ सुनायी पड गया ।

"मै स्वभाव मे ही पहचानता हूँ," कैलोम्येत्सेफ जोर देकर कह रहा था, "कि वह पक्का लाल प्रजातन्त्रवादी है । जिन दिनो मै मास्को के गवर्नर-जनरल के अधीन एक विशेष आयोग में काम कर रहा था, तो मै इन सज्जनो—लाल दल वालो—और राज्य के विरोधियो दोनो को फौरन पहचान जाया करता था । कभी-कभी मेरी नाक बडी तेज़ साबित होती है ।" यहाँ पर कैलोम्येत्सेफ ने बताया कि किस प्रकार उसने एक बार मास्को के आसपास एक पुराने राजद्रोही को पकडकर पुलिस के हवाले कर दिया था । वह आदमी अपने मकान की खिडकी में से कूदकर निकल भागने मे करीब-करीब सफल हो गया था········ "और उसके पहले वह आखिरी मिनट तक बिल्कुल सीधा-सादा चुपचाप बैठा था, शैतान कही का !"

कैलोम्येत्सेफ यह कहना भूल गया कि वही बूढा जब जेल में ठूँस दिया गया तो उसने खाना-पीना बिल्कुल बद कर दिया था और भूखो प्राण दे दिये थे ।

"और आपका नया मास्टर," उत्साही अफ़सर ने आगे कहा, "वह

भी लाल है, इसमें कोई संदेह नहीं ! आपने ध्यान दिया है कि वह पहले कभी अभिवादन नहीं करता ?"

"और क्यों झुके वह पहले ?" श्रीमती सिप्यागिन ने कहा, "इसके विपरीत ठीक उसकी यही बात मुझे अच्छी लगती है।"

"जहाँ वह नौकरी करता है उस जगह मैं अतिथि हूँ", कैलोम्येत्सेफ़ ने जोर से कहा, "हाँ, हाँ, पैसे के लिए नौकरी करता है......इसलिए मैं उससे श्रेष्ठ हुआ और पहले उसी को अभिवादन करना चाहिये।"

"आप बड़े कठोर व्यक्ति हैं, कैलोम्येत्सेफ़," सिप्यागिन ने उसके नाम के बीच 'ये' पर ज़ोर देते हुए कहा, "मुझे क्षमा करें तो यह सब मुझे पुरानी बातें जान पड़ती है। मैंने उसकी सेवाएँ, उसका काम खरीदा है, पर वैसे वह आज़ाद है।"

"वह दबाव नहीं महसूस करता", कैलोम्येत्सेफ़ ने कहा, "दबाव ! ये सब लाल लोग ऐसे ही होते हैं। सच कहता हूँ, इन लोगों के लिए मेरी नाक बड़ी तेज़ है ! शायद इस बारे में लादिला मेरी समानता कर सके। अगर यह मेरे हाथों में पड़ जाय, यह आपका मास्टर, तो मैं ज़रा उसे सीधा कर दूँ ! उसे उठाकर बैठा कर दूँ। तब वह ज़रा दूसरे ही सुर में गाये, और मज़ाल है फिर झुककर सलाम न करे ! ......बड़ी तबियत खुश हो !"

"गधा, शैतान कहीं का !" नेज़्दानौफ़ ऊपर से चिल्ला पड़ने ही को था......किन्तु उसी समय उसके कमरे का दरवाज़ा खुला और नेज्दानौफ़ के आश्चर्य का ठिकाना न था, उसमें से मार्केलौफ़ ने अन्दर प्रवेश किया।

दस

नेज्दानौफ़ उमसे मिलने के लिए अपनी जगह से उठा। पर मार्केलौफ़ सीधा उसकी ओर बढ आया और अभिवादन किया अथवा मुस्कराये बिना ही उसने पूछा कि क्या वह पीटर्सबर्ग विश्वविद्यालय का विद्यार्थी अलैक्सी दिमित्रिच नेज्दानौफ़ ही है ?

"हाँ,...निस्सन्देह", नेज्दानौफ़ ने उत्तर दिया।

मार्केलौफ़ ने अपनी बगल की जेब से एक खुला हुआ पत्र निकाल लिया। "तो लीजिए इसे पढ लीजिये। वैसिली निकोलएविच का है", उसने अपनी आवाज को बहुत धीमा करते हुए जोड़ा।

नेज्दानौफ़ पत्र को खोलकर पढने लगा। वह कुछ-कुछ गश्ती चिट्ठी की तरह था जिसमें पत्रवाहक सर्जी मार्केलौफ़ को हममें से एक बताया गया था। और कहा गया था कि उस पर पूरा भरोसा किया जा सकता है। आगे संगठित कार्य और कुछ सिद्धान्तों के प्रचार की तात्कालिक आवश्यकता के सम्बन्ध में उपदेश था। गश्ती चिट्ठी दूसरों के अलावा विश्वसनीय व्यक्ति के रूप में नेज्दानौफ़ के नाम भी थी।

नेज़्दानौफ़ ने मार्केलौफ़ की ओर अपना हाथ बढ़ा दिया और स्वयं

एक कुर्सी पर बैठते हुए उसे भी बैठने को कहा। मार्केलौफ़ बिना कुछ भी कहे सिगरेट सुलगाने लगा। नेज़्दानौफ़ ने भी उसी का अनुसरण किया।

"क्या अभी आपको यहाँ के किसानों के साथ दोस्ती बढ़ाने का समय मिल सका है ?" उसने आखिरकार पूछा।

"नहीं, अभी तो नहीं मिल पाया।"

"तो शायद यहाँ आये आपको बहुत दिन नहीं हुए ?"

"बस एक पखवारा हुआ चाहता है।"

"बहुत व्यस्त रहे ?"

"खास नहीं।"

मार्केलौफ़ ने कुछ डरावने तौर पर खाँसा।

"ह····म ! यहाँ के किसान बड़े निकम्मे हैं," उसने कहा, "बिलकुल कुछ नहीं जानते। उन्हें शिक्षा की जरूरत है। गरीबी बहुत है, पर उन्हें यह बताने वाला कोई नहीं है कि उस गरीबी का कारण क्या है ?"

"आपके बहनोई के जो दास थे, वे तो, जहाँ तक मैं समझ पाया, गरीब नहीं हैं," नेज़्दानौफ़ ने कहा।

"मेरे बहनोई साहब बड़े ढोंगी हैं, वह लोगों की आँखों में धूल झोंकना जानते हैं। यहाँ के किसान सचमुच निकम्मे हैं। पर यहाँ एक कारखाना भी है। असल में वहीं कोशिश करनी चाहिये। यहाँ तो बस फावड़ा डालने भर की देर है, बस सारा चींटियों का छत्ता एकदम चल निकलेगा। आपके साथ कुछ पुस्तकें हैं ?"

"हाँ······पर अधिक नहीं।"

"मैं आपको कुछ भिजवा दूँगा। पर आपके साथ क्यों नहीं है ?"

नेज़्दानौफ़ ने कोई उत्तर नहीं दिया। मार्केलौफ़ भी चुप हो गया और अपने नथुनों से धुआँ निकालने लगा।

"पर वह कैलोम्येत्सेफ़ कैसा जंगली है !" उसने एकाएक कहा। भोजन के समय मेरी इच्छा हो रही थी कि उठकर उन श्रीमान् के पास

जाऊँ और उनके उस घमंडी मुख को कुचलकर रख दूँ जिससे दूसरों को कुछ सबक मिल जाय। पर नहीं! इस समय सरकारी अफ़सरों को मारने से अधिक जरूरी काम सामने हैं! मूर्खों की बे-सिर-पैर की बातें सुनकर क्रुद्ध होने का यह समय नहीं है। यह समय तो उन्हें वाहियात काम करने से रोकने का है।"

नेज्दानौफ़ ने सहमति से सिर हिलाया। मार्केलौफ़ फिर सिगरेट का धुआँ निकालने लगा।

"यहाँ इन तमाम नौकरों में एक समझदार आदमी है," उसने फिर शुरू किया, "आपका नौकर इवान नहीं······वह तो ठस है, पर एक दूसरा·······उसका नाम है किरिल, वह भोजन के समय सहायता करता है"—(यह किरिल बड़ा पियक्कड़ था)'—'आप उसे देखियेगा है तो बड़ा पियक्कड़······पर ज्यादा सख्त होने से कोई फ़ायदा नहीं। अच्छा मेरी बहन के बारे में आपकी क्या राय है?" उसने एकाएक सिर उठाकर अपनी पीली आँखें नेज्दानौफ़ पर गड़ाते हुए पूछा। "वह मेरे बहनोई से भी ज्यादा ढोंगी है। आपका क्या विचार है?"

"मेरा ख्याल है कि वह बहुत ही मिलनसार और हँसमुख स्वभाव की महिला है······और, साथ ही बहुत सुन्दर भी हैं।"

"हुँ! आप पीटर्सबर्ग के सज्जन कितनी सफ़ाई और नफ़ासत के साथ बातें करते हैं!······बस उसकी तारीफ़ ही करते बनती है। अच्छा·····जहाँ तक·······"उसने शुरू किया, पर एकाएक उसकी भौंहें तन गईं, चेहरा काला पड़ गया, और वह अपना वाक्य पूरा न कर सका। "मुझे लगता है कि हम लोगों को खुलकर बात करनी होगी," उसने फिर शुरू किया, "पर यह काम यहाँ नहीं हो सकता। किसे पता है? शायद दरवाजे पर कान लगाये सुन ही रहे हों, मुझे ताज्जुब न होगा। जानते हैं मेरा क्या प्रस्ताव है? आज है शनिवार, कल तो शायद कोल्या को आप पढ़ायेंगे नहीं? पढ़ायेंगे?"

"कल तीन बजे मुझे उसके साथ अगले सप्ताह के काम की

रिहर्सल करनी है।"

"रिहर्सल ! मानो आप लोग रंगमंच पर हों ! ज़रूर मेरी बहन ने निकाला होगा यह शब्द। खैर, जो भी हो। क्या आप तुरन्त मेरे साथ चल सकेंगे ? मेरी जगह यहाँ से सिर्फ आठ मील दूर है। मेरे घोड़े अच्छे हैं; हवा की तरह चलते हैं—आप रात को मेरे साथ रहेंगे और सबेरे भी—कल तीन बजे तक मैं आपको यहाँ पहुँचा दूँगा। मंजूर है ?"

"पूरी तरह", नेज़्दानौफ़ ने कहा। मार्कलौफ़ के प्रवेश के बाद से ही वह खलबली और उलझन की हालत में था। उसकी आकस्मिक घनिष्ठता ने उसे कुछ घबरा दिया था। साथ ही वह उसकी ओर खिंच भी रहा था। उसे लग रहा था कि उसके सामने जो व्यक्ति है सम्भवतः वह कुछ ठस हो, पर निर्भ्रान्त रूप में वह ईमानदार और दृढ़ है। और फिर जंगल में वह विचित्र भेंट, मेरियाना की अप्रत्याशित सफ़ाई……।

"तब बहुत बढ़िया है !" मार्कलौफ़ ने जोर से कहा, "आप तैयार हो जाइये, तब तक मैं गाड़ी तैयार करने के लिए कहे आता हूँ। गृहस्वामियों से कुछ पूछने की जरूरत तो नहीं है न ?"

"मैं उन्हें सूचित कर दूँ। बिना उसके तो शायद मुझे नहीं जाना चाहिये।"

"मैं कह दूँगा", मार्कलौफ़ ने कहा "आप घबराइये मत। इस समय तो वे लोग ताश खेलने में लगे हैं। आपकी अनुपस्थिति महसूस भी न होगी। मेरे बहनोई साहब प्रमुख राजनीतिक नेता तो बनना चाहते हैं, पर इसके लिए उनके पास सिफारिश सिर्फ एक ही है कि वह ताश के अच्छे खिलाड़ी हैं। वैसे, इस प्रकार भी लोगों की तकदीर चमकी है।……तो आप तैयार हो जाइये। अभी सब इन्तजाम किये लेता हूँ।"

मार्कलौफ़ चला गया। एक घंटे के बाद नेज़्दानौफ़ एक बड़ी

पुरानी, पर बहुत चौड़ी, खुली और आरामदेह गाड़ी की बड़ी-सी चमड़े की गद्दीदार सीट पर बैठा चला जा रहा था। आगे की सीट पर बैठा छोटा-सा कोचवान किसी चिड़िया की-सी मीठी आवाज़ से सीटी बजाता जाता था; काले और सफ़ेद दो रंगों वाले तीन घोड़े, जिनकी अयाल और पूँछ काली थी, एकसी सड़क पर तेजी के साथ भागे जा रहे थे; और रात की पहली छायाओं में लिपटे हुए (वे लोग जब चले तो ठीक दस बजे थे) पेड़, झाड़ियाँ, खेत, मैदान और खड्ड, आगे बढ़ते और फिर पीछे हटते हुए, चुपचाप पास से फिसलते चले जा रहे थे।

मार्किलौफ़ की छोटी-सी जमीदारी (उसमें छः सौ एकड़ से अधिक ज़मीन न थी, जिससे लगभग सात सौ रूबल की आमदनी हो जाती थी—उसका नाम था तोरज्योनकोवो) प्रांतीय नगर से दो मील आगे थी, और सिप्यागिन की नगर से छः मील दूर। बोरज्योनकोवो पहुँचने के लिए शहर में होकर जाना पड़ना था। नये मित्रों ने पचास शब्द भी एक-दूसरे से न कहे-सुने होंगे कि उन्हें शहर के बाहर रहने वाले दस्तकारों की निकम्मी झोंपड़ियाँ और उनकी गिरी पड़ती-सी लकड़ी की छतों के नीचे खिड़कियों में रोशनी के धुंधले-से धब्बे दिखाई पड़ने लगे। फिर उन्हें अपनी गाड़ी के पहियों के नीचे शहर की पत्थर की सड़क की खड़खड़ भी सुनाई पड़ी। गाड़ी हर दचके पर इधर से उधर हिलती झूमती चली जा रही थी और व्यापारियो के मटमैले पत्थर के बने दो मंजिले और सामने बरसाती वाले मकान, खंभेदार गिरजाघर और शराबखाने पीछे छूटते जाते थे।……शनिवार की रात थी; सड़कों पर लोग न थे, पर शराबखानों में अब भी भीड़ थी। उनमें शराबियों के गाने, गानेवालों का आनुनासिक स्वर और लोगों की फटी हुई आवाजें आ रही थीं; अचानक खुल पड़ने वाले दरवाजों से गंदी-सी गरमाई, शराब की सड़ी हुई गंध, लैम्पों की लाल चकाचौध फूट निकलती। करीब-करीब हर शराबखाने के सामने छोटी-छोटी किसानों की गाड़ियाँ खड़ी थीं, जिनमें बड़े-बड़े बालों और पेटवाले टट्टू जुते हुए थे; वे अपने

गंदे सिर लटकाये बड़ी दीनता के साथ खड़े थे और सोये हुए जान पड़ते थे। कोई बेढंगा-सा किसान पेटी खोले जाड़ों की टोपी डाटे और गरदन में एक थैला लटकाये हुए शराबखाने से बाहर निकलता और छड़ों के सहारे सीना टिकाकर निश्चल खड़ा रह जाता और फिर अपने हाथों से कुछ धीरे-धीरे टटोलता मानो किसी चीज़ की तलाश हो; या कोई फटे-हाल कारखाने का मज़दूर टेढ़ी टोपी लगाये और अपनी सूती कमीज के बटन खोले, नंगे पैरों—जूते शराबखाने में ही छूट गये होंगे—दो चार कदम डगमगाते हुए आगे रखता, फिर रुक जाता, अपनी रीढ़ की हड्डी खुजाने लगता और फिर एकाएक कराह कर वापिस लौट जाता।

"रूसी शराब का ग़ुलाम है।" मार्केलौफ़ ने कुछ क्षुब्ध स्वर में कहा।

"दुख उसे इस ओर ले जाता है, सर्जी मिहालोविच!" कोचवान ने बिना सिर घुमाये उत्तर दिया। हर शराबखाने के पास वह सीटी बजाना बंद कर देता और लगता मानो किसी गहरे सोच में डूब गया हो।

"बढे चलो! बढ़े चलो!" मार्केलौफ़ ने स्वयं अपने कोट के कालर को ज़ोर से झटका देते हुए कहा। गाड़ी एक बड़े-से बाजार में होकर निकली जो तिनके की चटाइयों और गोभी की सड़ी गंध से भरा था; और फिर गवर्नर के घर को, जिसके आगे दरवाजे पर संतरियों की धारीदार-सी चौकियां बनी हुई थीं, मीनारदार निजी मकान, एक छायादार सड़क जिसके दोनों ओर हाल ही लगाये पेड़ मरते जा रहे थे, और भूँकते हुए कुत्तों और जंजीरों की खड़खड़ाहट की आवाज़ से भरे बाजार को पीछे छोड कर, धीरे-धीरे शहर के दूसरे किनारे पर आ पहुँची। वहाँ गाड़ियों की एक लम्बी-सी पंक्ति थी जो रात की तरी के कारण इतनी देर से चली होंगी। उन्हें भी पीछे छोड़कर गाड़ी खुले देहात की ताज़ा हवा में निकल आयी और दोनों ओर लगे विलो वृक्षों के बीच बड़ी सड़क पर फिर आसानी से और तेज़ी से चलने लगी।

मार्केलौफ़—उसके बारे में कुछ बताना जरूरी है—अपनी बहन से छः बरस बड़ा था। उसे एक सैनिक स्कूल में शिक्षा मिली थी जिसे उसने सबसे छोटे अफ़सर का पद प्राप्त करके छोड़ा था, पर लेफ्टिनेंट का पद प्राप्त करने के बाद ही कमांडर के साथ, जो एक जर्मन था, कुछ झगड़ा होने के कारण उसे अवकाश ग्रहण करने को बाध्य होना पड़ा था। तभी से वह जर्मनों, विशेषकर रूसी जर्मनों से घृणा करता था। नौकरी छोड़ने के कारण उसका अपने पिता से भी झगड़ा हो गया और उनसे फिर वह उनकी मृत्यु तक कभी नही मिला। उनसे कुछ जमीदारी उसे मिली थी जिसे लेकर वह जम गया था। पीटर्स-बर्ग में उसका मिलना-जुलना बहुत से बुद्धिजीवियों तथा आगे बढ़े हुए लोगों से होता था जिनका वह भक्त था। उसके विचार उन्ही लोगों से पूरी तरह निश्चित हुए थे। मार्केलौफ़ ने बहुत थोड़ा ही और वह भी मुख्यतया 'उद्देश्य' से सम्बन्धित पुस्तकों को, विशेषकर हर्जेन की पुस्तकों को पढा था। उसके सैनिक-जीवन की आदतें अब भी चली आती थीं और एक पुजारी की भाँति बड़े सयम से रहता था। कुछ बरस पहले वह एक लडकी के प्रेम में बड़े जोश से पड़ गया था, पर उसने मार्केलौफ़ को बड़ी लापरवाही से ठुकरा कर एक नायब फौजी अफ़सर से—वह भी जर्मन था—शादी कर ली थी। तब से वह नायबों से भी घृणा करने लगा। वह रूस की तोप-सेना की खराबियों के बारे में लेख लिखने का भी प्रयत्न किया करता था, पर उसमें अभिव्यक्ति की शक्ति बिलकुल न थी। वह एक भी लेख कभी अन्त तक पूरा न कर पाता, तो भी वह बड़े-बड़े कागजों को अपने टेढ़े-मेढ़े, अपठनीय, बच्चों जैसे अक्षरो से रंगता रहता। मार्केलौफ़ जिद्दी था और खतरनाक हद तक निडर था। वह न भूलता था न क्षमा करता था। वह सदा अपने साथ तथा तमाम पीड़ित लोगों के साथ होने वाले अन्यायों के लिये क्षुब्ध रहता और हर चीज़ के लिये तैयार रहता था। उसकी सीमित बुद्धि एक ही चीज की ओर दौड़ती थी, जो कुछ उसकी समझ में न

आता उसका उसके लिए कोई अस्तित्व ही न था, पर वह विश्वासघात और दग़ाबाज़ी से बहुत चिढ़ता और घृणा करता था। उच्चवर्ग के लोगों से, उसके कथनानुसार 'प्रतिक्रियावादियों से वह बड़ा बुरा, बल्कि उजड्ड ढंग का व्यवहार करता था, गरीबों के साथ वह सरल था और किसानों के साथ तो भाई की तरह मैत्रीपूर्ण।' अपनी जमींदारी वह काफी अच्छे ढंग से चलाता था, उसके दिमाग में समाजवादी योजनाओं का तूफान-सा चक्कर काटता रहता, पर अपने तोप-सेना के लेखों की भाँति उन योजनाओं को भी वह कभी कार्यान्वित न कर पाता था, आमतौर पर वह किसी काम में, किसी भी समय सफलता नहीं प्राप्त कर सका था। फौज में उसका नाम ही पड़ गया था 'असफल'। सच्चा, सीधा और भावुक तथा दुखी स्वभाव का व्यक्ति होने के साथ-साथ ही यह भी सम्भव था कि किसी भी समय वह निर्दय, खून का प्यासा, राक्षस कहलाने योग्य व्यक्ति जैसा लगने लगे। दूसरी ओर उसमें बिना संकोच आत्म-त्याग करने की भी उतनी ही क्षमता थी और वह फल की आशा नहीं करता था।

शहर से मील-भर जाने के बाद ही गाड़ी ने एकाएक सफेदे के पेड़ों के जंगल में, और अदृश्य पत्तियों की फुसफुस और सरसराहट, जंगल की ताज़ा और तेज़ गन्ध, ऊपर रोशनी के अस्पष्ट धब्बों और नीचे उलझी हुई परछाइयों के बीच प्रवेश किया। लाल-लाल चौड़ी ताँबे की ढाल जैसा चन्द्रमा क्षितिज पर उठ आया था। पेड़ों के नीचे से निकलती गाड़ी एक छोटी-सी हवेली के आगे जा पहुँची। चन्द्रमा की थाली मकान के पीछे छिप गई थी और तीन प्रकाशित खिड़कियाँ घर के चेहरे पर चमकीली चौकियों-सी लग रही थीं। दरवाजे बिल्कुल खुले पड़े थे और लगता था मानो वे कभी बन्द ही न होते हों। मकान के बाहर चौपाल में आधे अँधेरे में भी खूँटे से दो किराये के सफेद घोड़े बँधे दिखाई पड़ रहे थे। दो सफेद ही पिल्ले भी कहीं से निकल आए और अपनी पैनी आवाज़ में भूँकने लगे जो एकदम कर्कश नहीं थी।

हवेली में लोग इधर-उधर आ-जा रहे थे। गाड़ी सीढ़ियों के आगे जाकर रुकी, मार्केलोफ़ अपने पैर से गाड़ी के लोहे के पैरदान को टटोलता हुआ, जिसे सदा ही गाँव के लुहार बेहद असुविधाजनक जगह में लगा दिया करते हैं, कुछ कठिनाई से गाड़ी से उतर आया और फिर नेज्दानौफ़ से बोला, "आ गये हम लोग घर पर। और यहाँ पर तुम्हारी कुछ ऐसे मेहमानों से भेंट होगी जिन्हें तुम अच्छी तरह जानते हो, पर जिनसे यहाँ मिलने की तुम्हें तनिक भी आशा न होगी। आओ, अन्दर आ जाओ।"

ग्यारह

मेहमान हमारे पुराने मित्र ग्रास्त्रोदूमौफ़ ग्रौर मशूरिना निकले। वे दोनों मार्केलौफ़ के मकान के छोटे-से ग्रौर बहुत ही साधारण रूप से सजे हुए ड्राइंग-रूम में बैठे थे ग्रौर एक मिट्टी के तेल के लैम्प के सामने बैठे बीयर ग्रौर सिगरेट पी रहे थे। उन्हें नेज्दानौफ़ के ग्राने से कोई ग्राश्चर्य नहीं हुग्रा; उन्हें मालूम ही था कि मार्केलौफ़ उसे ग्रपने साथ लाने वाला है। पर नेज्दानौफ़ को उन्हें देखकर बड़ा ग्राश्चर्य हुग्रा। उसके ग्रन्दर प्रवेश करने पर ग्रास्त्रोदूमौफ़ ने कहा, "कहो, कैसे हो, भाई ?" ग्रौर फिर चुप हो रहा। मशूरिना पहले तो एकदम लाल हो गई, फिर उसने ग्रपना हाथ ग्रागे बढ़ा दिया। मार्केलौफ़ ने नेज्दानौफ़ को बताया कि ग्रास्त्रोदूमौफ़ ग्रौर मशूरिना 'उद्देश्य के सिलसिले में' यहाँ भेजे गये हैं, जो ग्रब जल्दी ही व्यावहारिक रूप लेगा। वे लोग एक सप्ताह पहले पीटर्सबर्ग से ग्राये थे ग्रौर ग्रास्त्रोदूमौफ़ तो प्रचार कार्य के लिए स—प्रान्त में ही रहेगा, पर मशूरिना क········में किसी से मिलने जा रही है।

मार्केलौफ़ एकाएक गरम हो उठा, यद्यपि किसी ने उसकी बात का

विरोध नहीं किया था। वह अपनी मूँछें उमेठने लगा और चमकती आँखों से उत्तेजित, भर्राई हुई किन्तु स्पष्ट आवाज़ में बताने लगा कि कैसे-कैसे घृणित अत्याचार हो रहे हैं, जिनके विरुद्ध तात्कालिक संघर्ष की आवश्यकता है। उसका कहना था कि हर चीज तैयार है और इस समय कायरों के सिवाय कोई भी टालने का बहाना ढूँढ़ना चाहेगा; साथ ही जिस प्रकार फोड़ा चाहे जितना फूटने के लिये पक चुका हो, उसे चीरने के लिए डाक्टर के औजारों की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार कुछ हिंसा तो अनिवार्य है। इस उपमा को उसने कई बार दोहराया; स्पष्ट ही यह उसे बड़ी अच्छी लगती थी; यह उसकी अपनी सूझ न थी, उसने कहीं पढ़ी थी। ऐसा लगता था कि मेरियाना की ओर से अपनी भावनाओं का प्रतिदान पाने के बारे में पूरी तरह निराश हो जाने के बाद अब वह सोचता था कि अब वह किसके लिए रुके और इसलिए 'उद्देश्य के लिए' जितनी जल्दी हो सके जुट जाना चाहता था। उसके शब्द कुल्हाड़ी की चोट की भाँति एकदम सीधे सहजता, पैनेपन, प्रतिहिंसा की भावना के साथ निकल रहे थे; एकरस और भारी भरकम वे शब्द उसके सफेद होठों से एक के बाद एक ऐसे निकल रहे थे कि किसी रखवाली करने वाले बूढ़े डरावने कुत्ते के एकाएक जोर से भूँकने की याद आती थी। उसने कहा कि वह पास-पड़ौस के किसानों को, कारखानों के मजदूरों को भली-भाँति जानता है और उनमें कुछ योग्य व्यक्ति भी हैं—उदाहरण के लिए गोलोप्ल्योक का ऐरेमी—जो आपके इशारे पर मिनट भर में चाहे जो करने को तैयार हो जाय। गोलोप्ल्योक गाँव के ऐरेमी का नाम हमेशा उसकी जबान पर ही रहता था। हर दसवें शब्द पर वह अपने दायें हाथ की हथेली नहीं बल्कि अपने हाथ का किनारा मेज पर पटकता और बायाँ हाथ हवा में फटकारता, जिसकी तर्जनी उँगली बाकी सबसे अलग निकली रहती और उन उभरी हुई नसों से भरे हाथों का, उस उँगली का, भनभनाती हुई आवाज और जलती हुई आँखों का बड़ा भारी प्रभाव होता था। सड़क पर

मार्केलौफ़ ने नेज़्दानौफ़ से कुछ नहीं कहा था; उस समय उसका क्रोध उमड़ रहा था……अब वह फूट पड़ा। आस्त्रोदूमौफ़ और मशूरिना कभी मुस्कराकर, कभी एक दृष्टि से और कभी-कभी संक्षिप्त से भाव-सूचक शब्द द्वारा उसकी प्रशंसा करते जाते थे, पर नेज्दानौफ़ के भीतर कुछ विचित्र ही घट रहा था। पहले तो उसने उत्तर देने की भी कोशिश की; उसने जल्दबाजी से, अधूरे, विचारहीन कार्य से होने वाले नुकसान का जिक्र किया; सबसे अधिक उसे यह जानकर आश्चर्य हो रहा था कि सब चीज इतनी पहले ही निर्धारित थी, जिसमें न शक की कोई गुञ्जाइश थी और न इस बात की ही कोई आवश्यकता अनुभव की जा रही थी कि स्थानीय परिस्थितियों का अध्ययन किया जाय, अथवा यह जानने की कोशिश की जाय कि जनता ठीक-ठीक क्या चाहती है……पर बाद में उसकी भी नसें तन गईं और सितार के तारों की तरह झनझना उठीं और एक प्रकार की चरम निराशा के भाव से, आँखों में लगभग क्रोध के आँसू भर फटकर चीखती हुई आवाज में वह भी उसी प्रकार से बात करने लगा, बल्कि वह मार्केलौफ़ से भी आगे बढ़ गया। उसके भीतर कौनसी प्रेरणा काम कर रही थी यह कहना कठिन होता। क्या यह पिछले दिनों एक प्रकार के ढुलमुलपन के लिए पश्चात्ताप था? या यह अपने-आपसे तथा दूसरों से खीझ का भाव था, या अपने भीतर कुलबुलाते किसी कीड़े को कुचलने की इच्छा थी ? या वास्तव में बहुत दिनों बाद मिलने वाले साथियों के आगे डींग मारने की इच्छा भर थी ?……या मार्केलौफ के शब्दों ने सचमुच उसे प्रभावित किया था—उसके रक्त को गरम कर दिया था ? बिलकुल सबेरा होने तक वार्तालाप चालू रहा; आस्त्रोदूमौफ़ और मशूरिना अपने स्थान से हिले नहीं और मार्केलौफ तथा नेज्दानौफ़ बैठे नहीं। मार्केलौफ़ सारी दुनिया के संतरी की भाँति उसी स्थान पर खड़ा रहा और नेज्दानौफ़ कभी धीरे-धीरे और कभी जल्दी-जल्दी छोटे-बड़े कदमों से कमरे में चहलकदमी करता रहा। वे लोग इसकी चर्चा करते रहे कि किन साधनों और

उपायों का उपयोग जरूरी है, तथा हरएक को स्वयं कितना और कैसा काम अपने ऊपर लेना चाहिए। बहुत से परचों और पुस्तिकाओं को उन्होंने देखकर बहुत से बण्डलों में बाँध लिया। वे लोग कई लोगों का नाम भी ले रहे थे—गोलुश्किन नामक एक बहुत ही विश्वसनीय किन्तु अशिक्षित, नास्तिक व्यापारी का; एक युवक प्रचारक किस्ल्याकौफ़ का जो उनके कथनानुसार बहुत योग्य तो था यद्यपि कुछ ज्यादा जल्दबाज़ था और अपनी क्षमताओं का उसे बहुत अधिक घमण्ड था; सालोमिन का नाम भी लिया गया था.........

'वही आदमी जो एक रुई का कारखाना चलाता है ?" नेज्दानौफ़ ने सिप्यागिन के यहाँ उसकी चर्चा की याद करके पूछा।

"हाँ, वही", मार्केलौफ़ ने उत्तर दिया, "उससे तुम्हें जान-पहचान कर लेनी चाहिए। हमने अभी उसको पूरी तरह परखा तो नही है, पर वह योग्य, बहुत ही योग्य व्यक्ति है।"

गोलोप्ल्योक के ऐरेमी का ज़िक्र फिर आया; उसके साथ सिप्यागिन के किरिल और एक मेंडेलेका, जिसको गुस्सैल भी कहते थे, नाम भी जोड़ दिया गया; गुस्सैल पर भरोसा करने में एक ही कठिनाई थी—जब वह होश में होता तो शेर की भाँति साहसी रहता, पर नशे में होने पर एकदम दब्बू हो जाता, और प्रायः सदा ही वह नशे में धुत् रहता था।

"और अब अपने लोगों के बारे में बताओ," नेज्दानौफ़ ने मार्केलौफ़ से पूछा, "उनमें से किसी पर भरोसा किया जा सकता है ?"

मार्केलौफ़ ने उत्तर दिया कि कुछ तो है। किन्तु उसने एक का भी नाम नही बताया, बल्कि शहर के कारीगरों के बारे में प्रवचन करने लगा कि वे लोग अपनी किस शारीरिक शक्ति के कारण अधिक उपयोगी होंगे, और अगर सचमुच हाथ-पैरों से लड़ने का अवसर आया तो बड़ा काम करेंगे! नेज्दानौफ़ ने जमीदारों के बारे में भी पूछा। मार्केलौफ़ ने उत्तर दिया कि पाँच-छः युवक जमीदार हैं; उनमें से एक तो

जर्मन है और सबसे अधिक उग्र विचारों का है, पर जर्मन का भरोसा नहीं करना चाहिए······वह चाहे जब नाराज हो सकता है और धोखा दे सकता है। पर इस विषय में इन्तजार करना चाहिए कि किस्ल्याकौफ़ उन्हें क्या खबर भेजता है। नेज्दानौफ़ ने सेना के बारे में भी पूछा। इस पर मार्केलौफ़ कुछ झिझका, और अपनी लम्बी मूँछों को खींचता-खींचता आखिरकार कहने लगा कि अभी तक तो निश्चित कुछ नहीं है···शायद किस्ल्याकौफ़ कुछ बताये।

"अच्छा यह किस्ल्याकौफ़ कौन है ?" नेज्दानौफ़ ने अधीर होकर जोर से पूछा।

मार्केलौफ़ बड़े महत्व के साथ मुस्कराया और बोला कि एक आदमी है···ऐसा आदमी···

"मैं उसके बारे में जानता बहुत कम हूँ", उसने आगे जोड़ा, "मैंने उसे कुल दो बार ही देखा है। पर क्या चिट्ठियाँ लिखता है वह आदमी !—ऐसी चिट्ठियाँ ! मैं दिखाऊँगा तुम्हें······तुम चकित रह जाओगे। ऐसी आग ! और उसके काम ! पाँच या छः बार वह रूस के इस सिरे से उस सिरे तक चक्कर काट आया है···और हर जगह से दस-बारह पन्नों की चिट्ठियाँ !"

नेज्दानौफ़ ने आस्त्रोदूमौफ़ की ओर प्रश्नसूचक दृष्टि से देखा, पर वह मूरत की तरह बैठा था, भौंह तक नहीं फड़क रही थीं, और मशूरिना के भिंचे हुए होठों पर एक तिक्त मुस्कराहट थी, पर वह मछली की तरह चुप थी। नेज्दानौफ़ ने मार्केलौफ़ से उसकी अपनी जमींदारी पर समाजवादी ढंग के सुधारों के बारे में पूछने की कोशिश की···किन्तु इस पर आस्त्रोदूमौफ़ ने बीच ही में कहा :

"उस विषय पर अभी बहस करने से क्या लाभ है ?" वह बोला। "उससे कोई अंतर नहीं पड़ता; हर चीज़ बाद में ही बदली जायगी।"

बातचीत फिर राजनीतिक दिशा की ओर चल निकली। नेज्दानौफ़ को अभी तक भीतर-ही-भीतर कोई गुप्त कीड़ा कचोट रहा था;

पर उसकी आंतरिक यातना जितनी तीव्र होती जाती थी, उसकी बात-चीत का जोर और दृढ़ता उतनी ही बढ़ती जाती थी। उसने केवल एक ग्लास बियर ही पी थी, पर बीच-बीच में उसे लग उठता था कि वह नशे में एकदम धुत् है। उसका सिर चकरा रहा था और हृदय जोरों से धड़क रहा था। जब आखिरकार सबेरे चार बजे बहस रुकी, और बाहर के कमरे में सोये हुए छोटे-से नौकर के ऊपर पैर रखते हुए वे लोग अलग होकर अपने-अपने कमरों में सोने के लिए चले गये, तो नेज्दा-नौफ़ बिस्तर पर लेटने के पहले बहुत देर तक फर्श पर आँखें गड़ाये निश्चल खड़ा रहा। वह, मार्केलौफ़ ने जो कुछ भी कहा था, उसकी निरंतर, हृदयविदारक तीखी ध्वनि के ऊपर विचार करता रहा। इस व्यक्ति के अभिमान को निश्चित चोट लग चुकी है; अवश्य ही वह पीडा में है, उसकी व्यक्तिगत सुख की तमाम आशाएँ चूर-चूर हो चुकी हैं, किन्तु तो भी वह अपने-आपको किस प्रकार भूल गया था—किस प्रकार उसने जिसे वह सच समझता था उसके लिए अपने-आपको अर्पित कर दिया था। "सीमित व्यक्तित्व," नेज्दानौफ़ के मन में आया,……"पर क्या ऐसा सीमित व्यक्तित्व होना, ऐसे की अपेक्षा…… उदाहरण के लिए जो मै अपने-आपको समझता हूँ उसकी अपेक्षा…… सौगुना अच्छा नहीं है ?"

पर वह तुरन्त ही अपनी इस आत्मनिन्दा के विरुद्ध संघर्ष कर उठा।

"पर ऐसा क्यो ? क्या मैं भी आत्म-त्याग नहीं कर सकता ? जरा ठहरिये तो सही, मेरे दोस्तो…और तुम पाकलिन, तुम भी समय आने पर मानोगे, चाहे मै सौंदर्यवादी हूँ, और कविताएँ लिखा करता हूँ……।"

उसने क्रोध से अपने बाल पीछे किये, दाँत पीसे, और जल्दी-जल्दी कपड़े उतार कर सीले, ठण्डे बिस्तर पर जा गिरा।

"अच्छी तरह सोना !" दरवाजे के पीछे से मशूरिना की आवाज

सुनाई दी, "मैं तुम्हारे बगल वाले कमरे में ही हूँ ।"

"नमस्कार," नेज्दानौफ़ ने उत्तर दिया और तब उसे याद पड़ा कि सारी रात वह उसी के ऊपर नजर गड़ाये रही थी ।

"वह क्या चाहती है ?" उसने बुड़बुड़ाकर कहा और तुरन्त उसे अपने ऊपर शर्म आई । "आह, जितनी जल्दी हो सके सो जाना चाहिए ।"

पर अपने शरीर के तनाव पर काबू हासिल करना आसान नहीं था···और जब तक भारी बेचैनी भरी नींद में वह डूब सका तब तक सूरज आसमान में ऊँचा चढ़ आया था ।

अगले दिन जब वह देर से सोकर उठा तो उसका सिर दुख रहा था । कपड़े पहनकर वह खिड़की पर जा खड़ा हुआ, उसने देखा कि मार्केलौफ के पास खेती नहीं के बराबर है । उसका छोटा-सा बक्स जैसा मकान जंगल के पास ही एक खडड् के ऊपर बना था । एक ओर को छोटी-सी एक अनाज की खत्ती, एक अस्तबल, एक तहखाना, आधी झुकी हुई फूस की छत वाली छोटी-सी झोंपड़ी थी; और दूसरी ओर एक छोटी-सी झील, छोटा-सा तरकारी का बगीचा, एक सन का खेत. वैसी ही छत वाली झोंपड़ी थी । थोड़ी दूर पर नौकरों के घर, खलिहान और एक खाली गाहने का फर्श था—कुल इतनी ही सम्पत्ति दिखाई पड़ती थी । सब चीजें समृद्धिहीन, उजड़ती हुई-सी दिखाई पड़ती थीं, ठीक उपेक्षित अथवा अव्यवस्थित तो नहीं किन्तु ऐसी जो मानो कभी उन्नतिशील न रही हों, उस पेड़ की भाँति जिसकी जड़ें भली भाँति न जमी हों । नेज़दानौफ़ नीचे गया । मशूरिना भोजगृह में, स्पष्ट ही उसी की प्रतीक्षा में, चाय के बर्तन के पीछे बैठी थी । उससे नेज़दानौफ़ को पता चला कि आस्त्रोदूमौफ़ काम से चला गया है और पन्द्रह दिन से पहले न लौटेगा; और मार्केलौफ अपने मज़दूरों को देखने चला गया था । मई का महीना समाप्त होने को आ रहा था और कोई दूसरा जरूरी काम हाथ में था नहीं, इसलिए मार्केलौफ ने

बिना बाहरी सहायता के एक बर्च-वृक्षों का झुरमुट काट डालने की योजना बनाई थी और इसी लिए वह सबेरे तड़के ही चला गया था।

नेज़्दानौफ़ को हृदय में अजीब-सी थकान अनुभव हो रही थी। रात में और अधिक देर करना असंभव होने के बारे में इतना अधिक कहा-सुना गया था, यह बात इतनी अधिक बार दुहराई गई थी कि 'सक्रिय होने' के अलावा और कुछ करने को बाकी नहीं है। पर कैसे सक्रिय हुआ जाय ? किस दिशा में और बिना विलम्ब के किस प्रकार ? मशूरिना से कुछ पूछना बेकार था; उसके भीतर कोई हिचक थी ही नहीं, उसे क्या करना था इस विषय में भी उसे संदेह न था; उसे क—जाना था। उसके परे वह देखती ही न थी। नेज़्दानौफ़ की समझ में न आया कि उससे क्या बात करे; और थोड़ी-सी चाय पीने के बाद उसने टोपी लगाई और बर्च वृक्षों के झुरमुट की ओर चल दिया। रास्ते में उसे खाद ढोते हुए कुछ किसान मिले जो पहले मार्केलौफ़ के दास थे। वह उनसे बात करने लगा···पर उनसे कुछ विशेष उसके हाथ न लगा। वे बहुत थके हुए लगते थे, पर साधारण शारीरिक थकान से, स्वयं उसकी भाँति तनिक भी नहीं। उनके कथनानुसार उनका भूतपूर्व स्वामी अच्छे स्वभाव का सीधा शरीफ़ आदमी है, पर कुछ सनकी है। उनका कहना था कि वह बर्बाद हुए बिना न रहेगा क्योंकि "वह यह समझता ही नहीं है कि कैसे कोई चीज़ करनी चाहिए और हर काम को अपने ढंग से करना चाहता है, जैसे उसके पुरखे करते थे वैसे नहीं। और वह जरूरत से ज्यादा बुद्धिमान भी है—लाख कोशिश करने पर भी आप उसके मन की बात नहीं जान सकते। पर अच्छे दिल वाला आदमी है इसमें कोई संदेह नहीं।" नेज़्दानौफ़ आगे बढ़ गया और स्वयं मार्केलौफ़ के पास जा पहुँचा।

वह मज़दूरों की एक पूरी भीड़ से घिरा हुआ चल रहा था; दूर से ही यह पता चल जाता था कि वह बात करके उन्हें कुछ समझा रहा

था। फिर उसने जैसे हार कर हाथ हिलाया। उसके पीछे उसका कारिन्दा था—एक निस्तेज आँखों वाला नवयुवक जिसके व्यक्तित्व में अधिकार का नाम-निशान तक न था। यह कारिन्दा बार-बार यही कहता रहता था—"जैसा आप कहते हैं, वैसा ही होगा जी।" इस बात से उसके स्वामी को बड़ी चिढ़ होती थी जो उससे अधिक निजी समझ की आशा करता था। नेज़्दानौफ़ मार्केलौफ़ के पास पहुँचा तो उसने उसके चेहरे पर उसी आध्यात्मिक थकान के चिह्न देखे जो वह स्वयं अनुभव कर रहा था। उन्होंने एक-दूसरे को अभिवादन किया; मार्केलौफ़ तुरन्त ही, यद्यपि संक्षेप में, रात के प्रश्नों के बारे में, भावी क्रांति के बारे में बात करने लगा; पर वह थकान का भाव उसके मुख से नहीं गया। धूल और पसीने से वह तर था; लकड़ी की छाल, काई के निशान उसके कपड़ों पर लगे हुए थे। उसकी आवाज़ भर्राई हुई थी। उसके चारों ओर खड़े हुए लोग सब चुप थे; वे लोग आधे डरे हुए और आधे चकित थे। नेज़्दानौफ़ ने मार्केलौफ़ की ओर देखा और आस्त्रोदूमौफ़ के शब्द उसके भीतर फिर से गूँज उठे—"क्या फ़ायदा है? इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता, यह सब बाद में ही बदला जायगा!" एक मज़दूर जिससे कुछ भूल हो गई थी, मार्केलौफ़ से जुर्माना माफ़ कर देने की प्रार्थना करने लगा···मार्केलौफ़ पहले तो क्रोध से बरस पड़ा और उस पर ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगा, पर बाद में उसने उसे माफ़ कर दिया···"कोई अन्तर नहीं पड़ता···यह सब बाद में ही बदला जायगा···" नेज़्दानौफ़ ने उससे वापिस लौटने के लिए घोड़ों और गाड़ी तैयार कराने की बात कही; ऐसा लगा मार्केलौफ़ को इस बात पर कुछ आश्चर्य हुआ, पर उसने उत्तर में कहा कि अभी फौरन तैयार होती है।

वह नेज़्दानौफ़ के साथ वापिस घर लौट आया···वह थकान के कारण चलने में लड़खड़ा रहा था।

"क्या बात है?" नेज़्दानौफ़ ने पूछा।

"थक गया हूँ।" मार्केलौफ़ ने क्षुब्ध भाव से कहा। इन लोगों से तुम चाहे जैसे बात करो, पर वे कुछ नहीं समझ सकते, और कभी जो कहा जाय उसे पूरा न करेंगे······और रूसी भाषा तो एकदम नहीं समझते। 'हिस्सा' शब्द भली भाँति जानते हैं······पर 'हिस्सा लेना'···· ···हिस्सा लेना क्या होता है ? उनकी समझ में नहीं आता। पर यह भी तो रूसी शब्द ही है न ! वे समझते हैं कि मैं जमीन के एक हिस्से को उन्हें उपहारस्वरूप देना चाहता हूँ।" मार्केलौफ़ ने किसानों को सहकारिता का सिद्धान्त समझाने और अपने यहाँ उसे चालू करने का इरादा किया था, पर वे लोग इसका विरोध कर रहे थे। उनमें से एक ने तो इस सम्बन्ध में यहाँ तक कह दिया था, "पहले ही गढ़ा काफी गहरा था, पर अब तो उसका तल दिखाई ही नहीं पड़ता"······बाकी किसानों ने एक स्वर से एक गहरी आह भरी थी जिसने मार्केलौफ़ को पूरी तरह धराशायी कर दिया था।

घर पहुँच कर उसने पीछे-पीछे चलने वाले मजमे को छुट्टी दे दी और घोड़े गाड़ी का और भोजन का प्रबन्ध करने में लग गया। उसकी गृहस्थी में एक छोटा नौकर, एक कोचवान, और एक नीचा कोट पहने हुए बालों भरे कानों वाला एक बहुत बूढ़ा आदमी था। यह बूढ़ा आदमी उसके दादा का खास खिदमतगार था। वह सदा गहरी निराशा की दृष्टि से अपने स्वामी को ताकता रहता था, पर वह कुछ करता न था और शायद ही कभी कुछ करने के योग्य होता था, पर वह हमेशा दरवाजे की देहली पर झुका हुआ बैठा रहता।

बड़े उबले हुए अण्डों, छोटी हैरंग मछलियों और ठण्डे कीमे का— नौकर ने राई पुराने वैसलीन के बरतन में और सिरका यून्डी-कोलोन की बोतल में दिया था—भोजन करके नेज्दानौफ़ उसी गाड़ी में सवार हो गया जिसमें वह रात को आया था, पर तीन घोड़ों की बजाय अब उसमें दो ही जुते थे, तीसरे के नाल बाँधे गये थे और वह लंगडा हो गया था। भोजन के समय मार्केलौफ़ ने न तो कुछ कहा था न खाया

था, और बड़े कष्ट के साथ साँस लेता रहा था। दो या तीन कड़वे शब्द अपनी जमींदारी के बारे में कहकर उसने हाथ ऐसे हिलाये थे मानो कह रहा हो……"कोई अन्तर नहीं पड़ता, यह सब बाद में ही बदला जायगा।" मशूरिना ने नेज्दानौफ़ से उसे शहर तक अपने साथ ले चलने के लिए कहा, वहाँ वह कुछ खरीदारी करने के लिये जाना चाहती थी। "वापिस मैं पैदल या किसी किसान की गाड़ी में आ जाऊँगी।" मार्केलौफ़ उन्हें सीढ़ियों तक पहुँचाने आया। उसने कुछ अनिश्चित स्वर में कहा कि वह जल्दी ही फिर नेज्दानौफ़ को बुलाने आयेगा, और तब……तब—(उसने अपने-आपको झकझोरा और फिर उसका जोश लौट आया)—कोई निश्चित व्यवस्था की जायगी; उस समय सालोमिन को भी आना चाहिये। मार्केलौफ़ ने बताया कि बस वैसिली निकोलाएविच के समाचार आने की देर है, फिर बस शीघ्रतापूर्वक 'कार्य करना' भी जरूरी रह जायगा—क्योंकि किसान, वही किसान जो 'हिस्सा लेना' शब्द का अर्थ नहीं समझते, और अधिक प्रतीक्षा करना स्वीकार न करेंगे।

"ओहो, तुम मुझे वे चिट्ठियाँ दिखाने वाले थे—उसकी—क्या नाम है उसका?—विस्ल्याकौफ़ की?" नेज्दानौफ़ ने कहा।

"बाद में……" मार्केलौफ़ ने जल्दी से उत्तर दिया……"तब हम लोग सब चीजें करेंगे—साथ-साथ।"

गाड़ी चल पड़ी।

"तैयार रहना!" मार्केलौफ़ की आवाज़ आखिरी बार सुनाई पड़ी। वह सीढ़ियों पर खड़ा था और उसके बगल में, अपने चेहरे पर उसी अपरिवर्तित निराशा के साथ, अपनी झुकी पीठ को सीधा करता हुआ, अपने हाथ पीछे बाँधे, राई की रोटी और रुई की गंध छोड़ता हुआ, और कुछ न सुनता हुआ वह बूढ़ा खबीस आदर्श नौकर खड़ा था।

शहर के रास्ते भर मशूरिना चुप रही, उसने बस एक सिगरेट पी। जैसे ही वे शहर की चहारदीवारी के नज़दीक पहुँचे उसने एक ज़ोर की

ग्राह भरी ।

"मुझे सर्जी मिहालोविच के लिये बडा दुख होता है," उसने कहा और उसका चेहरा घिर आया ।

"वह चिन्ता के कारण बड़ा परेशान है," नेज़्दानौफ़ ने कहा, "मेरे ख्याल से उसकी जमीन की हालत अच्छी नही है ।"

"इस कारण मुझे उसके लिये दुख नही है ।"

"तो फिर क्यों ?"

"वह बड़ा दुखी व्यक्ति है—किस्मत का मारा । उससे अच्छा आदमी और कहाँ मिलेगा ? पर उसकी—उसकी कही किसी को जरूरत नही है ।"

नेज्दानौफ़ अपनी संगिनी की ओर देखने लगा ।

"तो क्या तुम उसके बारे में कुछ जानती हो ?"

"मै जानती कुछ नही······पर दिखाई तो पडता है । नमस्कार अलेक्सी दिमित्रिच ।"

मशूरिना गाड़ी से उतर गई, और एक घंटे बाद नेज्दानौफ़ सिप्यागिन के मकान के अहाते में मौजूद था । उसका जी ठीक न था······सारी रात वह सोया न था······और वे सब बहसें······बातचीत······

एक सुन्दर मुख एक खिडकी में उठा और उसे देखकर बड़ी मिठास से मुस्करा दिया······श्रीमती सिप्यागिन उसका लौटने पर स्वागत कर रही थीं ।

"क्या आँखें है उसकी !" नेज्दानौफ़ के मन में विचार दौड़ गया ।

बारह

भोजन के लिए बहुत से लोग आये थे और भोजन के बाद के आम-शोरगुल का फ़ायदा उठाकर नेज़दानौफ़ अपने कमरे में खिसक गया। और कुछ नहीं तो अपनी इस यात्रा के प्रभाव की समीक्षा करने के लिए ही वह एकान्त चाहता था। भोजन के समय वैलेन्तिना ने कई बार उसकी ओर ध्यान से देखा था, पर स्पष्ट ही उसे बात करने का अवसर न मिल सका था। मेरियाना, उस अप्रत्याशित आत्म-प्रकटीकरण के बाद, जिसने नेज़दानौफ़ को इतना चकित कर दिया था, अपने आप से लज्जित सी लगती थी और उसकी नजर बचाती रहती थी। नेज़दानौफ़ ने कलम उठाली; उसकी अपने मित्र सीलिन से काग़ज के माध्यम से बातचीत करने की इच्छा हो रही थी। पर उसकी समझ में न आया कि क्या कहे या शायद इतने सारे विरोधी विचार और संवेदनाएँ उसके सिर में परस्पर टकरा रहे थे कि उसने उन्हें सुलझाने का भी प्रयत्न नहीं किया और किसी दूसरे दिन के लिए टाल दिया। भोजन के समय .. लोगों में कैलोम्येत्सेफ़ भी था। इतना अधिक दम्भ और अमीर। नक-चढ़ापन उसने पहले कभी नहीं दिखाया था; पर उसकी आसान

और बे-रोकटोक बातों का नेज़्दानौफ़ पर कोई प्रभाव न पड़ा था, उसने उनकी ओर ध्यान ही न दिया था। वह एक तरह के बादल की ओट में छिप गया था; वह आधे अँधेरे के परदे की भाँति उसके तथा दुनिया के बीच खिचा-सा लगता था, और कहना अजीव लगता है कि इस परदे के पार उसे केवल तीन मुख पहचान पड़ रहे थे जो तीनों स्त्रियों के थे, और तीनों ने अपनी आंखें एकदम उसी के ऊपर गड़ा रखी थीं। वे थीं श्रीमती सिप्यागिन, मशूरिना और मेरियाना। इसका क्या अर्थ था? और ठीक यही तीन क्यों? उनमें समानता क्या थी? और वे उससे क्या चाहती थीं?

वह जल्दी ही बिस्तर पर लेट गया, पर नींद उसे न आ सकी। उसको विचारों ने, उदासी-भरे, यद्यपि ठीक कष्टदायक नहीं—घेर रखा था, अनिवार्य अंत के मृत्यु के विचारों ने। वे विचार परिचित थे। बहुत देर तक वह उन्हें इधर-उधर करता रहा, और कभी वह नष्ट हो जाने के विचार से काँप उठता, तो फिर कभी उसका स्वागत करने लगता, बल्कि उसकी खुशी मनाने लगता। अंत में वह एक विशेष प्रकार की उत्तेजना अनुभव करने लगा जिसे वह अच्छी तरह पहचानता था। ······वह उठकर अपनी लिखने की मेज़ पर जा बैठा और थोड़ी देर सोचने के बाद बिना कुछ अदला-बदली किये, यह कविता अपनी गुप्त कापी में लिख डाली—

"ओ मेरे प्रिय, जब मैं मरूँ,
तो यह है मेरी वसीयत;
इकट्ठा करके जला देना मेरी सब रचनाओं को,
ताकि वे भी मेरे साथ ही मर जाएँ!
फिर मुझे फूलों से पूरी तरह सजाना,
और मेरे कमरे में धूप को आने देना;
मेरे कमरे के दरवाज़े पर संगीतज्ञों को बिठाना,
पर उन्हें कोई दुःखभरी धुन बजाने देना!

किन्तु आनन्दोत्सव की भाँति,
प्रसन्न वाद्यों से गूँज उठें
उत्साहपूर्ण, ललचाने वाली धुनें !
और तब जैसे-जैसे मेरे
कानों में वह मस्ती का संगीत
बुझता जायगा,
वैसे-ही-वैसे मैं भी चिरनिद्रा में डूब जाऊँगा
तब किसी बेकरार की कराह से
मृत्यु के साथ आने वाली उस शान्ति को
भ्रष्ट न करना ।
मैं अपनी इस दुनिया के आनन्द से परिपूर्ण
स्वरों की लोरियों से सो कर
चुपचाप दूसरी दुनिया को चला जाऊँगा !"

जब उसने 'ओ मेरे प्रिय' लिखा तो उसके मन में सीलिन का मुख था । उसने अपने छंद धीरे-धीरे अपने आप दुहराये और अपनी कलम से निकली इस चीज़ को देखकर उसे कुछ आश्चर्य हुआ । यह अविश्वास, यह उदासीनता, यह हल्की निष्ठाहीनता, इन सबका उसके सिद्धान्तों से, जो कुछ उसने मार्केलौफ़ के यहाँ कहा था उससे कैसे मेल हो सकता है ? उसने कापी को मेज़ की दराज़ में फेंक दिया और बिस्तर पर लोट गया । पर जब सबेरे पौ फटते हुए आसमान में पहली चिड़ियों ने चहचहाना शुरू कर दिया, तभी उसे नींद आ सकी ।

अगले दिन वह कोल्या को पढ़ा कर बिलियर्ड के कमरे में बैठा था कि वैलेन्तिना अन्दर आई । वह चारों ओर नज़र डालकर मुस्कराती हुई उसकी ओर बढ़ी और उसे अपने कमरे में आने के लिए कहा । उसने हलके रंग के रेशम की बहुत ही सुन्दर और बहुत ही सादा पोशाक पहन रखी थी, बाहों में कुहनियों के पास एक झालर सी थी, एक चौड़ा फीता उसकी कमर से लिपटा हुआ था और उसके बालों की मोटी

घुँघराली लटे उसकी गरदन पर बिखरी हुई थी। एक प्रकार की कृपा, सहानुभूतिपूर्ण कोमलता, संयत आश्वासनदायी मधुरता उसकी हर चीज़ से झर रही थी—हर चीज़ से; उसकी अधमुँदी आँखो की दबी-सी चमक से, उसकी कोमल थपकी देती आवाज़ से, उसकी भंगिमा से, उसकी चाल से। वैलेन्तिना उसे अपने बैठने के, सुन्दर आलोकित कक्ष मे ले गई; कमरा फूलों और इत्रो की गध से, नारी के वस्त्रों की निर्मल ताज़गी से, एक नारी की निरन्तर उपस्थिति से परिपूर्ण था। उसने नेज़दानौफ़ को एक आराम-कुर्सी पर बिठाया, स्वयं उसके पास ही बैठ गई और उससे इतनी चतुराई से, इतनी मधुरता और कोमलता से उसकी यात्रा के बारे में, मार्केलौफ़ के कामकाज के बारे में पूछने लगी। इस समय उसने अपने भाई के बारे में सच्ची उत्कंठा प्रगट की, जिसका नाम भी उसने नेज्दानौफ़ के सामने पहले कभी न लिया था। उसके कुछ शब्दों से यह अर्थ निकाला जा सकता था कि मेरियाना के प्रति जो मार्केलौफ के भाव थे वे उसकी नज़र से छिपे नही थे, उसके स्वर में हलके-से खेद की ध्वनि थी······वह इसलिये कि उसके भावो की मेरियाना ने कद्र नही की थी, या इसलिये कि उसके भाई ने भी ऐसी लड़की को पसन्द किया जिसके बारे में वह कुछ जानता तक न था, यह कारण अस्पष्ट ही छोड दिया गया था। पर एक चीज़ एकदम मुख्य रूप में स्पष्ट थी, वह स्पष्ट ही नेज्दानौफ़ को अपनी ओर मिलाने की, उसका विश्वास प्राप्त करने की, उसके संकोच को दूर करने की कोशिश कर रही थी। वैलेन्तिना ने अपने बारे में गलत धारणा बना लेने के लिए नेज्दानौफ़ को कुछ झिड़का तक भी।

नेज्दानौफ़ उसकी बात सुनता रहा, उसकी बाहों और कंधों को देखता रहा, बीच-बीच में उसके गुलाबी होठों और उसकी हलकी घुँघराली लटों पर दृष्टि डाल लेता रहा। शुरू में तो उसके उत्तर बहुत संक्षिप्त थे, उसे अपने कंठ में और सीने में कुछ अवरोध-सा अनुभव हुआ था······पर धीरे-धीरे इस भाव का स्थान दूसरे ने ले लिया, वह भी

काफी परेशान करने वाला था, पर एक प्रकार की मधुरता से एकदम रहित न था। उसने इस बात की कभी आशा न की थी कि इतने बड़े घराने की ऐसी प्रमुख और सुन्दर महिला, उस जैसे निरे विद्यार्थी में इतनी अधिक दिलचस्पी ले सकेगी, और वह केवल उसमें दिलचस्पी ही प्रगट न कर रही थी, बल्कि थोड़ा-सा उसको रिझाने की कोशिश कर रही थी। नेज्दानौफ़ अपने-आपसे पूछने लगा कि ऐसा वह क्यों कर रही है, पर उसे कोई उत्तर नहीं मिला। वास्तव में वह इसका उत्तर पाने के लिये बहुत आतुर भी न था। वैलेन्निना ने कोल्या का जिक्र किया, बल्कि उसने शुरू में तो यही कहा कि केवल अपने चिरंजीव के बारे में गम्भीरतापूर्वक बात करने के उद्देश्य से, रूसी बच्चों की आम तौर पर शिक्षा के बारे में उसके विचार जानने के उद्देश्य से ही वह नेज्दानौफ़ को अधिक जानने का यत्न कर रही है। जिस प्रकार अचानक ही यह इच्छा पैदा हुई थी वह किसी को भी अजीब लगती। पर बात की जड़ जो कुछ वैलेन्निना ने अभी कहा था, उसमें न थी, बल्कि इस सचाई में कि उसके ऊपर एक प्रकार की वासना की लहर छा गई थी, विजय की, इस हठी प्राणी को अपने चरणों पर ला पटकने की लालसा बलवती हो उठी थी······

पर यहाँ कुछ अतीत की खोज उपयोगी होगी। वैलेन्निना एक बहुत ही मूर्ख और निष्क्रिय जनरल की लड़की थी जिसने पचास बरस की नौकरी में केवल एक सितारा और एक बकसुआ उपार्जित कर पाया था। उसकी माँ एक बहुत ही चालाक और तिकड़मी लघु रूसी महिला थी जिसे अपने देश की अन्य स्त्रियों की भाँति बहुत ही सादी बल्कि मूर्खतापूर्ण बाह्याकृति प्राप्त हुई थी और जिससे वह अधिक-से-अधिक लाभ प्राप्त करना जानती थी। वैलेन्निना के माता-पिता सम्पन्न नहीं थे, किन्तु उसे स्मालनी कन्वेन्ट में प्रवेश मिल गया और वहाँ, यद्यपि वह प्रजातन्त्रवादी समझी जाती थी, उसकी परिश्रमपूर्वक अध्ययन तथा संयत शिष्ट व्यवहार के कारण बड़ी प्रतिष्ठा हो गई। स्मालनी कन्वेन्ट छोड़ने पर

वह अपनी माँ के साथ एक साफ़-सुथरे पर वड़े ठंडे मकान में रहने लगी, क्योंकि उसका भाई देहात में जाकर रहने लगा था और उसके एक सितारे वाले जनरल पिता की मृत्यु हो चुकी थी। उनके कमरों में जब लोग बात करते तो उनकी साँस भाप की भाँति उनके मुँह से निकलती दिखायी पड़ती थी। वैलेन्निना इस पर हँसकर कहा करती थी कि उनके घर आना, 'गिरजा में जाने के समान है'। गरीबी और मुसीबतों की इस ज़िन्दगी को उसने बड़े साहस के साथ सहन किया, उसका स्वभाव अद्‌भुत रूप से अच्छा था। अपनी माँ की सहायता से वह नये लोगों से जान-पहचान करने और उनसे सम्बन्ध बनाये रखने में सफल होती रही। उच्च-से-उच्च क्षेत्रों में उसकी बहुत ही सुन्दर, सुसस्कृत और शिक्षित लड़की के रूप में चर्चा होती थी। वैलेन्निना के साथ विवाह के इच्छुकों में कई व्यक्ति थे, जिनमें से उसने सिप्यागिन को चुना और बडी सरलता और चतुरता के जल्दी ही उसे अपने प्रेम मे बाँध लिया ·······हालाँकि, वास्तव में, वह स्वयं भी शीघ्र ही यह पहचान गया था कि उससे अच्छी पत्नी उसे मिल न सकती थी। वह चतुर थी, उसका स्वभाव बुरा न था······बल्कि दोनों मे वही अधिक मिलनसार थी, मूलतः वह बेपरवाह और उदासीन थी····पर अपने प्रति किसी की भी उदासीनता की कल्पना तक उसे असह्य थी। वैलेन्निना में वह विशेष मोहनी भरपूर मात्रा में मौजूद थी जो आकर्षक स्वार्थियों की विशेषता है। उस मोहिनी में कोई काव्य या सच्ची सहृदयता नहीं होती, पर स्निग्धता होती है, सहानुभूति होती है, बल्कि थोड़ी-बहुत मुहब्बत भी होती है। बस इन आकर्षक स्वार्थियों के रास्ते में रुकावट नहीं पड़नी चाहिए; उन्हें अधिकार से प्रेम होता है और वे दूसरों में स्वाधीनता नहीं सहन कर सकते। वैलेन्निना जैसी स्त्रियाँ अनुभवहीन और भावुक स्वभाव के लोगों को तो उकसाती और उभाड़ती हैं; स्वयं अपने लिए वे नियमित और शांतिपूर्ण जीवन ही पसन्द करती हैं। सच्चरित्रता उनके लिए आसान होती है क्योंकि वे भीतर से कभी विचलित नहीं होतीं,

पर दूसरों को चंचल करने, आकर्षित करने और प्रसन्न करने की अनवरत इच्छा उन्हें गति और चमक प्रदान करती है। उनकी इच्छा-शक्ति दृढ़ होती है, और उनकी मोहनी ही किसी हद तक इस इच्छा-शक्ति की दृढ़ता पर निर्भर होती है। पुरुष के लिए पैर टेके रखना कठिन हो उठता यदि इस तरह का चमकदार और निर्मल व्यक्ति अनजाने ही छिपी हुई स्निग्धता से क्षणभर के लिए आलोकित हो उठे। वह प्रतीक्षा करने लगता है कि अब अवसर आया, अब पिघली बर्फ, पर वह साफ़ बर्फ केवल प्रकाश के खेल को प्रतिविम्बित करती रहती है, पिघलती नहीं। उसकी चमक को वह कभी विचलित होते न पा सकेगा!

रिझाने के काम में वैलेन्निना को कोई परेशानी न थी; वह अच्छी तरह जानती थी कि उसके लिए कोई डर नहीं है, और न कभी हो ही सकता है। और तब तक किसी की आँख धुँधला होकर फिर से चमक उठे, किसी के गाल लालमा और आशंका से लाल हो उठें, किसी की आवाज़ काँप उठे और भर्रा जाय, किसी का दिल बेचैन हो उठे—ओह, कितनी मीठी शान्ति मिलती थी इससे उसके दिल को! रात को देर से जब वह अपने निर्मल सद्य:निर्मित नीड़ में निर्विघ्न निद्रा के लिए सेज पर लेटती, तो उन बेचैनी भरे शब्दों और नज़रों तथा आहों की स्मृति कितनी सुखद लगती थी! कितनी सुखपूर्ण मुस्कराहट के साथ वह अपने आप में, अपनी अगमता की चेतना में, अपने दुर्भेद्य सतीत्व के साम्राज्य में लौटती और कितनी लुभावनी उदारता के भाव से वह अपने सुसंस्कृत पति के नियमसम्मत आलिंगन के लिए अपने-आपको समर्पित करती! ऐसे विचार इतने शान्तिदायक थे कि प्राय: निश्चित रूप से उसका हृदय पिघल उठता और वह कोई कृपा का कार्य करने, किसी प्राणी को सहायता पहुँचाने के लिए तत्पर हो जाती··· एक बार एक दूतावास के सचिव के नाम पर, जिसने उसके प्रेम में पागल होकर अपना गला काट डालने का प्रयत्न किया था, एक छोटी-सी दानशाला स्थापित की थी। उसके लिए उसने बड़े सच्चे दिल से

ईश्वर से प्रार्थना भी की थी, यद्यपि धर्म की भावना उसके भीतर बचपन से ही बहुत क्षीण रही थी।

इस प्रकार नेज़्दानौफ़ से बात करके उसे अपने चरणों पर गिराने का उसने हर तरह से प्रयत्न किया। उसने उसे अपने विश्वास का भाजन बनाया, मानो अपने-आपको उसके आगे प्रकट किया, और मीठी उत्सुकता के साथ, अर्ध-मातृ-सुलभ स्नेह के साथ इस देखने में सुन्दर, दिलचस्प और कठोर युवक उग्रपंथी को धीरे-धीरे और झिझकते हुए अपने प्रयत्नों से प्रभावित होते देखती रही। एक दिन, एक घंटे, मिनट भर में यह सब गायब हो जायगा और इसका कोई चिह्न भी न बाकी बचेगा; पर अब तक तो उसे यह सुखद, काफी मनोरंजन, काफी दयनीय बल्कि काफी हृदय-स्पर्शी लग रहा था। उसके जन्म के इतिहास को भूलकर और यह सोचकर कि अकेले और अजनबी लोगों के बीच में होने पर लोगों को ऐसी दिलचस्पी कितनी अच्छी लगती है, वैलेन्निना नेज्दानौफ़ से उसके बचपन के उसके परिवार के बारे में पूछने लगी··· पर तुरन्त ही उसके घबराये-से और संक्षिप्त उत्तरों से वह पहचान गई कि उसने भारी भूल कर दी है। उसने अपनी भूल को हलका करने की कोशिश की और अपना हृदय उसके आगे और भी चतुराई के साथ खोल दिया···जिस प्रकार दोपहर की आलसभरी गर्मी मे पूर्ण-विकसित गुलाब अपनी सुगन्धित पंखुड़ियों को खोल देता है, जो रात्रि की हृदय-हारी शीतलता के साथ फिर शीघ्र ही मुँद जाती है।

किन्तु अपनी भूल का प्रभाव पूरी तरह मिटा सकने में वह सफल न हो सकी। नेज़्दानौफ़ की दुखती रग छू गई थी और अब वह पहले की भाँति आश्वस्त न अनुभव कर सकता था। जो तीखी भावना सदा उसके भीतर रहती थी, जो सदा उसके हृदय के तल में कसमसाती रहती थी, वह फिर जाग्रत हो उठी। उसका जनवादी सन्देह और आत्म-निन्दा के भाव जाग उठे। "इसके लिए तो मैं यहाँ नहीं आया था," उसने सोचा। पाकलिन की व्यंग-भरी सलाह उसे याद आई·········

ग्रौर वह तनिक सी भी चुप्पी का लाभ उठाकर उठ खड़ा हुग्रा, जल्दी से भुककर ग्रभिवादन किया ग्रौर वड़ा बुद्धू-सा दिखाई पड़ता हुग्रा, जो वह मन-ही-मन कहने से ग्रपने-ग्रापको न रोक सका, वाहर निकल ग्राया।

उसकी परेशानी वैलेन्निना से छिपी न रही, पर जिस हल्की-सी मुस्कान के साथ वह उसे बाहर जाते देखती रही, उससे यह ग्रनुमान होता था कि नेज़्दानौफ़ की इस परेशानी को उसने विजय का ही प्रमाण माना था।

बिलियर्ड के कमरे में नेज्दानौफ़ की मेरियाना से भेंट हो गई। वह बैठकखाने के दरवाजे से थोड़ी ही दूर पर खिड़की की ग्रोर पीठ किये ग्रौर ग्रपनी बाहों को कसकर बाँधे खड़ी थी। उसका चेहरा लगभग काली छाया में था, पर उसकी निर्भीक ग्राँखें इतनी प्रश्न-भरी दृष्टि से ग्रौर इतनी एकदम नेज्दानौफ़ को घूर रही थीं, उसके कसकर भिचे हुये होठों पर इतनी घृणा, इतनी ग्रपमानजनक दया का भाव था कि वह दरवाजे में ग्रसमंजस में खड़ा रह गया······

"ग्राप मुझसे कुछ कहना चाहती है ?" ग्रनचाहे ही उसके मुँह से निकल गया।

मेरियाना ने तुरन्त उत्तर नहीं दिया। "नहीं······या बल्कि हाँ, मुझे कहना है। पर ग्रभी नहीं।"

"तो फिर कब ?"

"थोड़ा इन्तजार कीजिए। शायद—कल, शायद—कभी नहीं। देखिए, मैं बहुत कम जानती हूँ—कि ग्राप वास्तव में किस तरह के व्यक्ति हैं।"

"तो भी," नेज़दानौफ ने शुरू किया, "मुझे कभी-कभी लगता है··· कि हम लोग—"

"ग्रौर ग्राप तो मुझे एकदम नहीं जानते," मेरियाना ने बीच ही में बात काटकर कहा, "पर जो हो, थोड़ा इन्तजार कीजिए। कल शायद।

अब तो मुझे अपनी······मालकिन के पास जाना है। कल तक के लिए नमस्कार।"

नेज्दानौफ़ दो कदम आगे बढ़ा, पर फिर एकाएक लौट पड़ा। "ओह मेरियाना विकेन्त्येव्ना···मैं बहुत बार आपसे पूछना चाहता रहा हूँ, क्या मुझे आप अपने साथ-साथ स्कूल न ले चलेंगी, बन्द होने के पहले ही, यह देखने के लिए कि आप कहाँ क्या करती हैं ?"

"निस्सन्देह······पर मैं आपसे बात स्कूल के बारे में नहीं करना चाह रही थी।"

"तो फिर किस बारे में ?"

"कल," मेरियाना ने दोहराया।"

पर उसने अगले दिन तक के लिए यह चीज नहीं टाली। उसी दिन शाम को बाहर चबूतरे से थोड़ी दूर पर एक नींबू के पेड़ों वाली सड़क पर उसका नेज्दानौफ़ से वार्तालाप हो गया।

तेरह

पहले वही उसकी ओर आई ।

"मि० नेज्दानौफ़," उसने कुछ जल्दी के स्वर में शुरू किया, "आप तो मेरे ख्याल से, वैलेन्निना पर पूरी तरह मोहित हो चुके हैं ?"

वह उत्तर की प्रतीक्षा किये विना ही मुड़ी और सड़क पर आगे बढ़ गई, वह उसके पीछे-पीछे चला ।

"ऐसा आप किस कारण से सोचती हैं ?" उसने कुछ देर रुककर पूछा ।

"क्या यह सच नहीं है ? यदि नहीं, तो आज उसका दाँव ठीक नहीं बैठा । मैं समझ सकती हूँ कि कितनी सावधानी से उसने सब काम किया होगा, किस प्रकार अपने नन्हे-नन्हे जाल फैलाये होंगे ।"

नेज्दानौफ़ ने एक शब्द भी नहीं कहा; वह एक बगल मे अपनी इस विचित्र संगिनी की ओर आँखें फाड़े देखता रह गया ।

"सुनिये," मेरियाना ने आगे कहा, "मैं दिखावा नहीं करूँगी । मुझे वैलेन्निना अच्छी नहीं लगती, और आप भी यह बात अच्छी तरह जानते हैं । मेरी बात आपको अन्यायपूर्ण लग सकती है······पर पहले आपको

विचार करना चाहिए······"

मेरियाना की आवाज भर्रा गई। वह उत्तेजित और विचलित हो उठी थी······भावावेश में वह सदा क्रुद्ध ही दिखाई पड़ती। "आप शायद अपने मन में सोच रहे होंगे," उसने फिर कहना शुरू किया, "यह लड़की मुझसे यह सब क्यों कह रही है? यही आपने तब सोचा होगा, मैं समझती हूँ, जब मैंने आपसे·········मि० मार्केलौफ़ के बारे में कुछ कहा था।"

उसने एकाएक झुककर एक छोटा-सा कुकुरमुत्ता उठा लिया, उसके दो टुकड़े किये और फिर फेंक दिया।

"आप भूल करती हैं, मेरियाना विकेन्त्येव्ना," नेज्दानौफ़ ने कहा, "इसके उलटे, मैंने तो सोचा कि आप मुझको भरोसे का आदमी समझती हैं—और यह विचार मुझे बड़ा सुखद जान पड़ा।"

नेज्दानौफ़ एकदम सच नहीं बोल रहा है, यह विचार अभी-अभी उसके मन में आया था।

मेरियाना ने तुरन्त उसकी ओर ताका। तब तक वह लगातार दूसरी ओर ही देखती रही थी।

"इस कारण इतना नहीं कि आप देखने में भरोसे के ही आदमी लगते हैं," उसने मानो विचार करते हुए कहा, "आप एकदम अजनबी हैं, समझते हैं। पर आपकी स्थिति—और मेरी—बहुत कुछ एक-सी ही है। हम लोग दोनों ही एक-से दुखी हैं; यह हम लोगों के बीच एक बन्धन है।"

"क्या आप दुखी हैं?" नेज़दानौफ़ ने पूछा।

"और आप, आप नहीं हैं?" मेरियाना ने उत्तर दिया।

उसने कुछ कहा नहीं।

"आप मेरी कहानी जानते हैं?" उसने जल्दी से शुरू किया, "मेरे पिता की कहानी? उसके निर्वासन की?—नहीं? अच्छा तो मैं बताये देती हूँ कि उन पर मुकदमा चला, जुर्म साबित हुआ, उनका

पद तथा···सब चीज छीन ली गयीं—और साइबेरिया भेज दिया गया। फिर उनका देहान्त हो गया···मेरी माँ भी मर गईं। मेरे मामा मि० सिप्यागिन ने मुझे पाला है; मैं उन्हीं के आश्रित हूँ; वह मेरे उद्धारक हैं। और वैलेन्निना मिहाइलोव्ना मेरी उद्धारिका। और मैं इसका बदला घोरतम अकृतज्ञता से चुकाती हूँ क्योंकि शायद मेरा हृदय कठोर है—और दान की रोटी कड़वी होती है—मुझे अपमानजनक कृपा बर्दाश्त करना नहीं आता—और मैं दूसरों का रोब दिखाना बर्दाश्त नहीं कर सकती······मुझे बात छिपाना भी नहीं आता; और जब मुझे निरंतर छोटी-छोटी चुटकियों द्वारा कोंचा जाता है तो मैं केवल इसीलिए अपनी रुलाई रोक पाती हूँ कि मुझे अभिमान बहुत है।"

इस असम्बद्ध वाक्यों का उच्चारण करते-करते मेरियाना और भी जल्दी-जल्दी चलने लगी। फिर एकाएक ही वह थम गई।

"क्या आप जानते हैं कि मामी मुझसे पीछा छुड़ाने के लिए मेरी शादी कर देना चाहती हैं···उस शैतान कैलोम्येत्सेफ़ के साथ—वह मेरे विचारों को जानती हैं—बल्कि उनकी आँखों में तो मैं शून्यवादी हूँ! जबकि वह, स्वभावतः ही मैं उसको आकर्षक नहीं लगती—आप तो समझते हैं मैं सुन्दर नहीं हूँ; पर बिक्री तो मेरी हो ही सकती है। वह एक और दान का काम हो जायगा न।"

"तो फिर आपने क्यों नहीं···" नेज्दानौफ़ ने शुरू किया और फिर कुछ झिझक गया।

मेरियाना ने पल भर उसकी ओर देखा। "मैंने मि० मार्केलौफ़ का प्रस्ताव क्यों नहीं स्वीकार कर लिया, आपका मतलब यही है न? अच्छा, पर मैं क्या करती? वह आदमी भले हैं। पर इसमें मेरा दोष नहीं है, मैं उनसे प्रेम नहीं करती।"

मेरियाना फिर सामने चलने लगी, मानो वह अपने संगी को अपनी प्रत्याशित आत्म-स्वीकृति के उत्तर में कोई बात कहने की बाध्यता से बचाना चाहती हो।

वे दोनों सड़क के दूसरे छोर पर पहुँच गये। मेरियाना जल्दी से एक तंग पगडंडी में मुड़ गयी जो घने लगे हुए सरों के पेड़ों के बीच से जाती थी और उसी पर चलने लगी। नेज़्दानौफ़ भी मेरियाना के पीछे-पीछे चला। उसे दोहरी परेशानी अनुभव हो रही थी; यह बात बड़ी आश्चर्य में डाल देने वाली थी कि ऐसी शर्मीली लड़की एकाएक उसके साथ इतनी खुल गई थी, और इस बात से उसे और भी अधिक आश्चर्य हो रहा था कि उसका यह निस्संकोच व्यवहार उसे अजीब नहीं लगा था, बल्कि उसे स्वाभाविक ही महसूस हुआ था।

मेरियाना एकाएक घूमी और रास्ते के बीचोंबीच थमकर खड़ी हो गई; फलस्वरूप उसका मुख नेज्दानौफ़ के मुख से केवल लगभग एक गज की दूरी पर रह गया और उसकी आँखें सीधी नेज्दानौफ़ के मुख पर गड़ी थी।

"अलैक्सी दिमित्रिच" उसने कहा, "यह मत सोचिये कि मेरी मामी का स्वभाव बुरा है···नहीं! वह धोखे की पुतली है, वह बहुरूपिनी है, हर समय स्वांग बनाये रहती है, वह चाहती है कि हर व्यक्ति सुन्दरी मानकर उसका आदर करे, और संत मानकर उसकी पूजा करे! वह कोई सहानुभूतिपूर्ण बात सोचकर एक आदमी से कहती है, फिर उसी बात को दूसरे के, तीसरे के आगे दोहराती है और हमेशा इसी अंदाज से कि मानो अभी-अभी उसे वह बात सूझी हो, और ठीक उसी समय वह अपनी करामाती आँखों का इस्तेमाल करती है! वह अपने आपको भली-भाँति समझती है; वह जानती है कि वह मैडोना के समान है, और वह किसी की परवाह नहीं करती! वह झूठ-मूठ दिखाती रहती है कि कोल्या की उसे बड़ी चिन्ता रहती है, पर वह उसके बारे में पढ़े-लिखे लोगों से चर्चा करने के अलावा और कुछ नहीं करती। वह किसी को नुक्सान नहीं पहुँचाना चाहती······दया की तो मूरत है! पर कोई उसकी उपस्थिति में आपके बदन की हड्डी-हड्डी तक चूर कर डाले, ······उसके ऊपर कोई असर न होगा! वह

आपको बचाने के लिए उँगली तक न उठायेगी। पर यदि उसके अपने लिए उपयोगी हुआ···तो फिर······ओह, तो फिर !"

मेरियाना थम गई। क्रोध के कारण उसका गला रुँध गया था। उसने क्रोध को कह डालने का इरादा कर लिया था—वह अपने-आपको और न रोक सकती थी; पर शब्दों ने जवाब दे दिया। मेरियाना विशेष श्रेणी के दुखी लोगों में से थी (रूस में ऐसे लोगों से प्रायः भेंट हो जाती है)······न्याय से उन्हें संतोष तो हो जाता है पर पूरा जी नहीं भरता; पर अन्याय से, जिसे पहचानने में वे बहुत ही तीक्ष्ण होते हैं, उनका गहन अंतराल तक विद्रोह कर उठता है। जिस समय वह बोल रही थी तो नेज़्दानौफ़ बड़े गौर से उसकी ओर देख रहा था; उसका तमतमाया हुआ चेहरा, उसके अस्त-व्यस्त छोटे-छोटे बाल और उसके काँपते और फड़कते हुए पतले-पतले होंठ, उसे बहुत ही अपूर्व, डरावने और सुन्दर लगे। धूप टहनियों के घने जाल से टुकड़े-टुकड़े होकर, उसकी भौंह के ऊपर सोने के ढालू धब्बे जैसी गिर रही थी और यह आग की लपट-सी उसके समूचे मुख के उत्तेजित भाव के, उसकी पूरी खुली, एकदम और चमकती आँखों के, उसके कण्ठ की रोमांचक आवाज़ के साथ मेल खाती जान पड़ती थी।

"यह बताइये," नेज़्दानौफ़ ने आखिरकार पूछा, "आपने मुझे दुखी क्यों कहा था ? क्या यह सम्भव है कि आप मेरे अतीत के बारे में जानती हैं ?"

मेरियाना ने सिर हिलाकर कहा—

"हाँ।"

"यानी······कैसे पता चला आपको ? किसी से आपकी मेरे बारे में बातचीत हुई थी ?"

"मैं जानती हूँ······आपके जन्म के बारे में।"

"आप जानती हैं······किसने कहा आपसे ?"

"क्यों, उसी वैलेन्तिना मिहाइलोव्ना ने, जिस पर आप इतने मोहित

है ! वह मेरी उपस्थिति में यह जिक्र करना नहीं भूली, बड़ी लापरवाही के साथ, जैसा उसका तरीका है, पर माफ़-साफ़—सहानुभूति के साथ नही, पर एक उदारपथी की भाँति जो हर प्रकार के पूर्वग्रह से मुक्त होता है—कि हमारे नये शिक्षक के जीवन में एक दिलचस्पी की घटना भी है अवश्य ही। कृपा करके आश्चर्य न कीजिये; वैलेन्निना उसी लापरवाही से, और दुख के साथ, प्राय. प्रत्येक मिलने वाले को यह भी सूचित करती है कि निस्सन्देह उसकी भानजी के जीवन में भी एक··· दिलचस्प घटना है-—उसके पिता को घूस लेने के अपराध में साइबेरिया भेजा गया था। वह अपने-आपको भले ही कुलीन समझे, पर वह केवल पीठ पीछे बुराई करती है और ढोंग रचाती है, आपकी मैडोना !"

"क्षमा कीजिए," नेज़्दानौफ ने पूछा, "वह 'मेरी' क्यों है—"

मेरियाना मुँह फेरकर फिर रास्ते पर चल पड़ी।

"आपकी उससे इतनी लम्बी-चौड़ी वातचीत हुई," उसने क्षुब्ध स्वर में कहा।

"मैंने मुश्किल से एकाध शब्द कहा होगा," नेज्दानौफ वोला, "सारे वक्त वह अकेली ही बात करती रही।"

मेरियाना चुपचाप चलती रही, पर इसी समय रास्ता एक ओर को मुड़ गया और मानो चीड़ के वृक्षों ने उनके लिए रास्ता छोड़ दिया हो, एक छोटा-सा घाम का मैदान उनके सामने निकल आया जिसके बीच में एक खोखला बर्च का पेड़ था और पुराने पेड़ को घेरती हुई एक गोल बैठने की जगह थी। मेरियाना वहाँ बैठ गई; नेज्दानौफ़ ने भी उसी के पास जगह ले ली। छोटी-छोटी हरी पत्तियों से भरी लम्बी-लम्बी लटकती डालियाँ उन दोनों के सिरों के ऊपर झूम रही थीं। उनके चारों ओर सुन्दर घास में से लिली के सफेद फूल उचककर झाँक रहे थे और समूचे मैदान में से हाल ही में अंकुरित पेड़-पौधों से ताज़ा गंध उठ रही थी, जो चीड़ के वृक्षों की कष्टदायक लीसा-मिश्रित गंध के

वाद वड़ी मीठी और स्फूर्तिदायक जान पड़ती थी।

"आप मेरे साथ यहाँ का स्कूल देखने जाना चाहते थे," मेरियाना ने शुरू किया, "चलिये, तो फिर चलें······सिर्फ······मैं जानती नहीं। आपको अधिक आनन्द न आयेगा। आपने सुना ही है कि हमारे मुख्य अध्यापक हैं छोटे पादरी। वह स्वभाव के अच्छे हैं, पर आप कल्पना नहीं कर सकते कि वह अपने छात्रों से कैसी-कैसी बातें करते हैं। उनमें एक लड़का है······उसका नाम है गरासी। वह अनाथ है, दस बरस का, और सोचिये वह बाकी सबसे जल्दी सीखता है हर चीज़!"

एकाएक बातचीत का विषय बदलने के साथ-साथ स्वयं मेरियाना भी एकदम बदली हुई जान पड़ती थी। उसका चेहरा कुछ फीका पड़ गया था और शांत भी······और उसके मुख पर एक झिझक का-सा भाव था मानो वह जो कुछ कह रही थी उसके लिए लज्जित हो। वह स्पष्ट ही यह चाहती जान पड़ती थी कि नेज्दानौफ़ किसी-न-किसी प्रकार के अन्य विषय पर—किसानों या स्कूलों के बारे में—किसी भी समस्या पर बात करने लगे, ताकि पहले की तरह बातें न शुरू हो जायँ। पर वह उस समय किसी 'समस्या' की चर्चा करने की अवस्था में न था।

"मेरियाना विकेन्त्येव्ना," उसने शुरू किया, "मैं आपसे खुलकर बात करूँगा। जो कुछ अभी-अभी हम लोगों के बीच गुज़रा है······ उसकी मैंने बिल्कुल भी आशा न की थी" ('गुजरा है' शब्द पर वह थोड़ी चौंक उठी)। "मुझे लगता है कि हम लोग अचानक ही······बहुत समीप आ गए हैं। और यह होना ही था। हम लोग बहुत समय से एक दूसरे के समीप आ रहे हैं, किन्तु हमने उसे शब्दों में न रखा था। इसलिए मैं भी आपसे बिना किसी दुराव की बात कहूँगा। आप इस घर में बड़ी दुखी और संत्रस्त अनुभव करती हैं, पर आपके मामा, यद्यपि वह भी संकुचित हैं, तो भी जहाँ तक मैं पहचान सका, काफी सहृदय

आदमी हैं, हैं न ? क्या वह आपकी स्थिति समझकर आपका समर्थन न करेंगे ?"

"मेरे मामा ? पहली बात तो यह है कि वह आदमी हैं ही नहीं, वह अफ़सर हैं—सिनेटर या मन्त्री······यह नहीं जानती। और दूसरे······मैं बेकार ही लोगों की बुराई और शिकायत नहीं करना चाहती। मैं यहाँ बिलकुल संत्रस्त नहीं, यानी मुझ पर किसी प्रकार जुल्म नहीं होता, मामी की चिकोटियाँ वास्तव में मेरा कुछ नहीं बिगाड़तीं······मैं एकदम स्वाधीन हूँ।"

नेज्दानौफ़ भौंचक्का-सा मेरियाना की ओर देखने लगा।

"उस हालत में······आपने जो कुछ अभी मुझसे कहा था······"

"आप चाहें तो मेरे ऊपर हँसें," उसने जल्दी से कहा, "पर यदि मैं दुखी हूँ—तो स्वयं अपनी मुसीबतों के कारण नहीं। कभी-कभी मुझे लगता है कि मैं रूस के पीड़ितों, गरीबों, मज़लूमों के लिए दुखी हूँ······नहीं मैं दुखी नहीं हूँ, बल्कि क्षुब्ध हूँ—मैं उनके लिए विद्रोह पर उतारू हूँ।······उनके लिए······अपना जीवन अर्पित करने को तैयार हूँ। मैं दुखी इसलिए हूँ कि मैं एक जवान लड़की हूँ—पराधीन, क्योंकि मैं कुछ कर नहीं पाती—किसी काम के योग्य नहीं हूँ। जब मेरे पिता साइबेरिया में थे, और मैं माँ के साथ मास्को में तो—आह ! मुझे उनके पास जाने की कितनी इच्छा होती थी ! यह नहीं कि मेरे मन में उनके लिए बहुत प्रेम या आदर था—पर मैं स्वयं अपनी आँखों यह देखने के लिए कितनी उत्सुक थी कि अपराधी और कैदी कैसे रहते हैं······और अपने प्रति, और उन तमाम आरामतलब, अमीर, खाते-पीते लोगों के प्रति मुझे कितनी विरक्ति होती थी।······और बाद में, जब वह वापिस लौटे, जर्जर, पराजित, और अपने-आपको और भी नीचे गिराने लगे, चिढ़ाने और काम निकालने के लिए परेशान होने लगे······आह······तो कितना असह लगता था ! उनका मरना कितना अच्छा हुआ······और माँ का भी ! पर, मैं तो बची रह ही

गई······और किसलिए ? यह अनुभव करने के लिए कि मेरा स्वभाव बुरा है, मैं अकृतज्ञ हूँ, मुझमें कोई अच्छाई नहीं है, मैं कुछ कर नहीं सकती—किसी काम के लिए किसी व्यक्ति के लिए कुछ नहीं कर सकती।"

मेरियाना ने मुँह फेर लिया। उसका हाथ फिसलकर बैठने की बैंच पर आ गया था। नेज्दानौफ़ को उसके लिए बड़ा दुःख हुआ; वह उसके हाथ को थपथपाने लगा······पर मेरियाना ने तुरन्त अपना हाथ खींच लिया, इसलिए नहीं कि नेज्दानौफ़ का कार्य उसे असंगत लगा, बल्कि इसलिए कि कहीं—भगवान् न करे!—वह यह न सोचने लगे कि वह उसकी सहानुभूति की इच्छुक है।

चीड़ के वृक्षों की डालियों में से किसी स्त्री के वस्त्रों की झलक दिखाई पड़ी।

मेरियाना सम्हल कर बैठ गई। "देखिये, आपकी मैडोना ने अपना गुप्तचर भेज दिया है। उस नौकरानी का काम यही है कि वह मेरे ऊपर नज़र रखे और अपनी स्वामिनी को सूचित करती रहे कि मैं कहाँ और किसके साथ थी। मामी ने, बहुत सम्भव है, यह अनुमान किया हो कि मैं आपके साथ हूँगी, और वह इसे, विशेषकर आपके साथ उस भावपूर्ण दृश्य का अभिनय करने के बाद, अनुचित समझती हैं। और वास्तव में लौटने का समय भी हो गया है। चलिये, चलें।"

मेरियाना उठ पड़ी। नेज्दानौफ़ भी अपने स्थान से खड़ा हो गया। मेरियाना ने मुँह फिराकर उसकी ओर देखा, और अचानक उसके मुख पर एक बच्चों का सा, सुन्दर और थोड़ा संकोच-भरा भाव झलक आया।

"आप मुझसे नाराज़ तो नहीं है ? यह तो नहीं सोचते कि मैं भी आपके आगे बन रही थी ? नहीं, आप यह नहीं सोचते," नेज्दानौफ़ कोई उत्तर दे सके इसके पहले ही उसने आगे कहना शुरू कर दिया।" "देखिये, आप भी मेरी ही तरह दुखी हैं, और आपका स्वभाव भी······

बुरा है, मेरी ही तरह। कल हम लोग साथ-साथ स्कूल चलेगे, क्योकि अब हम लोग मित्र हो गए है, जानते है।"

मेरियाना और नेज्दानौफ जब घर के समीप पहुँचे तो वैलेन्निना ने छज्जे से एक छोटी-सी दूरबीन द्वारा उनको देखा और अपनी हमेशा की मीठी मुस्कान के साथ धीरे-धीरे सिर हिलाया, फिर खुले हुए काँच के दरवाजे से ड्राइगरूम मे लौट कर, जहा सिप्यागिन पहले से ही बैठा चाय के लिए आए हुए दन्तहीन पड़ौसी के साथ ताश खेल रहा था, ऊँचे चबाते हुए स्वर में और एक-एक अक्षर स्पष्ट उच्चारण करती हुई बोली, "रात की हवा कितनी नम है ! बड़ी खतरनाक है !"

मेरियाना ने नेज्दानौफ की ओर देखा, और सिप्यागिन ने, जो अभी-अभी अपने साथी से एक 'पाइन्ट' जीतकर चुका था, पहले तो एक तिरछी और ऊपर की ओर को सच्ची मन्त्रीजनोचित दृष्टि डाली, और फिर अपनी इसी शीतल, निद्रित-सी, किन्तु भीतर तक खोजती सी दृष्टि को, अँधियारे बाग से आते हुए दोनो तरुण संगियों की ओर मोड दिया।

चौदह

एक पखवाड़ा और बीत गया। हर चीज़ अपनी निश्चित गति से चल रही थी। सिप्यागिन दिन-भर का कामकाज मंत्री की भाँति नही तो कम-से-कम एक विभाग के संचालक की भाँति तो तै करता ही था और सदा वही उच्च, सहृदयतापूर्ण और छोटी-से-छोटी बात पर ध्यान देने वाला व्यवहार बनाये रखता। कोल्या की पढ़ाई चलती थी; अन्नाजाहारोव्ना निरन्तर दबे हुए क्रोध मे छटपट करती रहती; मिलने वाले आते, बातें करते, ताश खेलते और ऊपर से बिल्कुल भी उकताये नहीं जान पड़ते। वैलेन्निना का नेज्दानौफ़ के साथ मनबहलाव भी वैसा ही चलता था, यद्यपि उसकी कृपा में एक प्रकार की सदाशयपूर्ण व्यंग की हलकी झलक भी दिखाई पड़ती थी। मेरियाना के साथ नेज्दानौफ़ निश्चित रूप से अधिक आत्मीय होता जा रहा था, और उसे यह जानकर आश्चर्य था कि उसका स्वभाव काफ़ी संयत था और वह उससे किसी भी विषय पर बहुत अधिक विरोध के बिना ही बात कर लेता था। उसके साथ वह दो बार स्कूल भी हो आया था, यद्यपि पहली बार ही वह यह समझ गया था कि वहाँ उसके लिए कोई काम नहीं

है। श्रद्धेय छोटे पादरी महोदय सिप्यागिन की पूर्ण सहमति से, बल्कि वास्तव में उसकी इच्छा से ही, स्कूल के कर्ता-धर्ता थे! वह पढ़ना-लिखना तो ठीक ही सिखाते थे, यद्यपि उनका ढंग पुराना ही था। परन्तु परीक्षाओं में वह निश्चित रूप से हास्यास्पद प्रश्न पूछते थे। उदाहरण के लिए एक दिन उन्होंने गरासी से पूछा कि "आकाश के जल" इस कथन को कैसे समझाया जा सकता है, जिसका उत्तर, उन्हीं श्रीमान् के आदेशानुसार, गरासी को यह लिखना था कि "इसे नहीं समझाया जा सकता।"

इसके अतिरिक्त स्कूल जैसा था वह जल्दी ही—गर्मी के दिनों में—शरद् ऋतु तक के लिए बंद हो गया। पाकलिन तथा अन्य लोगों के उपदेशों की याद करके नेज्दानौफ़ ने किसानों से मित्रता करने का भी प्रयत्न किया; पर शीघ्र ही वह समझ गया कि वह केवल, अपनी निरीक्षण शक्ति द्वारा यथा-संभव, उनका अध्ययन कर रहा है, उनमें प्रचार-कार्य नहीं। उसने अपना सारा जीवन शहर में ही बिताया था, और उसके तथा देहात के लोगों के बीच एक खाई थी जिसे वह नहीं पाट सकता था। नेज्दानौफ़ ने थोड़ी बहुत शराबी किरिलपे और मेंडेले से भी बातचीत की, पर आश्चर्य की बात यह है, कि उसे जैसे उनसे डर लगता था, और आम-तौर पर चीज़ों की संक्षिप्त-सी आलोचना के अलावा वह उनसे कुछ न निकाल सका। फित्युएफ़ नामक एक और किसान ने तो उसे एकदम हतप्रभ कर दिया। इस किसान का चेहरा असाधारण, शक्तिवान, करीब-करीब किसी लुटेरे सरदार का-सा लगता था। नेज्दानौफ़ ने सोचा, "चलो, यह आदमी जरूर काम का साबित होगा।······पर फित्युएफ़ एक बिल्कुल निकम्मा आदमी निकला; उसकी ज़मीन उससे छीन ली गई थी, क्योंकि इतना तंदुरुस्त और निश्चित रूप से शक्ति-शाली व्यक्ति होने पर भी वह कोई काम ही नहीं कर सकता था।

"मैं नहीं कर सकता!" फित्युएफ़ सिसकते हुए, गहरी आंतरिक

कराहों के साथ और लम्बी साँस भरकर कहता, "मैं काम नहीं कर सकता ! मुझे मार डालिये ! या एक दिन मैं स्वयं अपनी हत्या कर डालूँगा !" और अन्त में वह भीख माँगने लगता—रोटी के टुकड़े के लिए एक पैसा······और चेहरा था रिनाल्डो रिनाल्डिनी के किसी चित्र में से निकाला हुआ !

कारखाने के लोग भी नेज्दानौफ़ के मतलब के न थे। वे सब लोग या तो बहुत अधिक तेज़-तर्रार थे या बहुत ही सुस्त-उदास थे····और नेज्दानौफ़ की उनसे बिलकुल नहीं निभ सकती थी। इस सम्बन्ध में उसने एक लम्बा-सा पत्र अपने मित्र सीलिन को लिखा जिसमें उसने अपनी अक्षमता की बड़ी तीखी आलोचना की और इसको अपनी निकम्मी शिक्षा और अपने कला-प्रेमी स्वभाव का परिणाम बताया। वह एकाएक इस निष्कर्ष पर पहुँच गया था कि प्रचार-कार्य में वह बोले जाने वाली जीवित भाषा द्वारा नहीं, लिखित भाषा द्वारा ही भाग ले सकता है। पर उसने जिन पुस्तिकाओं की योजना बनाई वे पूरी ही न हो सकीं। वह जो कुछ भी कागज पर लिखने की कोशिश करता, वह सभी उसे वैसा ही झूठा, खींचतान कर मिलाया हुआ, ध्वनि और भाषा की दृष्टि से बनावटी, जान पड़ता; और दो बार—हे भगवान् ! उसने अपने-आपको छंदों की दिशा में अथवा निष्ठाहीन व्यक्तिगत भावोच्छ्वास की ओर बहकते हुए पकड़ा। इस बात की चर्चा उसने मेरियाना से करने का निश्चय किया जो परस्पर विश्वास और घनिष्ठता का अपूर्व प्रमाण था। और उसे मेरियाना से हमदर्दी पाकर बड़ा ताज्जुब हुआ, उसके साहित्यिक झुकाव के साथ नहीं, बल्कि उस नैतिक व्याधि के साथ जिससे वह पीड़ित था और जिससे वह भी परिचित थी। मेरियाना भी हर कलात्मक चीज़ के उतने ही विरुद्ध थी जितना नेज्दानौफ़ था; किन्तु तो भी जिस कारण से वह मार्केलौफ़ को न प्यार कर सकी थी न उससे विवाह ही, वह यही था कि उसके स्वभाव में कलात्मकता का नामोनिशान भी न था। मेरियाना में स्वभावतः ही इस बात को स्वयं

आगे भी स्वीकार करने का साहस न था; पर हम जानते है कि हमारे मन की आधी छिपी हुई रहस्यमयी प्रवृत्ति ही हमारे भीतर सबसे प्रबल हुआ करती है।

इसी तरह से दिन बीत रहे थे, असमानरूप से, किन्तु नीरसता के साथ नही।

नेज्दानौफ़ के हृदय मे कुछ अजीव-सा घट रहा था। वह अपने आप अपने कार्य से, बल्कि अपनी निष्क्रियता से, असन्तुष्ट था, उसके शब्दो में प्राय· निरन्तर ही तीखे और कडवे आत्म-प्रताड़न की ध्वनि रहती; पर उसके अंतस्तल में—कही गहरे अतराल मे—एक प्रकार के आनन्द और शांति की अनुभूति थी। यह देहाती जीवन की शांति का, ताजा हवा, ग्रीष्म-ऋतु, अच्छे भोजन और आराम की जिन्दगी का परिणाम था, अथवा इस कारण कि अपने जीवन मे पहली बार वह एक नारी हृदय की घनिष्ठ समीपता की मधुरता का आस्वादन कर रहा था, यह कहना कठिन है; पर सचमुच उसका हृदय हलका था, हालाँकि वह अपने मित्र सीलिन से सच्चे मन से ही शिकायत करता रहता था।

पर मन की यह अवस्था एक ही दिन में अकस्मात् ही और झटके के साथ भग हो गई।

उस दिन सवेरे वैसिली निकोलाएविच का एक पत्र मिला, जिसमें उसे मार्केनौफ के साथ मिलकर तुरन्त ही पूर्व उल्लिखित सालोमिन से और स०—निवासी गालुश्किन नामक एक व्यापारी से दोस्ती करके कोई निश्चय कर लेने का और साथ ही बाद के आदेशों की प्रतीक्षा करने का आदेश दिया गया था। इस पत्र ने नेज्दानौफ़ को बुरी तरह झकझोर दिया; उसमें उसे अपनी निष्क्रियता की भर्त्सना भी दीख गई। जो कडवाहट अभी तक शब्दों में ही दिखाई पडती थी, अब फिर उसके अंतस्तल से भड़क उठी।

कैलोम्येत्सेफ भोजन के समय आया तो बहुत परेशान और चिढ़ा

हुआ था। "सोचिए," वह करीब-करीब रोनी-सी आवाज़ में चीखकर बोला, "मैंने अखबार में कैसी भयानक खबर पढ़ी है। मेरे मित्र, परमप्रिय मिहाइल, सर्बिया के राजा की कुछ उपद्रवियों ने बेलग्रेड में हत्या कर दी! यदि हम कठोरता से काम नहीं लेते तो ये क्रांतिकारी और प्रजातन्त्रवादी अंत में यही सब करने लगते हैं।" सिप्यागिन ने कहा, शायद यह घृणित हत्या प्रजातन्त्रवादियों का कार्य न हो, "जिनके अस्तित्व की भी सर्बिया में कल्पना करना कठिन है।" शायद यह ओब्रेनोविच के शत्रुओं का, काराज्योर्जीविच के दल के लोगों का कार्य हो।······पर कैलोम्येत्सेफ़ कुछ भी सुनने को तैयार न था, और उसी रोनी-सी आवाज़ में कहता रहा कि किस प्रकार मृत राजा उसे प्यार करता था, कैसी बढ़िया बन्दूक उसने उसे भेंट में दी थी!······धीरे-धीरे बात बदलते हुए और अधिकाधिक क्रुद्ध होकर कैलोम्येत्सेफ़ विदेशी प्रजातन्त्रवादियों को छोड़कर देशी शून्यवादियों और समाजवादियों पर उतर आया और अन्त में गरमागरम भाषण फटकारने लगा। दोनों हाथों से एक बड़ी सफेद रोटी पकड़कर उसे अपने शोरबे की तश्तरी के ऊपर, काफे टीटो में ठीक सच्चे पेरिसवासियों की शैली में, दो टुकड़े करते हुए, उसने उन तमाम लोगों को, जो किसी व्यक्ति अथवा वस्तु के भी विरोधी थे, कुचलने, पीस डालने की अपनी इच्छा प्रकट की। उसने ठीक यही शब्द कहे थे, "अब वक्त आ गया है।" उसने अपने चम्मच को मुँह तक उठाते-उठाते घोषणा की, "अब वक्त आ गया है!" उसने दोहराया और अपना ग्लास नौकर को शैरी के लिए बढ़ा दिया। उसने मास्को के बड़े-बड़े पत्रकारों का बड़ी श्रद्धा से ज़िक्र किया और लादिला का नाम तो हर समय उसके होंठों पर था और सारी बातचीत में उसने अपनी आँखें नेज़्दानौफ़ पर गड़ाये रखीं मानो उसे अपनी नज़र से वहीं जड़ देना चाहता हो। "लो, यह तुम्हारे ही लिए है," वह कहता जान पड़ता था। "यह लो! यह भी तुम्हारे लिए है! और ऐसा ही और भी है!" आखिरकार नेज़्दानौफ़ और बर्दाश्त न कर

सका और वह भी उलटकर उत्तर देने लगा। यह सही है कि उसकी आवाज़ कुछ अनिश्चित और भर्राई हुई थी—निस्संदेह भय के कारण नहीं; वह नई पीढ़ी की आशा-आकांक्षाओं का, आदर्शों का पक्ष लेने लगा। कैलोम्येत्सेफ़ ने तुरन्त ऊँचे स्वर में प्रत्युत्तर दिया—क्रोध में सदा उसकी आवाज़ बहुत ऊपर चढ़ जाती थी—और गाली बकने लगा।

सिप्यागिन ने बड़े रौब के साथ नेज़्दानौफ़ का पक्ष लिया; वैलेन्निना भी अपने पति से सहमत थी; अन्नाज़ाहारोव्ना कोल्या का ध्यान बँटाने लगी और अपनी टोपी के नीचे से चारों ओर क्रुद्ध दृष्टि से देखने लगी। मेरियाना ऐसे बैठी थी मानो पत्थर की हो गई हो।

पर एकाएक लादिला का नाम बीसवीं बार सुनकर, नेज़्दानौफ़ भड़क उठा और मेज पर घूँसा मारकर वह चीख पड़ा, "बड़ा भारी नाम लिया! जैसे हम लोग जानते न हों कि यह लादिला किस प्रकार का जीव है! वह अपने जन्म से भाड़े का टट्टू है और कुछ नहीं!"

"आ—हा···ऽ···ऽ, तो यह बात है!" कैलोम्येत्सेफ़ ने गुस्से से हकलाते हुए कुत्ते की तरह रिरियाते हुए बोला···"तो इस तरह से आप उस व्यक्ति के बारे में बातचीत करने की हिम्मत करते हैं जिसे काउंट ब्लेज़ेनक्राम्फ और राजा कावरिज़्किन जैसे प्रमुख व्यक्तियों का आदर प्राप्त है!"

नेज़्दानौफ़ ने अपने कंधे सिकोड़े, "क्या कहने हैं सिफ़ारिश के, सचमुच; राजा कावरिज़्किन, वह खुशामदी···"

"लादिला मेरा मित्र है," कैलोम्येत्सेफ़ ने चीखकर कहा, "मेरा साथी है····और मैं···"

"कोई बड़े घमण्ड की बात नहीं है," नेज़्दानौफ़ ने बात काटकर कहा, "इसका मतलब है आपके भी विचार उसी जैसे हैं और मेरा कथन आपके लिए भी उपयुक्त है।"

कैलोम्येत्सेफ़ क्रोध से आगबबूला हो गया।

"क्...क्या, आप हँसते हैं! आपको...आपको...फौरन ही..."

"मेरे साथ फौरन ही क्या कर डालने की कृपा आप कीजियेगा?" नेज़्दानौफ़ ने दूसरी बार व्यंगपूर्ण शिष्टता के साथ बात काटी।

कहना कठिन है कि इन दोनों के इस विवाद को सिप्यागिन शुरू से ही न रोक लेता तो इसका कहाँ अन्त होता। अपना स्वर ऊँचा करके और ऐसा भाव धारण करके, जिसमें यह बताना कठिन था कि कौनसा तत्त्व प्रधान था—राजनीतिज्ञ का गम्भीर अधिकार या गृहस्वामी का गौरव—उसने शान्ति के साथ इस बात पर ज़ोर दिया कि वह अपनी मेज़ के ऊपर ऐसे असंयत कथन नहीं सुनना चाहता और उसने यह बहुत दिन पहले से अपना नियम—उसने अपनी भूल ठीक करते हुए कहा, 'पवित्र नियम' बना लिया है कि हर प्रकार के विचारों का सम्मान किया जाय, किन्तु यह केवल एक शर्त पर (यहाँ उसने अपनी मुहरदार अँगूठी से सुसज्जित तर्जनी उँगली ऊपर उठाई) कि वे विचार शिष्टता और सुसंस्कृति की सीमा के अन्दर रहें। उसने यह भी कहा कि यद्यपि वह मि० नेज़्दानौफ़ की भाषा की थोड़ी-सी संयमहीनता को दोष दिये बिना नहीं रह सकता, जो, किन्तु, उनकी अवस्था को देखते हुए क्षम्य मानी जा सकती है, दूसरी ओर वह विरोधी पक्ष के लोगों पर मि० कैलोम्येत्सेफ़ के प्रहारों की तीव्रता की भी प्रशंसा नहीं कर सकता, यद्यपि यह तीव्रता उनके जन-कल्याण के लिए उत्साह का ही परिणाम है।

"मेरी छत के नीचे," उसने अन्त में कहा, "सिप्यागिन-परिवार की छत के नीचे, न प्रजातन्त्रवादी हैं न भाड़े के टट्टू, वहाँ केवल सदाशय व्यक्ति ही हैं, जो एक बार एक-दूसरे को समझ लेने के बाद, अवश्य ही अन्त में हाथ मिला लेते हैं।"

नेज़्दानौफ़ और कैलोम्येत्सेफ़ दोनों चुप हो गये, पर उन्होंने हाथ नहीं मिलाये, स्पष्ट ही परस्पर समझ लेने का क्षण उनके लिए अभी

नही आया था । वल्कि इसके विपरीत, इतनी तीव्र पारस्परिक घृणा उन्होंने पहले कभी नहीं अनुभव की थी । भोजन अप्रिय और भद्दी चुप्पी के साथ समाप्त हुआ । सिप्यागिन ने एक कूटनीति का चुटकला सुनाने की कोशिश की, पर उसे भी हारकर करीब-करीव बीच ही में छोड़ देना पड़ा । मेरियाना स्थिर दृष्टि से अपनी प्लेट की ओर ही ताक रही थी । उसने नेज़्दानौफ़ की वातों से उत्पन्न अपनी सहानुभूति को प्रकट न करना ही ठीक समझा—कायरता के कारण नहीं, ओह नहीं! वल्कि उसे सवसे पहले इस वात की ज़रूरत महसूस हुई कि श्रीमती सिप्यागिन को उसके भावों का पता न चलने पाये । उसे लगा कि वैलेन्निना की पैनी दृष्टि लगातार उसी के ऊपर, उसके और नेज़्दानौफ़ के ऊपर, गड़ी हुई है । नेज़्दानौफ़ के अप्रत्याशित रूप में वरस पड़ने से पहले तो वह बुद्धिमान महिला स्तम्भित हो गई थी, फिर एकाएक उसे मानो प्रकाश की किरण मिल गई, यहाँ तक कि वह अपने आप ही बड़बड़ा उठी । आह !······वह एकाएक पहचान गई कि नेज़्दानौफ़ उससे दूर हट रहा है—नेज़्दानौफ़, जो इतने हाल ही में उसकी मुट्ठी में था । तब तो अवश्य ही कुछ-न-कुछ हुआ ही होगा············क्या इसका कारण मेरियाना है ? अवश्य मेरियाना ही है······वह उसकी ओर आकर्षित हो गई है······हाँ, और वह······

"इसका इन्तजाम करना चाहिए," उसने अपनी विचारधारा को समाप्त किया । उधर कैलोम्येत्सेफ़ का क्रोध से दम घुटा जा रहा था । दो घण्टे बाद ताश खेलने में भी जब वह 'पास' या 'मेरीचान' जैसे शब्द उच्चारण करता तो उनमें दुखते हुए दिल की झंकार थी, और यद्यपि उसने इस सबके ऊपर होने की मुद्रा धारण कर रखी थी, तो भी उसकी आवाज़ में आहृत अभिमान की भर्राहट और कम्पन सुनाई पड़ता था । केवल सिप्यागिन ही इस समूची घटना से निश्चित रूप से प्रसन्न था । उसे अपनी ओजस्वी वाग्धारा का प्रताप दिखाने का, उठते हुए तूफ़ान को शान्त कर देने का अवसर प्राप्त हुआ था । ······वह लैटिन

भाषा जानता था और वर्जिल के 'मैं शमन करता हूँ' से वह परिचित था। उसने तूफ़ान को वश में करते वरुण के साथ जान-बूझकर अपनी तुलना तो नहीं की, पर उसका एक प्रकार की सहानुभूति के साथ स्मरण अवश्य किया।

पन्द्रह

जितनी जल्दी सम्भव हो सका, नेज़दानौफ़ ने अपने कमरे में आकर भीतर से दरवाज़ा बन्द कर लिया। वह किसी से, मेरियाना के सिवाय किसी से नहीं मिलना चाहता था। मेरियाना का कमरा उस लम्बे बरामदे के अन्त में था जो पूरी समूची मंजिल को काटता था। नेज़दा-नौफ़ केवल एक बार और वह भी केवल कुछ क्षणों के लिए, उसके कमरे में गया था, पर उसे लगा कि यदि वह इस समय जाकर उसका द्वार खटखटाये तो वह नाराज़ न होगी, बल्कि शायद उससे बात करने के लिए उत्सुक ही होगी। देर तो बहुत हो चुकी थी। कोई दस बजे का समय था। सिप्यागिन-दम्पति ने भोजन के समय की घटना के बाद उसको न छेड़ना ही ठीक समझा था। वे लोग अभी तक कैलोम्येत्सेफ़ के साथ ताश खेल रहे थे। वैलेन्निना ने अवश्य दो बार मेरियाना के बारे में पूछा था, क्योंकि वह भी भोजन के बाद जल्दी ही गायब हो गई थी।

"मेरियाना विकेन्त्येव्ना कहाँ गई?" उसने पहले रूसी में, फिर फ्रेंच भाषा में पूछा, उसका प्रश्न किसी विशेष व्यक्ति से नहीं, बल्कि दीवारों

से था, जैसा बहुत आश्चर्य-चकित होने पर प्रायः किया करते हैं। पर शीघ्र ही वह भी खेल में डूब गई।

नेज्दानौफ़ ने एक-दो चक्कर अपने कमरे में काटे, फिर वह बरामदे में मेरियाना के कमरे की ओर चला गया और दरवाज़ा हलके से खट-खटाया। कोई उत्तर न मिला। उसने एक बार और खटखटाया, दर-वाज़ा खोलने की कोशिश की..........भीतर से चटखनी बन्द जान पड़ती थी। पर वह मुश्किल से वापस अपने कमरे में पहुँचकर बैठा ही था कि उसका दरवाज़ा धीमे से चरमराया और मेरियाना की आवाज़ सुनाई दी।

"अलैक्सी दिमित्रिच, क्या आप मेरे कमरे को खटखटा रहे थे?"

वह तुरन्त उछल पड़ा और बरामदे की ओर दौड़ गया। मेरियाना उसके दरवाज़े पर ही एक मोमबत्ती हाथ में लिए, निश्चल और निस्तेज खड़ी थी।

"हाँ......मैं......" उसने फुसफुसा कर कहा।

"आइए," उसने उत्तर दिया और बरामदे में चल पड़ी, पर अन्त तक पहुँचने के पहले ही वह रुक गई और एक नीचा-सा दरवाज़ा हाथ से धकेलकर खोल दिया। नेज्दानौफ को एक छोटा, लगभग खाली कमरा दिखाई पड़ा। "हम लोग यहीं बात करें तो अच्छा होगा, अलैक्सी दिमित्रिच, यहाँ कोई विघ्न न डालेगा।" नेज्दानौफ़ ने आदेश का पालन किया। मेरियाना ने मोमबत्ती खिड़की की देहली पर टिका दी और नेज़दानौफ़ की ओर मुड़ी।

"मैं समझती हूँ आप क्यों मुझसे मिलना चाहते हैं," वह बोली, "आपके लिए इस घर में रहना बहुत कष्टदायक है; ऐसा ही मेरे लिए भी है।"

"हाँ, मैं आपसे मिलना चाहता था, मेरियाना विकेन्त्येव्ना," नेज़दानौफ ने उत्तर दिया, "पर आपसे परिचय होने के बाद से अब यह घर मुझे कष्टदायक नहीं लगता।"

मेरियाना विचारमग्न-सी मुस्कराई।

"धन्यवाद, अलैक्सी दिमित्रिच; पर सच बताइये, इस रद्दी घटना के बाद भी क्या आप रह पायँगे ?"

"मेरे खयाल से वे लोग मुझे यहाँ अब रखेंगे ही नहीं, निकाल देंगे !"

"आप स्वयं न निकल जायँगे ?"

"अपने आप ?·······नहीं।"

"क्यों ?"

"सच बात जानना चाहती हैं, क्योंकि आप यहाँ हैं।"

मेरियाना ने अपना सिर झुका लिया और कमरे में थोड़ा और दूर चली गई।

"और इसके अतिरिक्त," नेज़्दानौफ़ ने कहा, "मैं यहाँ रहे आने के लिए बाध्य हूँ। आप जानती नहीं, पर मैं चाहता हूँ, लगता है कि मुझे चाहिए कि मैं आपको सब बात बता दूँ।"

उसने आगे बढ़कर मेरियाना का हाथ पकड़ लिया। उसने हाथ खींचा नहीं, केवल उसके मुख की ओर देखने लगी। "सुनिये," उसने अचानक ही एक प्रबल प्रेरणा के वशीभूत होकर कहा, "मेरी बात सुनिये !" और तुरन्त बैठे बिना ही, यद्यपि कमरे में दो-तीन कुर्सियाँ पड़ी हुई थीं, मेरियाना के आगे खड़े-खड़े और उसका हाथ पकड़े हुए, प्रेरणा के जोश में और अपने-आपसे अप्रत्याशित धारा-प्रवाह वक्तृता में नेज़्दानौफ़ उसे अपनी योजनाएँ, अपने इरादे, सिप्यागिन का काम स्वीकार करने के उसके कारण, अपने तमाम सम्बन्ध, मित्र-परिचित, अपना अतीत वह सब-कुछ जो वह सदा छिपाता आया था, जिसके बारे में उसने कभी किसी से खुलकर बात नहीं की थी, सब-कुछ उसे बता गया ! उससे उसने वैसिली निकोलाएविच के पास से आने वाले पत्रों का भी जिक्र किया, यहाँ तक कि सीलिन का भी ! वह जल्दी-जल्दी बोल रहा था, झिझक के बिना, तनिक भी हिचक के बिना, मानो

मेरियाना को अपने सब भेद पहले ही न बताने के कारण अपने-आपको दण्ड दे रहा हो, मानो उससे क्षमा माँग रहा हो। वह बड़े ध्यान से और उत्कण्ठा से सारी बात सुन रही थी; शुरू में तो वह थोड़ी घबरा गई थी······पर वह भाव तुरन्त गायब हो गया। कृतज्ञता, गर्व, श्रद्धा और दृढ़ता—उसका हृदय इन्हीं सबसे भरपूर था। उसका चेहरा, उसकी आँखें चमक रही थीं। उसने अपना दूसरा हाथ नेज़्दानौफ़ के हाथ पर रख दिया, उसके होंठ आत्म-विस्मृति में खुले हुए थे······ हठात् वह अपूर्व सुन्दरी लग उठी थी।

आखिरकार वह थमा, उसकी ओर देखा, और मानो पहली बार उसने वह मुख देखा, जो उस क्षण में उसे इतना प्रिय और आत्मीय लगा।

उसने एक गहरी और लम्बी साँस भरी······

"आह! मैंने सब बात आपसे कहकर बड़ा अच्छा किया है!"—उसके होंठों से बड़ी कठिनाई से ये शब्द निकल सके।

"हाँ, ओह, इतना अच्छा, इतना अच्छा!" मेरियाना ने भी फुसफुसाते हुए दोहराया। वह अनजान में ही उसका अनुकरण कर रही थी, और सचमुच उसका भी गला रुँधा-सा हो गया था। "और इसका मतलब है कि मैं भी आपकी सेवा में प्रस्तुत हूँ, कि मैं भी आपके उद्देश्य के लिए उपयोगी बनना चाहती हूँ, कि मैं भी जो भी जरूरत हो वही करने के लिए, जहाँ का हुक्म मिले वहाँ जाने के लिए तैयार हूँ, कि मैं भी सदा, अपनी सम्पूर्ण आत्मा से, उसी चीज़ की कामना करती रही हूँ जो आप······"

वह भी चुप हो गई। एक भी और शब्द कहते ही उसके भावावेश के आँसुओं की बाढ़ आ जाती। उसकी सारी कठोर प्रकृति एकाएक मोम जैसी कोमल हो गई थी। सक्रियता की, आत्मत्याग की, तुरन्त ही आत्मत्याग की प्यास ने ही उसको घेर लिया था।

तभी किसी के पैरों की आहट, चौकन्नी, जल्दी-जल्दी और हलकी-

सी आहट, बरामदे में सुनाई पड़ी।

मेरियाना एकाएक संभल गई, उसने अपने हाथ छुडा लिये; वह तुरन्त ही बदलकर चौकन्नी हो गई थी। एक घृणा का, एक उद्धतता का भाव उसके चेहरे पर छा गया।

"मै जानती हूँ कि इस क्षण कौन हमारे ऊपर जासूसी कर रहा है," उसने यह बात इतनी ज़ोर से कही कि उसका प्रत्येक शब्द बरामदे में साफ-साफ गूँज उठा। "श्रीमती सिप्यागिन हमारे ऊपर जासूसी कर रही है······पर मै इसकी तनिक भी परवाह नही करती।"

पैरों की आहट रुक गई।

"तो फिर ?" मेरियाना ने नेज्दानौफ की ओर मुडते हुए कहा, "मुझे क्या करना है ? मै कैसे आपकी सहायता कर सकती हूँ ? बताइये······मुझे जल्दी बताइये ! क्या करना है ?"

"क्या ?" नेज्दानौफ ने कहा; "मै अभी नही जानता······मुझे मार्केलौफ का पत्र मिला है।"

"कब ? कब ?"

"आज शाम को। कल मुझे उसके साथ कारखाने में सालोमिन से मिलने जाना है।"

"हाँ······हाँ······वह मार्केलौफ भी बढिया आदमी है। वह सच्चा मित्र है।"

"मेरे जैसा ही ?"

मेरियाना सीधे नेज्दानौफ़ के मुख की ओर देखने लगी।

"नही···आप जैसा नही।"

"क्यो ?"

उसने अचानक मुँह फेर लिया।

"आह ! क्या आप समझते नही कि आप मेरे लिए क्या हो गए हैं, और इस समय मुझे कैसा लग रहा है ?····"

नेज़्दानौफ़ का दिल ज़ोरों से धड़क उठा; अनचाहे ही उसकी आँखें

झुक गई। यह लड़की, जो उसे प्यार करती थी—उसे, एक ग़रीब बेघरबार इंसान को—जो उसमें विश्वास रखती थी, जो उसका अनुसरण करने को, उसके साथ एक ही लक्ष्य की ओर जाने को तैयार थी, यह अपूर्व लड़की—मेरियाना, उस क्षण नेज़्दानौफ़ के लिए पृथ्वी की हर अच्छी और सच्ची वस्तु की माँ, बहन, पत्नी, जिनमें से किसी को भी उसने जीवन में न जाना था, सभी के प्यार की, मातृभूमि, सुख, संघर्ष, स्वाधीनता—सब की साक्षात् मूर्ति थी !

उसने अपना सिर उठाया और उसकी अपने ऊपर झुकी आँखों को फिर देखा···

ओह, वह स्पष्ट, पवित्र दृष्टि किस प्रकार उसकी आत्मा के भीतर उतर गई !

"इस प्रकार", उसने विचलित स्वर में कहना शुरू किया, "मैं कल जा रहा हूँ···और जब मैं वापिस लौटूँगा, मेरियाना विकेन्त्येव्ना,"—(एकाएक यह शिष्ट सम्बोधन उसे बड़ा भद्दा लग उठा)—"मैं आपको बता सकूँगा कि क्या हुआ, क्या तै किया गया। अब से जो कुछ मैं करूँगा, जो कुछ मैं सोचूँगा, वह सभी सबसे पहले तुम्हीं जानोगी···मेरियाना।"

"ओह, मेरे बंधु !" मेरियाना ने कहा और फिर उसने नेज़्दानौफ़ का हाथ जकड़ लिया, "मैं भी तुम्हें यही वचन देती हूँ, प्रिय।"

अंतिम शब्द इतनी आसानी से और इतने सहज ढंग से उसके मुख से निकला मानो और कुछ हो ही नहीं सकता था, मानो वह लम्बा, घनिष्ठ, आत्मीयता का 'प्रिय' हो।

"क्या मैं पत्र देख सकती हूँ ?"

"यह रहा है, यहाँ।"

मेरियाना पत्र को पढ़ गई, और प्रायः श्रद्धा भावना के साथ उसने अपनी आँखें नेज़्दानौफ़ की ओर उठाई।

"क्या तुम्हें इतने महत्त्वपूर्ण काम सौंपे जाते हैं, अलैक्सी ?"

वह उत्तर में उसकी ओर देख कर मुस्करा दिया और पत्र को अपनी जेब में रख लिया।

"अजीब है," नेज़्दानौफ़ ने कहा, "हम लोगों ने अपना प्यार एक-दूसरे पर प्रकट कर दिया—हम एक-दूसरे को प्यार करते हैं—किन्तु इस सम्बन्ध में एक शब्द भी अभी तक हमने परस्पर नहीं कहा है।"

"क्या आवश्यकता है ?" मेरियाना ने फुसफुसाकर कहा, और फिर एकाएक उसने अपनी बाहें नेज़्दानौफ़ के गले में डाल दीं, अपना सिर उसके कंधे पर चिपका दिया···किन्तु उन्होंने प्यार नहीं किया—चुम्बन उन्हें अत्यन्त ही साधारण और किसी न किसी तरह अरुचिकर ही लगता—और फिर एक बार एक-दूसरे के हाथ को कसकर दबाने के बाद तुरन्त ही अलग हो गए।

मेरियाना मोमबत्ती उठाने के लिए मुड़ी, जो उसने खाली कमरे की खिड़की की देहली पर रखदी थी। तब उसको एकाएक संकोच लग आया। उसने मोमबत्ती बुझा दी, और अँधेरे में जल्दी-जल्दी बरामदे में तैरती-सी अपने कमरे में लौट आई। उसने कपड़े उतारे और बिस्तर पर जाकर—सब अंधेरे में ही—लेट गई और उसे यह बड़ा आश्वासन-दायक जान पड़ा।

सोलह

अगले दिन सबेरे जब नेज़दानौफ़ की नींद खुली तो उसे पिछली रात की घटनाओं की याद करके किसी प्रकार का संकोच मन में नहीं हुआ। इसके विपरीत उसका मन एक प्रकार के निर्मल और संयत आनन्द के भाव से भरपूर था, मानो उसने कोई ऐसा काम कर डाला हो जो बहुत पहले ही कर लेना चाहिए था। सिप्यागिन से दो दिन की छुट्टी माँगकर, जो उसने तुरंत ही किन्तु कुछ अनिच्छा के साथ स्वीकार कर ली, वह मार्केलौफ़ के यहाँ चला गया। चलने के पहले उसने मेरियाना से भेंट करने का भी अवसर निकाल लिया। वह भी न तो बिल्कुल लज्जित थी न संकुचित; वह शांति और दृढ़ता के साथ उसकी ओर देखती रही और शांत स्वर में ही उसे अलैक्सी कह कर बुलाया। वह केवल इस बात को लेकर उत्तेजित थी कि मार्केलौफ के यहाँ उसे क्या-क्या पता चलेगा और नेज़दानौफ़ से लौटकर सब बाते बताने के लिए बार-बार कह रही थी।

"इसमें तो कोई कहने की बात ही नहीं," नेज़दानौफ़ ने उत्तर दिया।

"और आखिर," वह सोचने लगा, "हमारे घबराने की ऐसी बात भी क्या है ? हमारी मित्रता में व्यक्तिगत भावना का······गौण स्थान रहा है—हालाँकि हम अब सदा के लिए एक-दूसरे से बँध चुके हैं। उद्देश्य के नाम पर ? हाँ, उद्देश्य के नाम पर !"

नेज़्दानौफ़ यही सोच रहा था, उसे कल्पना भी न थी कि उसके विचारों मे कितना अंश सत्य का है और कितना मिथ्या का।

मार्केलौफ उसे पहली-सी ही उदास और क्लांत मानसिक अवस्था में मिला। उन्होंने भोजन के नाम पर कुछ खाया और उसी पुरानी गाड़ी में (मार्केलौफ का घोड़ा अभी तक लँगड़ा होने के कारण उन्होंने एक किसान से एक बछेड़ा किराये पर ले लिया जो पहले कभी किसी गाड़ी में न जुता था) व्यापारी फालेयेफ के रुई के बड़े कारख़ाने के लिए चल दिए, जहाँ सालोमिन रहता था। नेज़्दानौफ़ अब बहुत उत्सुक हो उठा था; जिस आदमी के बारे में पिछले दिनों उसने इतना कुछ सुना था, उससे अधिक घनिष्ठ सम्पर्क बनाने को वह अब व्यग्र था। सालोमिन भी उनके आने की प्रतीक्षा ही कर रहा था। जैसे ही दोनों यात्रियों ने कारख़ाने के फाटक पर पहुँचकर अपने नाम अन्दर भिजवाये, वैसे ही तुरन्त उन्हें 'कारख़ाने के सुपरिंटेण्डेण्ट' के एक छोटे-से और देखने में साधारण बँगले में ले जाकर बिठाया गया। वह स्वय उस समय कारख़ाने में था; जब तक एक मजदूर दौड़कर उसे बुलाने गया तब तक नेज़्दानौफ और मार्केलौफ खिडकी से बाहर देखने लगे। कारख़ाना स्पष्ट ही बड़ी अच्छी हालत में था और काम की भरमार थी। हर ओर से अथक कार्य-व्यस्तता की तेज शोरगुल भरी गूँज, मशीनो की फुफकार और खटखट, करघों की चू-चूं, पहियों की चकचक, पट्टो की फटफट सुनाई पड़ रही थी। ठेले, पीपे, भरी हुई गाड़ियाँ लगातार आ-जा रही थी; ज़ोर से दिये गए आदेशों, घंटियों और सीटियो की आवाज़ें सुनाई पड़ रही थीं; मजदूर सलूके पहने और कमर मे पेटी डाटे, फीते से अपने बालों को बाँधे, और मज़दूरनियाँ छीट के कपड़े

पहने, जल्दी-जल्दी निकल रही थीं; जुते हुए घोड़े गुज़र रहे थे······ यथासामर्थ्य काम में लगे हुए हज़ारों इन्सानों के परिश्रम की कर्म-व्यस्त भनभन वातावरण में छायी हुई थी। हर चीज़ नियमित, बुद्धि-संगत रूप में पूरी गति से चल रही थी; किन्तु न केवल किसी प्रकार की सजावट या सफ़ाई रखने का कोई प्रयत्न दृष्टिगोचर न होता था, बल्कि कहीं भी किसी चीज़ में सफ़ाई का कोई नाम-निशान तक न था। इसके बिपरीत, चारों ओर लापरवाही, गन्दगी, कलौंच ही नजर आती थी। कहीं कोई खिड़की टूटी हुई थी, तो कहीं का प्लास्टर उखड़ा जा रहा था, कहीं से तख्ते ढीले थे तो कहीं दरवाज़ा उघड़ा पड़ा था; मुख्य अहाते के बीचोंबीच एक बड़ा-सा, काला कलौंच की पर्त से ढका-सा पानी का गढ़ा था; कुछ और आगे रद्दी ईंटें पड़ी थीं, फर्श के फटे टुकड़े, चीथड़े, डिब्बे, रद्दी, रस्सों के टुकड़े कीचड़ में लिथड़े हुए पड़े थे; दुबले-पतले गदे कुत्ते इधर-उधर डोल रहे थे और वे भूँकते तक न थे; एक बारी के नीचे कोने में एक चार बरस का लड़का बैठा था जिसका पेट बड़ा हो गया था और धजा खराब थी, उसके सिर से पैर तक कालिख लगी हुई थी और वह इस तरह से गला फाड़कर रो रहा था मानो सारी दुनिया ने उसे त्याग दिया हो; उसी के पास, उसी कालिख से रँगी एक सूअरिया, थन चूसते सूअर के बुँदकीदार बच्चों से घिरी कुछ गोभी के छिलकों का निरीक्षण कर रही थी; एक मशीन पर कोई फटा हुआ कपड़ा फटफटा रहा था, हर जगह कैसी गंध, भीषण दुर्गन्ध छाई हुई थी! वास्तव में एक रूसी मिल था, कोई जर्मन या फ्रांसीसी कारखाना नहीं।

नेज़्दानौफ़ ने मार्केलौफ़ की ओर देखा।

"मैंने सालोमिन की बड़ी भारी योग्यता की इतनी चर्चा सुनी है," उसने कहना शुरू किया, "कि मैं स्वीकार करता हूँ, यह सब अव्यवस्था देखकर मुझे बड़ा ताज्जुब हो रहा है, मैंने ऐसी आशा न की थी।"

"यह अव्यवस्था नहीं है," मार्केलौफ़ ने मुँह फुलाये उत्तर दिया,

"यह रूसी फूहड़पन है और इस सबके होते हुए भी इससे लाखों का फ़ायदा हो रहा है ! और उसे भी पुराने तरीकों, व्यावहारिक आवश्यकताओं और स्वयं मालिक के अनुसार अपने-आपको बनाना पडता है। तुम्हें कुछ अन्दाज़ है कि फालेयेफ़ किस तरह का आदमी है ?"

"तनिक भी नहीं।"

"मास्को का सबसे बड़ा मक्खीचूस। पूँजीपति—उसके लिए ठीक शब्द है !"

उसी समय सालोमिन ने कमरे में प्रवेश किया। कारखाने की भाँति, उसे देखकर भी नेज़दानौफ़ को निराशा ही हुई। पहली बार देखने से सालोमिन फ़िनलैंड या स्वीडन का निवासी लगता था। वह लम्बा, दुबला, चौड़े कंधों और हलकी बरौनियों तथा भौंहों वाला व्यक्ति था; उसका चेहरा पीला-सा लम्बा, नाक छोटी-सी, चौड़ी आँखें बहुत छोटी हरी-हरी थी, चेहरे पर इत्मीनान का भाव था, होठ बड़े-बड़े, दाँत भी बड़े-बड़े और सफ़ेद, ठोड़ी हलके-नरम रोओं से भरी थी। वह किसी मिस्त्री या कोयला झोंकने वाले के से कपड़े पहने हुए था; बदन पर एक बड़ी-बड़ी जेबों वाली जाकेट, सिर पर एक मुड़ी हुई मोमजामे की टोपी, एक ऊनी गुलूबन्द गले में और पैरों में कोलतार भरे जूते थे। उसके साथ मोटा किसानों का सा कोट पहने लगभग चालीस बरस की अवस्था का एक और आदमी था जिसका एक अत्यन्त चंचल जिप्सियों जैसा मुख और एकदम काली पैनी आँखें थीं, जिनसे उसने कमरे में प्रवेश करते ही नेज़दानौफ़ को आँकना शुरू कर दिया था······ मार्केलौफ़ को वह पहले से जानता था। उसका नाम था पवेल, वह सालोमिन का दाहिना हाथ माना जाता था।

सालोमिन बिना किसी जल्दी के अपने दोनों अतिथियों की ओर बढ़ा, एक भी शब्द बिना कहे अपने मज़बूत हड्डियों भरे हाथों में दोनों के हाथ दबाये और एक भी शब्द कहे बिना ही मेज़ की दराज में से एक मुहरबन्द पैकेट निकालकर पवेल को दे दिया, जो तुरन्त कमरे से

बाहर चला गया। तब उसने अँगड़ाई ली और खकार कर गला साफ़ किया; एक हाथ के इशारे से टोपी सिर से गिराकर वह एक लकड़ी के रँगे हुए स्टूल पर बैठ गया और उसी तरह की कुर्सियों की ओर इशारा करते हुए मार्केलौफ़ और नेज़्दानौफ़ से कहा, "बैठिए।"

मार्केलौफ ने पहले नेज़्दानौफ़ का परिचय सालोमिन से कराया तो उसने फिर उससे हाथ मिलाए। फिर मार्केलौफ़ 'आन्दोलन' के बारे में बातचीत करने लगा और उसने वैसिली निकोलाएविच के पत्र का भी ज़िक्र किया। नेज़्दानौफ ने पत्र निकाल कर सालोमिन की ओर बढ़ा दिया। जिस समय वह पत्र को समझता-बूझता ध्यान से पढ़ रहा था और उसकी आँखें एक के बाद दूसरी पंक्ति पर दौड़ रही थीं, तो नेज़्दानौफ़ उसकी ओर ध्यान से देखता रहा। सालोमिन खिड़की के पास ही बैठा था; सूरज आसमान में नीचे उतर आया था और उसके तपे हुए, कुछ-कुछ पसीने से भीगे हुए चेहरे पर, उसके हलके धूलभरे बालों पर जिनमें बहुत से सुनहरे डोरे चमक उठे थे, चकाचौंध पैदा करने वाली रोशनी पड़ रही थी। पढ़ते समय साँस के आने-जाने से उसके नथुने काँपते जाते थे, और उसके होंठ ऐसे हिलते थे मानो प्रत्येक शब्द को मुँह से उच्चारण करता जा रहा हो; उसने पत्र को जरा ऊँचा करके दोनों हाथों से मजबूती से पकड रखा था। किसी अज्ञात कारण से ये सब बाते नेज्दानौफ़ को बडी अच्छी लगी। सालोमिन ने पत्र नेज्दानौफ को वापिस किया, उसकी ओर देखकर मुस्कराया और फिर मार्केलौफ़ की बात सुनने लगा। मार्केलौफ धकापेल बोलता ही चला जा रहा था, पर अंत में वह थका।

"आप जानते हैं," सालोमिन ने कहना शुरू किया और उसकी आवाज सुनकर, जो कुछ भर्राई हुई पर सशक्त और युवकोचित थी, नेज़्दानौफ़ को और भी अच्छा लगा, "यहाँ मेरे घर पर कुछ बहुत सुविधा नहीं है; चलिए आपके मकान पर चलें, पाँच मील से अधिक नहीं होगा। आप लोग गाड़ी में आए हैं न ?"

"हाँ।"

"ठीक है·······मेरे लिए भी उसमें जगह निकल आयेगी। घण्टे भर के भीतर मेरा काम खत्म हो जायगा और फिर मै आजाद हूँ। हम लोग बातचीत कर सकेंगे। आपको तो अवकाश है न ?" उसने नेज़्दानौफ़ से पूछा।

"परसों तक।"

"बहुत बढ़िया। रात को हम लोग मि० मार्केलौफ़ के साथ ही ठहर जायेंगे। ठीक तो है न, सर्जी मिहालिच ?"

"आप भी कैसा सवाल करते है ! ज़रूर ठीक है !"

"अच्छी बात है, मै जल्दी तैयार होता हूँ। बस जरा हाथ-पैर धो लूँ।"

"आपके कारखाने के क्या हाल-चाल हैं ?" मार्केलौफ़ ने खास ज़ोर देकर पूछा।

सालोमिन दूसरी ओर देखने लगा।

"सब बातचीत होगी," उसने दूसरी बार कहा, "ज़रा-सा ठहर जाइये।·······मै फ़ौरन आता हूँ·······मै एक चीज भूल आया हूँ।"

वह बाहर चला गया। नेज्दानौफ़ के ऊपर उसका अच्छा प्रभाव पड़ा था, नहीं तो वह शायद सोचता, और शायद मार्केलौफ़ से पूछ भी बैठता, 'जान छुड़ाने की कोशिश नही कर रहा है वह ?' पर ऐसी कोई बात उसके दिमाग तक में नही आई।

एक घण्टे बाद, जब कारखाने की विशाल इमारत की हर मंज़िल से, हर सीढी से, हर दरवाज़े से शोरगुल मचाते हुए मज़दूर बाहर निकल रह थे, उसी समय मार्केलौफ़, नेज़्दानौफ़ और सालोमिन गाडी में बैठे फाटक से निकलकर सड़क पर जा रहे थे।

"वैसिली फेदोतिच ! क्या वह कर दिया जाय ?" पवेल ने, जो सालोमिन के साथ-साथ फाटक तक आया था, पूछा।

"नहीं, अभी ठहर जाओ," सालोमिन ने उत्तर दिया। 'रात की

पाली के एक काम के बारे में था," उसने अपने साथियों को बताया।

वे बोर्जियोन्कोवो पहुँचे; भोजन उन लोगों ने शिष्टाचार वश ही किया। तब फिर सिगार सुलगाये गए और बातचीत शुरू हुई—उस प्रकार की ओर-छोरहीन रात भर चलने वाली रूसी चर्चा, जैसी उसी रूप मे और उसी पैमाने पर शायद ही किसी देश में होती हो। इस बारे में भी सालोमिन नेज़दानौफ़ की आशा के अनुरूप न निकला। वह स्पष्ट ही बहुत कम बोला······इतना कम कि यह भी कहा जा सकता है कि वह लगातार चुप ही रहा। पर वह हर बात बहुत ध्यान से सुन रहा था और जब भी वह कोई बात कहता या कोई आलोचना करता तो वह बहुत ही समझदारी की, वज़नदार और बहुत संक्षिप्त होती थी। पता चला कि सालोमिन यह नहीं समझता था कि रूस में क्रांति का समय आ ही पहुँचा है; पर अपनी राय दूसरों के ऊपर थोपने का इच्छुक न होने के कारण, वह दूसरे लोगों को प्रयत्न करने से रोकना न चाहता था, और साथ ही उन्हें दूर से तमाशबीन की दृष्टि से भी न देखता था बल्कि उनके संग एक साथी के रूप में रहना उचित समझता था। पीटर्सबर्ग के क्रान्तिकारियों से उसकी बड़ी घनिष्ठता थी और किसी हद तक उनसे उसकी सहानुभूति भी थी, क्योंकि वह स्वयं जनता का ही एक आदमी था। पर वह आन्दोलन से जनता की स्वाभाविक उदासानता को भी पहचानता था और समझता था कि उनके बिना कुछ हो भी नहीं सकता और उन्हें साथ लाने के लिए तैयारी की आवश्यकता है जो इन लोगों द्वारा या इनके तरीकों से संभव न थी, और इसलिए वह दूर खड़ा था, पाखण्ड या घबराहट के कारण नहीं, बल्कि उस व्यक्ति की भाँति जो बेकार ही अपने-आपको अथवा दूसरों को बर्बाद करना नही चाहता। पर जहाँ तक सुनने का सवाल था···हो सके तो सुनने और कुछ-न-कुछ सीखने मे क्या हर्ज है? सालोमिन एक छोटे पादरी का इकलौता बेटा था; उसकी पाँच बहनें थीं जिन सबकी शादियाँ देहात के पुरोहितों अथवा छोटे पादरियों से हुई थीं; पर उसने

अपने दृढ़ और समझदार पिता की अनुमति से, धार्मिक अध्ययन छोड़कर गणित पढ़ना शुरू किया था और यन्त्रशास्त्र में विशेष रूप से परिश्रम किया था। उसे एक अंग्रेज व्यवसायी के यहाँ नौकरी मिल गई। उसका मालिक उसे बेटे की तरह से प्यार करने लगा था और उसने उसके मान्चेस्टर जाने का प्रबन्ध कर दिया जहाँ उसने दो बरस बिताये और अंग्रेजी भी सीख ली। हाल ही में वह मास्को के इस व्यवसायी के कारखाने में आ गया था। अपने मातहतों से काम लेने में यद्यपि वह बड़ा सख्त था, क्योंकि इंगलैण्ड में उसने इसी ढंग की शिक्षा पाई थी, तो भी सब लोग उससे बड़ी मुहब्बत करते थे। "वह तो अपना ही आदमी है," लोग कहते थे। उसका पिता उससे बहुत प्रसन्न था और उसे बहुत ही "डटकर काम करने वाला लड़का" कहा करता था। उसे केवल एक ही शिकायत थी कि उसका बेटा विवाह नहीं करना चाहता।

मार्केलौफ़ के यहाँ रात्रिव्यापी वार्तालाप में, जैसा हम बता चुके हैं, सालोमिन करीब-करीब एकदम चुप ही रहा। पर जब मार्केलौफ़ इस बात की चर्चा करने लगा कि कारखाने के मज़दूरों से उसे कैसी-कैसी आशाएँ हैं, तो सालोमिन ने अपनी स्वभावोचित मितभाषिता के साथ कहा कि अपने रूस के मज़दूर वैसे नहीं हैं जैसे दूसरे देशों मे होते हैं—वे तो सबसे अधिक दब्बू होते हैं।

"और किसान ?" मार्केलौफ़ ने पूछा।

"किसान ? उनमें बहुत से बड़े लड़ाकू हैं, आजकल तो विशेष करके जो लेन-देन का काम करते हैं, पर जो हर साल बढ़ते ही जायेंगे, किन्तु वे लोग केवल अपना स्वार्थ ही समझते हैं। बाकी लोग भेड़ों जैसे हैं, अंधे और मूर्ख।"

"तो फिर और कहाँ ढूँढें लोगों को ?"

सालोमिन मुस्कराया।

"जिन खोजा तिन पाइयाँ······"

वह लगभग निरन्तर ही मुस्कराता रहता था और स्वयं उसी की

भाँति ही उसकी मुस्कराहट भी बड़ी निश्छल तो थी पर एकदम अर्थहीन नहीं। नेज़्दानौफ़ के साथ वह विशेष प्रकार का व्यवहार कर रहा था, इस विद्यार्थी युवक के लिए उसके मन में एक प्रकार का कौतूहल बल्कि स्नेह-सा पैदा हो गया था।

इसी रात्रिव्यापी आलोचना में एक बार नेज़्दानौफ़ भी एकाएक जोश में आकर उबल पड़ा था; सालोमिन आहिस्ता से उठा और अपने बड़े-बड़े क़दमों से कमरे को पार करते हुए उसने नेज़्दानौफ़ के ठीक सिर के पीछे खुली हुई खिड़की को बन्द कर दिया।

"ठण्ड मत खा जाइयेगा," उसने वक्ता की परेशानी भरी दृष्टि के उत्तर में भोलेपन के साथ कहा था।

नेज़्दानौफ़ उससे पूछने लगा कि अपने कारखाने में वह कौन-कौन से समाजवादी विचारों को लागू कर रहा है और वह मुनाफ़े में मजदूरों को भी एक हिस्सा देने का प्रबन्ध करने वाला है अथवा नहीं।

"भाई साहब," सालोमिन ने उत्तर दिया, "हम लोगों ने बस एक स्कूल और एक छोटा-सा अस्पताल क़ायम किया है और उसके खिलाफ़ भी मालिक भालू की तरह लड़ता रहा था।"

केवल एक बार ही सचमुच सालोमिन को क्रोध आया था और उसने अपनी सशक्त मुट्ठी से इतने ज़ोर का घूँसा मेज़ पर मारा था कि उस पर रखी हर चीज़, क़लमदान के पास रखा एक बीस सेरा तक हिल उठा था। उससे किसी कानूनी अन्याय, किसी मज़दूरों की पंचायत पर किसी अत्याचार की बात कही गई थी···

जब नेज़्दानौफ़ और मार्केलौफ़ इस बारे में बहस करने लगे कि कैसे "आन्दोलन किया जाय," कैसे अपनी योजनाओं को अमल में लाया जाय, तब भी सालोमिन उत्सुकता के, बल्कि आदर के साथ उनकी बातें सुनता रहा। पर स्वयं उसने एक शब्द भी मुँह से नहीं निकाला। यह वार्तालाप सबेरे चार बजे तक चलता रहा और किस-किस चीज़ पर उन्होंने नहीं बहस की? मार्केलौफ़ ने दूसरी चीज़ों के अलावा रहस्यात्मक

ढग से अथक यात्री किसल्याकौफ का, उसके पत्रो का भी ज़िक्र किया और कहा कि वे अब दिनोदिन अधिक दिलचस्प होते जा रहे हैं। उसने नेज्दानौफ से कुछ पत्र दिखाने बल्कि घर ले जाने देने का भी वायदा किया क्योकि वे बहुत बडे-बड़े थे और बहुत साफ अक्षरो मे नहीं लिखे हुए थे, साथ ही उनमे बहुत भारी ज्ञान की बातें भरी हुई थी, कुछ कविताएँ तक थी—हलकी नही, बल्कि समाजवादी ढग की। किसल्या-कौफ से मार्केलौफ, सिपाहियो, हवलदारो और जर्मन पर पहुँच गया, और अन्त मे वह अपने तोप-सेना-सम्बन्धी लेखो की चर्चा करने लगा। नेज्दानौफ ने हाइने और बौर्न के विरोध की, प्रूधो की, कला में यथार्थ-वाद की चरचा की, सालोमिन केवल सुनता रहा, और विचार करता रहा और सिगार पीता रहा, वह मुस्कराता भी रहा तथा लगता था कि एक भी विद्वत्तापूर्ण बात बोले बिना भी वह इस बात को इन सबसे अधिक समझता है कि असली जड की बात क्या है।

चार का घण्टा बजा······नेज्दानौफ और मार्केलौफ दोनो थककर चूर थे, पर सालोमिन की भौह पर सिलवट तक न आई थी। मित्र लोग जुदा हुए पर यह तै हुआ कि अगले दिन सब लोग प्रचार के सिलसिले में व्यापारी गोलुश्किन से मिलने जायेगे। गोलुश्किन स्वय बहुत उत्साही था, इसके अतिरिक्त उसने दूसरे कार्यकर्ता देने का वादा किया था। सालोमिन ने सन्देह प्रकट किया कि गोलुश्किन से मिलने से कोई लाभ होगा भी या नही। किन्तु बाद में वह मान गया कि लाभ होगा।

सत्रह

मार्केलौफ़ के मेहमान अभी सोए ही हुए थे कि उसकी बहन श्रीमती सिप्यागिन के यहाँ से पत्रवाहक एक पत्र लेकर आ पहुँचा। पत्र में वैलेन्तिना ने बहुत सी छोटी-मोटी घरेलू बातें लिखी थी। जो एक पुस्तक वह ले आया था उसे वापिस कर देने के लिए कहा था और फिर चलते-चलते, पुनश्च करके, एक मज़ेदार खबर भी लिख भेजी थी। खबर यह थी कि उसकी भूतपूर्व प्रेयसी मेरियाना, शिक्षक नेज़्दानौफ़ के प्रेम में पड़ गई थी, और शिक्षक महोदय उसके। उसने यह भी लिखा कि वह कोई सुनी-सुनाई बात नहीं लिख रही थी, बल्कि उसने सब कुछ अपने कानों सुना था और अपनी आँखों देखा था। मार्केलौफ़ का चेहरा रात की तरह काला पड़ गया······पर वह बोला एक शब्द भी नहीं। उसने पत्रवाहक को किताब लाकर दे देने का आदेश दे दिया, और जब उसने नेज़्दानौफ़ को नीचे आते देखा तो उसने सदा की भाँति ही 'नमस्कार' किया—बल्कि उसे किसल्याकौफ़ के पत्र भी पढ़ने को दे दिये। पर वह उसके पास रुका नही, 'कुछ ठीक-ठाक' करने के लिए बाहर चला गया। नेज़्दानौफ़ अपने कमरे में लौटकर पत्रों को उलटने-

पलटने लगा। नौजवान प्रचारक ने पत्रों में लगातार अपनी, अपनी धुआँधार कार्रवाइयो की ही चर्चा की थी; स्वयं उसके कथनानुसार उसने पिछले महीने भर मे ग्यारह जिलों का, नौ शहरों, उन्तीस गाँवों, तरेपन छोटे गाँवों, एक फार्म और आठ कारखानों का दौरा किया था; सोलह रातें उसने फूस के झोंपड़ों में, एक अस्तबल में, एक गायों के चौपाल में (कोष्ठक मे उसने यह भी लिखा था कि मक्खियों का उसपर कोई असर नही हुआ) बिताई थीं; मिट्टी की कुटियों में, मजदूरो की बारकों में भी वह गया था, हर जगह उसने लोगों को सिखाया, उपदेश दिया, परचे बाँटे और जानकारी भी इसी सिलसिले में इकट्ठी कर ली; थी; कुछ बाते तो उसने वही टाँक ली थीं, और कुछ वह स्मृति बढ़ाने की नवीनतम प्रणाली के अनुसार याद कर लाया था; उसने चौदह लम्बे और सत्ताईस छोटे पत्र लिखे थे, और अठारह टिप्पणियाँ, जिनमें से चार पेंसिलें, एक रक्त से और एक पारी में काजल कर लिखा गया था; और यह सब वह इसीलिए कर सका था क्योकि उसने क्विन्टिन जानसन कैरिलियस, स्वैरलित्स्की तथा अन्य लेखकों और गणनाशास्त्रियों को अपना आदर्श बनाकर अपने समय का व्यवस्थित उपयोग करना भली प्रकार सीख लिया था। इसके बाद उसने फिर अपनी, अपने भाग्य के सितारे की चर्चा शुरू कर दी थी, किस प्रकार और किन अतिरिक्त बातो के साथ उसने फूरिये के सिद्धान्त को पूरा कर लिया था; उसने घोषणा की थी कि वही सबसे पहले 'तल' मे पहुँच सका था, वह 'पीछे अपनी छाप छोड़े बिना दुनिया से नही जायगा,' उसे स्वयं आश्चर्य था कि उस जैसे बाईस बरस के छोकरे ने जीवन और विज्ञान की समस्याओं को कैसे हल कर लिया था, उसने यह भी ऐलान किया था कि वह रूस को ऊपर से नीचे कर देगा, 'उसकी जड़ें तक हिला देगा!' एक शब्द उसके इन पत्रों में बार-बार आता था और उसके बाद सदा दो विस्मय-सूचक चिह्न लगे रहते थे। एक चिट्ठी में एक लड़की को सम्बोधन करके लिखी हुई एक समाजवादी कविता भी थी, जिसकी शुरू की पंक्ति थी:

"मुझे नहीं, आदर्श को प्यार करना !"

नेज़दानौफ़ को भीतर-ही-भीतर किसल्याकौफ़ के घमण्ड पर उतना ताज्जुब नहीं था जितना मार्केलाफ़ के सच्चे सीधेपन पर···पर फिर विचार आया, "सुरुचि की ऐसी-की-तैसी। मि० किसल्याकौफ़ भी शायद उपयोगी साबित हो।"

सवेरे की चाय के लिए तीनों मित्र भोजनगृह में मिले, पर रात वाली बहस फिर से शुरू न हो सकी। उनमें से किसी की भी बात करने की इच्छा न थी, पर केवल सालोमिन ही शांति के साथ चुप था। नेज़दानौफ़ और मार्केलौफ़ दोनों ही भीतर-ही-भीतर चंचल थे।

चाय के बाद वे लोग शहर के लिए चल पड़े; मार्केलौफ़ का नौकर अपने स्थान पर बैठा हुआ अपनी सदा की निराशाभरी दृष्टि से अपने मालिक को ताकता रहा।

गोलुश्किन, जिससे नेज़दानौफ़ को परिचय करना था, दवाइयों की थोक बिक्री के बड़े भारी अमीर व्यापारी का लडका था और फेदोसियन सम्प्रदाय का पुराना समर्थक था। उसने अपने बाप के धन को अपने परिश्रम से तनिक भी नहीं बढाया था, वह रूसी ढंग का ऐयाश-तबियत आदमी था और व्यापार में उसका मन न लगता था। उसकी उम्र चालीस के लगभग थी; बदसूरत, भारी बदन, चेचक के दाग और सूअर की-सी छोटी-छोटी आँखें थीं। वह बड़ी जल्दी में बात करता था, मानो शब्दों से टकराकर गिर रहा हो, हाथों से शक्लें बनाता हुआ, पैर नचाता हुआ, बीच-बीच में खिल-खिल करके हँसता हुआ···आम तौर पर उसका एक ही प्रभाव पड़ता था कि वह एकदम गधा और बेहद घमण्डी, मूर्ख है। वह स्वयं अपने-आपको बड़ा सांस्कृतिक समझता, क्योंकि वह जर्मन वस्त्र पहनता था, स्वयं गंदगी और अव्यवस्था में रहने पर भी अभ्यागतों का सत्कार करता था, उसके परिचित अमीर लोग थे, और क्योंकि वह थियेटर जाया करता था तथा निचले दर्जे की गाने वाली अभिनेत्रियों की, जिनके साथ वह असाधारण भावी फ्रेंच

भाषा में वार्तालाप करता, 'रक्षा किया करता था'। लोकप्रियता की लालसा उसका सबसे बड़ा व्यसन थी—किसी तरह गोलुश्किन का नाम दुनिया में गूँज उठे ! जैसे कभी सूभारौफ का या पोतेमकिन का था, वैसे अब कापीतन गोलुश्किन का क्यों नही ? इसी व्यसन ने, उसके जन्मजात ओछेपन पर भी विजय पाकर, उसे, जैसा वह बड़े इत्मीनान के साथ कहा करता था, विरोधी दल में ला पटका था और शून्यवादियों से उसका सम्पर्क सम्भव बनाया था। वह आजादी के साथ उग्र-से-उग्र विचार प्रकट करता, अपने सम्प्रदाय के धर्म की हँसी उड़ाता, ईस्टर के दिनों में गोश्त खाता, ताश खेलता, और पानी की तरह शैम्पेन पीता रहता। और कभी उस पर कोई मुसीबत न आती क्योंकि वह कहा करता था, "मैंने जहाँ आवश्यक है ठीक वही अधिकारियों को घूस खिला रखी है, हर छेद सिला हुआ है, सब मुँह बन्द है, सब कान बहरे हैं।" वह विधुर था और निस्संतान भी; उसकी बहन के लड़के सदा उसके चारों ओर दयनीयता के साथ पूँछ हिलाते मँडराया करते थे··· ···पर वह उन्हे गँवार और जगली कहता और उनकी ओर आँख उठाकर भी न देखता था। वह एक बड़े पत्थर के मकान मे रहता था जिसमे व्यवस्था बिल्कुल न थी, कुछ कमरों मे तो सारा-का-सारा विदेशी फर्नीचर था और कुछ मे रंगी हुई कुर्सियों और एक अमरीकी चमड़े के सोफे के सिवाय कुछ न था। तस्वीरें सब जगह लगी हुई थी, पर वे सब-की-सब निकम्मी और भद्दी थी—लाल दृश्य, गुलाबी समुद्री दृश्य, मॉलर का 'चुम्बन' नामक चित्र और लाल घुटनों तथा कुहनियों वाली मोटी-नंगी स्त्रियों के चित्र आदि। गोलुश्किन का परिवार न होने पर भी नौकर-चाकर और तरह-तरह के आश्रित लोग उसकी छत के नीचे बहुत थे और उन्हे वह उदारता के कारण नही रखे हुए था, बल्कि अपनी उसी अधिकार की लालसा के कारण ताकि रौब जमाने के लिए इशारे पर कुछ 'जनता' इकट्ठी हो सके। जब वह डींग मारने लगता तो उन्हे 'अपने ग्राहक' कहा करता था। किताब वह कभी कोई न पढता था,

पर विद्वत्तापूर्ण वाक्यों के लिए उसकी स्मरण-शक्ति बड़ी ज़ोरदार थी।

इन नौजवानों से गोलुश्किन अपने अध्ययन-कक्ष में मिला। एक लम्बा-सा कोट पहने और मुँह में सिगार दबाये वह अखबार पढ़ने का बहाना बना रहा था। उन्हें देखते ही वह एकदम उछल पड़ा और सब एक साथ ही भाग-दौड़ करने, लज्जा से लाल होने, तुरन्त कुछ जलपान लाने का हुक्म देने, प्रश्न पूछने और हँसने लगा। मार्कलौफ़ और सालोमिन को तो वह जानता था, नेज़्दानौफ़ उसके लिए अजनबी था। यह सुनकर कि वह विद्यार्थी है, गोलुश्किन फिर हँसा, उससे दुबारा हाथ मिलाया और बोला, "बहुत अच्छे ! बहुत अच्छे ! हमारी सेनाएँ बढ़ रही हैं।......ज्ञान प्रकाश है, अज्ञान अन्धकार। ज्ञान मुझे पैसे भर भी नहीं, पर मेरे पास सूझ है—उसी के बल पर मैं चला जा रहा हूँ।"

नेज़्दानौफ़ को लगा कि मि० गोलुश्किन कुछ घबराया हुआ और परेशान है............और बात थी भी ऐसी ही। "सावधान, जनाब कापीतन ! कहीं आप कीचड़ में धड़ाम न नज़र आयें।"—किसी अजनबी को देखते ही पहला विचार उसके मन में यही आता था। किन्तु जल्दी ही वह सँभल गया और अपनी उसी अटकती, कूढ़मग्ज़ी भरी ज़बान से जल्दी-जल्दी वैसिली निकोलाएविच और उसके चरित्र के बारे में, प्रो...पै....ग...ण्डा की (यह शब्द उसे बहुत प्रिय था, पर वह उसका रुक-रुककर उच्चारण करता था) आवश्यकता के बारे में बातें करने लगा; उसने बतलाया कि किस प्रकार उसने एक बहुत ही विश्वसनीय शानदार नया रंगरूट भरती किया है, किस प्रकार उसे लगता है कि अब समय आ गया है, चीरा लगाने का क्षण आ पहुँचा है (इस बात को कहते-कहते उसने मार्कलौफ़ की ओर नज़र डाली किन्तु उसने कोई हलचल न दिखाई); फिर नेज़्दानौफ़ की ओर मुड़कर वह उस महान् पत्रलेखक स्वयं किसल्याकौफ़ के-से उत्साह के साथ ही, अपनी तारीफ़ के गीत गाने लगा। उसने बताया कि वह नासमझों के दल से बहुत पहले ही अलग हो चुका है, सर्वहारा वर्ग के अधिकारों को पहचान चुका

है (यह शब्द भी उसने भली भाँति पकड रक्खा था), और हालांकि उसने सचमुच व्यवसाय छोडकर लेन-देन का काम शुरू कर दिया है ताकि पूँजी बढे—पर यह केवल इसलिए कि वह सब पूँजी किसी भी क्षण सेवा के लिए······आन्दोलन की, बल्कि कहे, जनता की भलाई के काम में आ सके, स्वय उसे तो पैसे से ज्यादा-से-ज्यादा घृणा है। इसी समय एक नौकर ने जलपान लेकर प्रवेश किया तो गोलुश्किन ने बड़े अर्थपूर्ण ढंग से गला साफ किया और पूछा कि क्या किसी चीज़ के गिलास से शुरूआत ठीक न होगी ? और स्वय एक कालीमिर्च की ब्राण्डी का एक गिलास गटगट चढाकर आगे रास्ता भी दिखा दिया।

अभ्यागतो ने भी जलपान किया। गोलुश्किन मछली के अचार के बडे-बड़े गस्से मुँह में ठूँस बडी तत्परता के साथ शराब पीता जाता था और कहता जाता था कि, "आइये, सज्जनो, अब एक गिलास बढिया मैकन का लीजिए।"

फिर नेज्दानौफ की ओर उन्मुख होते हुए उसने पूछा कि वह कहाँ से आया है और आजकल कहाँ और कब तक ठहरा हुआ है, यह जान-कर कि वह सिप्यागिन के साथ रह रहा है, वह चीख पडा, "उस भले आदमी को तो मै जानता हूँ। किसी काम का नही है।" और फिर वह स—प्रात के तमाम जमीदारो को भला-बुरा कहने लगा, केवल इसी कारण नही कि उनमें सार्वजनिक भावना का अभाव है, बल्कि इसलिए भी कि उनमें स्वयं अपने स्वार्थ को समझने की भी अक्ल नही है।··· पर अजीब बात यह थी कि हालाँकि उसकी भाषा कठोर थी, किंतु उसकी आँखे बेचैनी से इधर-से-उधर भटक रही थी और उनमें परेशानी का भाव दिखाई पडता था। नेज्दानौफ ठीक समझ न पा रहा था कि वह किस किस्म का आदमी है और किस प्रकार से वह उनके लिए उपयोगी हो सकता है। सालोमिन सदा की भाँति चुप था, और मार्केलौफ का चेहरा इतना उदास था कि नेज़्दानौफ को पूछना पड़ा कि आखिर बात क्या है। उत्तर में मार्केलौफ ने कहा कि कोई बात नही है, पर उसकी

आवाज़ की ध्वनि ऐसी थी जिसमें लोग आमतौर से तब उत्तर देते हैं जब वे आपको यह बताना चाहते हैं कि बात तो है पर आपके जानने की नहीं है। गोलुश्किन फिर किसी-न-किसी को भला-बुरा कहने लगा और फिर नई पीढ़ी के लोगों की प्रशंसा करने लगा। "ऐसे प्रतिभा-वान लोग," उसने घोषणा की, "आजकल हम लोगो के बीच प्रगट हो रहे हैं। ऐसी प्रतिभा ! आह ! ......"

सालोमिन ने उसकी बात काटकर बीच ही में पूछा कि जिस निश्वसनीय युवक का उसने ज़िक्र किया था वह कौन है और वह उसे कहाँ मिला? गोलुश्किन हंसा और उसने दो बार कहा, "देखियेगा, साहब देखियेगा।" फिर वह सालोमिन से उसके कारखाने के बारे में, उसके धोखेबाज़ मालिक के बारे में तरह-तरह के सवाल पूछने लगा, जिनके उत्तर सालोमिन एकाध शब्द में देता रहा। इसके बाद गोलुश्किन ने सबके लिए शैम्पेन ढाली और नेज़्दानौफ़ के कानों तक झुककर उसने फुसफुसाते हुए कहा, "प्रजातन्त्र की कामना के साथ।" और एक घूँट में सारा गिलास चढ़ा गया। नेज़्दानौफ़ चुस्की लेकर पीने लगा, सालोमिन ने कहा कि वह सबेरे शराब नहीं पीता; मार्केलौफ़ ने कुपित भाव मे और दृढता के साथ गिलास की आखिरी बूँद तक खत्म कर दी। वह अधीरता से संत्रस्त था, "यहाँ हम लोग बस वक्त बर्बाद कर रहे हैं," वह कहता जान पड़ता था, "और असली बात पर आ ही नहीं रहे हैं।" ....उसने मेज पर एक घूँसा मारा, कठोर स्वर में कहा "सज्जनो !" और बोलना शुरू ही करने वाला था......

पर ठीक उसी क्षण में एक लोमड़ी के-से चिकने चेहरे, क्षयी आकृति वाले आदमी ने, जिसने व्यापारियों की-सी पोशाक पहन रखी थी, पंखों की तरह दोनों हाथ बढ़ाये हुए कमरे में प्रवेश किया। सब लोगों को सम्मिलित भाव से झुककर अभिवादन करते हुए उसने गोलुश्किन से कोई बात कान में कही। "मैं फ़ौरन आया," गोलुश्किन ने जल्दी मे उत्तर दिया। "सज्जनो," उसने बाकी लोगों से कहा, "मुझे क्षमा

कीजिये, मेरे क्लर्क वास्या ने मुझे एक चोटी-सी" (उसने इस 'छोटी-सी' का इस प्रकार उच्चारण अपनी विनोदप्रियता दिखाने के लिए किया था) "बात बताई है जिसके कारण मुझे थोड़ी देर के लिए अनुपस्थित रहना पड़ेगा। किन्तु मुझे आशा है कि आप लोग मेरे साथ तीन बजे भोजन करना अवश्य स्वीकार करेंगे; उस समय हम लोगों को और भी अधिक आज़ादी रहेगी !"

न सालोमिन और न नेज़्दानौफ की समझ में आया कि क्या उत्तर दें; किन्तु मार्केलौफ़ ने अपने चेहरे और कण्ठ की उसी कठोरता के साथ तुरन्त उत्तर दिया, "निस्सन्देह हम लोग आयेंगे; नहीं आना बड़ा भारी मज़ाक हो जायगा।"

"बड़ा आभारी हूँ," गोलुश्किन ने जल्दी से कहा और मार्केलौफ़ की ओर झुकते हुए उसने जोड़ा, "और जो भी हो, आन्दोलन के लिए एक हज़ार रूबल तो मैं दूँगा ही,······इस विषय में कोई शक न कीजियेगा।"

और यह कहते हुए उसने अपना दायाँ हाथ, अँगूठा और छोटी अँगुली परस्पर विश्वास के चिह्न के रूप में बाहर निकाले, तीन वार हिलाया।

वह अपने अतिथियों को दरवाज़े तक पहुँचाने आया और दरवाज़े में खड़े होकर उसने ज़ोर से कहा, "तीन बजे मैं आप लोगों की प्रतीक्षा करूँगा !"

"प्रतीक्षा कीजियेगा !" केवल मार्केलौफ़ ने उत्तर दिया।

"अच्छा दोस्तो," जब तीनों सड़क पर पहुँच गये तो सालोमिन ने कहा, "मैं तो गाड़ी लेकर कारखाने वापस जा रहा हूँ। भोजन के वक्त तक नहीं तो करेंगे क्या ? बेकार आवारागर्दी में वक्त बितायें ? और वास्तव में हमारे यह योग्य व्यापारी महोदय······मुझे लगता है ······कहानी की बकरी की भाँति हैं, न ऊन की न दूध की।"

"ओह, ऊन तो थोड़ा-बहुत निकलेगा ही," मार्केलौफ़ ने उसी

कठोरता के साथ कहा। "अभी-अभी तो उसने कुछ रुपये का वादा किया। या वह आपके हिसाब से अच्छा नही है ? हम लोग इतने कड़े नहीं हो सकते। हमारी इतनी आवभगत नहीं है कि नाक-भौ सिकोड़ सकें।"

"मै नाक-भौं नहीं सिकोड़ रहा हूँ !" सालोमिन ने शान्त भाव से कहा, "मै केवल अपने-आपसे यह प्रश्न पूछ रहा हूँ कि मेरी उपस्थिति से क्या लाभ होगा। किन्तु तो भी," उसने नेज्दानौफ़ पर एक नज़र डालकर मुस्कराते हुए कहा, "मै ठहर जाऊँगा, अवश्य। कहावत है कि साथ-साथ जहन्नुम जाने में भी मज़ा है।"

मार्केलौफ़ ने सिर उठाया।

"तब तक सरकारी बाग में चलें; दिन बड़ा बढ़िया है। लोगों को भी देखेंगे।"

"अच्छी बात है।"

वे चल दिये, मार्केलौफ़ और सालोमिन आगे-आगे, नेज़्दानौफ उनके पीछे-पीछे।

अठारह

उसके दिमाग़ की हालत अजीब थी। पिछले दो दिनों में इतने नये अनुभव, नये चेहरे······अपने जीवन में पहली बार उसे एक लड़की की घनिष्ठता प्राप्त हुई थी, जिसे शायद वह प्यार करता था; वह एक ऐसी चीज़ के प्रारम्भ में भाग ले रहा था जिसके लिए संभवतः उसकी सारी क्षमताएँ समर्पित थीं।······तो फिर? क्या वह प्रसन्न था? नहीं। क्या वह डगमगा रहा था, डर रहा था, घबरा रहा था? ओह, तनिक भी नहीं। क्या वह कम-से-कम अपने समूचे व्यक्तित्व में वह तनाव, युद्ध की पहली पाँति में आगे बढ़ने की प्रेरणा अनुभव कर रहा था, जिसकी संघर्ष समीप आने पर आशा की जा सकती है? वह भी नहीं। तो फिर क्या उसे अपने उद्देश्य में निष्ठा थी? क्या उसे अपने प्रेम में निष्ठा थी? "ओह, फिर वही शैतानी कलात्मक स्वभाव! संशय-वादिता!" उसके होठों से बहुत ही धीमे से निकला। तो फिर यह थकान किसलिये? चीख़-पुकार के बिना भी बोलने तक की यह अनिच्छा क्यों? उस चीख़ पुकार को दबाने के लिए वह कौनसी अंत-रात्मा की आवाज़ चाहता था? पर क्या मेरियाना, वह पवित्र, सच्ची

संगिनी, वह निर्मल, भावुक स्वभाव वाली अपूर्व लड़की, क्या वह उसे प्यार नहीं करती ? उससे भेंट, परिचय, उसकी मित्रता, प्यार क्या बड़ी भारी सुख की चीज़ नहीं थी ? और इस समय उसके आगे-आगे चलते हुए ये दोनों, यह मार्केलौफ़, यह सालोमिन, जिन्हें वह अभी तक इतना कम जानता है पर जिनकी ओर वह कितना आकर्षित होता जा रहा है, क्या ये लोग रूसी स्वभाव के, रूसी जीवन के श्रेष्ठ प्रमाण नहीं हैं, और क्या उनसे परिचय होना, उनकी मित्रता प्राप्त करना भी सुख की बात नहीं है ? तो फिर यह अस्पष्ट, अनिश्चित-सा कचोटता हुआ भाव किसलिए ? यह निराशा क्यों और कैसे ? "यदि तुम मन-ही-मन घुटने वाले निराशावादी ही हो," उसके होठ फिर बुदबुदाये, "तो फिर बड़े बढ़िया क्रांतिकारी बनोगे ! तुम्हें तो चाहिए कि जाकर छंद रचो, अपने क्षुद्र विचारों और भावनाओं को सहलाओ और उनपर आँसू बहाओ, और हर प्रकार की मनोवैज्ञानिक कल्पनाओं और बारीकियों में उलझे रहो, कम-से-कम अपनी अस्वस्थ बेचैनी भरी इच्छाओं और चिड़चिड़ेपन को पुरुषोचित क्षोभ, सिद्धांतवादी व्यक्ति का सच्चा क्रोध मानने की भूल तो मत करो ! ओह, हैमलैट, हैमलैट, तुम्हारी आत्मा की छाया से कैसे बचा जाय ! कैसे हर बात में, आत्मनिंदा में, आनंद-प्राप्ति की घृणित क्रिया तक में, तुम्हारे अनुसरण से कैसे बचा जाय !"

"अलैक्सी ! दोस्त ! रूस के हैमलैट !" उसे अपने विचारों की प्रतिध्वनि की भाँति, एक परिचित चीं-चीं करती आवाज़ में कहीं से सुनाई पड़ा । "क्या तुम्हें ही देख रहा हूँ अपने सामने ?"

नेज़्दानौफ़ ने आँखें ऊपर उठाईं और चकित दृष्टि से पाकलिन को देखता रह गया !—पाकलिन, एकदम पक्के देहाती ठाठ-बाट में, शरीर के ही रंग का एक गर्मी का सूट पहने, गरदन में गुलूबंद के बिना, एक नीले फीते वाली बड़ी-सी घास की टोपी सिर पर पीछे की ओर जमाये और चमकदार जूते डाटे !

वह फ़ौरन लंगड़ाता हुआ नेज्दानौफ़ की ओर बढ़ आया और उसके

हाथ अपने हाथों में ले लिये।

"सबसे पहले तो" उसने शुरू किया, "हालाँकि हम लोग सरकारी बगीचे में खड़े हैं, पुराने रिवाज़ के अनुसार, मुझे तुम्हारा आलिंगन और प्यार करना चाहिये, एक, दो, तीन बार! दूसरे तुम्हें यह बात मालूम होनी चाहिए कि अगर आज तुम से मेरी मुलाकात न होती, तो कल तो ज़रूर ही होती, क्योंकि मुझे तुम्हारा निवास-स्थान मालूम था, और मैं सचमुच इस शहर में आया ही इस उद्देश्य से हूँ।······यहाँ मैं कैसे आया, इसकी चर्चा हम लोग बाद में करेंगे; और तीसरे, अपने साथियों से मेरा परिचय कराओ। संक्षेप में मुझे यह बताओ कि वे कौन हैं, और उन्हें यह कि मैं कौन हूँ, और फिर हम लोग मौज करने के लिए चल सकते हैं।"

नेज़्दानौफ़ ने अपने मित्र की इच्छानुसार उसका नाम मार्केलौफ़ और सालोमिन को बता दिया और उन दोनों का उसे और यह भी बता दिया कि वे दोनों कौन है, इत्यादि।

"बहुत अच्छे!" पाकलिन ने कहा; "और अब मुझे आज्ञा दीजिये कि मै आप सबको सारे भीड़-भड़क्के से, जो हालाँकि निश्चय ही यहाँ अधिक नहीं है, एक एकांत के स्थान पर ले चलूँ जहाँ मैं स्वय चिन्तन के क्षणों में बैठकर प्रकृति के सौंदर्य का उपभोग किया करता हूँ। वहाँ का दृश्य बड़ा ही अपूर्व है; गवर्नर का भवन, दो धारीदार संतरियों की चौकियाँ, तीन पुलिस वाले और कुत्ता एक भी नहीं! मैं जिन बातों के द्वारा उलटे ढंग से आपका मनोरंजन करने का प्रयत्न कर रहा हूँ उनसे आप विस्मित न हो! मै अपने मित्र की राय मे रूसी वाक्‌चातुरी का प्रतिनिधि हूँ······निस्संदेह यही कारण है कि मैं लँगड़ाता हूँ।"

पाकलिन अपने मित्रो को उस 'एकान्त स्थान' मे ले पहुँचा, और समारम्भ के रूप मे दो भिखारिनों को वहाँ से हटाकर, उन लोगों को वहाँ बैठा दिया। इसके बाद ये नौजवान 'विचार-विनिमय' करने लगे, जो, विशेषकर प्रथम भेट के समय, बड़ा ही नीरस कार्य होता है, और

विशेष रूप से अनुपयोगी धन्धा तो सदा ही रहता है।

"ठहरो !" एकाएक पाकलिन ने नेज़दानौफ़ की ओर मुड़ते हुए चीख़कर कहा। "यह तो मैंने तुम्हें बताया ही नहीं कि यहाँ मैं आया कैसे। तुम जानते ही हो कि हर साल गर्मियों में मैं अपनी बहन को कहीं-न-कहीं ले जाया करता हूँ; जब मैंने देखा कि तुम इसी शहर के आस-पास कहीं चले आये हो, तो मुझे याद आया कि इस शहर में दो अद्भुत व्यक्ति, पति-पत्नी, भी रहते हैं जो हमारी माँ की तरफ से हमारे रिश्तेदार होते हैं। मेरे पिता व्यापारी थे"—(नेज़दानौफ़ यह बात जानता था, पर पाकलिन ने बाकी दोनों के लाभ के लिये इसका उल्लेख किया था)—"पर मेरी माँ ज़मींदार घराने की थी। ये लोग बरसों से हमें आने के लिए निमन्त्रित कर रहे थे ! बस ! मैंने सोचा······यही ठीक है। बहुत ही स्नेही लोग हैं, मेरी बहन इससे बहुत ही प्रसन्न होगी—इससे अच्छा और क्या हो सकता है ? तो इसीलिये हम लोग यहाँ मौजूद हैं। और ठीक वही हुआ जो मैंने सोचा था ! मैं बता नहीं सकता कि हम लोग कितने मजे में हैं ! पर कैसे लोग हैं ! क्या बात है ! सचमुच तुम्हें उनसे मिलना चाहिये। यहाँ तुम किस सिलसिले में आए हो ? भोजन कहाँ करने वाले हो ? और इस स्थान पर तुम किस लिए भटक पड़े थे ?"

"भोजन हम गोलुश्किन नामक एक व्यापारी के साथ करेंगे," नेज़दानौफ़ ने उत्तर दिया।

"कितने बजे ?"

"तीन बजे।"

"और तुम उससे मिल रहे हो······" पाकलिन ने सालोमिन पर, जो मुस्करा रहा था, और मार्केलौफ़ पर जिसका चेहरा अधिकाधिक क्रुद्ध होता जा रहा था, ऊपर से नीचे तक एक नज़र डाली।

"अच्छा, अल्योशा, इन लोगों को बता दो······किसी तरह का गुप्त संकेत कर दो······कि मेरे साथ कोई छिपाव करने की ज़रूरत

नहीं······मैं तो तुम्हीं लोगों में से······तुम्हारे दल का ही एक आदमी हूँ।······"

"गोलुश्किन भी अपना ही आदमी है," नेज़्दानौफ़ ने कहा।

"अच्छा, मेरे दिमाग में एक बढ़िया बात आई है! तीन बजने में तो अभी बहुत देर है। सुनो, चलो मेरे इन रिश्तेदारों से मिल आओ!"

"क्यों, तुम्हारा दिमाग खराब है! कैसे जा सकते हैं हम लोग?······"

"अरे, उसकी चिन्ता मत करो। वह सब मैं अपने ऊपर ले लूँगा। जरा कल्पना करो: रेगिस्तान में हरियाली की भाँति है वह जगह! न राजनीति, न साहित्य, न किसी अन्य आधुनिक चीज़ की झाँकी तक वहाँ प्रवेश कर सकी है। एक अजीब छोटा-मोटा-सा मकान, जैसा आजकल तुम्हें कहीं देखने को नहीं मिलता; उसकी गन्ध तक प्राचीनता से भरी है, लोग प्राचीन हैं, वातावरण प्राचीन है······चाहे जैसे देखो वह सारा-का-सारा प्राचीन है, कैथराइन द्वितीय, पाउडर, घाघरे, अठारहवीं शताब्दी! ज़रा एक पति-पत्नी की कल्पना करो, दोनों बहुत बूढ़े, एक ही उम्र के, और एक भी झुर्री के बिना; गोल-मटोल, फूले-फले, साफ़-सुथरे लोग, छोटे-छोटे तोतों की बढ़िया-सी जोड़ी की तरह; स्वभाव के इतने अच्छे कि बुद्धू जान पड़ें, महात्मा जान पड़ें, और इसकी कोई सीमा नहीं। लोग कहते हैं कि 'बेहद' अच्छे स्वभाव वालों में प्रायः नैतिक भावना का अभाव होता है······पर मैं ऐसी बारीकियों में नहीं जा सकता; मैं तो बस इतना जानता हूँ कि मेरे ये बूढ़ा-बुढ़िया भलमन्सी की मूरत हैं! बच्चे कभी हुए नहीं। बेचारे भोले-भाले! शहर में सब लोग उन्हें भोले-भाले ही कहते हैं। दोनों एक से ही धारीदार गाउन पहनते हैं; बढ़िया कपड़े के जैसा आजकल दिखाई तक नहीं पड़ता। सचमुच दोनों एकदम एक-से हैं, बस दोनों की टोपियों में थोड़ा सा अन्तर है और वह भी नहीं के बराबर। और वह अन्तर न होता तो यह भी पता न चलता कि कौन-कौन है खास तौर पर इसलिये कि पति की

दाढ़ी भी नहीं है। उनके नाम हैं, फोमुश्का और फीमुश्का। मैं सच कहता हूँ कि तुम लोगों को इन अजीब चीजों को देखने के लिए दरवाजे पर कुछ फ़ीस देनी चाहिये। वे दोनों एक दूसरे को बिल्कुल असम्भव ढंग से प्यार करते है, पर यदि कोई उनसे मिलने आता है तो बस "बडी कृपा की, बड़ी खुशी हुई।" और कितना अतिथि-सत्कार करते हैं! वे अपनी तमाम छोटी-छोटी विशेषताएँ आपके मनोरंजन के लिए प्रस्तुत कर देते हैं। बस एक बात है, वहाँ धूम्रपान नहीं करना चाहिये; यह नहीं कि वे लोग नास्तिक है, पर धुएँ से उन्हें परेशानी होती है। ...बात यह है कि उनके ज़माने में कोई धूम्रपान करता ही न था। इसी तरह से पीली बुलबुल को भी वे बर्दाश्त नहीं कर सकते, क्योंकि वह चिड़िया भी उनके ज़माने में बहुत ही कम दिखाई पड़ा करती थी... और यह बड़ी भली बात है, तुम मानोगे! तो फिर ? चलोगे ?"

"सचमुच, कह नहीं सकता," नेज़्दानौफ़ ने शुरू किया।

"ठहरो, मैंने सारी बातें अभी खत्म कहाँ की हैं। उनकी आवाजें भी एक-सी हैं, आँखें बन्द कर लो तो पता न चलेगा कि कौन बोल रहा है। बस, फोमुश्का जरा-सा अधिक प्रभावशाली ढंग से बोलता है। आइए, मित्रो, आप लोग एक बड़े भारी दायित्व, शायद भीषण संघर्ष के द्वार पर खड़े हैं...उन तूफ़ानी गहराइयों में कूद पड़ने के पहले क्यों न आप लोग एक गोता लगा लें...।"

"बंद पानी में!" मार्केलौफ़ ने उत्तर दिया।

"ऐसा ही हो तो भी क्या बात है? बंद तो वह निस्सदेह है, पर ताज़ा और निर्मल। स्टेपीज़ में ऐसे तालाब हैं जिनमें से कोई धार नहीं निकलती, पर जिनका पानी कभी सड़ता नहीं, क्योंकि उनके तल में सोता मौजूद होता है। और मेरे इन बुजुर्गों के अंतस्तल में भी ऐसा ही सोता है और यथासंभव निर्मल भी है। बात कुल यह है कि यदि आप लोग जानना चाहते हैं कि सौ या डेढ़ सौ बरस पहले लोग कैसे रहा करते थे तो जल्दी कीजिए और मेरे साथ चलिए। नहीं तो जल्दी

ही वह दिन, वह घडी आ पहुँचेगी—और निश्चित ही दोनों के लिए एक ही घड़ी होगी—जब मेरे तोतों की जोड़ी अपनी जगह से लुढ़क पड़ेगी, समस्त प्राचीनता उनके साथ-ही-साथ मिट जायगी, वह छोटा-मोटा मकान ढह पड़ेगा और उस स्थान पर वही चीज़ें आ जायेंगी, जो मेरी दादी बताती थी कि उस स्थान पर सदा आ जाती है जहाँ आदमी का निवास रहा हो, यानी गोखरू, बिछुए, कटारी आदि जड़ी-बूटियाँ; वह सड़क तक न रहेगी, लोग आयेंगे और जायेंगे पर युगों-युगों तक ऐसी कोई चीज फिर देखने को न मिलेगी।"

"अच्छा !" नेज़्दानौफ़ ने ज़ोर से कहा, "चलो फ़ौरन चलें।"

"मैं तैयार हूँ, सचमुच बडी खुशी के साथ," सालोमिन ने कहा। "यह मेरी रुचि की चीज तो नहीं है पर दिलचस्प अवश्य है, और यदि मि० पाकलिन इस बात का विश्वास दिला सकें कि हमारे जाने से किसी को परेशानी न होगी तो····फिर···"

"आप परेशान न हों।" पाकलिन ने चीखकर उत्तर दिया, "वे लोग तो बस गद्‌गद हो जायेंगे। इस मामले में किसी तकल्लुफ़ की ज़रूरत नहीं है। मैं आपसे कहता हूँ कि वे लोग एकदम भोले जीव हैं, हम लोग उनसे गाना सुनेंगे। और आप भी, मि० मार्केलौफ़, आप भी सहमत हैं न ?"

मार्केलौफ़ ने क्रुद्ध भाव से अपने कंधे हिलाये।

"मैं क्या यहाँ अकेला बैठा रहूँगा। चलिए कृपा करके रास्ता दिखाइये।"

सब लोग उठ खड़े हुए।

"बड़े डरावने सज्जन हैं," पाकलिन ने मार्केलौफ़ की ओर इशारा करते हुए नेज्दानौफ़ के कान में कहा, "टिड्डियाँ खाते हुए जान बैप्टिस्ट की साक्षात् मूर्ति······शहद के बिना टिड्डियाँ। पर वह," उसने सालोमिन की ओर इशारा करते हुए जोड़ा, "बहुत बढ़िया आदमी हैं। कैसी

मीठी मुस्कान है। मैने देखा है कि जो लोग इस तरह मुस्कराते है वे ही लोग दूसरे लोगों से वास्तव में श्रेष्ठ होते है…और स्वयं इस बारे मे जानते तक नही।"

"क्या ऐसे लोग बहुत होते है ?" नेज्दानौफ ने पूछा।

"बहुत नही, पर कुछ ज़रूर होते है," पाकलिन ने उत्तर दिया।

उन्नीस

फोमुश्का और फीमुश्का, अर्थात् फोमा लावरेन्त्येविच और एवफी-मिया पावलोवना सुवौत्चैफ़, दोनों शुद्ध रूसी जाति के एक ही परिवार के थे और स—शहर के लगभग सबसे पुराने निवासी माने जाते थे। उनका विवाह बहुत कम उम्र में हो गया था और बहुत दिनों से वे लोग शहर के एक किनारे अपने पूर्वजों के काठ के मकान में रहते आ रहे थे, कभी वहाँ से हटे न थे और किसी भी प्रकार से अपने रहन-सहन या आदतो में कोई परिवर्तन न किया था। समय उनके लिए निश्चल हो गया जान पड़ता था; उनकी 'रेगिस्तान की हरियाली' की सीमा के भीतर किसी 'नवीनता' ने पैर न रखा था। उनकी जायदाद बड़ी न थी, पर उनके किसान साल मे कई बार, आज़ाद होने के पहले के पुराने ज़माने की भाँति, मुर्गे-मुर्गियाँ और अनाज भेज दिया करते थे। निश्चित तारीख पर गाँव का बुज़ुर्ग लगान लेकर आ जाता था। वह अपने साथ जंगली मुर्ग़ी भी लाता था, जो ज़मींदारी के जंगलों मे से मारा हुआ समझा जाता था, पर वास्तव में ऐसे जंगल कभी के खत्म हो चुके थे। वे लोग उसको ड्राइंग रूम के दरवाज़े पर जी भरकर

चाय पिलाते, भेड़ की खाल की टोपी और हरे रंग के उँगलियों वाले चमड़े के दस्ताने भेंट करते, और फिर उसकी मंगलकामना करते। सुबोत्चैफ़-परिवार का मकान पुराने ज़माने की भाँति घरेलू दासों से भरा रहता था। बूढ़ा नौकर कालिओपिच, कड़े कालर और छोटे-छोटे लोहे के बटनों वाली बहुत ही मोटे कपड़े की सदरी पहने, गीत गाने की-सी आवाज़ में गुनगुनाता, 'भोजन मेज़ पर लगा दिया है,' और सब एकदम ठीक पुराने ही ढंग से, अपनी मालकिन के पीछे खड़ा-खड़ा ऊँघा करता था। बगल की सामान रखने की मेज़ उसके अधिकार में रहती थी; 'मसालों, इलायची और नीबू आदि' की भी उसी की जिम्मेदारी थी। इस सवाल का कि 'क्या उसने नहीं सुना कि सब दासों को आज़ादी मिल गई है ?'' वह हमेशा यही उत्तर देता, "ज़रूर, कुछ लोग सदा इस तरह की बकवास करते ही रहते हैं; तुर्कों में भी कुछ ऐसी ही आज़ादी थी, पर भगवान् की दया से मैं इस सबसे बचा हुआ हूँ।" पुफ्का नाम की एक बौनी लड़की मनोरंजन के लिए रहती थी; वैसिल्येवना नामक एक बूढ़ी नर्स भोजन के समय सिर पर एक बड़ा-सा काला रूमाल बाँधे आती थी और अपनी मोटी आवाज़ में सब खबरों की चर्चा करती थी—नेपोलियन की, १८१२ के साल की, एन्टीक्राइस्ट की, सफ़ेद हब्शियों की; या फिर अपने हाथों में ठोड़ी रखकर बड़ी कष्टपूर्ण मुद्रा में वह सुनाती कि उसने क्या-क्या सपने देखे हैं और उनका क्या मतलब है, और ताशों में वह कितना जीती है। सुबोत्चैफ़ का मकान ही शहर के सब मकानों से बिल्कुल भिन्न था; वह पूरा बाँज की लकड़ी का बना हुआ था और उसकी खिड़कियाँ एकदम चौकोर थीं। जाड़े की दुहरी खिड़कियाँ पूरे साल भर कभी न निकाली जातीं! और उसमें तरह-तरह की छोटी-छोटी ड्योढ़ियाँ, रास्ते, भण्डारघर और कबाड़ कोठरियाँ, कटहरेदार उठे हुए चाँदे और गोल खम्भों पर उठे हुए आले, और तमाम तरह के तहखाने और पिछवाड़े के कमरे थे। सामने छोटा-सा बाड़ा था और पीछे एक बगीचा, और

बगीचे में हर तरह की बाहरी इमारतें, खलिहान, तहख़ाने, बर्फ़घर वग़ैरह······उनका पूरा झुण्ड-सा था ! और यह बात न थी कि इन तमाम बाहरी घरों में बहुत सारी चीजें भरी हों; कुछ तो सचमुच ढहे पड़ रहे थे; पर पुराने ज़माने से वह ऐसे ही चले आते थे और आज भी ऐसे ही थे। सुबोत्चैफ़-परिवार के पास केवल दो घोड़े थे, प्राचीन, बूढ़े, लस्टमपस्टम; एक के ऊपर उम्र के कारण सफ़ेद धब्बे से पड़ गए; उसे वे लोग अचल कहा करते थे। उनको अधिक-से-अधिक महीने में एक बार अद्भुत चीज़ में जोता जाता था। सारा शहर उसे पहचानता था और वह देखने में सामने से एक-चौथाई कटे हुए दुनिया के गोले जैसा लगता था, उसमें पीले रंग का विदेशी कपड़ा लगा था जिस पर मस्सों की तरह के बड़े-बड़े बुँदके पा-पास बने हुए थे। उस कपड़े का आखिरी टुकड़ा शायद सम्राज्ञी एलिज़ाबेथ के ज़माने में उट्रैख्ट या ल्योन्स में बुना गया था ! सुबोत्चैफ़ कोचवान बहुत ही बूढ़ा आदमी था जो तारकोल और गाड़ी के तेल की गंध से गमकता रहता था; उसकी दाढ़ी ठीक उसकी आँखों के नीचे से शुरू हो जाती थी और भौंहों से दाढ़ी तक एक बेल-सी बनी रहती थी। उसके सब काम इतने सोच-समझकर होते थे कि उसे एक चुटकी नस सूंघने में पाँच मिनट, पेटी में चाबुक उरसने में दो मिनट, और अकेले अचल को जोतने में दो घण्टे से अधिक लग जाते थे। उसका नाम था परफिश्का। जब सुबोत्चैफ़-दम्पति सवारी पर निकलते और तनिक भी कहीं चढ़ाई आ जाती, तो उन्हें बेहद डर लगने लगता (वैसे उन्हें उतराई में भी उतनी ही घबराहट होती थी), और वे दोनों गाड़ी के पट्टों पर लटककर ज़ोर-ज़ोर से कहते जाते : "भगवान घोड़ों,·······सेम्युअल की-सी शक्ति प्रदान करे, और हमें······चिड़िया के पर से हलका, पर से भी हलका बना दे।······"

सुबोत्चैफ़-दम्पति को शहर में सभी सनकी, करीब-करीब पागल, समझते थे, और वास्तव में वे स्वयं भी यह अनुभव करते थे कि ज़माने के साथ

उनका सम्पर्क नही रहा है······पर वे उस विषय में अधिक परेशान न होते थे, और जिस प्रकार के रहन-सहन में वे पैदा हुए, पले और विवाहित हुए थे, उसी पर डटे रहते थे। उस रहन-सहन की केवल एक विशेषता उनसे चिपकी न रह सकी थी; पैदा होने के समय से लगाकर आजतक उन्होंने किसी को सज़ा न दी थी, किसी को पीटा न था। यदि उनका कोई नौकर एकदम चोर और शराबी निकल जाता तो पहले तो वे बहुत दिनों तक बड़े धीरज के साथ उसे बर्दाश्त करते रहते जैसे लोग बुरे मौसम को बर्दाश्त करते रहते हैं; और फिर अंत में उनसे पीछा छुड़ाने का, किसी दूसरे मालिक को सौंप देने का प्रयत्न करते। उनका कहना था कि क्यों न दूसरे भी ज़रा उनकी बानगी देख लें। पर ऐसा वज्रपात उनके ऊपर कभी होता, इतना कभी कि वह उनके जीवन का एक युग बन जाता और वे उदाहरण के लिए कहते, "बहुत दिन की बात है, जब वह शैतान अल्दोश्का हमारे यहाँ था," या "जब हमारी लोमड़ी के बालों वाली दादीजी की टोपी चोरी हो गई थी।" सुबोत्चैफ-दम्पति के पास अब भी वैसी टोपियाँ मौजूद थीं। पुराने ज़माने की एक और भी विशेषता उनमें न दिखाई पड़ती थी, फीमुश्का और फोमुश्का दोनों में से कोई भी बहुत धर्मपरायण न था। फोमुश्का तो कुछ-कुछ वाल्तेयर के विचारों को भी मानता था और फीमुश्का को धार्मिक महापुरुषों से बड़ा भारी डर लगता था, उसका अनुभव था कि उन लोगो की नज़र बड़ी अशुभ होती है। वह सुनाया करती थी कि "पुरोहित मुझसे मिलने आया और मैंने नज़र घुमाई तो देखती हूँ कि क्रीम खट्टी हो गई है!" वे शायद ही कभी गिरजाघर जाते हों, और कैथलिक ढंग से उपवास किया करते थे, यानी केवल अंडे, मक्खन और दूध का भोजन करते थे। यह बात भी शहर में सभी जानते थे और इससे भी उनकी ख्याति कुछ अच्छी नही होती थी। पर उनकी भलमनसाहत हर चीज़ को बहा ले जाती थी; और यद्यपि लोग उनके ऊपर हँसते थे और उन्हें पागल और भोले समझते थे, तो भी इसके बावजूद

उनको आदर की दृष्टि से देखते थे। हाँ, उनको आदर की दृष्टि से देखते थे······पर कभी कोई उनसे मिलने न आता था। किन्तु इस बात से उन लोगों को विशेष परेशानी न थी। वे दोनों साथ-साथ रहे तो कभी उकताते न थे, इसलिए कभी एक-दूसरे से अलग न होते, और न किसी दूसरे से मिलने की इच्छा ही रखते थे। फोमुश्का और फीमुश्का कभी एक बार भी बीमार न पड़े थे, और यदि उनमें से किसी को भी कभी छोटी-मोटी बीमारी होती थी तो वे दोनो नीबू के फूल का पानी पीते, अपने पेटों पर गरम तेल की मालिश करते, या अपने पैरों के तलुओं पर गर्म चरबी की चिकनाई डालते, और जल्दी ही सब ठीक हो जाता। दिन उनका सदा एक ही ढंग से बीतता। ये लोग देर से सोकर उठते, कोन की शक्ल के छोटे-छोटे प्यालों में सबेरे चाकलेट पीते; उनका कहना था कि "चाय का हमारे ज़माने के बाद फ़ैशन चला।" वे एक-दूसरे के आमने-सामने बैठते और या तो बातचीत करते, (और सदा उन्हें कुछ-न-कुछ बातचीत करने के लिए मिल जाता) या 'सुखद मनोरंजन', 'विश्व-दर्पण' या 'एग्रोनाइडीस' में से कुछ पढ़ते, या फिर लाल मखमली चमड़े की जिल्द में बँधे और सुनहरे किनारों वाले एक पुराने ऐलबम को देखते, जो जैसा एक आलेख में अंकित था। कभी किसी ज़माने में एक मामजेल बार्बेद काबीलीन की सम्पत्ति था। कब और कैसे यह ऐलबम उनके हाथ में आ पड़ा, यह वे लोग स्वयं नहीं जानते थे। उसमें थोड़े से फ्रेंच भाषा के और बहुत से रूसी भाषा के कविता तथा गद्य के उद्धरण दिये हुए थे। शैली की दृष्टि से, उदाहरण के लिए, सिसरो पर संक्षिप्त विचारो का एक टुकड़ा कुछ इस प्रकार था: "सिसरो ने किस प्रकार खजांची के पद को ग्रहण किया, इस विषय में वह लिखता है, आज तक उसने जितने भी पद ग्रहण किये थे उन सब में अपनी भावनाओं की निर्मलता को प्रमाणित करने के लिए देवताओं का आह्वान करके, उसने अपने-आपको पवित्रतम बन्धनों से अपने कर्त्तव्य पूरा करने के लिए उत्तरदायी माना और इसी उद्देश्य से उसने, सिसरो ने, न केवल नियम द्वारा वर्जित

आनन्द से अपने आपको वंचित रखने का कष्ट सहन किया, बल्कि उन हलके मनोरंजनों से भी बचता रहा जिन्हें सब लोग अपरिहार्य मानते हैं।" इसके नीचे आलेख था, "साइबेरिया में शीत और क्षुधा से पीड़ित अवस्था में लिखा गया।" 'तिरसिस' नामक एक कविता भी अच्छा नमूना पेश करती थी, जिसमें ये पंक्तियाँ भी मौजूद थीं—

"हर चीज़ पर शान्ति छाई हुई है
धूप में ओस चमक उठी है,
और शीतल ताज़गी से प्रकृति को सहला रही है
और हाल ही में शुरू हुए दिन को नया जीवन प्रदान कर रही है !
केवल तिरसिस ही अपना उदास हृदय लिए,
दुखी है, तड़प रही है, इतनी अकेली, इतनी उदास।
उसका प्रीतम अनन्त दूर है,
और फिर कौन-सी चीज़ तिरसिस को प्रसन्न कर सकती है ?"

और ६ मई १७६० में आने वाले किसी कप्तान की ये आशु पंक्तियाँ भी थीं—

"मैं तुझे कभी न भूल सकूँगा,
ओ सुन्दर गाँव !
सदा मुझे याद आता रहेगा
कैसा प्यारा समय बीता था !
तेरे भले स्वामी के घर में
कैसा स्नेह मुझे मिला था !
पाँच चिरस्मरणीय सुखी दिवस
उन सर्वथा प्रशंसनीय लोगों के बीच,
बूढ़ी और जवान बहुत-सी महिलाओं
और दूसरे दिलचस्प लोगों के साथ !"

ऐलबम के आखिरी पृष्ठ पर कविताओं के बजाय पेट के दर्द की, दौरों की, कीड़ों की दवाओं के नुस्खे लिखे हुए थे। सुबोत्चैफ़-दम्पति

ठीक बारह बजे और सदा पुराने फैशन के व्यंजनों का भोजन करते—दही, खट्टा ककड़ी का शोरबा, नमकीन करमकल्ला, अचार, पुडिंग, शर्बत, केशर पड़ा हुआ मुर्ग, शहद मिलाकर बनाये हुए शरीफ़े आदि। भोजन के बाद वे लोग ठीक एक घण्टे, न ज़्यादा न कम, सोते, फिर उठकर एक-दूसरे के सामने बैठ जाते, करोंदे का शर्बत पीते, या फिर कभी-कभी 'चालीसमज़े' नामक एक भागदार शर्बत पीते, जो हमेशा सारा-का-सारा बोतल में निकल जाता जिससे बूढ़े-बुढ़िया को बड़ा मज़ा आता और कालिग्रोपिच को बेहद गुस्सा। उसे सारी जगह को पोंछना पड़ता था और वह इसके लिए खानसामा और बावर्ची से बड़ा नाराज़ रहता क्योंकि उसके ख़याल से इन्हीं लोगों ने इस पेय का आविष्कार किया था······"इसमें ऐसी क्या अच्छाई है? इससे बस फर्नीचर खराब होता है।" तब सुबोत्चैफ़-दम्पति फिर कुछ पढ़ते या बौनी पुफ्का की मज़ाकों पर हँसते, या पुराने ढंग के गानों को दोनों साथ गाते (उनकी आवाज़ें एकदम एक-सी थीं, ऊँची, क्षीण, काँपती हुई और भर्राई-सी—विशेषकर सोकर उठने के बाद—पर एकदम मिठास-रहित नहीं), या ताश के वही पुराने कोई खेल खेलते! तब चाय आ जाती, शाम को वे लोग चाय ही पीते······नये ज़माने की इतनी बात उन्होंने मान ली थी, हालाँकि वे इसे अपनी एक कमज़ोरी ही समझते थे और कहते थे कि इस 'चीनी बूटी' के कारण लोग बहुत दुर्बल होते जा रहे हैं। किन्तु वे लोग सदा नये ज़माने की आलोचना अथवा पुराने ज़माने की प्रशंसा करने से बचते थे। अपने जन्म से अब तक वे और किसी तरह से नहीं रहे थे; पर दूसरे लोग भिन्न प्रकार से, बल्कि अधिक अच्छी तरह से, रह सकते हैं, यह बात, यदि उनसे अपने ढंग को बदलने के लिए न कहा जाता तो, वे सदा मानने को तैयार रहते थे। सात बजे कालिग्रोपिच रात का भोजन देता जिसमें अनिवार्य रूप से ठण्डा, खट्टा कीमा होता और नौ बजे ऊँची-ऊँची धारियों वाले परों के बिस्तरों की नरम गोद में फोमुश्का और फीमुश्का के छोटे-छोटे

शरीर खो जाते और निर्विघ्न नींद उनकी पलकों पर उतरने में देर न लगाती। उस समय पुराने घर में हर चीज़ शान्त हो जाती; मुश्क की सुगन्ध के बीच रोशनी जलती रहती; झींगुर झनझन करते रहते; और कोमल हृदय वाले, भोले पर बेतुके बूढ़े दम्पति गहरी नींद में सोये रहते।

इन सनकियों के, या जैसा पाकलिन कहता था तोतों के पास, जो उसकी बहन की देखभाल कर रहे थे, पाकलिन अपने मित्रों को ले चला।

उसकी बहन बड़ी चतुर लड़की थी, और देखने में भी बुरी न थी। उसकी आँखें बड़ी सुन्दर थीं, पर उसकी दुर्भाग्यपूर्ण कुरूपता ने उसे बिल्कुल दबा दिया था, उसे सारे आत्मविश्वास और प्रसन्नता से वंचित कर दिया था और उसे शक्की तथा चिड़चिड़ी बना दिया था। दुर्भाग्य से उसका नाम भी स्नान्दूलिया था ! पाकलिन ने चाहा था कि वह बदलकर सोफिया रख ले, पर वह हठपूर्वक अपने इस विचित्र नाम को चिपकाये रखना चाहती थी और कहती थी कि कुबड़ी लड़की को स्नान्दूलिया ही पुकारना चाहिए। वह संगीत भली भाँति जानती थी और पियानो बजाने में निपुण थी। "मेरी लम्बी उँगलियों की कृपा है," वह कुछ तीखेपन के साथ कहती; "कुबड़ों की उँगलियाँ हमेशा ऐसी ही होती हैं।"

अतिथि फोमुश्का तथा फीमुश्का के घर पर ठीक तभी पहुँचे जब वे अपनी भोजनोपरांत निद्रा से उठकर करोंदे का शर्बत पी रहे थे।

"हम लोग अठारहवीं शताब्दी में प्रवेश कर रहे हैं," सुबोत्चैफ़-गृह की देहली को पार करते ही पाकलिन ने चिल्लाकर कहा।

और सचमुच हाल में ही, पाउडर लगे सैनिकों और महिलाओं की काली कटी हुई छायाओं से भरे नीचे नीले परदों के रूप में, उनका अठारहवीं शताब्दी से सामना हो गया। पिछली शताब्दी की आठवीं दशाब्दी में रूस में काली छायाओं का, जिन्हें लैवेटर ने चालू किया

था, बड़ा फैशन था। इतने सारे—एक साथ चार-चार अतिथियों के हठात् आगमन ने उस सुनसान घर में बड़ी खलबली पैदा कर दी। इन लोगों को नंगे और जूते पहने हुए पैरों की धमाचौकड़ी-सी सुनाई पड़ी; एक से अधिक स्त्री का मुख पल भर को झाँक उठता और फिर गायब हो जाता; कोई बाहर बंद हो गया था, कोई कराहता था, कोई हँस रहा था, कोई हाँफता हुआ फुसफुसा रहा था, "चलो, चलो, चलो यहाँ से!"

आखिरकार कालिओपिच अपनी गंदी जाकेट पहने प्रकट हुआ और बैठकखाने का दरवाज़ा खोलते हुए उसने ज़ोर की आवाज़ में चीखकर कहा—

"हुज़ूर, कुछ अन्य सज्जनों के साथ सिला सामसोनिच!"

बूढ़े लोग अपने नौकरों की अपेक्षा कहीं कम घबराये हुये थे। उनके ड्राइंग रूम में, जो वैसे काफ़ी बड़ा था, एक साथ पूरे आकार के चार-चार आदमियों के विस्फोट ने उन्हें थोड़ा हैरत में अवश्य डाल दिया था, पर पाकलिन ने तुरन्त ही उन्हें आश्वस्त कर दिया और नेज़्दानौफ़, सालोमिन और मार्कलौफ़ का अजीब-अजीब विशेषणों के साथ उनके साथ परिचय कराया और कहा कि ये लोग 'शाही आदमी' नहीं हैं। फोमुश्का और फीमुश्का को 'शाही'—यानी सरकारी—आदमियों से खासतौर पर चिढ़ थी।

स्नान्दूलिया, जो अपने भाई के कहने से आ गई थी, सुबोत्चैफ़ दम्पति की अपेक्षा कहीं अधिक उत्तेजित थी और दिखावे का व्यवहार कर रही थी। उन दोनों ने अपने अतिथियों से एक साथ, और एकदम समान शब्दों में बैठने को कहा और पूछा कि वे लोग क्या लेंगे—चाय, चाकलेट या मुरब्बे के साथ गैसदार शर्बत लेंगे? जब उन्होंने सुना कि उनके मेहमान कुछ नहीं लेना चाहते, क्योंकि उन्होंने थोड़ी ही देर पहले व्यवसायी गोलुश्किन के यहाँ लंच खाया था और अब तीन बजे जाकर उसके यहाँ फिर भोजन करना है, तो उन्होंने ज़िद नहीं की, और दोनों

अपने हाथों को ठीक एक से ढंग से मोड़कर बातचीत करने लगे।

शुरू में तो वार्तालाप कुछ उखड़ा-उखड़ा सा रहा पर शीघ्र ही वह काफ़ी दिलचस्प हो उठा। पाकलिन ने बूढ़े-बुढ़िया को गोगोल की एक बड़ी प्रसिद्ध कहानी सुनाई कि कैसे एक मेयर एकदम भरे हुये गिरजाघर में घुसने में कामयाब हुआ, और कैसे एक मिठाई मेयर के पेट के भीतर घुसने में सफल हुई। वे दोनों इस कहानी से बड़े ही प्रसन्न हुए और हँसते-हँसते उनकी आँखों से आँसू बहने लगे। वे दोनों हँसते भी ठीक एक ही तरह से—एकाएक चीख पड़ते थे और अन्त में दोनों खाँसने लगे और उनके पूरे चेहरे लाल और गरम हो गये थे। पाकलिन जानता था कि गोगोल के उद्धरणों का सुबोत्चैफ़-दम्पति जैसे लोगों पर बड़ा शक्तिशाली और गहरा प्रभाव पड़ता है, किन्तु क्योंकि वह उनको खुश करने के बजाय उनका प्रदर्शन अपने मित्रों के आगे करने को अधिक उत्सुक था, उसने अपना तरीका बदल दिया और ऐसा वातावरण पैदा किया कि वे दोनों जल्दी ही बहुत खुशी-खुशी और आराम से बात करने लगे। फोमुश्का अपनी एक प्रिय लड़की की खुदाई के काम वाली सुँघनी की डिब्बी निकाल लाया और उसे अतिथियों को दिखाने लगा। किसी जमाने में उसके ऊपर विभिन्न मुद्राओं में छत्तीस आकृतियाँ अंकित दिखाई पड़ती थीं; अब वे बहुत दिन हुए मिट चुकी थीं, पर फोमुश्का अब भी उन्हें देख लेता था और कहता जाता था, "देखिये, एक वह रही, खिड़की के बाहर झाँकती हुई; दीखता है न, उसने सिर बाहर निकाल रखा है······," और अपनी मोटी उँगली से जिस जगह की ओर उसने इशारा किया था, वह भी बाकी डिबिया की भाँति ही चिकनी थी। फिर उसने अपने अतिथियों को सिर के ऊपर लटका एक तैलचित्र दिखाया; उसमें एक बरफ के मैदान में एक हलके कुम्मैत रंग के घोड़े पर सवार सरपट भागते शिकारी को चित्रित किया गया था। शिकारी ने एक लम्बी सी सफेद भेड़ की खाल की टोपी पहन रखी थी जिस पर एक नीली-सी धारी थी, और बदन में मखमली किनारी और

सोने के काम की पेटी वाली ऊँट के बालों की सदरी थी; एक रेशम से कढ़ा हुआ दस्ताना पेटी में खोंसा हुआ था और चाँदी के तथा काले काम में जड़ा हुआ एक खँजर उससे लटक रहा था। शिकारी ने, जो देखने मे बहुत जवान और फूला-फूला-सा लगता था, एक हाथ में एक बड़ी-सी तुरही ले रखी थी, जिस पर लाल लटक रही थी, और दूसरे में लगाम और चाबुक थी। घोड़े के चारों पैर हवा में थे, और प्रत्येक के ऊपर चित्रकार ने बड़ी तत्परता के साथ एक-एक नाल अंकित किया था और कीलें तक बना दी थीं। "और देखिये," फोमुश्का ने अपनी उसी मोटी उँगली से घोड़े के पैरों के पीछे सफेद जमीन पर बने चार अर्ध-वृत्ताकार निशानों को दिखाते हुए कहा, "बरफ पर घोड़े के पैर के निशान—ये तक चित्रकार ने बना दिये हैं!" पर वे निशान चार ही क्यों थे, और पीछे की तरफ क्यों एक भी न था, इस विषय में फोमुश्का चुप था।

"और आप समझिये कि यह मेरा ही चित्र है," उसने थोड़ा-सा रुक कर बड़ी विनीत मुस्कराहट के साथ कहा।

"क्या!" नेज़्दानौफ़ ने आश्चर्य के स्वर में कहा, "क्या आप शिकार भी करते थे?"

"हाँ करता था······पर बहुत दिनों तक नही। एक बार घोड़े ने मुझे सरपट भागते में गिरा दिया था, और मेरी 'कुरपी' में चोट लग गई, तो फीमुश्का डर गई,····और तब से वह मुझे जाने नहीं देती। मैंने भी फिर बिल्कुल ही छोड़ दिया।"

"कहाँ चोट लग गई थी?" नेज़्दानौफ़ ने पूछा।

"कुरपी मे" फोमुश्का ने अपनी आवाज़ कुछ मद्धम करते हुए दोहराया।

उसके मेहमान सब एक दूसरे की ओर देखने लगे। कोई न जानता था कि 'कुरपी' यह क्या बला है। मार्केलौफ़ जानता था कि कज्ज़ाकों की टोपी पर एक हिलती-डुलती झालर को 'कुरपी' कहा करते हैं, पर

निस्संदेह फोमुश्का ने उसे तो घायल किया न होगा! पर उससे यह पूछना कि उस शब्द का क्या अर्थ था, इसके लिए कोई तैयार न हो सका।

"अच्छा, अब तुम बहुत दिखा चुके," एकाएक फीमुश्का ने कहा, "अब कुछ मै भी दिखाऊँगी।"

छोटे-छोटे टेढ़े पैरों वाली एक पुराने जमाने की मेज़ में से, जिसका गोलाकार ढक्कन पीछे की ओर उल्टा हुआ था, उसने एक पीतल के अंडाकार चौखटे में जड़ा एक चित्र निकाला। उसमें चार बरस की एक बिल्कुल नंगी बच्ची की तस्वीर थी, जिसकी पीठ पर एक तरकश बँधा था और छाती पर एक नीला फीता, और वह अपनी छोटी अंगुली से तीर की नोक की जाँच कर रही थी। बच्ची के बाल घुँघराले थे और वह मुस्करा रही थी, उसकी आँखें हलकी सी भेड़ी थीं। फीमुश्का ने वह नन्हा-सा चित्र सब अतिथियों को दिखाया और बोली—

"यह मै थी!"

"आप?"

"हाँ, मै। बचपन में। एक चित्रकार था, फ्रांसीसी; वह मेरे पिता से मिलने आया करता था। बड़ा बढ़िया चित्रकार था। उसीने मेरे पिता के जन्म-दिवस पर मेरा यह चित्र बनाया था और वह कितना बढ़िया फ्रांसीसी था! वह बाद में भी हम लोगों से मिलने आता था। अंदर आते ही वह अपने पैर को खुरचते-खुरचते झुककर अभिवादन करता, फिर पैर को हटा थोड़ा-सा झटका देकर आपका हाथ चूमता, और जब वापिस जाने लगता तो वह स्वयं अपनी उँगलियाँ चूमता और दायें-बायें, आगे-पीछे चारों तरफ झुककर अभिवादन करता। बहुत ही हँसमुख फ्रांसीसी था वह।"

सब लोगों ने चित्र की प्रशंसा की; पाकलिन ने कहा कि चेहरे मे कुछ-कुछ समानता भी है।

तब फोमुश्का ने आजकल के फ्रांसीसियों के बारे में बात करना

शुरू कर दिया, और यह राय ज़ाहिर की कि वे सब बहुत ही दुष्ट होंगे।

"ऐसा क्यों फोमा लावरेन्त्येविच ?"

"क्यों, देखिए उनके नाम ही अब कैसे होने लगे हैं।"

"कैसे ?"

"क्यों, जैसे नोज़ान-त्सेन्त-लोरान (नोजाँ साँ लोराँ) बिल्कुल लुटेरों का सा नाम है।"

इसी सिलसिले में फोमुश्का ने पूछा कि "आजकल पेरिस में राजा कौन है ?"

उन्होंने कहा, "नेपोलियन" तो लगा कि इस बात से उसे आश्चर्य भी हुआ और दुख भी।

"ऐसा क्यों ?"

"क्यों, अब वह कितना बूढ़ा हो गया होगा," उसने शुरू किया और फिर चारों ओर कुछ परेशानी से देखता हुआ चुप हो गया।

फोमुश्का को फ्रेंच भाषा बहुत ही कम आती थी और वाल्तेयर को वह अनुवाद में पढ़ा करता था (अपने बिस्तर के सिरहाने के नीचे एक गुप्त बक्स में उसने 'काँदीद' के हस्तलिखित अनुवाद की प्रति रख छोड़ी थी), पर वह बीच-बीच में ऐसे वाक्यांश इस्तेमाल कर बैठता जैसे, "यह तो, महाशय जी, फाँसे पारक्वे हैं ('संदिग्ध' या 'असत्य' के अर्थ में) जिस पर बहुत से लोग हँसा करते थे। बाद में एक विद्वान् फ्रांसीसी ने बताया यह एक पुराना विधान-सभाई वाक्य था जो उसके देश में सन् १७८६ से पहले बोला जाता था।

यह देखकर कि बातचीत फ्रांस, और फ्रेंच भाषा के बारे में होने लगी है, फोमुश्का ने एक चीज़ के बारे में जानने की हिम्मत कर डाली जो उसके दिमाग को बहुत परेशान किये हुए थी। उसने पहले तो सोचा कि मार्केलौफ़ से पूछे, पर वह बहुत बदमिज़ाज़ जान पड़ा, वह सालोमिन से भी पूछ सकती थी···पर नहीं। उसने सोचा, "बहुत ही

सीधा सा आदमी हैं, वह फ्रेंच अवश्य ही नहीं जानता होगा" इसलिए उसने नेज़्दानौफ़ से ही पूछा।

"एक चीज़ है महाशय जी, जो मै आप से जानना चाहती हूँ," उसने शुरू किया, "क्षमा कीजिए। मेरे चचेरे भाई सीला सामसोनिच आप जानिए, मुझ जैसी बुढिया का और मेरी पुराने फैशन की अज्ञानता की हँसी उड़ाते रहते हैं।"

"वह कैसे?"

"क्यों, अगर कोई फ्रेंच बोली में यह प्रश्न पूछना चाहे कि 'क्या बात है?' तो क्या उसे कहना चाहिए, 'के-से-के-से-के-से-ला'?"

"हाँ।"

"और क्या 'के-से-के-से-ला' भी कहा जा सकता है?"

"हाँ, कहा जा सकता है।"

"और सिर्फ, 'के-से-ला'?"

"हाँ, वह भी हो सकता है।"

"मतलब सबका एक ही होगा?"

"हाँ।"

फीमुश्का गंभीरतापूर्वक सोचने लगी, और फिर अपने हाथ ऊपर उठा दिये।

"अच्छा सिलूश्का" उसने आखिरकार कहा, "मैं गलत थी, और तुम सही थे। पर ये फ्रांसीसी लोग! बेचारे!"

पाकलिन उन लोगों से कोई छोटी-सी गीत-कथा गाकर सुनाने का अनुरोध करने लगा। ·········वे दोनों हँसने लगे और आश्चर्य प्रकट करने लगे कि ऐसी बात उसके दिमाग में ही कैसे आई? किन्तु जल्दी ही वे राज़ी हो गये, पर केवल एक शर्त पर कि स्नान्दूलिया प्यानो पर बैठे और उनके साथ बजाये, उसे कोई कठिनाई न होगी। ड्राइंग रूम के एक कोने में एक छोटा-सा प्यानो निकल पड़ा जिस पर शुरू में किसी की भी दृष्टि न गई थी। स्नान्दूलिया उस पर जा बैठी और कुछ स्वर

छेड़े······ऐसे दन्तहीन, तीखे, सूखे हुए और ऊटपटाँग स्वर नेज़्दानौफ़ ने अपने जीवन में पहले कभी न सुने थे, पर वे दोनों तुरन्त ही गाने लगे। एक छन्द फोमुश्का गाता, दूसरा फीमुश्का और बाद में दोनों मिलकर गाने लगते।

एक छन्द समाप्त होते ही पाकलिन ने ज़ोर से कहा, "शाबाश ! यह तो पहला छन्द हुआ, अब दूसरा भी हो जाय।"

"अवश्य," फोमुश्का ने उत्तर दिया, "बस, स्नान्दूलिया सामसोनोव्ना कम्पन का क्या हुआ? मेरे गाने के बाद काँपता हुआ सा स्वर निकलना चाहिए।"

"अवश्य," स्नान्दूलिया ने उत्तर दिया, "इस बार अवश्य स्वर काँपेगा।"

फोमुश्का ने फिर शुरू कर दिया। एक कड़ी के बाद फीमुश्का ने एक कड़ी गाई और फिर टेक फोमुश्का ने पकड ली और वह स्नान्दूलिया को स्वर कँपाने का अवकाश देने के लिए तनिक थम गया। स्वर कँपाने के बाद फोमुश्का ने टेक फिर दोहराई और फिर दोनों मिलकर गाने लगे। अन्त में एक बार और स्वर कँपाने के बाद गाना समाप्त हुआ।

"बहुत अच्छे ! बहुत अच्छे !" सबने चिल्लाकर कहा और मार्के-लौफ के सिवाय सबने तालियाँ भी बजाईं।

"क्या इन लोगों को महसूस होता होगा," प्रशंसा समाप्त होते ही नेज़्दानौफ़ सोचने लगा, "ये लोग एक तरह के विदूषकों की भाँति व्यवहार कर रहे हैं। शायद नहीं होता, या होता अवश्य है पर वे सोचते हैं, 'हर्ज ही क्या है ? किसी की बुराई नहीं है, बल्कि वास्तव में दूसरों का मनोरञ्जन ही होता है।' और यदि ठीक से इस बात पर गौर किया जाय तो इन लोगों का सोचना ठीक है, हज़ार बार ठीक है।"

इन्हीं विचारों के वशीभूत होकर नेज़्दानौफ़ अचानक उनकी प्रशंसा करने लगा, जिसके उत्तर में उन्होंने कुर्सी से उठे बिना ही हल्का-सा झुककर अभिवादन किया······पर उसी समय बगल के कमरे से, जो

शायद सोने का कमरा या नौकरानियों का कमरा होगा, बूढ़ी नर्स वैसिल्येव्ना के साथ बौनी पुफ्का आ पहुँची। पुफ्का चीखने-चिल्लाने और अपना तमाशा दिखाने लगी और नर्स एक मिनट तो उसे चुप करती और दूसरे मिनट उसे फिर उकसा देती।

मार्केलौफ़ के चेहरे से बड़ी देर से अधीरता के चिह्न प्रगट हो रहे थे (जहाँ तक सालोमिन का प्रश्न है उसने और भी अधिक चौड़ी मुस्कराहट धारण कर रखी थी), अब वह एकाएक फोमुश्का पर ज़ोर से बरस पड़ा।

"मैं नहीं समझता था कि आप," उसने अपने झटके वाले ढंग से शुरू किया, "जैसे शिक्षित बुद्धि वाले व्यक्ति भी ऐसी चीज़ से मनोरंजन करते होंगे, जो दया का विषय होना चाहिए—मेरा मतलब है शारीरिक कुरूपता।" तभी उसे पाकलिन की बहन की याद आ गई और उसे लगा कि अपनी जीभ काट ले। फोमुश्का का चेहरा लाल हो गया, उसने बुदबुदाकर इतना कहा, "क्यों—क्यों—मैंने नहीं······वह खुद अपने आप—।"

पर पुफ्का करीब-करीब मार्केलौफ़ के ऊपर चढ़ बैठी।

"यह तुम्हारी कैसे हिम्मत हुई," उसने अपनी तुतलाती हुई आवाज में चीखकर कहा, "कि हमारे मालिक का अपमान करो ? वे लोग मेरी जैसी गरीब अभागी की रक्षा करते हैं, मुझे खाने-पहनने को देते हैं, रहने को जगह देते हैं और तुम्हें वह भी बुरा लगता है। तुम्हें शायद दूसरे की अच्छी तकदीर देखकर जलन होती है। कहाँ की पैदाइश है तुम्हारी, काले-कलूटे निकम्मे कहीं के, कीड़े की-सी मूँछ वाला ?" यहाँ पुफ्का ने अपनी मोटी-सी छोटी उँगली से दिखा दिया कि उसकी मूँछें किस प्रकार की हैं। वैसिल्येव्ना के दाँत रहित जबड़े हँसी से हिल रहे थे और उसकी हँसी की प्रतिध्वनि दूसरे कमरे से भी आ रही थी।"

"अवश्य ही मैं आपके बारे में कोई निर्णय देने की हिम्मत तो नहीं

करता," मार्केलौफ ने फोमुश्का से कहा, "गरीबों और अपाहिजों की रक्षा करना तो अच्छी बात है। पर मुझे यह कहने की आज्ञा दीजिए कि विलासिता में जीवन बिताना चाहे दूसरों को सताये बिना ही आराम और खुशहाली में डूबे रहना, और अपने दूसरे भाइयों की सहायता के लिए उँगली भी न उठाना, कोई बड़ी भलाई की बात नहीं है। कम-से-कम मैं तो ऐसी भलाई की कोई कीमत नहीं समझता।"

यहाँ पुफ्का ऐसी जोर से चीखी कि कान बहरे होने की नौबत आ गई। मार्केलौफ़ की बात का एक शब्द भी उसकी समझ में न आया था, पर काला-कलूटा आदमी डाँट रहा था·······यह उसकी कैसे हिम्मत हुई। कैसिल्येव्ना ने भी कुछ अस्पष्ट सा बुदबुदा कर कहा। फोमुश्का ने अपने छोटे से हाथ छाती पर मोड़ लिये और अपनी पत्नी की ओर मुड़ते हुये वह करीब-करीब सिसकते हुए कहने लगा, "फीमुश्का, प्रिये, सुना तुमने कि यह सज्जन क्या कह रहे हैं ? तुम और मैं पापी हैं, दुर्जन हैं, शैतान हैं······भोग-विलास में डूबे हुए हैं, ओह ! ओह ! ······हमें सड़क पर निकाल बाहर किया जाना चाहिए·········और अपनी आजीविका पैदा करने के लिए हाथ में एक झाड़ू पकड़ा दी जानी चाहिए। ओहो ! हो !" इन शोक भरे शब्दों को सुनकर पुफ्का और भी जोर-जोर से रोने लगी। फीमुश्का की आँखें सिकुड़ गईं, उसके मुख के कोने लटक गये, उसने अपने भावों को पूरी तरह प्रगट करने के लिए एक गहरी-सी साँस ली।

पता नहीं कि इस सबका अन्त क्या होता, पर तभी पाकलिन ने बात सँभाली।

"अरे इस सबका क्या मतलब है ? ईमान से," उसने हाथ हिलाते हुए और ज़ोर से हँसते हुए कहा, "आप लोगों को शायद लज्जा नहीं आ रही है। मि० मार्केलौफ़ ने तो ज़रा सा मज़ाक किया था, पर उनका चेहरा ऐसा गम्भीर है कि बात ज़रा ज्यादा डरावनी लगी और आप सब उसके चक्कर में आ गए। बस-बस बहुत हुआ। ऐवफीमिया

पावलोवना, तुम तो कितनी प्यारी हो, हम लोगों को बस एक मिनट में जाना ही है, इसलिए जानती हो ? जाने के पहले तुम हमारा सबका भाग्य बता दो······उसमें तुम बहुत होशियार हो। बहन! ताश तो ले आओ।"

फीमुश्का ने अपने पति की ओर देखा; वह अब सम्पूर्ण रूप से आश्वस्त भाव से बैठा का; वह भी आश्वस्त हो गई।

"ताश," उसने कहा; "पर महाशय जी, मैं तो बिल्कुल भूल गई हूँ, बहुत दिन हो गये उन्हें छुआ तक नहीं है।"

पर अपने आप ही उसने स्नान्दूलिया के हाथ से पुराने, विचित्र किस्म के ओम्ब्र खेल के ताशों की गड्डी ले ली।

"किसका भाग्य बताऊँ ?"

"ओह, हर एक का।" पाकलिन ने कहा; पर मन-ही-मन वह सोचने लगा, "कैसी है बुढ़िया। चाहो जिधर घुमा दो······बड़ी सीधी है।" उसने ज़ोर से कहा, "हर एक का, हर एक का; हमारा भाग्य, हमारा चरित्र, हमारा भविष्य······सब चीजें बताओ !"

फीमुश्का ताशों को फेंटने लगी, पर एकाएक उसने सारी गड्डी फेंक दी।

"इन ताशों की कोई खास ज़रूरत नहीं है !" वह कहने लगी; "मैं हर एक का चरित्र उसके बिना ही जान गई हूँ। और जैसा चरित्र होता है, वैसा ही भाग्य होता है। वह देखो" (उसने सालोमिन की ओर इशारा किया) "वह शान्त आदमी है, स्थिर; और वह," (मार्केलौफ़ की ओर उसने उँगली उठाई) "गरम, खतरनाक आदमी है···" (पुफ्का ने उसकी ओर जीभ चिढा दी); "और जहाँ तक तुम्हारा सवाल है," (उसने पाकलिन की ओर देखा), "तुम्हें बताने की कोई ज़रूरत ही नहीं है, तुम खुद ही जानते हो कि तुम लुढ़कना लोटा हो ! और ये सज्जन," (उसने नेज्दानौफ़ की ओर संकेत किया और कुछ झिझक गई)।

"क्या बात है ?" उसने कहा; "कृपा करके मुझे भी बताइये कि मै कैसा आदमी हूँ ?"

"कैसे आदमी हैं आप ?......" फीमुश्का ने धीरे से कहा, "आपके ऊपर तरस आता है, बस।"

नेज़्दानौफ़ काँप उठा।

"तरस आता है ? ऐसा क्यों ?"

"ओह ! आप पर बस तरस आता है।"

"पर आखिर क्यों ?"

"ओह, कारण है ! मेरी आँख मुझे बता रही है। आप सोचते हैं मैं मूर्ख हूँ ? ओह, आपके लाल बालों के बावजूद मैं तुमसे ज्यादा होशियार हूँ...तुम पर बस मुझे तरस आता है...तुम्हारा भाग्य यही है।"

सब लोग चुप थे...उन्होंने एक दूसरे की ओर ताका, और फिर भी चुप रहे।

"अच्छा तो फिर नमस्कार, मित्रो," पाकलिन ने ज़ोर से कहा, "शायद हम लोग बहुत देर तक ठहर गए हैं और आपको थका दिया है। अब इन लोगों का भी चलने का समय आ गया है...मैं उन्हें रास्ते तक पहुँचा आऊँगा। नमस्कार; आपके कृपापूर्ण स्वागत के लिए धन्यवाद।"

"नमस्कार, नमस्कार, फिर आइयेगा, तकल्लुफ़ न कीजियेगा," फोमुश्का और फीमुश्का ने एक स्वर से कहा....फिर फोमुश्का ने एकाएक मानो किसी गीत की टेक गुनगुनाते हुए कहा :

"आप लोग बहुत-बहुत दिन जियें।"

"बहुत-बहुत दिन," दरवाज़ा खोलते हुए कालिओपिच ने एकदम अप्रत्याशित रूप से भारी आवाज़ में कहा।

और वे चारों एकाएक उस छोटे-मोटे से मकान के आगे सड़क पर निकल आए; खिड़की के ऊपर उन्हें पुफ्का की हकलाती आवाज़ सुनाई पड़ रही थी, "मूर्ख..." वह चीखी, "मूर्ख !..."

पाकलिन जोर से हँसा; पर किसी ने उसका साथ नहीं दिया। मार्केलौफ़ ने हर एक की ओर बारी-बारी से देखा मानो वह क्षोभ का कोई शब्द सुनने की आशा कर रहा हो।···

केवल सालोमिन अपने चिरपरिचित ढंग से मुस्कराता रहा।

बीस

"अच्छा अब तक," पाकलिन ने ही पहले शुरू किया, "हम लोग अठारहवीं शताब्दी में थे; अब सरपट बीसवीं शताब्दी में ले चलिये··· गोलुश्किन इतना आगे बढ़ा हुआ व्यक्ति है कि उसे उन्नीसवीं शताब्दी में मानने से काम नहीं चल सकता।"

"क्यों, तुम क्या उसे जानते हो?"

"सारी दुनिया में उसकी कीर्ति की पताका फहरा रही है; और मैंने कहा, 'ले चलिये,' क्योंकि मै भी आप लोगों के साथ चलने वाला हूँ।"

"यह कैसे? क्यों, तुम तो उसे जानते नहीं हो, जानते हो?"

"छोड़ो भी! क्या तुम मेरे तोतों को जानते थे?"

"पर तो तुमने हमारा परिचय करा दिया था।"

"तो अब तुम मेरा परिचय करा देना। तुम्हारी ऐसी कोई बात नहीं हो सकती जो मुझसे छिपानी ज़रूरी हो, और गोलुश्किन तो खुले दिल का आदमी है ही। तुम देखोगे कि वह एक नए आदमी से मिलकर खुश होगा और यहाँ स—में लोग तकल्लुफ़ ज़्यादा नहीं करते।"

"हाँ", मार्केलौफ़ बड़बड़ाया, "अवश्य लोग यहाँ बहुत बेतकल्लुफ़

नजर आते हैं।"

पाकलिन ने सिर हिलाया।

"यह शायद मेरे लिए है···यही सही ! मै इस भर्त्सना के योग्य भी हूँ। पर मै कहता हूँ, मेरे नए मित्र, कि आपका चिड़चिड़ा मिज़ाज जिन शोकपूर्ण विचारों को आपके भीतर उत्पन्न करता है, उन्हें कुछ देर के लिए टाल रखिये ! और सबसे अधिक—"

"और आप श्रीमान्, मेरे नये मित्र", मार्केलौफ ने ज़ोर से बात काटते हुए कहा, "एक बात मै आपसे···चेतावनी के तौर पर कह देना चाहता हूँ। मुझे हँसी-मज़ाक का तनिक भी शौक कभी नहीं रहता, और आज तो ख़ास तौर पर नहीं है ! और आप क्या जानते हैं मेरे मिजाज़ के बारे में ? मुझे लगता है कि हम लोग बहुत दिनों से—कि हम लोगो की आज पहली बार ही मुलाकात हुई है।"

"ठहरिये, ठहरिये, नाराज़ मत होइये, और सौगध मत खाइये। मै उसके बिना भी आपकी बात का यक़ीन करता हूँ", पाकलिन ने कहा, और फिर सालोमिन की ओर उन्मुख होते हुए वह बोला, "ओह, आप, आप जिसे स्वयं तीक्ष्ण दृष्टि वाली फीमुश्का ने एक शात व्यक्ति बताया था—और निस्संदेह आप मे अवश्य ही कोई ताज़गी देने वाली चीज़ है—आप ही बताइये, क्या मेरा किसी के भी साथ कोई अप्रिय व्यवहार करने का, या बेमौके मज़ाक करने का तनिक भी इरादा था ? मैंने तो बस आप लोगों के साथ गोलुश्किन के यहाँ जाने भर का प्रस्ताव किया था; इसके अतिरिक्त मै तो हूँ ही बड़ा सीधा-सादा आदमी। यह मेरा दोष नहीं है कि मि० मार्केलौफ़ का चेहरा चिड़चिड़ा लगता है।"

सालोमिन ने पहले एक कंधा झकझोरा और फिर दूसरा; जब भी वह तुरंत कोई उत्तर न दे पाता था तब वह यही करने लगता था।

"इसमे कोई सदेह नहीं है", उसने आख़िरकार कहा, "आप किसी की कोई बुराई नहीं कर सकते, मि० पाकलिन, और न आप करना चाहते ही हैं; और क्यों न आप भी चलें गोलुश्किन के यहाँ ? मेरा

ख्याल है कि हमारा वहाँ भी समय उतना ही अच्छा कटेगा जितना आपके रिश्तेदारों के यहाँ कटा, और ठीक उतना ही उपयोगी भी।"

पाकलिन ने अपनी उँगली उसके ऊपर हिलाई।

"ओह! देखता हूँ आप भी चिढ़कर ही कह रहे हैं! पर आप स्वयं भी गोलुश्किन के यहाँ जा रहे हैं, जा रहे हैं न ?"

"निस्संदेह, मै जा रहा हूँ। आज का दिन तो अब खराब हो ही चुका है।"

"अच्छी बात है, तो फिर सीधे चल पड़िये बीसवीं शताब्दी को! बीसवीं शताब्दी को! नेज़्दानौफ़, तुम तो आगे बढ़े हुए आदमी हो, चलो रास्ता दिखाओ।"

"अच्छा ठीक है, चलो; बस एक ही मज़ाक को बार-बार मत दोहराओ, जिससे कहीं हम लोग यह न समझने लगें कि तुम्हारा खज़ाना ख़त्म हो चला है।"

"नहीं आपकी सेवा में अभी बहुत हाज़िर हैं", पाकलिन ने उत्तर दिया, और कहते-कहते वह जल्दी-जल्दी उछलता-कूदता नहीं, बल्कि लँगड़ाता-कूदता हुआ चलने लगा।

"मज़ेदार आदमी है, बहुत ही," सालोमिन ने उसके पीछे-पीछे नेज़्दानौफ़ के हाथ में हाथ डाले चलते-चलते कहा; यदि—भगवान् न करे ऐसा हो—हम सब लोगों को साइबेरिया जाना पड़ा, तो कोई एक मन बहलाने वाला तो रहेगा।"

मार्केलौफ़ सब के पीछे चुपचाप चल रहा था।

उधर गोलुश्किन के मकान पर एक बढ़िया दावत के लिए पूरी-पूरी तैयारी की जा रही थी। बहुत ही चिकना और बहुत ही बुरे स्वाद का मछली का शोरबा बनाया गया था, बहुत से फ्रांसीसी व्यंजन भी थे (योरपीय संस्कृति के शिखर पर होने के कारण, पुराने सम्प्रदाय का होते हुए भी, फ्रांसीसी भोजन का पक्षपाती था, और उसने एक क्लब के रसोइये को नौकर रख लिया था, जिसे गंदगी के कारण

निकाल दिया गया था); और सबसे बड़ी चीज़ यह थी कि बहुत-सी बोतलें शैम्पेन की निकालकर बरफ में दबा दी गई थीं।

स्वयं आतिथेय ने नौजवानों का अपने विशेष तौर-तरीकों से जल्दी-जल्दी और बहुत हँसी के साथ, स्वागत किया। जैसी पाकलिन ने भविष्यवाणी की थी, वह पाकलिन को देखकर बड़ा प्रसन्न हुआ। वह उसके बारे में पूछने लगा, "हम लोगों के ही आदमी हैं न ?" और उत्तर का इन्तजार किये बिना ही चीखकर बोला, "निस्सन्देह सो तो होगा ही।" फिर उसने उन्हें बताया कि वह अभी-अभी उस चिड़िया गवर्नर से मिलकर आया है, जो सदा उसे किसी-न-किसी—भगवान् जाने कौनसी !—परोपकारी संस्था के लिए तंग करता रहता है।··· और यह बताना एकदम असंभव था कि गोलुश्किन गवर्नर के यहाँ जाने के कारण अधिक प्रसन्न था या इन नौजवानों के आगे उसे गाली सुना सकने के कारण। तब उसने उनका परिचय उस नये रंगरूट से कराया जिसका उसने वायदा किया था। और यह रंगरूट और काई नहीं वहा लोमड़ी के से चिकने चेहरे वाला दुबला-पतला आदमी था जो सवेरे संदेशा लेकर आया था और जिसे गोलुश्किन ने अपना क्लर्क वास्या बताया था। "बातचीत यह अधिक नहीं करते," गोलुश्किन ने उसकी ओर पाँचों उँगलियों से एक साथ दिखाते हुए कहा, "पर हमारे आन्दोलन के लिए दिलोजान से काम करने को तैयार हैं।" वास्या केवल इतनी सफ़ाई से झुकता, लज्जा से लाल होता, आँखें मिचमिचाता और बनावटी हँसी हँसता रहा कि इस विषय में भी यह कहना असंभव था कि वह फूहड़ बेवकूफ़ था या पक्का बदमाश और गुंडा था।

"अब भोजन के लिए चलिये, सज्जनो, भोजन के लिए।"

बगल की मेज़ पर रखी भूख बढ़ाने वाली चीज़ों को आज़ादी से चखने के बाद वे लोग मेज़ पर आकर बैठ गये। शोरबे के बाद तुरन्त ही गोलुश्किन ने शैम्पेन लाने का आदेश दिया। जमे हुए पत्तरों और ढेलों में वह बोतल की गरदन से गिलासों में गिरने लगी। "अपने···

अपने कारबार के लिए।" गोलुश्किन ने ज़ोर से कहा और नौकरों की ओर आँख दबाकर सिर हिलाया मानो उन्हें समझा रहा हो कि बाहर के लोगों की उपस्थिति मे होशियार रहें। रंगरूट वास्या अब भी चुप था; वह अपनी कुरसी के एकदम किनारे पर बैठा था, और आमतौर पर ऐसे खुशामदी ढंग से व्यवहार कर रहा था जो उन सिद्धान्तों से तनिक भी मेल न खाता था जिनके लिए, अपने स्वामी के शब्दों मे, वह दिलोजान लगा देना चाहता था; तो भी वह शराब को बड़ी निराशा-भरी व्यग्रता के साथ चढ़ाये जा रहा था।........किन्तु दूसरे लोग बातचीत भी कर रहे थे; यानी उनका आतिथेय बात करता था—और पाकलिन, विशेषकर पाकलिन। नेज़्दानौफ़ भीतर-ही-भीतर चिड़ रहा था; मार्केलौफ़ क्षुब्ध और क्रुद्ध था, ठीक वैसा ही क्षुब्ध, यद्यपि भिन्न प्रकार से, जैसा सुबोत्वैफ़ के यहाँ था; सालोमिन तीक्ष्ण दृष्टि से देख रहा था।

पाकलिन बहुत खुश था। उसकी चतुराई भरी बातचीत से गोलुश्किन बहुत प्रसन्न था, और उसे तनिक भी सन्देह न था कि वह 'छोटा-सा लंगड़ा आदमी' नेज़्दानौफ़ के कान मे, जो उसके पास ही बैठा था, गोलुश्किन के बारे मे बड़ी ही बेरहमी की बातें कहता जा रहा है। वह निश्चित रूप से यह सोच रहा था पाकलिन थोड़ा-सा बुद्धू है जिसकी थोड़ी-सी सरपरस्ती की जा सकती है.......और एक यह भी कारण था कि वह उसे पसन्द आया था। यदि पाकलिन उसके पास बैठा होता तो वह उसके पेट में गुदगुदी मचाता या कधे पर थप्पड़ मारता; पर मौजूदा हालत में वह मेज़ की दूसरी ओर से उसकी तरफ़ आँखें मिचका रहा था और सिर हिला रहा था। पर उसके और नेज्दानौफ़ के बीच तूफ़ान के बादलों की भाँति मार्केलौफ़ बैठा था और उसके बाद सालोमिन। किन्तु गोलुश्किन पाकलिन के मुँह से निकलने वाले प्रत्येक शब्द पर ज़ोर से हँसता जाता था, बल्कि कभी-कभी तो भरोसा करके पेशगी ही हँस पड़ता, अपने पेट को पीटता और अपने

नीले मसूड़ों को दिखा देता। पाकलिन शीघ्र ही समझ गया कि उससे किस चीज़ की माँग है, और उसने हर चीज़ को गाली देना शुरू कर दिया। (यह काम था भी उसके स्वभाव के अनुकूल)—हर चीज़ को और हर व्यक्ति को; कट्टरपंथियों को, उदारपंथियों को, अफ़सरों को, बैरिस्टरों को, न्यायाधीशों को, जमींदारों को, ज़िला परिषदों को, स्थानीय सभाओं को, मास्को को और पीटर्सबर्ग को।

"हाँ, हाँ, हाँ, हाँ," गोलुश्किन कहता, "निस्सन्देह, निस्सन्देह! उदाहरण के लिए हमारे यहाँ का मेयर पक्का गधा है। बिल्कुल काठ का उल्लू। मैं उससे एक बात कहूँ चाहे दूसरी······पर उसकी समझ में एक शब्द नहीं आता; वह हमारे गवर्नर का ही भाई-बन्द है।"

"क्या आपका गवर्नर मूर्ख है?" पाकलिन ने पूछा।

"मैं आपसे कहता हूँ, वह गधा है!"

आपने कभी देखा कि वह मिनमिनाता है या गुर्राता है?"

"क्या?" गोलुश्किन ने कुछ भौचक्का होकर पूछा।

"क्यों, आप क्या नहीं जानते? रूस में हमारे बड़े-बड़े अफ़सर गुर्राते हैं; और बड़े फौजी अफ़सर नाक के रास्ते बात करते हैं; और केवल बहुत उच्च-पदस्थ लोग ही एक साथ मिनमिनाते भी हैं और गुर्राते भी हैं।"

गोलुश्किन बड़ी ज़ोर से हँसा, यहाँ तक कि उसकी आँखों से आँसू निकल आये।

"हाँ-हाँ," उसने कहा, "वह मिनमिनाता है·········फ़ौज का आदमी है!"

"ऊफ़, बूदम कहीं का!" पाकलिन मन-ही-मन सोच रहा था।

"हमारे यहाँ हर चीज़ सड़ गई है, चाहे जहाँ चले जाइये।" कुछ देर बाद गोलुश्किन ने कहा।

"हर चीज़ सड़ गई है, हर चीज़।"

"परम सम्माननीय कापीतन ऐन्द्रीइच," पाकलिन ने सहानुभूति के

स्वर में कहा—(उसने अभी-अभी नेज़्दानौफ़ से कान में कहा था, "वह अपनी बाहें इस तरह क्यों चलाता रहता है, मानो उसका कोट बाहों के सिरे पर बहुत तंग हो ?")—"परम सम्माननीय कापीतन ऐन्द्रीइच, यकीन कीजिए, आधा-परदा कोई कदम अब कारगर नहीं हो सकता।"

"आधा-परदा कदम !" गोलुश्किन ने अचानक हँसना बंद करके और बड़ी डरावनी मुद्रा धारण करते हुए चीखकर कहा, "अब तो केवल एक चीज़ है, जड़ से सब कुछ उखाड़ फेंकना ! वास्या, पियो, निकम्मे आदमी, पियो !"

"पी रहा हूँ, कापीतन ऐन्द्रीइच," क्लर्क ने ग्लास गले के नीचे उतारते हुए कहा।

गोलुश्किन ने भी एक ग्लास और चढ़ा लिया।

"क्यों, उसका पेट कैसे नहीं फटता ?" पाकलिन ने नेज़्दानौफ़ के कान में कहा।

"आदत पड़ जाती है !" नेज़्दानौफ़ ने उत्तर दिया।

पर केवल क्लर्क ही नहीं पी रहा था। धीरे-धीरे शराब सब के ऊपर असर कर रही थी। नेज़्दानौफ़, मार्केलौफ़, सालोमिन तक धीरे-धीरे बातचीत में हिस्सा लेने लगे।

पहले ता एक प्रकार की घृणा से प्रेरित होकर, कुछ न करने और अपने चरित्र के अनुकूल व्यवहार न कर सकने से एक प्रकार से झल्ला कर, नेज़्दानौफ़ यह कहता रहा कि केवल शब्दों से खेल करते रहने का समय बीत चुका है, 'कर्म' का समय आ पहुँचा है,—उसने 'तल में पहुँच जाने' का भी जिक्र किया। और फिर यह अनुभव किए बिना ही कि वह अपनी ही बात का विरोध कर रहा है, वह उनसे पूछने लगा कि वास्तव में किन लोगों के ऊपर भरोसा किया जा सकता है। उसने कहा कि स्वयं उसे तो कोई दिखाई नहीं पड़ता जिस पर सचमुच भरोसा किया जा सके। समाज में कोई हमदर्दी नहीं है, जनता में कोई समझ नहीं है।

स्वभावतः ही उसे कोई उत्तर न मिल सका, इसलिए नहीं कि कोई

उत्तर देने को न था, बल्कि इसलिए कि अब तक हर आदमी अपनी-अपनी ही बात कहने की अवस्था को पहुँच चुका था। मार्केलौफ़ अपनी निस्तेज क्रुद्ध आवाज़ में लगातार एक ही प्रकार की भनभन-सी करता रहा। (पाकलिन का कहना था, मानो करमकल्ला काट रहा हो)। ठीक किस विषय में वह बात कर रहा था, यह स्पष्ट न था; क्षणिक स्तब्धता में कभी-कभी 'तोप-सेना' शब्द सुनाई पड़ जाता था······वह शायद उसके संगठन की कमज़ोरियों का ज़िक्र कर रहा था। जर्मन और हवलदार भी बीच-बीच में आ जाते थे। सालोमिन ने भी कहा कि प्रतीक्षा करने के दो तरीके हैं : प्रतीक्षा करना और कुछ न करना, और प्रतीक्षा करने के साथ-साथ आगे बढ़े चलना।

"प्रगतिवादियों से हमें कोई लाभ नहीं," मार्केलौफ़ ने क्रुद्ध भाव से कहा।

"अभी तक प्रगतिवादी ऊपर से काम करते रहे हैं," सालोमिन ने कहा, "हम लोग नीचे करने का प्रयत्न करेंगे।"

"कोई लाभ नहीं है, कोई लाभ नहीं है इसमें !" गोलुश्किन ने ग़ुस्से में बात काटकर कहा, "हमें फ़ौरन कुछ कर डालना चाहिए, फ़ौरन।"

"यानी वास्तव में आप खिड़की में से कूद पड़ना चाहते हैं ?"

"मैं कूदूँगा !" गोलुश्किन ने चीख़-पुकार मचाते हुए कहा। "मैं कूदूँगा ! और वास्या भी कूदेगा। मैं कहूँगा तो वह ज़रूर कूद पड़ेगा ! ऐं वास्या, कूद पड़ोगे न ?"

क्लर्क ने शैम्पेन का एक और गिलास चढ़ा लिया।

"जहाँ आप ले चलेंगे, कापीतन ऐंद्रीइच, वहीं मैं चला चलूँगा। उसके बारे में मैं एक पल भर भी सोच-विचार नहीं करूँगा।"

"नहीं करो वही ठीक है। वरना मैं तुम्हारी गरदन मरोड़कर रख दूँगा।"

शीघ्र ही बाकायदा घमासान की स्थिति आ पहुँची। ज़ोरदार शोरगुल और चीख़-पुकार मच उठी।

शरद ऋतु की शान्त हलकी हवा में जल्दी-जल्दी उछलते और इधर-से-उधर गिरते हुए बरफ़ के पहले पत्तरों की भाँति गोलुश्किन के भोजन-गृह के गरम वातावरण में शब्द उड़ने, लड़खड़ाने, एक-दूसरे से टकराकर गिरने लगे—हर प्रकार के शब्द—प्रगति, सरकार, साहित्य, कर लगाने की समस्या, धार्मिक समस्या, नारी समस्या, अदालतों की समस्या, शास्त्रीयता, यथार्थवाद, शून्यवाद, साम्यवाद, अन्तर्राष्ट्रीय, धार्मिक, उदारपंथी, पूँजी, प्रशासन, संगठन, सम्पर्क, यहाँ तक कि प्रत्यक्षीकरण ! लगता था कि इस शोरगुल से गोलुश्किन को जोश आता जा रहा है, सब बातों का सार उसके लिए बस इसमें था···वह विजयी था। "यह आ पहुँचे हम लोग ! रास्ते से हट जाओ, नहीं तो मार डालूँगा। ······कापीतन गोलुश्किन आ रहा है।" अन्त में क्लर्क वास्या नशे में इतना धुत हो गया कि वह नाक सुड़सुड़ाने और अपनी प्लेट से बातें करने लगा और एकाएक उन्मत्त का भाँति चीख उठा, "इस शैतान प्रोजिम्नासियम का क्या मतलब है ?"

गोलुश्किन एकदम तुरन्त उठ खड़ा हुआ और अपने लाल चेहरे को, जिस पर भद्दे जंगलीपन और शेखी के साथ एक और भाव, छिपे हुए अंदेशे बल्कि घबराहट का भाव भी अजीब ढंग से मिला हुआ झलक आया था, पीछे की ओर झटका देते हुए चीख उठा, "मैं एक हज़ार और बलिदान कर दूँगा ! वास्या, निकालो फ़ौरन !" उत्तर में वास्या ने धीमी-सी आवाज़ में कहा, "अभी ला रहा है !"

पाकलिन पिछले आध घंटे से क्लर्क के साथ पीने की होड़ कर रहा था। उसका चेहरा पीला पड़ गया था और उस पर पसीने की बूँदें झलक आई थीं। वह भी एकाएक अपनी जगह से उछल पड़ा और दोनों हाथ अपने सिर के ऊपर उठाते हुए फटी-सी आवाज़ में चीखकर बोला, "बलिदान ! कहते हो बलिदान ! ओह, इस पवित्र शब्द की ऐसी दुर्गति ! बलिदान ! किसी में तुझ तक उठने की हिम्मत नहीं है, किसी में इतनी शक्ति नहीं है कि तेरे दिये हुए कर्त्तव्यों का पालन कर

सके, कम-से-कम यहाँ उपस्थित हम लोगों में से किसी में भी नहीं—और यह बेहूदा आदमी, यह पाजी पैसे वाला, अपनी फूली हुई थैली का रौब जताता है, मुट्ठी-भर रूबल फेंक कर बलिदान की बात करता है ! और कृतज्ञता की माँग करता है, विजय माला की आशा करता है—कमीना, गुण्डा !" गोलुश्किन ने या तो पाकलिन की बात सुनी नहीं या उसके शब्द उसकी समझ में न आये, क्योंकि उसने फिर एक बार ज़ोर से कहा, "हाँ ! एक हज़ार रूबल ! कापीतन ऐन्द्रिइच का वचन खाली नहीं जाता !" एकाएक उसने अपना हाथ बाल की जेब में ठूँस दिया। "यह रहा, यह है रुपया ! लो, उसे ले जाओ, और कापीतन की याद रखो !" उसकी उत्तेजना जैसे ही बढ़कर एक सीमा पर पहुँचती, वह छोटे बच्चे की भाँति, अपने बारे में अन्यपुरुष में बात करने लगता। नेज़्दानौफ़ ने शराब के दाग़ों से भरे कपड़े पर पड़े हुए नोट उठा लिये। क्योंकि इसके बाद ठहरने की कोई और ज़रूरत न बची थी, और देर काफ़ी हो ही चुकी थी, इसलिए वे सब उठ खड़े हुए, सबने अपनी-अपनी टोपियाँ उठाईं और बाहर निकल गये।

खुली हवा में पहुँचकर सब का, विशेषकर पाकलिन का, सिर चकराने लगा।

"तो फिर ? अब हम लोग कहाँ जा रहे हैं ?" उसने कुछ कठिनाई के साथ कहा।

"नहीं जानता तुम कहाँ जा रहे हो ?" सालोमिन ने उत्तर दिया; "मैं तो घर जा रहा हूँ।"

"अपने कारखाने को ?"

"हाँ।"

"इस समय आधी रात को, पैदल ?"

"इससे क्या हुआ ? यहाँ न ठग हैं न भेड़िये, और मै बिल्कुल ठीक हूँ और चल सकता हूँ। रात में चलने में तरी भी रहती है।"

"पर, भई, तीन मील का रास्ता है।"

"चार भी हो तो क्या ? अच्छा दोस्तो, नमस्कार !"

सालोमिन ने अपने कोट के बटन लगाये, अपनी टोपी माथे पर खींची, एक सिगार सुलगाया और लम्बे-लम्बे डग रखता हुआ चल दिया।

"और तुम कहाँ जा रहे हो ?" पाकलिन ने नेज़दानौफ़ की ओर मुड़ते हुए पूछा।

"मैं उसके घर जा रहा हूँ," उसने मार्केलौफ़ की ओर इशारा किया, जो प्रतिमा की तरह शांत, निश्चल, छाती पर हाथ मोड़े, खड़ा हुआ था। "हमारे पास घोड़े और गाड़ी मौजूद हैं।"

"ओह, बहुत बढ़िया···और मैं, दोस्त, जा रहा हूँ रेगिस्तान की हरियाली में, फोमुश्का और फीमुश्का के पास। और जानते हो, मित्र, मैं तुम्हें क्या सलाह देना चाहता हूँ ? वहाँ भी पागलपन है और यहाँ भी पागलपन है,···किन्तु वह पागलपन, अठारहवीं शताब्दी का पागलपन, बीसवीं शताब्दी की अपेक्षा रूस की आत्मा के कहीं अधिक समीप है। अच्छा सज्जनो, नमस्कार; मैं पिये हुए हूँ, मुझसे नाराज़ मत होइयेगा। केवल एक बात मैं कहना चाहता हूँ ! मेरी बहन स्नान्दूलिया से अधिक सहृदय और अच्छी स्त्री दुनिया में मिलना कठिन है, पर देखिये कि वह कुबड़ी है और उसका नाम है स्नान्दूलिया ! इस दुनिया में सदा ऐसा ही होता है। हालाँकि यह ठीक ही है कि उसका नाम यह हो। आप जानते हैं संत स्नान्दूलिया कौन थी ? एक धर्मात्मा स्त्री जो जेलखानों में जाया करती थी और कैदियों तथा बीमारों के घावों की दवा किया करती थी। अच्छा, नमस्कार ! नमस्कार, अलैक्सी—वह आदमी जिस पर तरस आना चाहिए। और तुम अपने-आपको अफ़सर कहते हो···उँह। मानवद्रोही कहीं के ! नमस्कार।"

वह इधर से उधर लँगड़ाता-लँगड़ाता अपनी रेगिस्तानी हरियाली की ओर बढ़ गया। मार्केलौफ़ और नेज़दानौफ़ ने भी वह स्थान ढूँढ लिया जहाँ उन्होंने अपनी गाड़ी छोड़ी थी, गाड़ी जोतने का हुक्म दे दिया गया और आधे घंटे बाद वे दोनों बड़ी सड़क पर बढ़े चले जा रहे थे।

इक्कीस

आसमान नीचे-नीचे बादलों से लदा हुआ था। और यद्यपि अँधेरा एकदम घुप्प नहीं था, और सामने सड़क पर गाड़ी के पहियों के निशान दीख रहे थे, तो भी दायें-बायें हर चीज़ छाया में छिपी हुई थी, और अलग-अलग चीजों की आकृतियाँ अँधेरे के बड़े-बड़े धब्बों में मिलकर एकाकार हो जाती थीं। धुँधली और दगाबाज़ रात थी; हवा के सीलन भरे झोंके-से लग रहे थे और उसके साथ मेंह की और अनाज के फैले हुए खेतों की सुगन्ध आ रही थी। जब वे लोग उस बाँज की झाड़ी के पास पहुँचे जो एक निशान का काम करती थी और जहाँ से एक छोटी सड़क पर मुड़ना पड़ता था, तो गाड़ी चलाना और भी कठिन हो गया; पतला-सा रास्ता बीच-बीच एकदम गायब हो जाता था··· कोचवान और भी धीरे-धीरे हाँकने लगा था।

"कहीं रास्ता न भूल जायें," नेज़्दानौफ़ ने कहा; अभी तक वह एकदम चुप बैठा था।

"नहीं; रास्ता नहीं भूलेंगे।" मार्केलौफ़ ने उत्तर दिया। "एक दिन में दो दुर्घटनाएँ नहीं हुआ करतीं।"

"क्यों, पहली दुर्घटना कौन-सी थी ?"

"क्या ? अरे, हमने बेकार एक दिन बर्बाद कर दिया—यह कोई बात नहीं हुई ?"

"हाँ···यह तो है···वह शैतान गोलुश्किन। हम लोगों को इतनी शराब नहीं पीनी चाहिये थी। अब मेरा सिर दर्द कर रहा है···बुरी तरह से।"

"मै गोलुश्किन की बात नहीं कह रहा था। उसने कम-से-कम कुछ रुपया तो हमें दिया ही, हमारे जाने का कम-से-कम इतना तो फ़ायदा हुआ ही है।"

"अवश्य ही तुम्हें पाकलिन के हमें वहाँ ले जाने का अफ़सोस नहीं है···क्या कहता था वह, तोतों के पास ?"

"इसमे अफ़सोस की कोई बात नहीं है···और न खुशी मनाने की ही बात है। मै उन लोगों में नहीं हूँ जो ऐसी छोटी-छोटी चीजों में दिलचस्पी लेते है···मै उस दुर्घटना की बात नहीं कर रहा था।"

"तो फिर कौन सी ?"

मार्केलौफ़ ने कोई उत्तर नहीं दिया, वह केवल अपने कोने में थोड़ा सा मुड़ा, मानो अपने आपको लपेटे ले रहा हो। नेज़्दानौफ़ को उसका चेहरा ठीक से दिखाई नहीं पड़ रहा था, केवल उसकी मूँछें काली रेखा में खड़ी दिखाई पड़ रही थीं; पर सवेरे से ही उसे लग रहा था कि मार्केलौफ़ के मन में कोई ऐसी चीज़ है जिसे नहीं छूना ही अच्छा है—कोई अस्पष्ट, छिपी हुई झल्लाहट।

"बताओ मुझे सर्जी मिहालोविच," उसने देर तक चुप रहने के बाद कहना शुरू किया, "क्या तुम सचमुच किसल्याकौफ़ के पत्रों को जो तुमने मुझे सवेरे पढ़ने के लिए दिए थे, अच्छा समझते हो ? तुम भी जानते हो—मेरे कठोर शब्दों के लिए क्षमा करना—कि वे एकदम बकवास है।"

मार्केलौफ़ सम्हल कर बैठ गया।

"पहली बात तो यह है," उसने क्रुद्ध स्वर में प्रारम्भ किया, 'कि उन पत्रों के बारे में तुम्हारी राय से मैं तनिक भी सहमत नहीं हूँ। मैं उन्हें बहुत ही अच्छे मानता हूँ···और ईमानदारी से लिखे हुए भी! और दूसरे, किसल्याकौफ़ महनत-मशक्कत करता है, और इससे भी अधिक उसमें विश्वास है; वह हमारे आन्दोलन में विश्वास करता है, क्रान्ति में विश्वास करता है! एक बात मैं तुमसे कह देना चाहता हूँ, अलैक्सी दिमित्रिच, मैंने महसूस किया है कि तुम—तुम आन्दोलन के बारे में बहुत ढीले-ढाले हो। तुम्हें उसमें यकीन नहीं है!"

"यह तुम किसलिए सोचते हो?" नेज़्दानौफ़ ने धीरे-धीरे कहा।

"किसलिए? क्यों, तुम्हारा हर शब्द, तुम्हारा सारा व्यवहार! आज गोलुश्किन के यहाँ किसने यह कहा था कि भरोसा करने योग्य लोग नज़र ही नहीं आते? तुमने! किसने हम लोगों से ऐसे लोग दिखाने की बात कही थी? तुमने! और जब तुम्हारे उस दोस्त, उस हँसने वाले बन्दर और जोकर, मि० पाकलिन ने, आसमान की ओर आँखें उठाकर यह घोषणा करना शुरू किया कि हममें से कोई भी स्वार्थ-त्याग नहीं कर सकता, तो किसने उसका समर्थन किया था, किसने प्रशंसा से सिर हिलाया था? नहीं थे तुम? अपने बारे में तुम चाहे जो कहो, अपने लिए चाहे जो सोचो···यह तुम्हारा काम है···पर मैं ऐसे लोगों को जानता हूँ जो जीवन को मधुर बनाने वाली हर चीज़ को, प्रेम के आनन्द तक को त्याग देने के लिये तैयार हैं, और अपने आदर्शों के प्रति सच्चे रहना चाहते हैं, उनके साथ विश्वासघात नहीं करना चाहते। ओह, आज, तुममें स्वभावतः ही, यह करने की योग्यता नहीं है!"

"आज? आज क्यों?"

"सुनो, बनो मत, भगवान के लिए, रसिया, प्रेमी कहीं के!" मार्केलौफ़ ज़ोर से चीख उठा। वह कोचवान की उपस्थिति को भी एकदम भूल गया, जो अपनी जगह से बिना सिर घुमाये ही हर बात साफ़-साफ़ सुन सकता था। यह सही है कि उस समय उसका ध्यान पीछे

बैठे हुए साहब लोगों की झड़प की अपेक्षा सामने की सड़क के ऊपर अधिक लगा हुआ था। वह सावधानी से और कुछ कच्चेपन के साथ बीच के घोड़े को हाँक रहा था; घोड़ा सिर हिलाता और पीछे हट जाता और गाड़ी एक तरह की पहाड़ी चट्टान-सी के नीचे फिसल जाती।

"माफ़ करना, मैं तुम्हारी बात ठीक से समझ नहीं सका," नेज़दानौफ़ ने कहा।

मार्केलौफ़ जबर्दस्ती विद्वेषपूर्ण हँसी हँसा।

"तुम मेरी बात नहीं समझ सके ! हा ! हा ! हा ! मुझे सब पता चल गया है, महाशय जी ! मुझे पता है कि कल किसके साथ आपने प्रेमालाप किया था; मुझे पता चल गया है कि किसे आपने अपनी सुन्दर शक्ल और लच्छेदार बातों से रिझा रक्खा है; मुझे खबर है कि कौन आपको अपने कमरे में·····दस बजे रात को बुलाकर·······।"

"मालिक !" एकाएक कोचवान ने मार्केलौफ़ से कहा, "ज़रा रास सम्हाल लीजिये······मैं उतर कर देख लूँ·······लगता है गाड़ी रास्ते से उतर गई है······यहाँ पर बहुत से खड्ड नज़र आ रहे हैं, या कुछ······"

गाड़ी वास्तव में पूरी एक ओर को झुक गई थी। मार्केलौफ़ ने कोचवान द्वारा बढाई हुई घोड़ों की रास थाम ली, और पहले की ही भाँति ज़ोर से कहता गया : "मैं तुम्हें दोष नहीं देता, अलैक्सी दिमित्रिच ! तुमने फ़ायदा उठाया······ठीक है। कोई बात नहीं। मैं सिर्फ़ यह कहता हूँ कि मुझे तुम्हारे ढुलमुलपन पर कोई ताज्जुब नहीं; मै फिर कहूँगा कि तुम्हारे दिल में दूसरी चीज़ लगी हुई है। और अपनी ओर से मैं यह भी कहना चाहता हूँ कि पहले से कौन आदमी यह जान सकता है कि लड़कियों के दिल को कौनसी चीज़ वश में कर सकती है, या समझ सके कि वे क्या चाहती हैं।······"

"अब मैं तुम्हारी बात समझ गया", नेज़दानौफ़ ने शुरू किया, "मैं समझ गया तुम्हारी झल्लाहट का कारण, और यह भी समझ रहा

हूँ कि किसने हमारे ऊपर जासूसी करके फ़ौरन तुम्हें खबर देने में देर नहीं की है······"

"इस मामले में अच्छे-बुरे का प्रश्न इतना नहीं है", मार्केलौफ़ कहता ही गया जैसे उसने नेज़्दानौफ़ की बात सुनी ही न हो, और वह जान-बूझकर हर एक शब्द पर रुक-रुक कर ज़ोर देता गया; "सवाल दिमाग़ या रूप-रंग की किसी असाधारण विशेषता का नहीं है······नहीं ! यह तो बस······शैतानी तक़दीर का सवाल है······सब नाजायज़ लड़कों की······सब······हरामज़ादों की तक़दीर का !"

अंतिम वाक्यांश एकाएक ही और जल्दी से मार्केलौफ़ के मुँह से निकला, और उसे कहते ही वह मौत की तरह से सन्न पड़ गया।

नेज़्दानौफ़ को उस अँधेरे में भी लगा कि उसका चेहरा फक हो गया है, और सारा बदन ऐंठने लगा है। बड़ी कठिनाई से वह अपने आपको मार्केलौफ़ के ऊपर झपट कर उसका गला दबा लेने से रोक सका।······"यह अपमान खून से ही धुल सकता है, खून ही से······"

"सड़क मिल गई मुझे !" कोचवान ने सामने दायें पहिये की ओर प्रगट होते हुए कहा। "मैंने ग़लती करदी थी, बायें ही बायें चलता गया था······अब ठीक है। जल्दी ही घर पहुँचे जाते हैं, मील भर भी दूर नहीं है। चुपचाप बैठने की कृपा करें।"

वह सामने अपनी गद्दी पर चढ़ गया, और उसने मार्केलौफ़ के हाथ से रास लेकर घोड़े को मोड़ा······गाड़ी दो ज़ोर के झटके खाने के बाद आसानी से और एक-सी चलने लगी। अंधेरा फट कर दूर होता जान पड़ता था। कहीं से धुँए की गंध आ रही थी, और सामने एक टीला-सा दिखाई देने लगा था। फिर एक रोशनी टिमटिमाई और छिप गई······एक और टिमटिमाई······कोई कुत्ता भौंक उठा······

"अपनी झोंपड़ियाँ", कोचवान ने कहा, "चले चलो, मेरे बेटो !"

और भी अधिक रोशनियाँ दिखाई पड़ने लगीं।

"उस अपमान के बाद", नेज़्दानौफ़ ने आख़िरकार शुरू किया,

"आप आसानी से समझ जायेंगे, सर्जी मिहालोविच, कि मैं आपकी छत के नीचे रात नहीं बिता सकता; इसलिए, मेरे लिए बहुत ही अप्रिय होने पर भी, मैं, आपसे यह कहने को लाचार हूँ कि आप घर पहुँचने पर अपनी गाड़ी मुझे उधार दे दें ताकि मैं शहर वापिस लौट सकूँ; कल मैं किसी तरह घर पहुँच जाऊँगा; और तब आपको मुझ से वह सूचना मिलेगी जिसकी आप निस्संदेह आशा करते होंगे।"

मार्केलौफ़ ने तुरन्त ही कोई उत्तर न दिया।

"नेज़दानौफ़," उसने एकाएक ही नीची किन्तु निराशा-भरी आवाज़ में कहा, "नेज़दानौफ़! भगवान् के लिए मेरे घर में चलो, और कुछ नहीं तो इसलिए कि मैं पैरों पड़कर तुमसे क्षमा माँग सकूँ। नेज़दानौफ़! भूल जाओ······अलैक्सी! भूल जाओ, मेरे निरर्थक शब्दों को भूल जाओ! ओह, अगर कोई समझ सकता कि मैं कितना दुखी हूँ!" मार्केलौफ़ ने अपने घूँसे से छाती को पीट लिया और लगा जैसे उसमें से खोखली-सी कराह निकल रही हो। "अलैक्सी! तुम्हारा दिल बड़ा है! मुझे अपना हाथ दो······मुझे क्षमा देने से इन्कार मत करो!"

नेज़दानौफ़ ने हाथ बढाया, अटकते-अटकते, पर उसने अपना हाथ बढ़ा दिया। मार्केलौफ़ ने उसे इतने ज़ोर से दबाया कि वह करीब-करीब चीख़ उठा।

कोचवान ने गाड़ी मार्केलौफ़ के घर की सीढ़ियों के आगे रोक दी।

"सुनो अलैक्सी," मार्केलौफ़ पन्द्रह मिनट बाद अपने कमरे में उससे कह रहा था······"भाई मेरे," वह उसे इसी आत्मीयतापूर्ण प्यार-भरे सम्बोधन से पुकारता रहा; और उस आदमी के साथ इस स्नेह-भरी आत्मीयताएँ, जिसे वह अपने सफल प्रतिद्वन्द्वी के रूप में देख चुका था, जिसका वह अभी-अभी घातक अपमान कर चुका था, जिसे वह मार डालने, टुकड़े-टुकड़े तक कर डालने को तैयार था—उस व्यक्ति को इस प्रकार स्नेह-भरी आत्मीयता से पुकारने में, एक अटल वैराग्य का-सा भाव था, विनम्र, तीखी याचना का-सा भाव था और एक

प्रकार का अधिकार का भाव भी……नेज़्दानौज़ ने मार्केलौफ़ को उसी प्रकार आत्मीयता के साथ पुकारना शुरू करके इस अधिकार को स्वीकार कर लिया।

"सुनो अलैक्सी! कुछ देर पहले मैंने कहा था कि मैंने प्रेम के सुख को अस्वीकार कर दिया था, अपने आदर्श की सेवा करने के उद्देश्य से उससे वैराग्य ले लिया था……वह सब बकवास थी, कोरी शेखी! मुझे कभी कोई ऐसी चीज़ मिली ही नहीं है, मेरे पास ऐसा कुछ नहीं है जिससे मैं वैराग्य लूँ! मैं गुणहीन ही पैदा हुआ था, और वैसा ही रहा आया हूँ……और शायद ऐसा होना ठीक ही था। क्योंकि मैं वह नहीं पा सकता, इसलिए मुझे कुछ और करना चाहिए! क्योंकि तुम दोनों को साथ-साथ चला सकते हो……प्यार कर सकते हो और प्यार पा भी सकते हो……और साथ-ही-साथ अपने आदर्श की भी सेवा कर सकते हो……भाई, तुम भाग्य वाले हो! मुझे तुमसे ईर्ष्या होती है……पर मेरे साथ तो ऐसा नहीं है। मैं वह कर ही नहीं सकता। तुम सुखी हो! तुम सुखी हो! पर मैं तो नहीं हो सकता।"

मार्केलौफ़ ने यह सब दबी हुई आवाज़ में कहा था। वह एक नीची कुर्सी पर बैठा था; उसका सिर झुका हुआ था और दोनों बाहें बगल में ढीली-सी झूल रही थीं। नेज़्दानौफ़ उसके सामने एक प्रकार की स्वप्निल ध्यानावस्था में खड़ा था; और यद्यपि मार्केलौफ़ उसे सुखी कह रहा था, पर वह न तो सुखी लग रहा था न अनुभव ही कर रहा था।

"जवानी में मैंने धोखा खाया था," मार्केलौफ़ कहता गया, "वह लड़की भी बड़ी ही अच्छी थी, पर उसने मुझे ठुकरा दिया……और किसके कारण? एक जर्मन के कारण! एक हवलदार के कारण! मेरियाना ने तो……"

वह रुक गया।……पहली बार उसने यह नाम लिया था और उसे लगा कि उसके होंठ जल उठे हैं।

"मेरियाना ने तो मुझे धोखा नहीं दिया; उसने मुझसे साफ़-साफ़ कह दिया था कि वह मुझे प्यार नहीं करती······और वह मुझसे प्यार करे भी क्यों ? खैर, उसने तुम्हें अपने-आपको समर्पित किया है······तो उससे क्या ? उसको इस बात की आज़ादी नहीं थी क्या ?"

"ओह, ठहरो, ठहरो !" नेज़्दानौफ़ ने ज़ोर से कहा, "तुम क्या कहे जा रहे हो ? मैं नहीं जानता तुम्हारी बहन ने तुम्हें क्या-क्या लिखा है। पर मैं सौगन्ध खाता हूँ—।"

"मैं शारीरिक समर्पण की बात नहीं कह रहा हूँ; पर नैतिक दृष्टि से तो, हृदय से, आत्मा से, उसने अपने-आपको समर्पित कर ही दिया है," मार्केलौफ़ ने बीच ही में कहा, जिसे किसी-न-किसी कारण से नेज़्दानौफ़ के कथन से स्पष्ट ही बड़ी सान्त्वना-सी मिली थी। "और उसने ठीक ही किया है। जहाँ तक मेरी बहन का सवाल है···अवश्य ही उसका कोई चोट पहुँचाने का इरादा न था···कम-से-कम उसकी किसी भी सम्भावना में कोई दिलचस्पी न थी; पर वह अवश्य ही तुमसे घृणा करने लगी है, और मेरियाना से भी। उसने झूठ नहीं बोला है···पर उसकी बात छोड़ें।"

"हाँ," नेज़्दानौफ़ ने मन-ही-मन कहा, "वह हम लोगों से घृणा करती है।"

"जो कुछ होता है अच्छे के ही लिये होता है," मार्केलौफ़ ने अपनी जगह बदले बिना ही अपनी बात ज़ारी रखी। "मेरे लिए पीछे हटने के आखिरी रास्ते भी कट चुके हैं, अब मुझे रोकने वाली कोई चीज़ नहीं बची। गोलुश्किन गधा है, इसकी चिन्ता बेकार है; उसके कोई फर्क नहीं पड़ता। और किसल्याकौफ़ के पत्र···वे भी शायद वाहियात ही हैं···पर हमें मुख्य चीज़ पर ध्यान देना चाहिये। उसका कहना है कि हर जगह मामला एकदम तैयार है। तुम्हें इस बात में यकीन नहीं है, शायद ?"

नेज़्दानौफ़ ने उत्तर नहीं दिया।

"शायद तुम ठीक कहते हो; पर जानते हो कि यदि हम लोग उस क्षण का इन्तजार करते रहे जब हर चीज़, एकदम प्रत्येक चीज़, तैयार हो, तो हम कभी शुरू न कर सकेंगे। अगर कोई सब परिणामों को पहले से ही तोलने लगे, तो कुछ-न-कुछ तो बुरे निकलेंगे ही, उदाहरण के लिये, हमारे पूर्ववर्तियों ने जब किसानों की आज़ादी के लिए आन्दोलन चलाया, तो क्या उन्हें मालूम था कि इस आज़ादी के फलस्वरूप महाजन ज़मींदारों का एक समूचा वर्ग खड़ा हो जायगा, जो किसानों को चौदह सेर फफूँद लगी राई छः रूबल के हिसाब से उधार देंगे और फिर उनसे वसूलेंगे, (यहाँ उसने अपनी एक उँगली मोड़ ली) "सबसे पहले पूरे छः रूबल मज़दूरी के रूप में, और उसके अलावा," (उसने दूसरी उँगली मोड़ी) "पूरी चौदह सेर बढ़िया राई, और फिर," (तीसरी उँगली मोड़ी) "उस सबके ऊपर सूद ?—वास्तव में वे किसान की बूँद-बूँद निचोड़ लेते हैं ! हमारे आज़ादी के आन्दोलनकर्ताओं ने यह कभी न सोचा होगा, तुम मानोगे ! पर तो भी, अगर उन लोगों ने इस सम्भावना को देख भी लिया होता, तो भी किसानों को आज़ाद कराना ही ठीक होता, सब परिणामों को न तौलना ही उचित होता। इसीलिये, मैंने तो अपना इरादा पक्का कर लिया है।"

नेज़्दानौफ़ प्रश्नसूचक दृष्टि से, कुछ असमंजस के साथ, मार्केलौफ़ की ओर देखता रहा; पर मार्केलौफ़ दूसरी ओर कोने को ताक रहा था। उसकी भौंहों ने सिकुड़कर उसकी आँखों को ढक लिया था; वह अपने होठ काट रहा था और मूँछें उमेठ रहा था।

"हाँ, मैंने तो अपना इरादा पक्का कर लिया है।" उसने अपना काला बालों भरा घूँसा घुटने पर मारते हुए कहा। "मैं ज़िद्दी आदमी हूँ, जानते हो····आधा छोटा-रूसी कोई यों ही थोड़े ही हूँ।"

फिर वह उठ खड़ा हुआ, और लड़खड़ाता हुआ, मानो उसके पैर जवाब दे रहे हों, अपने शयनगृह में जाकर शीशे में जड़ा हुआ मेरियाना

का एक चित्र निकाल लाया ।

"यह लो," उसने उदास किन्तु स्थिर कण्ठ से कहा; "कभी मैंने ही यह बनाया था । मुझे तस्वीर बनाना नही आता; पर देखो, मेरे ख्याल से इसमें समानता है ।" स्केच पेंसिल से एक ओर से बना था और उसमे सचमुच समानता थी । "इसे ले लो, भाई, यह मेरी अन्तिम सम्पत्ति है । इस चित्र के साथ-साथ मै अपने सारे अधिकार तुम्ही को सौपता हूँ···वैसे कोई अधिकार मेरे पास था नही···पर तुम समझते हो अलैक्सी, हर चीज ! मै तुम्हे हर चीज देता हूँ अलैक्सी···और उसे, प्यारे भाई; वह अच्छी···"

मार्केलौफ थम गया, उसके वक्ष का उठना-गिरना दिखाई पड रहा था ।

"इसे ले लो । तुम मुझसे नाराज नही हो न, अलैक्सी ? तो फिर इसे ले लो । मेरे पास कुछ नही है···यह भी अब मुझे नही चाहिये ।" नेज्दानौफ ने चित्र ले लिया, पर एक विचित्र भाव उसके हृदय को कचोटने लगा । उसे लगा कि यह भेट स्वीकार करने का उसे कोई अधिकार नही है; और यदि मार्केलौफ जानता कि इस समय उसके हृदय मे क्या उठ रहा है, तो शायद वह यह चित्र उसे न देता । काले चौखटे मे सुनहले कागज पर सावधानी से मढे उस छोटे-से गोल कागज को वह हाथ मे पकडे रह गया, और उसकी समझ मे न आया कि क्या करे । "यह एक व्यक्ति की समूची जिन्दगी मेरे हाथो मे है," उसके मन मे यही विचार आया । उसने अनुभव किया कि मार्केलौफ कितना बडा आत्म-त्याग कर रहा है, पर क्यो, उसे क्यो ? क्या वह इस चित्र को वापिस कर दे ? नही ! वह तो और भी अधिक निर्मम अपराध होगा···और फिर चाहे जो हो, क्या वह मुख उसे प्रिय न था ? क्या वह उसे प्यार न करता था ?

नेज्दानौफ ने कुछ भीतर सन्देह के साथ अपनी आँखे मार्केलौफ की ओर घुमाई···क्या वह उसी ओर न देख रहा था, उसके भावो को

पढने की कोशिश में ? पर मार्केलौफ़ फिर कोने की ओर ताकते हुए अपनी मूँछें उमेठने लगा था ।

बूढ़ा नौकर एक मोमबत्ती लिये हुए कमरे मे आया ।

मार्केलौफ़ चौंक पड़ा ।

"सोने का समय आ गया, अलैक्सी !" वह बोला । "सवेरे आदमी को अच्छे विचार आते हैं । मै तुम्हें अपने घोड़े दे दूँगा और तुम घर चले जाना । अच्छा भइया, नमस्कार ।"

"और तुम्हें भी नमस्कार, बूढे बाबा !" उसने एकाएक नौकर की ओर मुड़कर उसके कन्धो पर हाथ मारते हुए कहा । "मुझे आशीर्वाद देना !"

बूढ़ा एकदम भौचक्का-सा रह गया और मोमबत्ती उसके हाथ से गिरते-गिरते बची । अपने मालिक पर झुकी उसकी उन आँखो मे स्वाभाविक निराशा से भिन्न, तथा कुछ अधिक, भाव झलक आया था ।

नेज्दानौफ़ अपने कमरे में चला आया । वह बहुत व्यथित था । उसका सिर अभी तक रात की पी हुई शराब से भारी था, उसके कानों में तरह-तरह की आवाजें सुनाई दे रही थीं, और आँखें बन्द कर लेने पर भी सामने रोशनियाँ-सी चमचमाती जान पडती थी । गोलुशिकन, क्लर्क वास्या, फोमुश्का, फीमुश्का सब उसके आगे चक्कर काट रहे थे; दूर पर मेरियाना की छाया अविश्वासपूर्ण-सी खडी थी, समीप नहीं आती थी । अपनी कही और की हुई हर चीज उसे इतनी झूठी और बनावटी लग रही थी, इतनी अनावश्यक और ढोंगपूर्ण जान पड़ रही थी······और जो चीज़ करनी चाहिए और जिस लक्ष्य के लिए प्रयत्न करना चाहिए, वह कही नही दिखाई पड़ता था, मानो ताले-चाबी के भीतर बन्द हो, किसी अथाह गर्त में सोया हुआ हो······।

और उसे यही इच्छा निरन्तर झकझोर रही थी कि उठकर मार्केलौफ़ के पास जाय और कहे, "अपना उपहार वापिस ले लो, वापिस ले लो !"

"ओफ़ ! ज़िन्दगी कितनी वाहियात चीज़ है !" वह आखिरकार चीख़ पड़ा।

अगले दिन सवेरे वह जल्दी ही चल पड़ा। मार्केलौफ़ पहले से ही किसानों से घिरा हुआ सीढ़ियों पर मौजूद था। वे लोग अपने-आप आये थे, या मार्केलौफ़ ने उन्हें बुला भेजा था, नेज़दानौफ़ यह न समझ सका। मार्केलौफ़ ने उससे बहुत संक्षिप्त और रूखा-सा नमस्कार किया·······पर लगता था जैसे वह किसानों के आगे कोई महत्त्व-पूर्ण घोषणा करने वाला हो। बूढ़ा नौकर अपनी चिर-परिचित मुद्रा में सीढ़ियों पर मँडरा रहा था।

गाड़ी जल्दी से शहर में से निकलकर खुले देहात में पहुँचते ही तेज़ी से चल पड़ी। घोड़े तो वही थे, पर कोचवान, या तो इसलिए कि नेज़दानौफ़ इतनी बड़ी हवेली में रहता था, या किसी दूसरे कारण से, शायद 'वोदका के लिए' कुछ प्राप्ति की आशा कर रहा था······और हम सभी जानते हैं कि यदि कोचवान को वोदका मिल जाय, या उसे मिलने की पक्की आशा हो, तो घोड़े बहुत ही तेज़ चलने लगते हैं। जून का मौसम था, पर ताज़गी थी; बड़े-बड़े बादलों के टुकड़े आसमान में मँडरा रहे थे; हवा स्थिर गति से पर तेज़ चल रही थी; पहले दिन पानी पड़ जाने के कारण सड़क पर धूल न थी; सरों के पेड़ फरफरा रहे थे, चमक रहे थे, काँप रहे थे; हर चीज़ हिलती, फड़फड़ाती-सी जान पड़ती थी। दूर की पहाड़ियों से हरे-भरे खड्डों के बीच से होकर काली मुरग़ाबी की आवाज़ सीटी की तरह आ रही थी, मानो आवाज़ के भी पर हों जिन पर वह उड़ी चली आ रही हो; कौवे धूप में अपने पर चमका रहे थे; खुले क्षितिज की सीधी रेखा पर काली मक्खियों जैसी चीज़ रेंग रही थी—वे दूसरी बार अपनी परती ज़मीन को जोतते हुए किसान थे।

पर नेज़दानौफ़ ने इस सब को बिना देखे ही निकल जाने दिया; उसने यह भी न देखा कि वह सिप्यागिन की ज़मींदारी में पहुँच गया

है; वह अपने घुमड़ते हुए विचारों में एकदम खो गया था।

पर जब उसने हवेली की छत, ऊपरी मंज़िल, मेरियाना की खिड़की देखी तो वह चौंक पड़ा। "हाँ," उसने अपने-आप से कहा, और उसके हृदय में स्नेह के आलोक की आभा थी; "वह ठीक ही कहता था; वह अच्छी लड़की है और मैं उसे प्यार करता हूँ।"

बाईस

उसने जल्दी से कपड़े बदले और कोल्या को पढ़ाने चला गया। सिप्यागिन से उसकी भोजनगृह में भेंट हुई; उसने बड़ी रूखी शिष्टता से नेज़दानौफ़ का अभिवादन किया और धीमे से यह पूछकर कि "यात्रा अच्छी रही?" फिर अपने कमरे की ओर बढ़ गया। राजनीतिज्ञ ने अपने कूटनीतिक मस्तिष्क में पहले ही यह फैसला कर लिया था कि जैसे ही छुट्टी खत्म होगी वह इस शिक्षक को तुरन्त पीटर्सबर्ग रवाना करेगा, क्योंकि वह 'सचमुच ही बहुत लाल' है और अब तक उस पर जरा नज़र रखेगा। वैलेन्तिना के विचार उसकी ओर अधिक सुस्पष्ट और तीव्र थे। वह अब उसे फूटी आँखों न देख सकती थी······यह—पिद्दी-सा छोकरा!—उसकी अवहेलना करता है। मेरियाना गलत नहीं कर रही थी, वही नेज़दानौफ़ और मेरियाना पर बरामदे में से जासूसी कर रही थी······उन महिला-रत्न के लिए यह कोई असाधारण बात न थी। नेज़दानौफ़ की दो दिन की अनुपस्थिति में, यद्यपि उसने अपनी 'विवेकहीन' भानजी से कुछ कहा तो न था, पर उसने यह बात उसे बार-बार जताने की काई कसर न रख थ से सब कुछ पता है,

तथा यदि वह उसके प्रति आधा घृणा और आधा दया का भाव न रखती होती, तो अवश्य ही क्रुद्ध हो जाती······जब भी वह मेरियाना को देखती या उससे बात करती तो उसका मुख संयत आन्तरिक घृणा से भर उठता और उसकी भौंहें कुछ-कुछ व्यंग और साथ ही दया के भाव से उठ जातीं। उसकी वे परम सुन्दर आँखें, कोमल अचकचाहट, उदास खीभ के साथ इस जिद्दिन लड़की पर जा टिकतीं, जो अपनी तमाम 'सनकों और कल्पनाओं' के बावजूद, इतनी गिर गई थी कि एक अदना से विद्यार्थी छोकरे के साथ······अँधेरे कमरो में······चूमाचाटी पर······उतर आई थी।

बेचारी मेरियाना! उसके कठोर अभिमानी होठ अभी तक किसी पुरुष के चुम्बनों के परिचित न थे।

किन्तु वैलेन्निना ने अपने पति को अपनी इस खोज की कोई भनक तक न होने दी थी, उसने बस अपने पति की उपस्थिति में अर्थपूर्ण मुस्कराहट के साथ मेरियाना से कुछेक शब्द, जिनका उनके वास्तविक अर्थ से कोई सम्बन्ध न था, कह कर ही संतोष कर लिया था। वैलेन्निना को इस बात का तो निश्चित पश्चात्ताप था कि उसने अपने भाई को वह पत्र लिख मारा········पर सब बातों को देखते हुए पत्र न लिख-कर पश्चात्ताप से बचने की अपेक्षा पत्र लिखकर अब पछता लेना ही उसे अधिक ठीक लगता था।

नेज़्दानौफ़ को भोजन के समय मेरियाना की एक भलक-भर देखने को मिली थी। उसे लगा कि वह दुबली और कुछ पीली-सी दिखाई पड़ रही है, उस दिन वह बिल्कुल भी सुन्दर न लग रही थी, पर उसके कमरे में प्रवेश करते ही जो पैनी दृष्टि उसने नेज़्दानौफ़ पर डाली थी, वह सीधे उसके दिल में उतर गई थी। दूसरी ओर वैलेन्निना उसकी ओर ऐसे देख रही थी मानो बार-बार मन-ही-मन दुहरा रही हो, "बधाई है! शाबास! बहुत अच्छे!" और साथ ही वह उसके चेहरे से यह भी पता लगाना चाहती थी कि मार्केलौफ़ ने वह पत्र उसे दिखाया है

नहीं। अन्त में उसने यही निर्णय किया कि दिखा दिया है।

सिप्यागिन ने जब यह सुना कि नेज़्दानौफ़ उस कारखाने में भी गया था जहाँ सालोमिन मैनेजर है, तो वह उससे 'उस औद्योगिक संस्था के बारे में, जिसमें इतनी दिलचस्पी लेने लायक विशेषताएँ थीं,' बहुत से सवाल पूछने लगा। पर युवक के उत्तरों से जैसे ही उसे यह यकीन हो गया कि उसने वास्तव में वहाँ कुछ देखा नहीं है, तो वह फिर इस प्रकार अपने गौरवपूर्ण मौन में सिमट गया, मानो ऐसे कच्चे आदमी से कोई उपयोगी जानकारी प्राप्त करने की आशा करने के लिए अपने आप को धिक्कार रहा हो। भोजन-गृह से चलते समय मेरियाना ने अवसर निकाल कर उसके कान में कह दिया, "उसी बर्च के झुरमुट में मेरी प्रतीक्षा करना, अलैक्सी; फ़ुरसत पाते ही मैं पहुँचूँगी।" नेज़्दानौफ़ सोचने लगा, "उसकी तरह से यह भी मुझे अलैक्सी ही कहती है।"और वह आत्मीयता उसे कितनी मधुर लगी, यद्यपि कितनी भयानक भी थी। और कितना अजीब, कितना कल्पनातीत होता यदि वह उसे अचानक ही फिर मि० नेज़्दानौफ़ कहकर पुकारने लगती, यदि वह उससे दूर हो जाती। उसे लगा कि यह कितने बड़े सन्ताप की बात होगी। वह उससे प्रेम करता है या नहीं, इस विषय में वह अभी तक पूरी तरह निश्चय न कर पाया था, पर यह कि वह उसके लिए अनमोल थी, आत्मीय थी, आवश्यक थी—हाँ, सबसे अधिक आवश्यक थी—यह तो अपने हृदय के गहन अन्तराल तक में अनुभव होता था।

जिस झुरमुट में मेरियाना ने उससे आने के लिए कहा था उसमें कई सौ पुराने मजनूँ के पेड़ थे। हवा धीमी नहीं हुई थी, लम्बी-लम्बी टहनियाँ हवा में लटों की भाँति सिर हिला रही थीं और ऊपर-नीचे झूल रही थीं; बादल पहले की भाँति ही आसमान में ऊँचे तेज़ी से उड़े जा रहे थे, और जब उनमें से कोई एक टुकड़ा सूरज के आगे से निकलता तो हर चीज पर अंधेरा तो नहीं छाता, पर रंग सबका एक-सा हो जाता था। बादल धीरे-धीरे निकल जाता तो रोशनी चमकते

हुए धब्बे-से हर जगह फिर से एकाएक छाया के धब्बों के साथ मिल कर तरह-तरह की उलझी-उलझी आकृतियाँ-सी बना डालते। पत्तियों की सरसराहट और गति भी वैसी थी; पर एक प्रकार की उत्सव की-सी खुशी और जुड़ी हुई जान पड़ती थी। ठीक इसी प्रकार की हर्षभरी तीव्रता के साथ पीडा से अनमने और घिरे हुए हृदय में लालसा उतरी चली जाती है···और ठीक ऐसा ही हृदय उस समय नेज़्दानौफ़ वक्ष में दबाये हुए था।

वह एक मजनूँ के पेड़ के सहारे टिक कर प्रतीक्षा करने लगा। वह वास्तव में जानता न था कि उसे कैसा लग रहा है, और सचमुच वह जानना चाहता भी न था। मार्केलौफ़ के यहाँ उसकी जो हालत थी उसकी अपेक्षा अब वह एक साथ ही अधिक विचलित और हलका अनुभव कर रहा था। इस समय वह सबसे पहले मेरियाना को देखने, उससे बात करने के लिए आतुर था; दो जीवित प्राणियों को अचानक ही एक साथ बाँध देने वाली जंजीर ने उसे इस समय कसकर जकड़ लिया था। नेज़्दानौफ के आगे घाट पर जहाज़ के बाँधने के लिए फेंके गये रस्से का चित्र खिच गया···रस्सा एक खम्भे के चारों ओर लपेट दिया गया है और जहाज़ आराम से शांत खड़ा है।

बन्दरगाह में ! भगवान् का आशीर्वाद है !

एकाएक वह काँप उठा। दूर रास्ते में किसी स्त्री के वस्त्रों की झाँकी दिखाई पडी। वही थी। पर वह उसी की ओर आ रही थी, या विपरीत दिशा में जा रही थी, इसका उसको तब तक निश्चय न हो सका जब तक उसने रोशनी और छाया के धब्बों को उसके शरीर पर नीचे से ऊपर की ओर फिसलते न देख लिया···तो वह इधर ही आ रही थी। यदि वह विपरीत दिशा में जा रही होती तो वे छायाएँ ऊपर से नीचे की ओर चल रही होतीं। कुछ ही क्षणों बाद वह उसके पास, उसके सामने खडी हुई थी; स्वागत के भाव से उसका मुख चमक रहा था, आँखों में मीठा-सा आलोक और होठों पर हलकी उत्फुल्ल

मुस्कान थी। नेज़दानौफ़ ने झपटकर उसके बढ़े हुए हाथ पकड़ लिये, पर शुरू में वह एक भी शब्द न मुँह से निकाल सका; वह भी कुछ नहीं बोली। वह बहुत जल्दी-जल्दी चलकर आई थी और थोड़ा-सा हाँफ रही थी; पर यह साफ़ दिखाई पड़ता था कि उसे देखकर नेज़्दानौफ़ एकदम पुलकित हो उठा था, इससे वह स्वयं हर्ष से पुलक उठी है।

पहले वही बोली।

"तो," उसने शुरू किया, "मुझे जल्दी से बताओ कि तुमने क्या निश्चय किया!"

नेज़दानौफ़ चकित हो गया।

"निश्चय किया!......क्यों, क्या हम लोग तुरन्त कोई निश्चय कर लेने वाले थे क्या?"

"ओह, तुम जानते हो मेरा क्या मतलब है! बताओ तुम लोगों ने क्या-क्या बातें कीं। किस-किससे मिले? सालोमिन से मित्रता हुई? सब बातें बताओ, सब बातें! ज़रा ठहरो—चलो, हम लोग ज़रा और आगे बढ़ चलें। मैं एक स्थान जानती हूँ...वह इतना दिखाई नहीं देता।"

वह उसे अपने साथ घसीटती ले गई। वह लम्बी-लम्बी थोड़ी-सी सूखी घास में से उसके पीछे-पीछे आज्ञाकारी की भाँति चलता गया।

वे लोग निर्दिष्ट स्थान पर पहुँच गये। वहाँ एक बड़ा-सा पेड़ तूफ़ान में गिरा हुआ पड़ा था। वे उसी के तने पर बैठ गये।

"चलो, अब सब सुनाओ!" उसने दोहराया पर वह स्वयं ही तुरन्त कहने लगी, 'आह, तुम्हें देख कर' मैं कितनी प्रसन्न हूँ? लगता था कि ये दो दिन कभी बीतेंगे ही नहीं। जानते हो, अलैक्सी, अब मुझे यकीन हो गया है कि उस दिन वैलेन्निना ही हमारी बातें सुन रही थी।"

"उसने मार्केलौफ़ को इसके बारे में लिखा भी था," नेज़दानौफ़ ने कहा।

"मार्केलौफ़ को !"

मेरियाना एक मिनट तक कुछ बोल न सकी, और धीरे-धीरे एकदम लाल हो उठी, लज्जा से नहीं, पर एक और अधिक प्रबल भावावेश से।

"दुष्ट, जलने वाली स्त्री !" उसने धीरे से बुदबुदा कर कहा; "उसे यह करने का कोई अधिकार न था······पर कोई चिन्ता नहीं ! बताओ, मुझे सब बातें बताओ।"

नेज्दानौफ़ बताने लगा···मेरियाना एक प्रकार के पत्थर की-सी एकाग्रता से उसकी बातें सुन रही थी, और तभी बीच में टोकती थी जब या तो वह कुछ जल्दी करने लगता या बातों को बीच-बीच में छोड़ने लगता। किन्तु उसकी यात्रा की सभी बातों में उसकी समान दिलचस्पी न थी; फोमुश्का और फीमुश्का की बात पर वह हँसती रही, पर उनमें उसकी कोई रुचि न थी। उनकी ज़िन्दगी उससे बहुत दूर थी।

"लगता है मानो तुम मुझे नेबूचाडनेज़ार की कहानी सुना रहे हो," उसने कहा था।

पर मार्केलौफ़ ने क्या कहा, क्या गोलुश्किन सोचता था (हालाँकि वह शीघ्र ही समझ गई कि वह किस प्रकार का प्राणी था), और सबसे अधिक सालोमिन के क्या विचार थे, वह किस तरह का व्यक्ति था— इन सब बातों के बारे में वह सुनना चाहती थी और यही उसके दिल की बातें थीं। "कब ? कब ?"—नेज़दानौफ़ के बात करते समय यही प्रश्न लगातार उसके दिमाग में और होठों पर था, और उधर नेज़दानौफ़ उन सब बातों को बचाता जान पड़ता था जिनसे इस प्रश्न का निश्चित उत्तर मिल सके। स्वयं नेज़दानौफ़ को भी यह महसूस हुआ कि वह उन्हीं घटनाओं पर अधिक ज़ोर दे रहा है जिनमें मेरियाना की कम-से-कम दिलचस्पी है···और बार-बार उन्हीं पर लौट आता है। हँसी के वर्णनों से वह अधीर हो जाती थी; संशयात्मक या निराशाभरी ध्वनि उसे आहत कर देती थी···लगातार नेज़दानौफ़ को "आन्दोलन" का,

"समस्या" का जिक्र करते रहना पड़ रहा था। उस विषय की चाहे जितनी भी बात हो वह थकती न थी। नेज़्दानौफ़ को याद आया कि विद्यार्थी बनने के पहले एक बार वह गर्मियों में कुछ मित्रों के पास कहीं देहात गया था और वहाँ वह बच्चों को कहानियाँ सुनाया करता था; वे भी वर्णनों को तथा व्यक्तिगत, निजी भावना के चित्रण को पसन्द न करते थे, वे भी घटनाओं की, तथ्यों की ही माँग करते थे। मेरियाना बच्ची न थी, पर अपनी भावनाओं की सादगी और सीधेपन मे वह बच्चों जैसी ही थी।

नेज़्दानौफ ने मार्केलौफ़ की स्नेह और सचाई के साथ प्रशंसा की और सालोमिन का विशेष समझदारी के साथ जिक्र किया। उस व्यक्ति के बारे में बड़े उत्साह के साथ चर्चा करते-करते वह मन-ही-मन सोचने लगा कि ठीक किस बात के कारण उसके विषय में इतनी ऊँची धारणा बनी है? उसने कोई खास विलक्षण बात नहीं कही थी; बल्कि उसके कुछ विचार तो नेज़्दानौफ़ के अपने विचारों के एकदम विपरीत थे···"वह बहुत ही सुसन्तुलित व्यक्ति है," उसने निर्णय किया, "ठीक यही बात है, काम की बात करने वाला, जैसा फीमुश्का ने कहा था, शान्त, ठोस व्यक्ति; विचलित न होने वाला, शक्तिवान, वह जानता है कि उसे क्या चाहिये, और उसे अपने ऊपर विश्वास है तथा दूसरों मे भी आत्म-विश्वास जगाता है; कोई उत्तेजना नहीं···और संयम! सन्तुलन!··· वही बड़ी चीज़ है, और ठीक उसीका मुझमें अभाव है।" नेज़्दानौफ़ सोच-विचार में डूबकर चुप हो गया था···एकाएक उसने कोई प्यार-भरा हाथ अपने कन्धे पर महसूस किया।

उसने सिर उठाया; मेरियाना उत्सुक, प्यार-भरी आँखों से उसकी ओर देख रही थी।

"अलैक्सी, प्रिय! क्या बात है?" उसने पूछा।

उसने अपने कन्धे पर रखा मेरियाना का हाथ अपने हाथों में ले लिया और पहली बार उस छोटे से दृढ़ हाथ को चूम लिया। मेरियाना

हल्का-सा मुस्कराई मानो इस बात से विस्मित हो कि ऐसी शिष्टतापूर्ण बात उसे सूझी कैसे। अब वह सोच में डूब गई।

"मार्केलौफ़ ने क्या तुम्हें वैलेन्निना का पत्र दिखाया था ?" उसने आखिरकार पूछा।

"हाँ।"

"अच्छा···वह कैसा है ?"

"वह ? वह अत्यधिक उदार और निःस्वार्थी व्यक्ति है ! उसने···" नेज़्दानौफ़ मेरियाना को उस चित्र के बारे में बताने ही जा रहा था, कि उसने अपने-आपको रोक लिया और केवल इतना ही दोहराया, "बहुत ही उदार आदमी है।"

"ओह, हाँ, हाँ !"

मेरियाना कुछ सोचने लगी, और फिर पेड़ के तने पर ही, जो दोनों के बैठने के स्थान का काम दे रहा था, एकाएक नेज़्दानौफ़ की ओर घूमती हुई बड़ी गहरी उत्कण्ठा के साथ बोली।

"तो फिर, तुमने क्या निश्चय किया है ?"

नेज़्दानौफ़ ने कन्धे झकझोरे।

"क्यों, मैंने तुम्हें बताया तो सही···कुछ नहीं···अभी कुछ नहीं; कुछ देर और प्रतीक्षा करनी होगी।"

"कुछ देर और प्रतीक्षा ?···किस लिए ?"

"अन्तिम आदेशों के लिये। अवश्य ही यह एक झूठमूठ को मन बहलाने की बात है," नेज़्दानौफ़ सोच रहा था।

"किससे ?"

"किससे ?···जानती हो··· वैसिली निकोलाएविच से। और हाँ, हमें आस्त्रोदूमौफ़ के आने का भी इन्तज़ार करना है।"

मेरियाना ने प्रश्नसूचक दृष्टि से उसकी ओर देखा।

"अच्छा बताओ, तुमने कभी वैसिली निकोलाएविच को देखा है ?"

"दो बार मैंने देखा है···बस थोड़ी-सी झलक भर।"

"कैसे व्यक्ति है वह ?···बहुत अद्‌भुत ?"

"यह तुम्हें कैसे बताऊँ ? आजकल वही प्रधान है, और सब चीज़ों का नियन्त्रण उन्हीं के हाथ में है। अपने इस काम में अनुशासन के बिना तो काम चल नहीं सकता, आज्ञा मानना आवश्यक होता है।" मन-ही-मन वह सोच रहा था कि 'यह सब बकवास' है।"

"देखने में कैसे हैं वह ?"

"ओह, छोटे कद और गठे हुए भारी जिस्म के, साँवले···कालपिक की भाँति ऊँची-ऊँची गालों की हड्डियाँ,···चेहरा अनगढ़ है। बस उनकी आँखें बहुत ही तीक्ष्ण और चमकीली हैं।"

"और बात कैसी करते हैं ?"

"बात इतनी नहीं करते, जितना आदेश देते हैं।"

"उन्हें क्यों प्रधान बनाया गया है?"

"ओह, बड़े दृढ़ चरित्र वाले व्यक्ति हैं वह। वह किसी चीज़ से पीछे नहीं हटते। ज़रूरत होने पर वह तुम्हें मार भी डाल सकते हैं। और इसीलिए उनका भय रहता है।"

"और सालोमिन कैसा है ?" मेरियाना ने कुछ देर रुक कर पूछा।

"सालोमिन भी देखने मे सुन्दर नहीं है; पर उसका चेहरा बड़ा अच्छा और सीधा-सच्चा है। उस तरह के चेहरे धर्मशास्त्र के विद्यार्थियों में—अच्छे वालों मे—प्राय: दिखाई पड जाते हैं।"

नेज़्दानौफ़ ने सालोमिन का विस्तार से वर्णन किया। मेरियाना बहुत, बहुत देर तक नेज़्दानौफ़ की ओर एकटक ताकती रही; फिर वह मानो अपने-आपसे ही कह उठी, "तुम्हारा भी मुख कितना अच्छा; सोचती हूँ तुम्हारे साथ ज़िन्दगी मधुर बीतेगी, अलैक्सी।"

यह बात नेज़्दानौफ़ के दिल को छू गई; उसने फिर मेरियाना का हाथ ले लिया और उसे अपने होठों तक उठाने लगा······।

"अपनी ये शिष्टताएँ अभी रहने दो," मेरियाना ने मुस्कराते हुए कहा—जब भी उसका हाथ चूमा जाता तो वह मुस्करा उठती, "तुम

जानते नहीं; मुझे अपने एक पाप को तुम्हारे आगे स्वीकार करना है।"

"क्या कर डाला है तुमने ?"

"असल में, तुम्हारी ग़ैरहाज़िरी में मैं तुम्हारे कमरे में गई थी और वहाँ तुम्हारी मेज पर मैंने एक कविता की कापी देखी······।"

नेज़्दानौफ़ चौंक पड़ा, उसे याद आया कि कापी को वह भूल से मेज़ पर रखी ही छोड़ गया था।

"और मैं स्वीकार करती हूँ," मेरियाना कह रही थी, "मैं अपनी उत्सुकता नहीं रोक सकी और मैंने उसे पढ डाला। वे तुम्हारी कविताएँ हैं, हैं न ?"

"हाँ; और जानती हो, मेरियाना, मुझे तुम्हारे ऊपर कितना अपनत्व और विश्वास है। इसका सबसे बड़ा प्रमाण यही है कि यह सुनकर भी मैं तुमसे नहीं के बराबर नाराज़ हूँ।"

"नहीं के बराबर ? इसका मतलब है, चाहे जितने थोड़े सही, हो तुम नाराज़ ? अच्छा एक बात याद आई, तुम मुझे मेरियाना कहते हो, यह ठीक है; पर मैं तुम्हें नेज्दानौफ़ नहीं कह सकती, मैं अलैक्सी ही कहा करूँगी। हाँ, वह कविता जो ऐसे शुरू होती है: "और प्रिय जब मैं मर जाऊँ, वह भी तुम्हारी ही है ?"

"हाँ······हाँ। पर वह सब छोड़ दो······मुझे सताओ मत।"

मेरियाना ने अपना सिर हिलाया।

"वह बड़ी उदासी से भरी हुई है, वह कविता······आशा है वह तुमने मुझसे परिचय होने के पहले ही लिखी थी। पर है वह सच्ची कविता, जहाँ तक मैं समझ सकी। मुझे लगता है कि तुम लेखक बन सकते थे, पर मैं यह निश्चित रूप से जानती हूँ कि तुम्हारे लिए साहित्य से कहीं अच्छा, कहीं ऊँचा कार्य मौजूद है। उस सब में लगे रहना ठीक था—पहले, जब कुछ और सम्भव न था।"

नेज़्दानौफ़ ने मुड़कर जल्दी से एक नज़र उस पर डाली।

"सचमुच तुम यह सोचती हो ? हाँ, मैं भी तुमसे सहमत हूँ। साहित्य

में सफलता से इस दूसरे काम मे असफलता कहीं ज़्यादा अच्छी है।"

मेरियाना आवेश में खड़ी हो गई।

"हाँ, प्रियतम, तुम्हारी बात ठीक है !" वह कह उठी, और उसका समूचा मुख आलोकित था, भावातिरेक की अग्नि और आभा से, सुकुमार भावनाओं के मिठास से जगमगा उठा था। "तुम्हारी बात ठीक है, अलैक्सी ! पर शायद हम लोग तुरन्त ही असफल न हों; हम लोग सफल होंगे, तुम देखना—हम लोगों का जीवन सार्थक होगा, हमारा जीवन बेकार न बीतेगा, हम लोग जनता में जाकर रहेंगे······ तुम कोई धन्धा जानते हो ? नहीं ? खैर कोई हर्ज नहीं, हम लोग काम करेंगे, हम जो कुछ भी जानते है, उसे उनकी, अपने भाइयों की, सेवा में लगा देंगे। मैं खाना बनाऊँगी, कपड़े सियूँगी और धोऊँगी, और ज़रूरत हुई तो······तुम देखना, तुम देखना······इसमें कोई तारीफ़ की बात न होगी—पर सुख, सुख······।" मेरियाना चुप हो गई; पर उसकी आँखें—जो दूर क्षितिज पर जमी हुई थीं, सामने फैले हुए क्षितिज पर नहीं, पर उसे दीखने वाले एक अदृश्य, अपरिचित क्षितिज पर—उसकी आँखें चमक रही थीं······।

नेज़्दानौफ़ उसके आगे झुक गया।

"ओह, मेरियाना !" उसने बहुत ही आहिस्ता से कहा, "मैं तुम्हारे योग्य नहीं हूँ !"

उसने एकाएक अपने-आपको झकझोरा।

"बहुत देर हो गई है, घर चलना चाहिए !" उसने कहा, "नहीं तो वे लोग फिर हमारी तलाश में निकल पड़ेंगे। वैसे वैलेन्निना ने मेरी ओर से सब आशा छोड़ दी है। उसकी दृष्टि में मैं बर्बाद हो चुकी हूँ !"

मेरियाना ने इस शब्द को ऐसे चमकते हुए उत्फुल्ल मुख से उच्चरित किया कि उसकी ओर देखते-देखते नेज़्दानौफ़ भी मुस्कराये बिना न रह सका, और कह उठा, "बर्बाद हो चुकी हो !"

"पर वह इस बात से बेहद नाराज़ है," मेरियाना ने आगे कहा, "कि तुम उसके चरणों में नहीं पड़े हुए हो। पर वह सब बेकार चीज़ है। एक बात मुझे ज़रूरी कहनी है·······बात यह है कि मैं यहाँ अब रह न सकूँगी······मुझे कहीं-न-कहीं भाग ही जाना होगा।"

"भाग जाना ?" नेज़्दानौफ़ ने दोहराया।

"हाँ भाग जाना होगा······तुम भी यहाँ रहने वाले नहीं हो न ? हम लोग साथ-साथ चलेंगे—साथ-साथ काम करेंगे।······मेरे साथ चलोगे न ?"

"दुनिया के दूसरे छोर तक भी !" नेज़्दानौफ़ ने चीखकर कहा, और उसके कण्ठ में विह्वलता और एक प्रकार की आवेशपूर्ण कृतज्ञता एकाएक झंकृत हो उठी। "दुनिया के दूसरे छोर तक भी !" उस क्षण में वह निश्चय ही उसके साथ जहाँ वह चाहती चला जाता, पीछे मुड़-कर भी न देखता।

मेरियाना ने भी इस बात को समझा और उसके मुख से क हलकी-सी तन्मयता की साँस निकल पड़ी।

"तो फिर मेरा हाथ पकड़ लो, अलैक्सी, बस उसे चूमो मत; और उसे कसकर पकड़े रहो, एक साथी की भाँति, मित्र की भाँति—हाँ, ऐसे ही !"

वे दोनों साथ-साथ तन्मय-से, विभोर-से घर की ओर चल पड़े; नरम घास उनके पैरों को सहला रही थी, नई पत्तियाँ उनके चारों ओर सजग हो उठी थीं; धूप और छाया के धब्बे-से जल्दी-जल्दी उनके वस्त्रों पर पड़ते और छिप जाते थे और वे दोनों प्रकाश के इस अन-वरत खेल पर, हवा के प्रफुल्लता-भरे झोंकों पर, पत्तियों की नई-नई चमक पर, स्वयं अपनी तरुणाई पर और एक-दूसरे पर मुस्कराते जा रहे थे।

तेईस

गोलुश्किन के यहाँ भोजन के बाद रात को चार मील जल्दी-जल्दी चलकर जब सालोमिन ने कारखाने की ऊँची चहारदीवारी के फाटक को खटखटाया तब आसमान में पौ फट चुकी थी। चौकीदार ने उसके लिए तुरन्त फाटक खोला और अपनी बालदार मूँछों को जोर से हिलाते हुए तीन भेड़ों की रखवाली करने वाले कुत्तों के साथ, बड़े आदरपूर्ण मौन के साथ उसे उसके छोटे से बँगले तक पहुँचा दिया। वह अपने अफसर के सफलतापूर्वक वापिस लौटने पर स्पष्ट ही प्रसन्न नज़र आता था।

"आप आज रात ही यहाँ कैसे लौट आये, वैसिली फेदोतिच? हम लोग तो कल से पहले आपकी आशा नहीं कर रहे थे।

"ओह, सब ठीक है, गैवरीला; रात में चलना बड़ा अच्छा लगता है।" सालोमिन और मज़दूरों के बीच बहुत ही अच्छे, बल्कि कुछ असाधारण सम्बन्ध थे। वे लोग अपने से बड़े अफसर की भाँति उसका आदर करते थे, और अपने ही आदमी की भाँति उसके साथ बराबरी का व्यवहार भी करते थे। बस उनकी दृष्टि में वह बड़ा भारी विद्वान्

था। "वैसिली फेदोतिच जो भी कहते है, वे कहा करते थे "वह हमेशा ठीक होता है। क्योंकि ऐसी कोई चीज़ नहीं है जो उन्होंने पढ न रखी हो और ऐसा शायद ही कोई अँग्रेज निकले जिससे वह टक्कर न ले सकें।" वास्तव में एक बार कोई अंग्रेज उद्योगपति कारखाने को देखने आया था और या तो इसलिए कि सालोमिन ने उससे अंग्रेजी में बात-चीत की थी, या इस कारण कि वह सचमुच सालोमिन के व्यवसाय-सम्बन्धी ज्ञान से प्रभावित हो गया था, वह बार-बार सालोमिन के कंधों को थपथपाता रहा, हँसता रहा और उससे लिवरपूल में आकर मिलने का निमन्त्रण देता रहा। उसने मजदूरों से अपनी टूटी-फूटी रूसी भाषा में कहा था, "ओह, यह बहुत अच्छी आदमी है, तुम्हारी यह। बहुत ही अच्छी।" जिस पर मज़दूर दिल खोलकर, पर बड़े गर्व के साथ हँसे थे; उन्हें लगा था, "हमारा अफसर ऐसा है। हममें से ही एक।"

और सचमुच वह उन्हीं में से एक था, और उन्हीं का आदमी था।

सवेरे तड़के ही सालोमिन का प्रिय सहायक पवेल कमरे में आया, उसने उसे जगाया, उसके हाथ-मुँह धोने के लिए पानी दिया, उसे कुछ समाचार सुनाये और कुछ सवाल उससे पूछे। फिर दोनों ने साथ-साथ जल्दी से कुछ चाय पी और सालोमिन अपनी चिकनाई से भरी काम के समय की जाकेट पहनकर कारखाने के लिए चल दिया, और उसका जीवन एक बड़े भारी पहिये की भाँति अपने चिर-परिचित चक्कर पर घूमने लगा।

पर एक नई घटना उसके जीवन में होने को थी।

सालोमिन के काम पर लौटने के पाँच दिन बाद, एक छोटी-सी सुन्दर फ़िटन, जिसमें चार बढ़िया घोड़े जुते हुये थे, कारखाने के अहाते में दाखिल हुई और पवेल के साथ हलके हरे रंग की वरदी पहने एक चपरासी ने बँगले पर पहुँचकर बड़ी गम्भीरता के साथ महामहिम बोरिस ऐन्द्रीविच सिप्यागिन का खानदानी निशान से मुहरबन्द किया

हुआ एक पत्र सालोमिन को दिया। पत्र बुरी तरह से गमक रहा था किसी इत्र से नहीं, ओह नहीं ! बल्कि एक खास तौर पर प्रसिद्ध और अप्रिय अंग्रेजी गन्ध से। पत्र अन्यपुरुष में लिखा हुआ था, किसी सहायक द्वारा नहीं, स्वयं महामहिम द्वारा। अरजानो के सुशिक्षित स्वामी ने पत्र में पहले तो इस बात के लिए क्षमायाचना की थी कि वह ऐसे व्यक्ति को यह पत्र लिख रहे हैं जिससे उनका व्यक्तिगत परिचय नहीं है, पर जिसके बारे में उन्होंने, सिप्यागिन ने, बहुत ही प्रशंसापूर्ण वर्णन सुन रखे है। फिर उन्होंने मि० सालोमिन को अपने देहात के निवास-स्थान पर आमन्त्रित करने का साहस किया था, क्योंकि उनकी सलाह एक बड़े औद्योगिक कारबार में उनके, सिप्यागिन के, लिए बहुत ही अधिक महत्त्व की होगी और इस आशा में कि मि० सालोमिन यह आमन्त्रण स्वीकार करने की कृपा करेंगे, वह, सिप्यागिन, अपनी गाड़ी उनके लिए भेज रहे हैं। और यदि किसी कारण मि० सालोमिन का उस दिन आना सम्भव न हो तो उनकी, सिप्यागिन की, मि० सालोमिन से हार्दिक प्रार्थना थी कि वह एक और दिन नियत कर दें जो उनके, मि० सालोमिन के लिए सुविधाजनक हो, और वह, श्री सिप्यागिन, सहर्ष इस गाड़ी को उसी दिन उनकी, मि० सालोमिन की सेवा में भेज देंगे। उसके बाद नियमित शिष्टाचार की बातें थीं और पत्र के अन्त में प्रथम पुरुष में पुनश्च करके कुछ लिखा था, "मुझे आशा है कि आप मेरे साथ, एकदम साधारण ढंग से—ईवनिंग सूट में नहीं—भोजन करना अस्वीकार न करेंगे।" 'एकदम साधारण ढंग से' शब्द रेखांकित थे। इस पत्र के साथ हरी वर्दी वाले चपरासी ने कुछ संकोच प्रदर्शित करते हुए, सालोमिन को एक सीधा-सादा पत्र और भी दिया, जो बिना किसी मुहर के साधारण ढंग से बन्द था और नेज़्दानौफ़ का था तथा जिसमें थोड़े से ही शब्द थे, "कृपा करके अवश्य आइये, आपकी यहाँ बड़ी आवश्यकता है और आपके आने से बड़ी सहायता मिलने की सम्भावना है, यह कहना अनावश्यक ही है कि मि० सिप्यागिन के लिए मैं नहीं कह

रहा हूँ।"

सिप्यागिन का पत्र पढ़कर सालोमिन ने सोचा, "'एकदम साधारण ढंग से और मैं कैसे जाता ? मैंने जीवन में कभी 'ईवनिंग सूट' नहीं पहना ......और फिर मुझे वहाँ घिसटते जाने की क्या ज़रूरत पड़ी है ?... बेकार समय बर्बाद करना है।" पर नेज्दानौफ़ के पत्र पर नज़र डालते ही उसने अपना सिर खुजलाया और खिड़की की ओर कुछ अनिश्चय के भाव से चला।

"आप क्या उत्तर देने की कृपा कीजियेगा ?" हरी वर्दी वाले चपरासी ने अदब के साथ पूछा।

सालोमिन पल भर खिड़की पर खड़ा रहा और फिर अपने बाल पीछे करके माथे पर हाथ फेरते हुये उसने कहा, "मैं चल रहा हूँ। कपड़े पहन लूँ।"

चपरासी शिष्टता के साथ वहाँ से हट गया। सालोमिन ने पवेल को बुलाया, उससे थोड़ी बातचीत की, एक बार जल्दी से कारखाने का चक्कर लगाया, और फिर एक प्रान्तीय दरजी द्वारा बनाया हुआ एक बहुत लम्बी कमर वाला काला कोट पहनकर और एक पुरानी सी टोपी लगाकर, जिससे उसका चेहरा तुरन्त ही काठ का-सा लगने लगा, वह फ़िटन में जा बैठा। तभी उसे एकाएक याद आया कि दस्ताने तो उसने लिए ही नहीं हैं और उसने सर्वविद्यमान पवेल को फिर बुलाया जिसने उसे सफेद चमड़े के दस्ताने ला दिये। दस्ताने हाल में धुले थे और उनकी हर उँगली सिरे पर खिचकर बिस्कुट जैसी हो गई थी। सालोमिन ने दस्ताने अपने कोट में ठूँस लिए और गाड़ी वाले से चलने के लिए कहा। सुनते ही चपरासी अचानक ही और बिलकुल अनावश्यक फुर्ती के साथ, उछलकर गाड़ी पर बैठ गया, सुशिक्षित कोचवान ने ज़ोर से सीटी बजाई और घोड़े तेज़ चाल से चल पड़े।

जिस समय वे धीरे-धीरे सालोमिन को सिप्यागिन की ज़मींदारी की ओर ले जा रहे थे, उस समय वह उच्च पदाधिकारी अपने ड्राइंगरूम

में एक आधी-कटी राजनीतिक पुस्तिका घुटनों पर रखे बैठा अपनी पत्नी से उसी के बारे में बातचीत कर रहा था। उसने वैलेन्तिना को बता दिया कि वास्तव मे उसने सालोमिन को यह जानने के उद्देश्य से बुलाया था कि उसे व्यापारी के कारखाने से बहकाकर अपने यहाँ लाना सम्भव है या नहीं, क्योंकि उसके कारखाने की हालत सचमुच बहुत खराब थी और उसमें कुछ बुनियादी सुधारों की आवश्यकता थी। यह विचार कि सालोमिन आने से इन्कार कर देगा या कोई दूसरा दिन भी निश्चित करेगा, सिप्यागिन एक क्षण के लिए भी मन में न ला सकता था, यद्यपि अपने पत्र में स्वयं उसी ने दिन के सम्बन्ध में सालोमिन को छूट दी थी।

"पर हमारा तो कागज का मिल है, सूत का नहीं," वैलेन्तिना ने कहा।

"सब एक ही बात है डार्लिङ्ग, मशीनरी इसमें भी है और मशीनरी उसमें भी······और वह है मशीन का जानकार।"

"पर वह शायद विशेषज्ञ है न।"

"डार्लिङ्ग—पहली बात तो यह है कि रूस में कोई विशेषज्ञ हैं नहीं और दूसरे, मै फिर कहता हूँ कि वह मशीन का जानकार है।"

वैलेन्तिना मुस्कराई।

"पर जरा होशियार रहना, माई डियर; एक बार तुम नौजवानों के मामले में धोखा खा चुके हो, कहीं दूसरी बार भी भूल न हो जाय।"

"तुम्हारा मतलब है नेज्दानौफ़ के बारे में, पर मेरा खयाल है मेरा उद्देश्य तो कम-से-कम पूरा हो ही गया; वह कोल्या के लिए बढ़िया शिक्षक है और इसके अतिरिक्त तुम जानती हो······मेरा मतलब है एक ही घटना दो बार नहीं हुआ करती।"

"तुम समझते हो नहीं होती ? पर मेरा ख्याल है दुनिया में हर चीज़ दुबारा होती है·······खास तौर पर जहाँ तक चीज़ों के स्वभाव

का सवाल है……विशेषकर नौजवानों के मामले में।"

"क्या कहना चाह रही हो तुम?" सिप्यागिन ने पुस्तिका को बड़ी खूबसूरती के साथ मेज़ पर फेंकते हुए पूछा।

"ज़रा अपनी आँखें खोलकर देखो। श्रीमती सिप्यागिन ने उत्तर दिया।

"हूँ।" सिप्यागिन ने कहा, "तुम्हारा इशारा उस विद्यार्थी की तरफ है?"

"श्रीमान विद्यार्थी जी की तरफ— हाँ।"

"हूँ! क्या उसने…"(उसने अपने माथे पर हाथ फेरा…) "यहाँ कुछ सिलसिला शुरू कर दिया है? ऐं?"

"अपनी आँखें खोलो।"

"मेरियाना? ऐं?" (यह दूसरा 'ऐं' पहले से निश्चित ही अधिक आनुनासिक था)।

"अपनी आँखें खोलो, सच कहती हूँ।"

सिप्यागिन की भृकुटी तन गई।

"ठीक है उसका बाद में इन्तज़ाम करेंगे। इस समय मैं सिर्फ एक ही बात कहना चाहता था…यह आदमी शायद जरा कुछ घबराया-सा महसूस करेगा…और खैर यह काफी स्वाभाविक भी है, सोसाइटी की उसे आदत नहीं होगी। इसलिए हमें उसके साथ ज़रा मित्रतापूर्ण व्यवहार करना होगा…ताकि भड़क न जाय। मैं यह तुम्हारे लिये नहीं कह रहा हूँ; तुम तो लाजवाब हो, और किसी को भी पलक मारते वश में कर सकती हो, यदि तुम चाहो। मैं यह दूसरे लोगों के बारे में कह रहा हूँ, जैसे हमारे ये दोस्त।"

उसने एक ओर को रखी एक फैशनेबल भूरी टोपी की ओर इशारा किया, टोपी मि० कैलोम्येत्सेफ की थी जो उस दिन सवेरे जल्दी ही अरजानों में आ गये थे।

"वह इतना मुँहफट है तुम जानती हो; लोगों से उसे इतनी तीव्र

घृणा है, जो मैं बहुत ही नापसन्द करता हूँ। कुछ दिनों से मैंने उसमें एक तरह का चिडचिडापन और झगड़ालूपन भी महसूस किया है··· उसका वह छोटा-सा मामला उस क्षेत्र में" (सिप्यागिन ने अपना सिर अनिश्चित दिशा में हिलाया, पर उसकी पत्नी उसका इशारा समझ गई)," ठीक से नहीं चल रहा है ? एँ ?"

"अपनी आँखें खोलो ! मैं फिर कह रही हूँ।"

सिप्यागिन उठकर खड़ा हो गया।

"ऐं ?" यह 'ऐं' बिल्कुल ही दूसरे प्रकार का था, और उसका स्वर भी भिन्न था और कुछ नीचा था। "सच कह रही हो ! मै कहीं ज़्यादा न खोल बैठूँ अपनी आँखें, लोग होशियार रहें।"

"यह तो तुम जानो; पर जहाँ तक तुम्हारे इस नये नौजवान का सवाल है, यदि वह आज ही आता है तो तुम्हें परेशान होने की जरूरत नहीं है···सब इन्तज़ाम ठीक रहेगा।"

और असल में तो किसी इन्तज़ाम या सावधानी की ज़रूरत ही नहीं पड़ी। सालोमिन तनिक भी न तो घबराया हुआ था न डरा हुआ। जब नौकर ने उसके आने की सूचना दी, तो सिप्यागिन तुरन्त उठ खड़ा हुआ, और इतनी ज़ोर से चिल्लाकर उसने यह कहा कि बड़े कमरे तक में सुनाई पड़ जाय, "उन्हें ऊपर ले आओ, ज़रूर उन्हें ऊपर ही ले आओ !" वह स्वयं भी ड्राइंग रूम के दरवाजे के पास जाकर उसके ठीक सामने खड़ा हो गया। सालोमिन मुश्किल से ड्योढ़ी में से घुसा ही होगा कि सिप्यागिन ने, जिससे वह करीब-करीब टकरा गया, अपने दोनों हाथ उसकी ओर बढ़ा दिये, और बड़ी मिलनसारी से मुस्कराते और सिर हिलाते हुए बड़े सौजन्य से कहा, "सचमुच बड़ा अच्छा किया···आपने !···मै बहुत ही आभारी हूँ !" और उसे वैलेन्निना की ओर ले गया।

"ये हैं मेरी पत्नी" उसने बड़े धीमे से अपना हाथ सालोमिन का पीठ पर दबाते, और मानो उसे वैलेन्निना की ओर ठेलते हुए कहा,

"ओर ये हैं, माई डियर, हमारे प्रमुख मशीनों के विशेषज्ञ और कारखाने-दार, वैलिसी···फेदोस्येविच सालोमिन।"

श्रीमती सिप्यागिन उठ खड़ी हुईं। अपनी अपूर्व बरौनियों को ऊपर की ओर सुन्दर ढंग से कँपाते हुए पहले तो उसकी ओर देखकर मुस्कराईं—साधारण ढंग से मानो किसी मित्र को देखकर मुस्करा रही हो। फिर उसने अपनी हथेली ऊपर करके अपना छोटा-सा हाथ आगे बढ़ा दिया, उसकी कुहनी सामने कमर से सटी हुई थी और उसका सिर हाथ की ही दिशा में झुका हुआ था···एकदम याचक की मुद्रा में। सालोमिन ने पति-पत्नी दोनों में से किसी की भी किसी चाल में कोई बाधा न डाली। उसने दोनों से हाथ मिलाये और बैठने के पहले आमन्त्रण पर ही एक स्थान ग्रहण कर लिया। सिप्यागिन उसके बारे में कुछ भाग-दौड़ परेशानी का-सा भाव प्रकट करने लगा, "कुछ ये लेंगे नहीं ?" इत्यादि। पर सालोमिन ने उत्तर दिया कि उसे किसी चीज़ की आवश्यकता नहीं है, रास्ते में कोई थकान नहीं हुई, और इसलिए पूरी तरह वह उनकी सेवा के लिये प्रस्तुत है।

"आपका मतलब है कि मै आपके कारखाने में चलने का अनुरोध कर सकता हू ?" सिप्यागिन ने जोर से कहा, मानो उसके कथन से बिलकुल गद्‌गद हो गया हो, और उसे अपने अतिथि की इतनी कृपा पर विश्वास करना कठिन लग रहा हो।

"तुरन्त," सालोमिन ने उत्तर दिया।

"आह, आप कितने सज्जन हैं ! क्या गाड़ी मँगवाऊँ ? या शायद आप चलना पसन्द करें···?'

"क्यों, यहाँ से बहुत दूर नहीं है, मेरे खयाल से, आपका कार-खाना ?"

"आधा मील, अधिक नहीं।"

"तब फिर गाड़ी का क्या कीजियेगा ?"

"आह, तब तो बहुत ही अच्छा है ! ओ लड़के ! मेरी टोपी,

छड़ी, फौरन ! और आप श्रीमती जी, कुछ तकलीफ कीजिये और हम लोगों के लिए बढ़िया भोजन तैयार करवा रखिये । मेरी टोपी !"

सिप्यागिन अपने अतिथि की अपेक्षा कहीं अधिक घबराया हुआ था । फिर एक बार दुहराते हुए 'पर मेरी टोपी कहाँ है ?" वह, महामहिम महोदय, कमरे से इस प्रकार निकले मानो कोई शरारती स्कूली लड़का हो । जिस समय सिप्यागिन सालोमिन से बात कर रहा था, वैलेन्निना इस 'नये नौजवान' को आँख बचाकर पर गौर से देख रही थी । वह शान्त भाव से अपनी आराम कुर्सी पर बैठा था, उसके नंगे हाथ (अन्ततः उसने दस्ताने नहीं ही पहने थे) उसके घुटनों पर पड़े थे, और बड़े सहज भाव से, यद्यपि कुछ कौतूहल से, वह फर्नीचर और चित्रों को देख रहा था । "क्या बात है ?" वह सोचने लगी; "है तो यह नीचे दर्जे का ही आदमी···इसमें तो कोई शक नहीं···पर बड़े स्वाभाविक ढंग से व्यवहार कर रहा है !"

सालोमिन सचमुच बड़ी स्वाभाविकता से व्यवहार कर रहा था, वैसे नहीं जैसे कुछ वास्तव में सीधे लोग करते हैं, पर एक प्रकार की तीव्रता के साथ, मानो कह रहा हो, "लो देख लो मुझे, समझ लो मैं किस तरह का आदमी हूँ," ऐसे आदमी की भाँति जिसके विचार और भावनाएँ जटिल हुए बिना ही दृढ़ हों । श्रीमती सिप्यागिन चाहती थीं कि उसके साथ कुछ बातचीत शुरू करें, पर उसे इस बात से बड़ा विस्मय हुआ कि तुरन्त ही उसे कोई बात न सूझ सकी ।

"हे भगवान् !" वह सोचने लगी, "क्या मैं इस मज़दूर से प्रभावित हो रही हूँ ?"

"बोरिस ऐन्ड्रीइच को, आपका बड़ा आभारी होना चाहिये," उसने आखिरकार कहा, "कि आपने अपना थोड़ा-सा बहुमूल्य समय उनके लिए निकालना स्वीकार कर लिया···"

"वह इतना भारी बहुमूल्य नहीं है, देवीजी" सालोमिन ने उत्तर दिया, "और मैं कोई बहुत देर के लिये आपके यहाँ आया भी नहीं हूँ ।"

वैलेन्निना की समझ में न आया कि आगे क्या करे, पर उसी समय उसके पति महोदय टीपी लगाये और छड़ी हाथ में लिये हुए दरवाज़े में प्रगट हो गए।

आधा घूमकर उसने बड़ी आसानी और उन्मुक्तता के साथ ज़ोर से कहा, "वैसिली फैदोस्येविच ! चलने के लिए तैयार हैं ?"

सालोमिन उठ खड़ा हुआ, उसने झुककर वैलेन्निना का अभिवादन किया और सिप्यागिन के पीछे चल पड़ा।

"इधर से, इधर से आइये वैसिली फैदोस्येविच !" सिप्यागिन ने पुकारा मानो किसी जंगल में होकर जा रहे हों और सालोमिन को किसी मार्गदर्शक की आवश्यकता हो। "इधर से ! यहाँ सीढ़ियाँ हैं, वैसिली फैदोस्येविच।"

"जब आप मुझे मेरे पिता के नाम से पुकारने की कृपा कर ही रहे हैं," सालोमिन ने जान-बूझकर कहा ······"तो मैं फैदोस्येविच नहीं, फेदोतिच हूँ।"

सिप्यागिन ने चिहुँक कर पीछे मुड़कर उसकी ओर देखा।

"आह ! क्षमा कीजिए, सचमुच, वैसिली फेदोतिच।"

"नहीं, नहीं, कोई बात नहीं है।"

वे लोग बाहर घेरे में पहुँच गए। वहाँ कैलोम्येत्सेफ़ से भेंट हो गई।

"आप कहाँ चल दिए ?" उसने प्रश्नसूचक दृष्टि से सालोमिन की ओर देखते हुए पूछा। "कारखाने की तरफ ? यही हैं वह महाशय ?"

सिप्यागिन ने अपनी आँखें एकदम चौड़ी खोल दीं और सावधान करते हुए सिर हिलाया।

"हाँ, कारखाने की तरफ़······अपने पाप और भूलें, मशीनों के विशेषज्ञ, इन सज्जन को दिखाने। आप लोगों का परिचय करा दूँ। मि० कैलोम्येत्सेफ़, हमारे यहाँ के पड़ौसी; मि० सालोमिन······"

कैलोम्येत्सेफ़ ने दो बार ऐसे अपना सिर हिलाया कि मुश्किल से

दिखाई पड़ा होगा, और वह भी सालोमिन की ओर को नहीं, और उसकी ओर देखे बिना ही। पर सालोमिन कैलोम्येत्सेफ़ की ओर ताक रहा था, और उसकी अधमुँदी आँखों में किसी चीज़ की चमक थी।

"क्या मैं आपके साथ चल सकता हूँ ?" कैलोम्येत्सेफ़ ने पूछा। "आप जानते हैं कि मैं सीखना पसन्द करता हूँ।"

"अवश्य, आइये।"

वे लोग अहाते से निकलकर सड़क पर आ गए और बीस क़दम ही गये होंगे कि उन्होंने सामने से पेटी तक अपनी पोशाक अटकाये स्थानीय पादरी को अपने घर की ओर जाते हुए देखा। कैलोम्येत्सेफ़ तुरन्त अपने दोनों साथियों को छोड़कर, लम्बे-लम्बे दृढ़ क़दम रखता हुआ पादरी की ओर, जो इसकी आशा न कर रहा था इसलिए कुछ हतप्रभ-सा हो गया, बढ़ गया और उससे आशीर्वाद माँगने लगा; साथ ही पादरी के भीगे हुए लाल हाथ पर एक सशब्द चुम्बन अंकित करके वह सालोमिन की ओर मुड़ा और उस पर एक चुनौती-भरी नज़र डाली। वह स्पष्ट ही उसके बारे में 'एक-दो बातें' जानता था, और इस विद्वान् शैतान के लिए अपनी घृणा प्रदर्शित करना और उस पर अपना रौब जमाना चाहता था।

"इस प्रदर्शन की क्या आवश्यकता थी भाई ?" सिप्यागिन के अपने दाँतों के बीच से बुदबुदा कर कहा।

कैलोम्येत्सेफ़ ने फुफकार भरी।

"कभी-कभी थोड़ा-बहुत प्रदर्शन भी ज़रूरी होता है!"

वे लोग कारखाने में जा पहुँचे। वहाँ उनकी एक छोटे रूसी से भेंट हुई जिसकी बड़ी-सी दाढ़ी और बनावटी दाँत थे और जो सिप्यागिन के जर्मन को निकाल देने के बाद उसकी जगह सुपरिण्टेंडेंट नियुक्त हुआ था। यह छोटा रूसी अस्थायी एवज़ी था; स्पष्ट ही वह व्यापार के बारे में कुछ भी नहीं जानता था और "सम्भव है" तथा "यही बात है," लगातार दोहराते रहने और आहें भरने के अलावा और कुछ न

कर सकता था।

कारखाने का निरीक्षण शुरू हुआ। कारखाने के कुछ मज़दूर सालोमिन को शक्ल से पहचानते थे और उन्होंने उसको झुककर अभिवादन किया......एक से उसने यह तक कहा, "ओहो ग्रिगरी! तुम यहाँ?" उसने शीघ्र ही समझ लिया कि इन्तज़ाम बहुत खराब है। रुपया तो काफ़ी लगाया गया था पर बेसमझी के साथ। मशीनें घटिया दर्जे की थीं; बहुत-सी अनावश्यक और बेकार थीं; बहुत-सी ज़रूरी मशीनें थी ही नहीं। सिप्यागिन बार-बार सालोमिन की राय जानने के लिए उसके मुख की ओर ताकता जाता था। उसने कुछ साधारण से सवाल भी पूछे और यह जानना चाहा कि कम-से-कम कारखाने की पद्धति से तो वह प्रसन्न हुआ होगा।

"पद्धति तो सब ठीक है," सालोमिन ने उत्तर दिया, "पर उससे कुछ मुनाफ़ा भी होता है? मुझे तो शक है।"

सिप्यागिन ही नहीं, पर कैलोम्येत्सेफ़ तक को लगा कि सालोमिन कारखाने में जैसे जल में मगर की भाँति था, उसकी हर चीज़ से वह भली भाँति परिचित था और छोटी-से-छोटी चीज तक समझता था—संक्षेप में यहाँ वही स्वामी था। उसने एक मशीन पर ऐसे हाथ रखा जैसे हाँकने वाला किसी घोड़े की गर्दन पर रखता है; उसने एक पहिये में उँगलियाँ डालीं तो वह या तो चलते से रुक गया या घूमने लगा; उसने अपने हाथ में थोड़ी-सी लुगदी उठा ली जिससे कागज़ बनता था, और तुरन्त उसके सारे ऐब सामने आ गये। सालोमिन बहुत कम बोला; छोटे रूसी की ओर तो उसने देखा तक नहीं; चुपचाप ही वह कारखाने से बाहर भी निकल आया। सिप्यागिन और कैलोम्येत्सेफ़ भी उसके पीछे-पीछे निकल आये।

सिप्यागिन ने किसी से अपने साथ चलने को नहीं कहा, वह पैर पटक रहा था और दाँत पीस रहा था। वह बहुत ही परेशान था।

"मुझे आपके चेहरे से लग रहा है," उसने सालोमिन से कहा,

"कि आप मेरे कारखाने से खुश नहीं हुए और मैं स्वयं भी जानता हूँ कि वह असंतोषजनक स्थिति में है और मुनाफ़े में भी नहीं चल रहा है; किन्तु......कृपा करके यह बताने में संकोच न कीजिए...... उसकी सबसे बड़ी-बड़ी खामियाँ क्या हैं ? और उसे सुधारने के लिए क्या करना होगा ?"

"कागज़ बनाना तो मेरे क्षेत्र में है नहीं," सालोमिन ने उत्तर दिया, "पर एक बात मैं आपको बता सकता हूँ—औद्योगिक कारबार ज़मींदारों की चीज़ नहीं है।"

"आप इस तरह के काम को ज़मींदारों के लिए नीचा समझते हैं," कैलोम्येत्सेफ़ ने पूछा।

सालोमिन की सुपरिचित फैली हुई मुस्कराहट प्रकट हो गई।

"ओह, नहीं ! आपने भी खूब कहा ! इसमें नीचे की क्या बात है ? और अगर होती भी तो ज़मींदार लोग इस बारे में ज्यादा सोच-फिकर नहीं करते, आप जानते ही हैं।"

"ऐं ? क्या मतलब ?"

"मेरा केवल यह अभिप्राय था," सालोमिन ने बड़ी शान्ति के साथ फिर से कहना शुरू किया, "ज़मींदार इस तरह के काम के अभ्यस्त नहीं हैं। उसके लिए व्यावसायिक सूझ की ज़रूरत होती है; हर चीज़ अलग ढंग से चलानी होती है; उसके लिए शिक्षा चाहिये। ज़मींदार यह बात नहीं समझते। हम देखते हैं कि ज़मींदार हर तरफ़ दायें-बायें कपड़े के, ऊन के और तरह-तरह के कारखाने लगा रहे हैं, पर थोड़ी-बहुत देर बाद ये सब कारखाने व्यापारियों के हाथ में ही पहुँच जाते हैं। यह बड़े दुःख की बात है, क्योंकि व्यापारी भी उतने ही भारी खून चूसने वाले हैं, पर इसका कोई उपाय नहीं है।"

"आपकी बात सुनकर तो," कैलोम्येत्सेफ़ ने जोर से कहा, "यह आशंका होने लगती है कि रुपये-पैसे का मामला ज़मींदारों की समझ से बाहर की चीज़ है !"

"ओह, ठीक इसके विपरीत ! ज़मींदार उसमें तो अव्वल नम्बर उस्ताद है ! रेलों के लिए सुविधाएँ प्राप्त करने में, बैंकें स्थापित करने में, अपने लिए करों की छूट माँगने में या इसी तरह की किसी चीज़ में तो ज़मींदारों का कोई मुकाबला नहीं। पूँजी भी वे लोग बड़ी-बड़ी इकट्ठी कर लेते हैं। अभी-अभी जब आपने बुरा मानने की कृपा की थी, तो मैं इसी बात की ओर संकेत कर रहा था। पर मेरा मतलब है बाकायदा औद्योगिक कारबार से। मैं कहता हूँ बाकायदा, क्योंकि निजी ताड़ीखाने और छोटी-छोटी मोटरों की मरम्मत की दूकानें स्थापित करना, और किसानों को गेहूँ या रुपया १०० या १५० फ़ीसदी सूद पर उधार देना, जो हमारे बहुत से ज़मींदार आजकल कर रहे हैं— ऐसी सब चीज़ों को सच्चा व्यावसायिक कार्य नहीं मानता।"

कैलोम्येत्सेफ़ ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह उसी महाजन ज़मींदार की श्रेणी का ही व्यक्ति था जिसका मार्केलौफ़ ने अपनी पिछली बातचीत में नेज़दानौफ़ से जिक्र किया था और क्योंकि उसका व्यक्तिगत काम किसान से नहीं पड़ता था इसलिए वह अपने शोषण में और भी निर्मम था। वह किसानों को अपने सुगन्ध से भरे यूरोपीय अध्ययन कक्ष में कभी थोड़े ही आने देता था, एक दलाल की मार्फ़त उसका सब कामकाज चलता था। सालोमिन की जानबूझ कर दी गई, पर मानो निष्पक्ष वक्तृता को सुनकर भीतर-ही-भीतर उसका खून खौल उठा था······पर इस बार वह चुप रहा आया और केवल उसके चेहरे की तनी हुई नसों से ही उसके मन की भावनाओं का कुछ अनुमान लगता था।

"पर वैसिली फ़ेदोतिच, मुझे यह कहने की इजाज़त दीजिये—इजाज़त दीजिये," सिप्यागिन ने शुरू किया, "कि जो कुछ आप कह रहे हैं वह पिछले ज़माने के लिए तो सही आलोचना थी, ज़मींदारों को······ एकदम भिन्न सुविधाएँ प्राप्त थीं और वे एकदम भिन्न स्थिति में थे। पर आजकल इन तमाम लाभदायक सुधारों के बाद······अपने इस

औद्योगिक युग में, ज़मींदार अपनी शक्तियों और योग्यताओं को ऐसे कारबारों में क्यों नहीं लगा सकते ? जो चीज़ सीधे-सादे, प्रायः अशिक्षित व्यापारी की समझ में आ जाती है, उसे वे लोग क्यों नहीं समझ सकते ? उनमें शिक्षा की कमी नहीं है और यकीकन यह भी दावा किया जा सकता है कि किसी हद तक शिक्षा और प्रगति के वे प्रतिनिधि हैं।"

बोरिस ऐन्द्रिविच बहुत अच्छा बोले, उनकी धाराप्रवाह वक्तृता का पीटर्सबर्ग में—उनके विभाग में—या और भी ऊँचे क्षेत्रों में, बड़ा भारी प्रभाव पड़ता, पर सालोमिन पर उसका तनिक भी कोई असर न हुआ।

"ज़मींदार इन चीजों को चला नहीं सकते।" उसने दोहराया।

"पर क्यों नहीं ! क्यों ?" कैलोम्येत्सेफ़ ने करीब-करीब चिल्लाकर कहा।

"क्योंकि वे लोग सदा अफ़सर ही बने रहेंगे।"

"अफ़सर ?" कैलोम्येत्सेफ़ विद्वेषपूर्ण हँसी हँसा। "मेरा अनुमान है आप ठीक समझ नहीं रहे हैं कि आप क्या कह रहे है, मि० सालोमिन।" सालोमिन पहले की तरह ही मुस्कराता रहा।

"यह अनुमान आपने कैसे लगाया, मि० कोलोमेत्सैफ़ ?" (अपने नाम के ऐसे 'भ्रष्टीकरण' से कैलोम्येत्सेफ़ निश्चित रूप से काँप उठा।) "नहीं, मैं हमेशा पूरी तरह समझता हूँ कि मैं क्या कह रहा हूँ।"

"तो फिर समझाइये कि आपका उस बात से क्या मतलब था।"

"अवश्य, मेरे विचार से हर अफ़सर बाहर का आदमी होता है, और हमेशा ऐसा ही रहा है, और अब ज़मींदार लोग बाहर के हो गये हैं।"

कैलोम्येत्सेफ़ और भी ज़ोर से हँसा।

"क्षमा कीजिये महाशयजी, मैं तो आपकी बात का सिर-पैर कुछ न समझ सका।"

"यह तो आपके लिए और भी अधिक बुराई की बात हुई। ज़रा ज्यादा प्रयत्न कीजिए······शायद आपकी समझ में आ ही जाय।"

"महाशय !"

"सज्जनो, सज्जनो," सिप्यागिन ने जल्दी से बीच में ऐसे टोका मानो अपने चारों और सचमुच किसी को खोज रहा हो, । "महरबानी करके, महरबानी करके······और कैलोम्येत्सेफ़ आप भी ज़रा शान्त रहिये। और निस्संदेह भोजन जल्दी ही तैयार होने वाला होगा। आइये, आइये, मेरे साथ आइये।"

"वैलेन्निना मिहालोवना !" पाँच मिनट बाद उसके कमरे में झपटते हुए कैलोम्येत्सेफ़ ने रिरियाकर कहा, "सचमुच पता नहीं आपके पति महोदय क्या करने पर उतारू हैं ! आप लोगों के बीच एक शून्य-वादी को तो पहले से जमा ही रखा था, अब वह एक को और ला रहे हैं ! और यह वाला सबसे ख़राब है।"

"वह कैसे ?"

"ईमान से, मालूम नहीं वह क्या करना चाहता है, और इसके अलावा—एक बात तो देखिये, वह आपके पतिदेव से पूरे एक घण्टे से बात कर रहा है पर उसने एक बार भी, कभी भी, 'महामहिम' नहीं कहा ! गुण्डा कहीं का !"

चौबीस

भोजन के पहले सिप्यागिन ने अपनी पत्नी को एक कमरे में अलग बुलाया। वह उससे अकेले में कुछ बात कर लेना चाहता था। वह चिंतित जान पड़ता था। उसने वैलेन्निना से कहा कि कारखाना सचमुच बहुत बुरी हालत में है और यह आदमी सालोमिन बहुत ही योग्य जान पड़ता है, हालाँकि थोड़ा-सा जल्दबाज है शायद, और उसके साथ सौजन्यता का व्यवहार करते रहना ज़रूरी है। "आह ! हम लोग किसी तरह उसे यहाँ आ जाने के लिए राज़ी कर सकें तो कितना अच्छा हो।" उसने दो बार दोहराया। सिप्यागिन कैलोम्येत्सेफ़ की उपस्थिति से बहुत चिढ़ रहा था...... "जाने क्यों यहाँ आ पड़ा है। उसे हर तरफ शून्यवादी ही दिखाई पड़ते हैं, और उन्हें खत्म करने के अलावा उसे कुछ सूझता ही नहीं। खुशी से खत्म करे उनको अपने घर पर। उसका बिल्कुल भी काबू नहीं है अपनी ज़बान पर।"

वैलेन्निना ने कहा कि वह तो इस नये अतिथि के साथ यथासम्भव अच्छा व्यवहार करके प्रसन्न होती, पर वह तो इस सबकी परवाह करता ही नहीं जान पड़ता, और न लगता है कि वह उनकी ओर

ध्यान देता है। यह नहीं कि वह अशिष्ट है, पर एक तरह से बहुत ही शान्त है जो निचले दर्जे के आदमी में बड़ी अचरज की बात लगती है।

"कोई हर्ज नहीं·········अपनी तरफ़ से तुम कुछ उठा न रखो।" सिप्यागिन ने उससे अनुरोध किया। वैलेन्तिना ने कुछ न उठा रखने का वचन दिया और सचमुच ही उसने कुछ भी न उठा रखा। उसने सबसे पहले हो कैलोम्येत्सेफ़ से कुछ एकान्त में बातचीत की। यह तो नहीं कहा जा सकता कि उसने क्या कहा होगा, पर वह खाने की मेज़ पर ऐसे व्यक्ति की भाँति आया जिसने यह वचन दे दिया हो कि चाहे जो सुनना पड़े वह चुप रहेगा और कोई जल्दबाज़ी न करेगा। इस समयोचित उदासीनता ने उसके समूचे बर्ताव पर हल्की-सी उदासी की एक छाया डाल दी थी; पर क्या शान·········ओह! उसकी प्रत्येक गतिविधि में क्या शान थी। वैलेन्तिना ने सालोमिन का परिवार के सब लोगों से परिचय कराया—मेरियाना की ओर ही उसने सबसे अधिक ध्यान से देखा—और भोजन के समय उसे अपनी दायीं ओर बिठाया। कैलोम्येत्सेफ़ उसकी बायीं तरफ था। खाने के समय की तौलिया को खोलने के साथ-साथ उसके चेहरे पर एक ऐसी मुस्कान आ गई जो कहती जान पड़ती थी, "चलो, अब यह तमाशा भी पूरा हो जाने दें।" सिप्यागिन उसके ठीक सामने बैठा था और कुछ चिन्ता के भाव से उसकी ओर देखता जाता था। श्रीमती सिप्यागिन द्वारा बैठने के स्थानों में इस परिवर्तन के फलस्वरूप, नेज्दानौफ़ की जगह मेरियाना के पास होने की बजाय अन्ना जाहारोव्ना और सिप्यागिन के बीच में पड़ी थी। मेरियाना को अपना कार्ड (क्योंकि डिनर काफी नियमानुकूल रीति से हुआ था) कैलोम्येत्सेफ़ और कोल्या के बीच तौलिया पर रखा मिला था। भोजन बड़े भारी-भरकम ढंग से परोसा गया था, 'मेनू' भी था—हर छुरी-काँटे के पास एक-एक सजा हुआ कार्ड रखा था। शोरबे के बाद तुरन्त ही सिप्यागिन ने फिर अपने कारखाने की बातचीत चला

दी और आमतौर पर रूस में कारखानों तथा उद्योग की चर्चा होने लगी, सालोमिन अपनी आदत के अनुसार संक्षिप्त से उत्तर देता रहा। जैसे ही वह बोलना शुरू करता, मेरियाना उसके ऊपर आँखे गड़ा देती। कैलोम्येत्सेफ़ उसकी बगल में ही बैठा था, उससे खास तौर से बहस न शुरू करने की प्रार्थना की गई थी, इसलिए वह बहुत-सी तारीफ़ की बातें मेरियाना से ही करने लगा, पर वह उसकी बात सुन ही नहीं रही थी। वह भी वास्तव में ये सब शिष्टाचार भरी बाते ऊपर से ही केवल अपने मन को समझाने के उद्देश्य से कह रहा था, वह यह अनुभव करता था कि उसके तथा इस लड़की के बीच ऐसी खाई है जिसे वह पार नहीं कर सकता।

जहाँ तक नेज्दानौफ़ का प्रश्न था, उसके तथा गृहस्वामी के बीच इससे भी बुरी कोई चीज़ आ गई थी············सिप्यागिन के लिए नेज्दानौफ़ किसी फरनीचर या खाली जगह की भाँति हो गया था, उसे वह तनिक भी—लगता था एकदम नहीं—देख पाता था। ये नये सम्बन्ध इतनी जल्दी और निस्संदेह रूप में बन गये थे कि जब भोजन के समय नेज्दानौफ़ के मुँह से अपने बगल में वैठी अन्ना ज़ाहारोव्ना की किसी बात पर कोई एक-दो शब्द निकल गये तो सिप्यागिन आश्चर्य से घूमकर देखने लगा था मानो अपने-आपसे पूछ रहा हो, "यह आवाज़ कहाँ से आ गई।"

स्पष्ट ही सिप्यागिन में कुछेक वे गुण भी मौजूद थे जो ऊँचे घराने के रूसियों की अपनी विशेषता है।

मछली परोसी जाने के बाद वैलेन्तिना ने—जो अपनी ओर से अपनी सारी कला और मोहिनी अपनी दायीं ओर अर्थात् सालोमिन के ऊपर लुटा रही थी—अंग्रेजी में अपने पति से कहा, "हमारे अतिथि महोदय शराब नहीं पीते, शायद वह बियर पसन्द करें।" सिप्यागिन ने ज़ोर से आदेश दिया 'एल', उधर सालोमिन ने चुपचाप वैलेन्तिना की ओर मुड़कर कहा, "मेरे ख्याल से, देवीजी, आप नहीं

जानती होंगी कि मैंने दो साल से अधिक इङ्गलैण्ड में बिताये हैं इसलिए अंग्रेजी बखूबी समझ-बोल लेता हूँ, यह बात मैंने इसलिए कही कि शायद आप मेरे सामने कोई निजी बात कहना चाहें।" वैलेन्तिना हँसी और वह उसे आश्वस्त करने लगी कि यह सावधानी अनावश्यक ही थी क्योंकि वह अपने बारे में बड़ाई के सिवाय और कुछ न सुनता। मन-ही-मन उसे सालोमिन का यह व्यवहार कुछ अजीब और अपने ढंग से बड़ा सम्भ्रमपूर्ण लगा।

इसी समय कैलोम्येत्सेफ़ आखिरकार फूट पड़ा।

"तो आप इङ्गलैण्ड में भी रह चुके हैं," उसने शुरू किया, "और शायद आपने वहाँ के रीति-रिवाज वगैरह का भी अध्ययन किया होगा। क्या मैं पूछ सकता हूँ कि उनमें से आपको कुछ अनुकरणीय भी लगे या नहीं ?"

"कुछ, हाँ; कुछ, नहीं।"

"यह बहुत संक्षिप्त उत्तर हो गया और कुछ स्पष्ट भी नहीं हुआ," कैलोम्येत्सेफ़ ने सिप्यागिन के इशारों को अनदेखा करते हुए कहा। "पर आज सवेरे ज़मींदारों-सरदारों की बात कर रहे थे···आपको निस्संदेह इंगलैण्ड के भी ज़मींदारों और उच्च घरानों के लोगों का अध्ययन करने का अवसर मिला होगा ?"

"नहीं, मुझे ऐसा कोई अवसर नहीं मिल सका। मैं बिल्कुल दूसरे ही क्षेत्र में उठता-बैठता था, पर मैंने उन लोगों के बारे में अपनी एक धारणा अवश्य बना ली थी।"

"तो क्या आपका खयाल है कि हमारे यहाँ वैसे ज़मींदार हो नहीं सकते, और कम-से-कम हमें वैसा बनने की इच्छा नहीं करनी चाहिए ?"

"पहली बात तो यह है कि मैं निश्चित ही इसे असम्भव मानता हूँ, और दूसरे मैं सोचता हूँ कि वह कोई बहुत इच्छा करने लायक चीज़ भी नहीं है।"

"ऐसा क्यों, श्रीमान् जी ?" कैलोम्येत्सेफ़ ने कहा। अंतिम सम्बोधन

सिप्यागिन को संतोष देने के लिए था जो बहुत बेचैन था और अपनी कुर्सी पर निश्चल बैठ नहीं पा रहा था।

"क्योंकि बीस या तीस वर्ष में आपके ये ज़मींदार लोग वैसे भी बाकी न रहेंगे।"

"पर सचमुच, ऐसा क्यों, श्रीमान् जी ?"

"क्योंकि तब तक ज़मीन किसी ऊँच-नीच के अन्तर के बिना उसके स्वामियों के हाथ में पहुँच चुकी होगी।"

"व्यापारियों के ?"

"शायद व्यापारियों के ही; अधिकांशतः।"

"ऐसा कैसे होगा ?"

"क्यों, उनके खरीद लेने से—मेरा मतलब है वे लोग भूमि खरीद लेंगे।"

"ज़मींदारो से ?"

"हाँ, ज़मींदारों से।"

कैलोम्येत्सेफ़ बडी कृपा के भाव से बनावटी हँसी हँसा। "आपने यही बात, मुझे याद पडता है, मिलों और कारखानों के बारे मे पहले कही थी, अब आप यह सारी ज़मीन के बारे में भी कह रहे हैं।"

"हाँ, अब मै यही बात सारी ज़मीन के बार में कहता हूँ।"

"और आपको शायद इससे बडी प्रसन्नता होगी, सोचता हूँ ?"

"बिल्कुल नही, जैसा कि मै पहले आपको बता चुका हूँ; जनता इसके फलस्वरूप अधिक सुखी नहीं होगी।"

कैलोम्येत्सेफ़ ने अपना एक हाथ हलका-सा उठाया। "जनता की भलाई की कितनी चिन्ता है, कल्पना कीजिये।"

"वैसिली फेदोतिच !" सिप्यागिन ने यथासम्भव ऊँची आवाज़ मे कहा, "आपके लिए बियर आ गई !"

पर कैलोम्येत्सेफ़ चुप होने वाला न था।

"देखता हूँ कि आपकी," उसने सालोमिन से फिर कहना शुरू किया,

"राय व्यापारियों के बारे में भी कोई अच्छा नहीं है; पर वे लोग तो जनता में से ही आये हैं, आये हैं न ?"

"तो फिर ?"

"मैं सोचता था कि आपकी नज़र में जनता से सम्बन्धित अथवा उपजी हुई हर चीज़ अच्छी होगी।"

"जी, नहीं, महाशय ! आपका यह सोचना ग़लत था। हमारी जनता में बहुत-सी बुराइयाँ हैं, हालाँकि हमेशा ग़लती उन्हीं की नहीं होती। हमारे बीच जो अभी तक व्यापारी है वह लुटेरा है; वह अपनी व्यक्तिगत सम्पत्ति को लूटने के लिए काम में लाता है······और वह भी क्या करे ? वह शोषित भी है और शोषण करता भी है। जहाँ तक जनता का सवाल है—"

"जनता ?" कैलोम्येत्सेफ़ ने उच्च स्वर में पूछा।

"जनता······जनता सोई हुई है।"

"और आप उन्हें जगाने वाले हैं ?"

"वह कोई बुरी बात न होगी।"

"आहा ! आहा ! तो यह है जो—"

"क्षमा कीजिये, क्षमा कीजिये," सिप्यागिन ने रौब के साथ फ़रमाया। वह समझ गया था कि जिसे कहते हैं, लकीर खींचने का, बहस बन्द करने का अवसर आ गया था। और उसने खींच दी लकीर। बहस उसने बंद कर दी, कलाई के पास से अपना दाँया हाथ फटकारते हुए और कुहनी को मेज़ पर टेके-टेके, उसने एक लम्बी और विस्तृत वक्तृता दे डाली। एक तरफ़ उसने कट्टरपंथियों की प्रशंसा की और दूसरी ओर उदारपंथियों को शाबासी दी, और अपने-आपको उदारपंथी समझते हुए उन्हें कुछ थोड़ा-सा अधिक समर्थन प्रदान किया। उसने जनता का गुणगान किया और साथ ही उनकी कुछ कमजोरियों का भी उल्लेख किया; सरकार में पूर्ण विश्वास की घोषणा की और साथ ही यह प्रश्न भी अपने आपसे पूछा कि क्या उसके सभी अधीनस्थ अधिकारी सरकार

के कल्याणकारी उद्देश्यों को ठीक से पूरा कर रहे हैं। उसने साहित्य की उपादेयता और उसके गौरव को स्वीकार किया, साथ ही यह घोषणा भी की कि अधिकतम सावधानी के बिना उसको स्वीकार करना संभव नहीं। उसने पूर्व की ओर दृष्टिपात किया; पहले प्रसन्नता प्रकट की, फिर कुछ संदेह भी दिखाया; पश्चिम की ओर दृष्टिपात किया, पहले उदासीनता दिखाई, फिर एकाएक जागृत हो उठा। अंत में उसने त्रिमूर्ति के सम्मान में एक टोस्ट प्रस्तावित किया : "धर्म, कृषि और उद्योग।"

"शक्ति की छत्रछाया में!" कैलोम्येत्सेफ़ ने तीखे स्वर मे जोड़ा।

"बुद्धिमान और क्षमाशील शासक की छत्रछाया में।" सिप्यागिन ने सुधारते हुए कहा।

टोस्ट चुपचाप पी लिया गया। सिप्यागिन के बाईं ओर की नेज्दा-नौफ़ नामक खाली जगह ने, यह सही है, असहमतिसूचक किसी आवाज़ को अवश्य प्रकट किया था, पर कोई ध्यान न खींच सकने के कारण फिर उसने मौन धारण कर लिया, और किसी प्रकार के वाद-विवाद के विघ्न के बिना ही भोजन संतोषजनक समाप्ति को प्राप्त हुआ।

वैलेन्निना ने बहुत ही लुभावनी मुस्कान के साथ सालोमिन को कॉफ़ी का प्याला दिया; वह उसे पीकर अपनी टोपी ढूँढने लगा था ······किन्तु तभी सिप्यागिन ने आहिस्ता से उसकी बाँह थाम ली और उसे तुरन्त ही अपने अध्ययनकक्ष मे खीच ले गया। वहाँ सालोमिन को पहले तो एक बहुत ही बढ़िया सिगार और फिर सिप्यागिन के कारखाने में बहुत ही लाभदायक शर्तों पर काम स्वीकार कर लेने का प्रस्ताव पेश किया गया। "आप एकछत्र स्वामी होंगे, वैसिली फेदोतिच, एकछत्र स्वामी!" सालोमिन ने सिगार तो स्वीकार कर लिया; प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया, और सिप्यागिन के बहुत ज़ोर देने पर भी वह अपनी अस्वीकृति पर निश्चित रूप से अड़ा रहा।

"एकदम 'नहीं' मत कहिये, वैसिली फेदोतिच जी। कम-से-कम यह तो कहिए कि कल तक सोचकर उत्तर देंगे।"

"पर उससे कोई अंतर नहीं पड़ेगा। मैं आपका प्रस्ताव स्वीकार कर ही नहीं सकूँगा।"

"कल तक ! वैसिली फेदोतिच ! कल तक निर्णय रोक रखने से आपका क्या नुक्सान होगा ?"

सालोमिन ने स्वीकार किया कि इससे अवश्य ही कोई नुक्सान न होगा······किन्तु वह उस कमरे से निकल आया और फिर अपनी टोपी ढूँढ़ने लगा। पर नेज्दानौफ़, जो उस क्षण तक उससे एक शब्द भी नहीं बोल पाया था, जल्दी से उसकी ओर बढ़ आया और धीमे से बोला, "भगवान के लिए, चले मत जाइयेगा, नहीं तो हम लोगों के लिए बात-चीत करना असम्भव हो जायगा।"

सालोमिन ने अपनी टोपी की तलाश छोड़ दी, विशेषकर जैसे ही सिप्यागिन ने ड्राइंग रूम में उसे कुछ अनिश्चित भाव से इधर-उधर जाते देखकर जोर से कहा, "आप आज रात तो यहीं रहियेगा न ?"

"आपकी जैसी आज्ञा," सालोमिन ने उत्तर दिया।

ड्राइंग रूम की खिड़की के पास खड़ी हुई मेरियाना ने जो उसकी ओर कृतज्ञताभरी दृष्टि डाली, उसने उसे सोच में डाल दिया।

पच्चीस

सालोमिन के आने के पहले मेरियाना ने उसकी कुछ और ही तस्वीर अपने मन में बना रखी थी। पहली बार देखने पर भी वह कुछ अनिश्चित-सा लगा था, जैसे कुछ व्यक्तित्व का अभाव हो······ऐसे बहुत-से सुन्दर बालों वाले ज़ोरावर पर दुबले लोगों को देखा है, वह सोचने लगी ! पर ज्यों-ज्यों वह उसे देखती गई, ज्यों-ज्यों उसने उसकी बातें सुनीं, त्यों-त्यों उसके ऊपर भरोसे का भाव उसके भीतर बढ़ता गया—ठीक भरोसे का ही भाव था वह।

यह शांत, भारी और कुछ-कुछ असुन्दर-सा व्यक्ति न केवल झूठ बोलने और डींग हाँकने में असमर्थ था; उसके ऊपर भरोसा किया जा सकता था, पत्थर की दीवार की भाँति······वह किसी के साथ दग़ा न करेगा; इससे भी अधिक, वह दूसरे को समझेगा, उसकी सहायता करेगा। मेरियाना ने कल्पना कर ली कि केवल उसकी यह धारणा न थी, सालोमिन सभी लोगों पर यही असर पैदा कर रहा था। सालोमिन के शब्दों को उसने कोई खास महत्त्व नहीं दिया था; व्यापारियों और कारखानों से सम्बन्धित इस चर्चा में उसकी कोई दिलचस्पी न थी;

पर उसका बात करने का ढंग, बातचीत करते समय उसके देखने और मुस्कराने का ढंग, उसे बहुत ही अच्छा लगा था……।

सच्चा आदमी है……यही बड़ी बात है ! इसी ने उसके हृदय को छुआ। यह एक सुविदित सत्य है, और इसका समझना कोई आसान नहीं है, कि रूसी लोग दुनिया में सबसे भारी झूठे होते हैं, पर तो भी जितना वे सत्य का आदर करते हैं उतना दूसरी किसी चीज़ का नहीं, दूसरी कोई चीज़ उन्हें इतना नहीं आकर्षित करती। इसके अतिरिक्त मेरियाना की नज़रों में सालोमिन खास जात का आदमी था; उसको यह सम्मान भी प्राप्त था कि वैसिली निकोलाएविच ने अपने अनुयायियों से उसकी प्रशंसा की थी। भोजन के बीच में मेरियाना ने कई बार उसे लेकर नेज़्दानौफ़ से दृष्टि-विनिमय किया था; और अंत में उसने एकाएक अनुभव किया कि वह अनचाहे ही दोनों व्यक्तियों की परस्पर तुलना कर रही है, जिसमें नेज़्दानौफ़ का पलड़ा हलका पड़ा है। नेज़्दानौफ़ का रूप-रंग निस्संदेह सालोमिन की अपेक्षा कहीं अधिक सुन्दर और आकर्षक था; पर उसके चेहरे पर बहुत-सी उलझी हुई भावनाएँ एक साथ झलकती रहती थीं, कष्ट, परेशानी, अधीरता,…निराशा भी। वह काँटों पर बैठा हुआ-सा जान पड़ता था, बोलने की कोशिश करता, एकाएक रुक जाता, बेचैनी से हँसने लगता……दूसरी ओर सालोमिन थोड़ा-सा उकताया हुआ किन्तु निस्संदेह बिल्कुल सहज लगता था; और लगता था कि वह जो कुछ भी करता या सोचता है, उसमें दूसरों के करने या सोचने से प्रभावित नहीं होता। "निश्चित रूप से हमें इस व्यक्ति से सलाह लेनी चाहिए," मेरियाना ने सोचा : "वह अवश्य ही हमें अच्छी सलाह देगा।" उसी ने भोजन के बाद नेज़्दानौफ़ को उसके पास भेजा था।

शाम बड़ी नीरसता के साथ कटी। सौभाग्यवश भोजन में काफ़ी देर लग गई थी और रात होने में बहुत अधिक देर न थी। कैलोम्येत्सेफ़ शिष्टतापूर्वक रूठा हुआ-सा था और कुछ कह नहीं रहा था।

"क्या बात है ?" वैलेन्तिना ने उससे आधे-मज़ाक में पूछा। "कुछ खो गया है क्या ?"

"यही बात है," कैलोम्येत्सेफ़ ने उत्तर दिया। "हमारी सेना के कमाण्डर की कहानी है कि वह यह शिकायत किया करता था कि उसके सिपाहियों के मोज़े खो गये हैं। 'मुझे वह मोजा ढूँढ़ दीजिये!' और मैं कहता हूँ, मुझे वह शब्द 'श्रीमान' ढूँढ़ दीजिए! वह शब्द 'श्रीमान' आजकल कुछ भटक गया है, और उसी के साथ-साथ पद की सारी इज्ज़त और श्रद्धा भी चली गई है!"

वैलेन्तिना ने घोषणा की कि वह इस खोज में उसकी सहायता करने को तैयार नहीं है।

भोजन के समय की अपनी 'वक्तृता' से साहस पाकर सिप्यागिन ने एक-दो और भाषण फटकार डाले, और ऐसा करने में उसने अनिवार्य सुधारों के सम्बन्ध में कुछ राजनीतिज्ञोचित विचार भी प्रकट किये। उसी समय उसने कुछेक कहावतें भी, जो चतुराईपूर्ण इतनी न थीं जितनी भारी-भरकम थीं, सुना डालीं जो उसने पीटर्सबर्ग के लिए तैयार की थी। उनमें से एक कहावत तो उसने दो बार कही और हर बार शुरू मे 'यदि मुझे ऐसा कहने दिया जाय,' भी जोड़ा। जिक्र असल में एक तत्कालीन मंत्री की आलोचना से सम्बन्धित था, जिसके बारे में उसने कहा कि उसकी बुद्धि हलकी है और किसी चीज़ पर जमती नहीं और कल्पित लक्ष्यों की ओर दौड़ती रहती है। दूसरी ओर उसे यह बात भी याद थी कि उसके सामने एक रूसी—जनता का ही एक आदमी—बैठा हुआ है। इसलिए वह कुछ ऐसी कहावतें इस्तेमाल करना भी न भूला जिनसे यह प्रमाणित हो सके कि वह स्वयं भी न केवल पक्का रूसी रक्त का आदमी है, बल्कि सिर से पैर तक असली रूसी भालू है, और राष्ट्रीय जीवन के गहनतम सार तक से परिचित है। यह भी सही है कि उसने कुछ कहावतें ग़लत भी इस्तेमाल कीं, परन्तु जिस सभा में ये दुर्घटनाएँ हुईं उसमें से अधिकांश को यह शक भी न हुआ

कि उससे भूल हो गई है। और ये सब कहावतें और मुहावरे सिप्यागिन विशेष प्रकार की मोटी, बलिष्ठ, किसानों की सी आवाज़ में कहता था। ऐसी चीज़ें पीटर्सबर्ग में उचित स्थान और समय पर उपयोग करने से उच्चतम वर्ग की प्रभावशाली महिलाएँ और सज्जन समान रूप से गद्-गद हो जाते थे।

वैलेन्निना ने भी सालोमिन को प्रसन्न करने में अपनी ओर से कोई कोर-कसर न रखी। पर अपने प्रयत्नों को इतने स्पष्ट रूप में विफल होते देख कर वह बड़ी हतोत्साह हुई थी। और एक बार कैलोम्येत्सेफ़ के पास से निकलने पर वह दबी आवाज़ में यह कहे बिना न रह सकी, "भई मैं तो थक गई !"

इसके उत्तर में कैलोम्येत्सेफ़ ने भी कुछ व्यंगपूर्ण बात ही कही थी।

अन्त में, उठने के समय उकताये हुए लोगों के चेहरों पर झलकने वाली सामान्य शिष्टाचार और मिलनसारी के बाद, एकाएक हाथ मिलाने, मुस्कराने और अभिवादनों के बाद, थके हुए मेहमानों और थके हुए मेज़बानों ने परस्पर विदा ली।

सालोमिन को तीसरी मंजिल के लगभग सबसे अच्छे शयनगृह में पहुँचा दिया गया जिसके साथ एक स्नानगृह भी था और उसमें अंग्रेजी प्रसाधन-सामग्री रखी थी। सालोमिन सीधा नेज़्दानौफ़ के कमरे में पहुँचा।

नेज़्दानौफ़ ने छूटते ही पहले तो उसको रात को ठहर जाने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद दिया।

"मैं जानता हूँ.......आपके लिए यह बड़ा त्याग है..."

"ओह, क्या बात करते हैं !" सालोमिन ने जानबूझ कर कहा, "बड़ा त्याग है ! इसके अलावा मैं आपकी बात टाल भी तो नहीं सकता।"

"वह क्यों ?"

"ओह, क्योंकि आप मुझे अच्छे लगते हैं !"

नेज़दानौफ़ प्रसन्न भी हुआ और चकित भी। सालोमिन ने उसका हाथ दबाया। फिर वह एक कुर्सी पर बैठ गया, उसने एक सिगार सुलगा लिया और दोनों कुहनियों को कुर्सी की पीठ पर रखते हुए बोला, "चलिए, अब सुनाइये क्या बात है ?"

नेज़दानौफ़ भी उसके सामने ही एक कुर्सी पर बैठ गया, पर उसने सिगार नहीं जलाया।

"क्या बात है, आप पूछते हैं ?···बात यह है कि मैं यहाँ से भाग जाना चाहता हूँ।"

"यानी आप यह स्थान छोड़ना चाहते हैं ? अच्छा तो फिर ? मेरी शुभकामनाएँ।"

"छोड़ना नहीं···भाग जाना।"

"क्यों ? क्या ये लोग आपको रोके रखे हैं ? आपने······शायद आपने कुछ वेतन पेशगी ले रखा है। यदि ऐसा है तो आपके कहने भर की देर है···मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी।"

"आप मेरी बात समझे नहीं, सालोमिन भाई···मैंने कहा भाग जाना चाहता हूँ—स्थान छोड़ना नहीं—क्योंकि मैं यहाँ से अकेला नहीं जा रहा हूँ।"

सालोमिन ने सिर उठाया।

"किसके साथ ?"

"उस लड़की के साथ जिसे आपने आज यहाँ देखा है···"

"वह लड़की ! उसका मुख बहुत अच्छा है। आप लोग एक-दूसरे को प्यार करते हैं न, ऐं ?···या केवल यह बात है कि आप लोग दोनों एक साथ उस घर से चले जाना चाहते हैं जहाँ आप दोनों दुःखी हैं ?"

"हम लोग एक-दूसरे को प्यार करते हैं।"

"आह !" सालोमिन पल भर चुप रहा। "क्या वह यहाँ के लोगों

की कोई रिश्तेदार है ?"

"हाँ ! पर वह पूरी तरह हमारे आदर्शों से सहमत है, और आगे बढ़ने को तैयार है ।"

सालोमिन मुस्कराया ।

"और तुम तैयार हो, नेज़्दानौफ़ ?"

नेज़्दानौफ़ की भौंहें हलकी-सी तन गईं ।

"यह प्रश्न क्यों ? मैं अपनी तैयारी काम द्वारा सिद्ध कर दूँगा ।"

"मुझे तुम्हारे ऊपर कोई शक नहीं है, नेज़्दानौफ़ । मैंने सिर्फ इस लिए पूछा कि मेरे विचार में तुम्हारे सिवाय और कोई तैयार नहीं है ।"

"और मार्केलौफ़ ?"

"हाँ, अवश्य मार्केलौफ़ भी है; पर वह, मेरे अनुमान से, तैयार ही पैदा हुआ था ।"

उसी समय किसी ने दरवाज़े को धीमे से जल्दी-जल्दी खटखटाया, और उत्तर की अपेक्षा किये बिना ही उसे खोल दिया । मेरियाना थी । वह तुरन्त सालोमिन की ओर बढ़ आई ।

"मुझे विश्वास है", उसने शुरू किया, "मुझे इस समय यहाँ देखकर आप विस्मित नहीं हुए होंगे । इन्होंने," मेरियाना ने नेज़्दानौफ़ की ओर संकेत किया, "आपको अवश्य ही सब कुछ बता दिया होगा । मुझे अपना हाथ दीजिये, और यकीन कीजिए कि एक ईमानदार लड़की आपके सामने खड़ी है ।"

"हाँ, मैं यह जानता हूँ," सालोमिन ने गम्भीरता से उत्तर दिया । वह मेरियाना के आते ही कुर्सी से उठकर खड़ा हो गया था ।"मैं भोजन के समय आपकी ओर देखकर सोचता रहा था, 'उन तरुण महिला की आँखें कितनी ईमानदार हैं !' नेज्दानौफ़ अवश्य ही मुझे आपकी योजना के बारे में बता रहे थे । पर आप ठीक-ठीक, भाग जाना क्यों चाहती हैं ?"

"क्यों ? उस लक्ष्य के लिए जो मुझे प्यारा है···आश्चर्य मत

कीजियेगा; नेज़दानौफ़ ने मुझसे कुछ छिपाया नही है···वह काम थोड़े ही दिनों में अवश्य शुरू होगा···और मै क्या इस अमीरों के घर में बन्द पड़ी रहूँगी जहाँ धोखाधड़ी और झूठ के सिवाय कुछ है ही नही ? जिन लोगों को मै प्यार करती हूँ वे संकटों में फँसे होंगे, और मैं—"

सालोमिन ने उसे अपने हाथ के इशारे से रोका।

"विचलित न होइये। बैठिये, ताकि मै भी बैठ सकूँ। तुम भी बैठ जाओ, नेज़दानौफ़। एक बात मै कह दूँ, यदि और कोई कारण नहीं है तो अभी आपके यहाँ से भागने की कोई जरूरत नहीं है। वह काम इतनी जल्दी शुरू नही होने वाला है जितना आपका अनुमान है। उस मामले में कुछ और समझदारी से विचार करने की आवश्यकता है। बिना सोचे-समझे आगे झपट पड़ना ठीक नहीं। मेरा विश्वास कीजिए।"

मेरियाना बैठ गई और उसने अपने चारों ओर एक बड़ा-सा शाल लपेट लिया।

"पर यहाँ अब एक पल भी ठहरना मेरे लिए कठिन हो रहा है। हर कोई मेरा अपमान करता है। आज ही वह मूर्ख अन्ना ज़ाहारोव्ना कोल्या के सामने मेरे पिता की ओर इंगित करके कह रही थी कि सेब कभी सेब के पेड़ से दूर नहीं गिरता। कोल्या भी यह सुन विस्मित हुआ और उसका अर्थ पूछने लगा। वैलेन्निना का तो कहना ही क्या !"

सालोमिन ने फिर उसे रोका, पर इस बार एक मुस्कान के द्वारा। मेरियाना समझ गई कि वह उसी के ऊपर थोड़ा-सा हँस रहा है, पर उसकी मुस्कान से कभी कोई अप्रसन्न न हो सकता था।

"आपका क्या मतलब है, देवीजी ? मै नही जानता कि कौन वह अन्ना ज़ाहारोव्ना है और आपके उस सेब के पेड़ का क्या मतलब है··· पर एक बात देखिये; कोई मूर्ख स्त्री आपसे कोई मूर्खतापूर्ण बात कह देती है, और आप उसे बर्दाश्त नही कर सकतीं ? आप कैसे ज़िन्दगी

में आगे बढ़ेगी ? सारी दुनिया ही मूर्खों पर टिकी हुई है। नहीं, यह कोई कारण नहीं हुआ। कोई और बात है ?"

"मुझे पक्का यक़ीन है," नेज़्दानौफ़ ने भारी आवाज़ में कहा, "कि मि० सिप्यागिन स्वयं ही मुझे एक दो दिन के अन्दर मकान से निकाल देंगे। उन्हें अवश्य ही उल्टी-सीधी पट्टी पढ़ा दी गई है। वह मेरे साथ....बहुत ही घृणास्पद ढंग से व्यवहार करते हैं।"

सालोमिन नेज़्दानौफ़ की ओर मुड़ा।

"तो फिर आप क्यों भाग जाना चाहते हैं, जब आप हर हालत में निकाले ही जाने वाले हैं ?"

नेज़्दानौफ़ को तुरन्त कोई उत्तर न सूझा।

"मैं आपसे पहले कह रहा था न—" उसने शुरू किया।

"इन्होंने वह बात इसलिये कही थी," मेरियाना ने कहा, "क्योंकि मैं भी इनके साथ जा रही हूँ।"

सालोमिन ने उसकी ओर देखा और प्रसन्न भाव से सिर हिलाया।

"हाँ,हाँ, देवीजी, पर मैं आपसे फिर कहता हूं कि अगर आप लोग इस मकान को केवल इसलिए छोड़ जाना चाहते हैं कि क्रान्ति तुरन्त ही शुरू होने वाली है—"

"इसीलिए तो हम लोगों ने आपको लिखा था," मेरियाना ने बीच ही में कहा, "कि आप आ जायें ताकि यह निश्चित हो सके कि स्थिति क्या है।"

"उस हालत में," सालोमिन ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, "मैं फिर कहता हूँ, आप घर पर ही, बहुत काफी देर तक रही आ सकती हैं। पर यदि आप इसलिए भागना चाहते हैं कि आप लोग एक-दूसरे को प्यार करते हैं और इसके सिवाय एक होने का और कोई रास्ता नहीं, तो—।"

"ठीक है, तो फिर ?"

"तो फिर मेरा काम इतना ही रह जाता है कि, जैसी पुरानी

कहावत है, आपको स्नेह और आशीर्वाद दूँ और यदि आवश्यक हो तथा सम्भव भी हो तो, यथासम्भव आपकी सहायता करूँ। क्योंकि, देवीजी, आपको, और इनको भी, पहली बार देखकर ही इस तरह से स्नेह करने लगा हूँ, जैसे आप मेरे अपने बहन और भाई हों।"

मेरियाना और नेज़्दानौफ़ दोनों आगे बढ़कर उसके दायें और बायें जा खड़े हुए और दोनों ने उसका एक-एक हाथ पकड़ लिया।

"बस हमें यह बताइये, क्या करें ?" मेरियाना बोली, "मान लें कि क्रान्ति अभी बहुत दूर है,······तो भी तैयारी तो करनी ही होगी, बहुत-सा काम करना होगा, जो इस मकान में, इन परिस्थितियों में असम्भव है। हम लोग दोनों बड़ी उत्सुकता के साथ वह सब करना चाहेंगे······आप हमें बताइये कि क्या करना है, हमे कहाँ जाना होगा? ······भेज दीजिये हमें ! भेज दीजियेगा न ?"

"कहाँ ?"

"किसानों के पास··········जनता के पास, नहीं तो और कहाँ जायेंगे हम ?"

"जंगल में," नेज्दानौफ़ ने सोचा······उसे पाकलिन का कथन याद आ गया। सालोमिन मेरियाना की ओर गौर से देख रहा था।

"आप जनता को जानना चाहती है ?"

"हाँ, यानी हम जनता को केवल जानना ही नही चाहते, बल्कि उन्हें प्रभावित करना······उनकी सेवा करना चाहते है।"

"अच्छी बात है, मैं आपसे वायदा करता हूँ कि आप उन्हें जान सकेंगी। मै आपको उन्हें प्रभावित करने और उनकी सेवा करने का भी एक अवसर जुटा दूँगा। और तुम, नेज़्दानौफ़, जाने को तैयार हो, ······इनके लिए······और उन लोगों के लिए भी ?"

"निस्संदेह मैं तैयार हूँ," उसने जल्दी से उत्तर दिया। 'जगन्नाथ का रथ', पाकलिन की एक और बात उसे याद आ गई, यह लुढ़कता हुआ आया, वह विशाल रथ······उसके पहियों की घड़घड़ और चींची

मुझे सुनाई पड़ने लगी है······"

"अच्छी बात है," सालोमिन ने सोचते हुए दोहराया। "पर आप लोग कब भागना चाहते है ?"

"कल ही क्यों नहीं ?" मेरियाना ने चीख कर कहा।

"अच्छी बात है, पर कहाँ ?"

"श्······धीरे-धीरे···" नेज़दानौफ़ ने फुसफुसा कर कहा। "कोई बरामदे में आ रहा है !"

थोड़ी देर वे सब चुप रहे।

"आप लोग कहाँ जाने का इरादा कर रहे हैं ?" सालोमिन ने अपना स्वर धीमा करते हुए फिर पूछा।

"हमें नहीं पता।" मेरियाना ने उत्तर दिया।

सालोमिन ने नेज़दानौफ़ की ओर नज़र घुमाई। उसने भी नकारात्मक ढंग से सिर हिलाया।

सालोमिन ने हाथ बढ़ाकर सावधानी से मोमबत्ती का गुल झाड़ दिया।

"मै बताता हूँ तुम्हें मेरे बच्चो," उसने आखिरकार कहा, "मेरे कारखाने में आ जाइये। वहाँ जगह अच्छी नहीं है······पर सुरक्षित है। मैं आप लोगों को छिपा रखूँगा। मेरे पास थोड़ी-सी जगह है। कोई आपका पता न पा सकेगा। बस आपके वहाँ तक पहुँचने भर की बात है······फिर हम आपको न छोड़ेंगे। आप कहेंगे, 'कारखाने में तो बहुत लोग होंगे'। यह तो और भी अच्छी बात है। जहाँ बहुत-से लोग हों वहाँ छिपना आसान होता है। इससे काम चलेगा, ऐं ?"

"हम कैसे आपको धन्यवाद दें ?" नेज़दानौफ़ ने कहा, मेरियाना पहले तो कारखाने के विचार से कुछ अचकचा गई थी, पर उसने जल्दी से जोड़ा, "अवश्य, अवश्य। आप कितने अच्छे है ! पर आप वहाँ हमें बहुत देर तक तो न पड़े रहने देंगे, सोचती हूँ, आप हमें और आगे भी भेजेंगे न ?"

"वह आप ही लोगो पर निर्भर रहेगा······पर यदि आप विवाह करना चाहेगे तो कारखाने मे बहुत सुविधा होगी। वहाँ पर पास ही मेरे एक पडौसी है—वह मेरे चचेरे भाई है—जो पादरी है। उनका नाम है ज़ोसिम और बहुत ही भले आदमी है। वह बड़ी ख़ुशी से आपका विवाह करा देगे।"

मेरियाना मन-ही-मन मुस्कराई, नेज्दानौफ़ ने फिर एक बार सालोमिन का हाथ दबाया और पलभर रुककर पूछा, "पर सुनिये, आपके कारखाने का मालिक कुछ नहीं कहेगा ? वह आपको परेशान तो नहीं करेगा ?"

सालोमिन ने प्रश्नसूचक दृष्टि से नेज्दानौफ़ की ओर देखा।

"मेरे बारे मे चिन्ता न कीजिये·······वह बेकार समय बर्बाद करना है। जब तक कारखाना ठीक चलता है, तब तक मेरे मालिक को किसी चीज़ की परवाह नही। न आपको न आपकी इन भद्र महिला को उसकी ओर से किसी प्रकार का डर है और न मज़दूरों से ही आपको कोई ख़तरा है। बस मुझे पहले से बता दीजिये—मैं कब तक आपकी प्रतीक्षा करूँ ?"

नेज्दानौफ़ और मेरियाना एक-दूसरे की ओर देखने लगे।

"परसों तड़के ही या फिर अगले दिन," नेज्दानौफ़ ने आखिरकार कहा, "इससे अधिक हम लोग नही टाल सकते। मेरे कल ही घर से निकाले जाने की काफ़ी सम्भावना है।"

"ठीक है······" सालोमिन ने स्वीकृति जताई और वह अपनी कुर्सी से उठ खड़ा हुआ। "मै रोज़ सवेरे आप लोगों का इन्तजार करूँगा। बल्कि मै एक सप्ताह तक घर से कही जाऊँगा ही नही और ज़रूरत के अनुसार सब इन्तज़ाम हो जायगा।"

मेरियाना दरवाजे की ओर बढ़ रही थी, वह अब उसके समीप आ गई। "नमस्कार, वैसिली फेदोतिच···यही आपका नाम है न ?"

"हाँ।"

"नमस्कार······कम-से-कम अगली मुलाकात तक के लिए, और धन्यवाद, बहुत-बहुत धन्यवाद !"

"नमस्कार······नमस्कार, प्यारा बेटी ।"

"और नमस्कार, नेज्दानौफ़, कल तक के लिए," वह बोली ।

मेरियाना जल्दी-जल्दी चली गई ।

दोनों युवक कुछ देर तक निश्चल बैठे रहे, और दोनों ही चुप थे।

"नेज़दानौफ़,······" सालोमिन ने आखिरकार शुरू किया, पर फिर चुप हो गया । "नेज़दानौफ़," उसने फिर शुरू किया, "मुझे इस लड़की के बारे में बताओ,······जो कुछ भी बता सको । अभी तक उसका जीवन क्या रहा है ?······वह कौन है ?······और यहाँ वह कैसे है ?"

नेज़दानौफ़ ने, जो कुछ वह जानता था, उसे सुना दिया ।

"नेज़दानौफ़," उसने आखिरकार फिर शुरू किया,······"तुम्हें उस लड़की का ध्यान रखना चाहिए, क्योंकि······अगर कुछ भी······हो गया······तो बहुत-कुछ दोष तुम्हारा ही होगा । नमस्कार ।"

वह चला गया; और नेज़दानौफ़ कुछ देर तक कमरे के बीचोंबीच चुपचाप खड़ा रहा; फिर यह बड़बड़ाते हुए, "आह ! नहीं सोचना ही अच्छा है," वह औंधे मुँह बिस्तर पर जा गिरा ।

जब मेरियाना अपने कमरे में वापिस पहुँची तो उसे अपनी मेज़ पर एक छोटा-सा पत्र मिला जो इस प्रकार था—"मुझे तुम्हारे लिए दुख है । तुम बर्बादी के रास्ते पर बढ़ी जा रही हो । सोचो तुम क्या कर रही हो । आँख मूँदकर किस गहरे गर्त में गिरी जा रही हो ?— किसके लिए और किस लिए ?—वै०"

कमरे में एक विशेष प्रकार की मीठी ताज़ा गंध थी; यह स्पष्ट था कि वैलेन्निना अभी-अभी कमरे से गई थी । मेरियाना ने एक कलम उठाया और नीचे लिखा—"मेरे ऊपर तरस मत खाओ । भगवान् ही जानता है कि हम दोनों में किसे तरस की अधिक आवश्यकता है। मैं

केवल इतना जानती हूँ कि मै तुम्हारे स्थान में नहीं होना चाहूँगी।—मे०।" पत्र उसने वही मेज़ पर ही छोड़ दिया। उसे तनिक भी सन्देह न था कि उसका उत्तर वैलेन्निना के हाथों मे पहुँच जायगा।

अगले दिन सवेरे सालोमिन, नेज़्दानौफ़ से मिलकर और सिप्यागिन के कारखाने के संचालन का भार सम्हालने से एकदम इन्कार करके, घर के लिए रवाना हो गया। वह सारे रास्ते भर सोच मे डूबा रहा, जो उसके साथ बहुत ही कम होता था; गाड़ी के हिलने-डुलने से प्राय: उसे नीद आ जाया करती थी। वह मेरियाना के और नेज़्दानौफ़ के बारे ही सोच रहा था। वह कल्पना करने लगा कि यदि वह प्रेम मे पड़ा होता—वह, सालोमिन—तो उसका चेहरा कुछ और ही होता, वह कुछ अलग ही ढंग से बात करता और दीखता। "पर," वह सोचने लगा, "क्योंकि वह कभी मेरे साथ हुआ नही, मै अवश्य ही यह नहीं बता सकता कि होता तो मै कैसा दिखाई पड़ता।" उसे एक आयरिश लड़की की याद आई जिसे उसने एक बार किसी दुकान मे देखा था; उसे उसके अद्भुत करीब-करीब काले बाल, नीली आँखें और मोटी पलकें भी याद आ गईं, किस तरह वह उसकी ओर उदासी और लालसा-भरी आँखों से ताकती रही थी और किस प्रकार वह उसकी दुकान के दरवाज़ों के आगे इधर-से-उधर चक्कर काटता रहा था, कितना उत्तेजित वह तब हो गया था और किस प्रकार वह इस उधेड़बुन में पड़ा रहा था कि जाकर उससे परिचय करे या नही। उस समय वह लन्दन में रहता था। उसके मालिक ने वहाँ उसे कुछ रुपये देकर कुछ खरीदने के लिए भेजा था। सालोमिन के मन में एक बार तो आया था कि लन्दन मे ही रुक जाय और मालिक का रुपया वापस भेज दे—इतना गहरा प्रभाव उसके ऊपर सुन्दरी पाली का पड़ा था (उसका नाम भी, एक दूसरी लड़की के मुँह से सुनकर, उसे पता चल गया था) किन्तु फिर उसने अपने-आपको सम्हाल लिया था और अपने मालिक के पास वापस लौट आया था। पाली मेरियाना से कहीं

अधिक सुन्दर थी, पर इस लडकी की आँखो मे भी वही उदास, लालसा भरी दृष्टि थी······और वह रूसी थी······

"पर मै क्या सोचने लगा हूँ ?" सालोमिन ने आधे जोर से कहा, "दूसरे लोगो की प्रेयसियो के लिए सिर खपा रहा हूँ !" और उसने अपने कोट के कालर में एक झटका दिया मानो सब अनावश्यक विचारो को झकझोर कर झाड देना चाहता हो, और ठीक तभी गाडी कारखाने के समीप पहुँच गई और उसके अपने छोटे से बगले के दरवाज़े में खडे वफादार पवेल की एक झलक दीख गई।

छब्बीस

सालोमिन की अस्वीकृति से सिप्यागिन को बड़ा क्रोध आया—यहाँ तक कि एकाएक उसकी यह राय हुई कि यह घर में तैयार स्टिबेन्सन अन्ततः इतना बड़ा मशीनों का विशेषज्ञ नहीं ही था और एकदम निकम्मा चाहे वह न भी हो, पर नीचे दर्जे के आदमी की तरह बेकार का रौब बहुत जमाता था ! "ये सब रूसी जब यह सोचने लगते हैं कि हम कुछ जानते हैं, तो फिर उनका कोई ठिकाना नहीं रहता। कैलोम्येत्सेफ़ ठीक ही कहता है।" ऐसे क्रोध और विद्वेषपूर्ण विचारों के प्रभाव में जब राजनीतिज्ञ की नज़र नेज्दानौफ़ पर पड़ी तो वह और भी सहानुभूति रहित और रूखा हो गया। उसने कोल्या से कह दिया कि आज उसे मास्टर से नहीं पढ़ना चाहिए, और आत्म-निर्भर होने का अभ्यास डालना चाहिए······पर मास्टर की आशा के विपरीत उसने उसे जवाब नहीं दिया। वह बस उसकी उपेक्षा ही करता रहा। पर वैलेन्निना ने मेरियाना की उपेक्षा नहीं की। उन दोनों के बीच बड़ी जोर की झड़प हो गई।

दो बजे के लगभग किसी तरह ड्राइंग रूम में वे दोनों अकेली ही

रह गई। दोनों ही ने तुरन्त यह अनुभव किया कि अनिवार्य संघर्ष का क्षण आ पहुँचा है, और इसलिए, क्षणिक हिचक के बाद, वे धीरे-धीरे एक-दूसरे की ओर बढ़ आईं। वैलेन्निना हलका-सा मुस्करा रही थी, मेरियाना के होंठ कसकर भिंचे हुए थे; दोनों का मुख पीला था। वैलेन्निना ने कमरे में बढते-बढ़ते दायें-बायें नज़र डालकर जिरेनियम का एक पत्ता उठा लिया······मेरियाना की आँखें एकदम अपनी ओर बढ़ते हुए उस मुस्कराते मुख पर गडी थीं।

पहले वैलेन्निना रुकी, और कुर्सी की पीठ को अपने उँगलियों से बजाते हुए उसने लापरवाही के स्वर मे कहा, "मेरियाना विकेन्त्येव्ना, हम लोगों के बीच शायद कुछ पत्र-व्यवहार हुआ है······एक ही छत के नीचे रहकर यह कुछ विचित्र-सा लगता है और तुम जानती हो कि मुझे किसी प्रकार की विचित्रता का तनिक भी शौक नहीं है।"

"मैंने नहीं शुरू किया था वह पत्र-व्यवहार, वैलेन्निना मिहाइ-लोव्ना।"

"नही······ठीक है। इस बार इस विचित्रता का दोष मुझी पर है; पर मुझे और कोई उपाय नहीं सूझा जिससे तुम्हारे भीतर एक भाव······कसे कहूँ ?······एक भाव······जागृत कर सकूँ।"

"कह दो, वैलेन्निना मिहाइलोव्ना; जो सोचती हो वही कहो— इसका डर मत करो कि मुझे बुरा लगेगा।"

"भले-बुरे······का भाव।"

वैलेन्निना रुकी; कुरसी की पीठ पर उसकी उँगलियों की धीमी थपथप के अलावा कमरे में और कुछ न सुनाई पड़ रहा था।

"यह तुम किसलिए सोचती हो कि मैंने भले-बुरे का ध्यान नहीं रखा है ?" मेरियाना ने पूछा।

वैलेन्निना ने अपने कंधे सिकोड़े।

"तुम बच्ची नहीं हो, और मेरी बात समझती हो। तुम सोचती हो तुम्हारा व्यवहार मुझसे, अन्ना ज़ाहारोव्ना से, बल्कि घर भर से, छिपा

रह सकता था ? इसके अलावा तुमने तो उसे छिपाये रखने की कोई विशेष कोशिश भी नही की है। तुम तो बस बहादुरी के जोश में काम करती रही हो। सिर्फ बोरिस ऐन्द्रीइच ने ही शायद ध्यान नही दिया है······वह दूसरी अधिक दिलचस्पी और महत्व की बातो मे डूबे रहते हैं। पर उनके सिवाय तुम्हारे कारनामे सबको, सबको मालूम है।"

मेरियाना का चेहरा लगातार अधिकाधिक सफेद पड़ता जा रहा था।

"मै तुमसे अनुरोध करूँगी, वैलेन्तिना मिहाइलोव्ना, कि तुम अपनी बात को साफ़-साफ़ कहो। ठीक किस बात से अप्रसन्न हो तुम ?"

"गुस्ताख।" श्रीमती सिप्यागिन ने सोचा। किन्तु तो भी उन्होंने अपने को रोका।

"तुम जानना चाहती हो कि मै किस बात से अप्रसन्न हूँ, मेरियाना ? अवश्य। मै अप्रसन्न हूँ तुम्हारी ऐसे नौजवान के साथ लम्बी-लम्बी मुलाकातो से, जो कुल, शिक्षा और सामाजिक स्थिति, सबकी दृष्टि से तुमसे कही नीचा है। मै अप्रसन्न हूँ······नही ! वह शब्द काफी सख्त नही है—मुझे घिन आती है तुम्हारे देर से, आधी-रात को उस नौजवान के कमरे मे आने-जाने से और वह भी मेरे ही घर मे ! तुम सोचती हो कि यह ठीक काम है, और मै चुप रही आऊँ, और एक तरह से तुम्हारी इन करतूतों पर परदा डालूँ ? एक बेदाग़ चरित्र वाली स्त्री की हैसियत से मै अपने गुस्से को रोक नही सकती।"

वैलेन्तिना एक कुरसी में धप्प से बैठ गई मानो अपने गुस्से के बोझ से दबी जा रही हो।

मेरियाना पहली बार मुस्कराई।

"मै तुम्हारे भूत, भविष्यत, वर्तमान, किसी चरित्र पर सन्देह नहीं करती," उसने शुरू किया, "और यह बात मै सच्चे दिल से कहती हूँ। पर तुम्हारा गुस्सा अनावश्यक है। मैने तुम्हारे घर को किसी प्रकार

अपवित्र नहीं किया है। जिस नौजवान की ओर तुम संकेत कर रही हो············हाँ, मैं निश्चित रूप से·········उससे प्यार करने लगी हूँ·········"

"तुम मि० नेज़दानौफ़ को प्यार करती हो ?"

"हाँ, मैं उसे प्यार करती हूँ।"

वैलेन्निना अपनी कुरसी में उठकर बैठ गई।

"हे भगवान् ! मेरियाना ! वह अभी विद्यार्थी है, न कोई खानदान न घराना—अरे, वह तुमसे उम्र में भी छोटा है।" इन शब्दों को कहने में एक तरह की द्वेषपूर्ण प्रसन्नता की ध्वनि थी। "इसका आखिर अन्जाम क्या होगा ? और अपनी सारी बुद्धिमत्ता के बाद भी उसमें तुम्हें क्या मिल सकेगा ? वह बस छिछले दिमाग का छोकरा है।"

"उसके बारे में हमेशा तुम्हारी यही राय नहीं थी, वैलेन्निना मिहाइलोव्ना।"

"हे राम, मेरी बात छोड़ दो,··········चर्चा तुम्हारी हो रही है—तुम्हारी और तुम्हारे भविष्य की। ज़रा सोचो, यह तुम्हारे लिए कैसा वर रहेगा ?"

"यह मैं मानती हूँ, वैलेन्निना मिहाइलोव्ना, कि इस प्रश्न को इस रूप में मैंने नहीं देखा था।"

"ऐं ? क्या ? इसका मैं क्या अर्थ समझूँ ? तुम अपने हृदय के इशारे पर चलती रही हो, हम मान लें···पर अन्त में इसका परिणाम विवाह तो होना ही है, है न ?"

"कह नहीं सकती·······मैंने इस विषय में कभी सोचा नहीं।"

"इस विषय में तुमने नहीं सोचा ? क्यों, तुम पागल हो गई हो।"

मेरियाना थोड़ा-सा दूसरी ओर घूमी।

"यह बातचीत अब खत्म कर दें, वैलेन्निना मिहाइलोव्ना। उससे कोई लाभ न होगा। हमें कभी भी एक-दूसरे की बात समझ में न आयेगी।"

वैलेन्तिना आवेश मे उठ खडी हुई ।

"मै इस बातचीत को खत्म नही कर सकती, न ऐसा करना मेरे लिए उचित ही होगा । यह वहुत ही जरूरी है । मै तुम्हारे लिए उत्तर-दायी हूँ,······"वैलेन्तिना कहना चाहती थी 'भगवान के समक्ष,' पर वह कुछ अटकी और बोली, "सारी दुनिया के आगे । ऐसी बे सिर-पैर की बाते सुनकर भी मै चप नही रह सकती । और मै तुम्हारी बात समझ क्यो नही सकती ? आजकल के लडके-लडकियो के घमण्ड का भी कुछ ठिकाना है । नही !······मै तुम्हारी बात बखूबी समझती हूँ, मुझे दीख रहा है कि तुम उन सब नये विचारो के चक्कर मे पड गई हो जो एक-न-एक दिन तुम्हे बर्बाद करके छोडेगे । और तब फिर अवसर हाथ से निकल चुका होगा ।"

"शायद, पर एक बात के लिए तुम आश्वस्त रहो, बर्बाद होकर भी मै कभी एक उँगली तक तुम्हारी सहायता के लिए नही बढाऊँगी ।"

"फिर घमण्ड, यह भीषण घमण्ड! देखो, मेरी बात सुनो, मेरियाना! मेरी बात सुनो," उसने एकाएक दूसरे ही स्वर मे कहना शुरू किया··· वह मेरियाना को अपनी ओर खीच ही लेने वाली थी कि वह एक कदम पीछे हट गई ! "देखो, तुम जानती हो कि मै न तो इतनी बूढी हूँ न इतनी मूर्ख कि एक-दूसरे की बात समझना हमारे लिए असम्भव हो। अपने बचपन मे मै भी प्रजातन्त्रवादी समझी जाती थी······तुम्हारी ही भाँति । मेरी बात सुनो । मै जो कुछ नही महसूस करती उसका वहाना तो करूँगी नही । मैने कभी तुम्हारे लिए माँ की-सी ममता नही अनुभव की है, और यह तुम्हारे स्वभाव मे भी नही है कि तुम इस बात की शिकायत करो । पर मै मानती रही हूँ और आज भी मानती हूँ कि तुम्हारे प्रति मेरे कुछ कर्तव्य है, और मैने हमेशा उनका पालन करने का प्रयत्न किया है । शायद तुम्हारे लिए जिस वर का मै सपना देखती थी और जिसके लिए बोरिस ऐंद्रीइच और मै, हम दोनो ही, कोई भी त्याग करने को तैयार हो जाते····· वह वर तुम्हे पूरी तरह पसन्द नही

आ सका·······पर अपने दिल से मैं—।"

मेरियाना वैलेन्निना मिहाइलोव्ना की ओर—अद्भुत आँखों, गुलाबी हलके-से रँगे हुये होठों की ओर, सफेद हाथों और अँगूठियों से सुसज्जित थोड़ी-सी खुलीं हुई उँगलियों की ओर, जिन्हें सुन्दर महिला अपने रेशमी गाउन की चोली पर इतने प्रभावपूर्ण ढंग से दबाये हुए थी—देखने लगी और एकाएक उसने बात काटकर कहा :

"वर तुमने कहा वैलेन्निना मिहाइलोव्ना ? 'वर' से तुम्हारा इशारा अपने उस हृदयहीन, गँवार दोस्त मि० कैलोम्येत्सेफ़ की ओर है ?"

वैलेन्निना ने चोली के ऊपर से अपनी उँगलियाँ हटा लीं।

"हाँ, मेरियाना विकेन्त्येव्ना, मेरा इशारा है मि० कैलोम्येत्सेफ़ की ओर—उस सुसंस्कृत, उत्तम नौजवान से, जो निस्संदेह अपनी पत्नी का सुखी रख सकेगा, और जिससे विवाह करने से कोई पागल स्त्री ही इन्कार कर सकती है—कोई पागल स्त्री ही।"

"क्या किया जाय ? लगता है मैं पागल ही हूँ।"

"पर क्या ख़राबी—ऐसा कौन-सा बड़ा भारी ऐब—तुम्हें उसमें दीखता है ?"

"ओह, कुछ भी नहीं। मैं उससे घृणा करती हूँ······बस इतनी सी बात है।"

वैलेन्निना ने अधीरता के साथ अपना सिर इधर-से-उधर हिलाया और फिर एक कुरसी में धप से बैठ गई।

"अच्छा उसे छोड़ो। तो तुम मि० नेज्दानौफ़ से प्रेम करती हो ?"

"हाँ।"

"और तुम्हारा······उससे मिलते रहने का इरादा है।"

"हाँ, इरादा है।"

"अच्छा······और अगर मैं मना कर दूँ तो ?"

"तो मैं तुम्हारी बात नहीं सुनूँगी।"

वैलेन्निना अपनी कुरसी से उछल पड़ी।

"ओह ! तुम मेरी बात नही सुनोगी ! ओह, सचमुच ! और यह बात मुझसे वह छोकरी कह रही है जिसे मैंने उपकारो के बोझ से लाद रखा है, जिसको मै अपने घर में जगह दिये हुए हूँ—और मुझे यह सुनना पड रहा है, ···यह सुनना पड़ रहा है···"

"और वह भी एक अपराधी बाप की बेटी के मुँह से," मेरियाना ने कठोर भाव से कहा, "कहे जाओ, कुछ बाकी रखने की ज़रूरत नही है।"

"उसमे कोई बड़े गौरव की बात नही है। वह लडकी जो मेरे खर्चे पर दिन गुज़ारती है—"

"वह ताना मुझे मत दो, वैलेन्निना मिहाइलोव्ना। कोल्या के लिए फ्रेंच शिक्षिका रखने मे तुम्हारा कही अधिक खर्च पडता···तुम जानती हो मै उसे फ्रेंच सिखलाती हूँ।"

वैलेन्निना ने एक इत्र से सुगधित और एक कोने मे सफेद मोनोग्राम से कढा हुआ बढिया-सा रूमाल लिये हुए हाथ तनिक उठाया और कुछ प्रत्युत्तर देते का प्रयत्न किया, पर मेरियाना तीव्रता के साथ कहती ही जा रही थी।

"तुम्हें हज़ार बार यह अधिकार होता, यह पूरा अधिकार होता, यदि तुम जो सब चीज़ें गिना रही हो इनके बजाय, झूठ-मूठ के उपकारों और त्यागो के बजाय, यदि तुम यह कह सकती, "उस लड़की के मुँह से जिससे मैंने इतना प्यार किया······। पर इतनी ईमानदारी तुममे है कि ऐसी झूठ नही बोलोगी।" मेरियाना ऐसे काँप रही थी मानो बुखार चढ आया हो। "तुम सदा मुझसे घृणा करती रही हो। इस क्षण भी, अपने दिल के भीतर, जैसा तुमने अभी कहा, तुम खुश हो—हाँ, खुश हो—कि मै वैसी ही निकली जैसा तुम हमेशा मेरे बारे में भविष्यवाणी किया करती थी, कि मै बदनामी मे, अपमान मे डूबी जा रही हूँ। तुम्हें बस केवल इस बात की चिन्ता है कि इस बदनामी का थोड़ा-बहुत हिस्सा तुम्हारे रईसी, चरित्रवान, घर पर भी न पड़ जाय।"

"तुम मेरा अपमान कर रही हो," वैलेन्निना ने लड़खड़ाती जबान से कहा। "कृपा करके कमरे से चली जाओ।"

पर मेरियाना के संयम का बाँध टूट गया।

"तुम्हारा सारा घर, तुम कहती हो, तुम्हारा सारा घर और अन्ना जाहारोव्ना और सब लोग मेरे चालचलन के बारे में जानते है! और वे सब भौचक्के और क्रुद्ध हैं······पर तुम समझती हो मे तुमसे, इन लोगों से, या किसी से भी कुछ आशा रखती हूँ? तुम सोचती हो मुझे उनकी सुसम्मति की परवाह है? तुम समझती हो तुम्हारे खर्चे पर रहना, जैसा तुम कहती हो, मेरे लिए बडा सुखदायक हुआ है? ऐसे आराम से मै ग़रीबी लाख दर्जे अच्छी समझती हूँ। तुम क्या नहीं देखतीं कि तुम्हारे घर और मेरे बीच एक पक्की खाई है, ऐसी खाई जिसे किसी चीज़ से नहीं छिपाया जा सकता? क्या तुम—और तुम तो बड़ी चतुर स्त्री भी हो—यह पहचान नहीं सकी हो? और यदि तुम्हें मेरे प्रति घृणा है, तो क्या तुम समझ नहीं सकतीं कि मेरे मन में तुम्हारे लिए कौन-सा भाव होगा? इस बात को मै विशेष रूप से सिर्फ़ इसलिए नहीं कहती कि वह इतना साफ़ है!"

"निकल जाओ, निकल जाओ, तुम, मै कहती हूँ।" वैलेन्निना ने दोहराया और अपने सुन्दर, छरहरे छोटे से पैरों को क्रोध से पटकने लगी।

मेरियाना दरवाज़े की ओर एक कदम बढ़ा गई।

"मैं अभी-अभी जा रही हूँ; पर एक बात जानती हो वैलेन्निना मिहाइलोव्ना? कहते है कि रासीन के 'बजाज़े' में रैश्ले के मुँह में भी यह 'निकल जाओ!' बहुत प्रभावोत्पादक न हो सका था, और तुम तो रैश्ले से बहुत पीछे हो! और तुमने अपनी ईमानदारी का ज़िक्र किया था। पर ज़रा कल्पना करो कि मुझे यक़ीन है कि मै तुमसे कहीं ज्यादा ईमानदार हूँ! नमस्कार!"

मेरियाना जल्दी से कमरे से निकल गई। वैलेन्निना अपनी कुर्सी से उछल पड़ी; वह चीखना चाहती थी, रोना चाहती थी······पर

चीख़ कर क्या कहे, उसकी समझ मे न आया; और उसके आदेश पर आँसू भी न निकल सके !

उसे केवल रूमाल से अपनी हवा करने से ही सतुष्ट होना पड़ा। पर वह जिस इत्र में बसा हुआ था उसने उसके दिमाग पर और भी असर डाला। वह बहुत ही अपमानित, दुखी अनुभव कर रही थी। वह यह अनुभव करती थी कि जो कुछ उसने अभी सुना है उसमे सचाई का भी एक अंश है। पर उसके बारे मे इतनी अन्यायपूर्ण धारणा कोई कैसे बना सकता है ? "क्या मै इतनी ओछेदिल की स्त्री हूँ ?" वह सोचने लगी, और उसकी नज़र आईने पर पड़ी जो दो खिड़कियो के बीच उसके ठीक सामने था। आईने मे एक सुन्दर मुख का प्रतिबिम्ब था जो थोड़ा अस्तव्यस्त था और उसके ऊपर लाल-लाल धब्बे से निकल आये थे, पर तो भी आकर्षक था वह चेहरा, वे मख़मली सुकुमार आँखे अपूर्व थीं···"मै ? ओछेदिल की ? कुढ़ने वाली ?" उसने फिर सोचा··· "ऐसी आँखें होते हुए भी ?"

किन्तु उसी क्षण उसके पतिदेव ने कमरे मे प्रवेश किया और उसने अपना मुख फिर रूमाल मे छिपा लिया।

"क्यों, क्या बात है ?" उसने चिन्तित स्वर में पूछा। "क्या हुआ, बाल्या ?" यह निजी नाम उसी ने दिया था, पर सर्वथा एकांत की व्यक्तिगत बातचीत के सिवाय, और वह भी देहात में हो तो और भी उत्तम, कभी इस नाम का प्रयोग न करता था।

शुरू में तो वैलेन्निना ने अनिच्छा दिखाई, कहा कि कोई बात नहीं है। पर अन्त में वह बड़े सुन्दर और हृदयस्पर्शी ढंग से अपनी कुर्सी में घूमी और उसके कन्धों के ऊपर गले मे दोनो हाथ डालकर (वह उसके सामने कुछ झुका-हुआ सा खड़ा था), और उसकी खुली हुई वेस्टकोट के भीतर मुँह छिपाकर, उसने सब कुछ सुना दिया। किसी ढोंग या छिपे हुए उद्देश्य के बिना ही, उसने मेरियाना को यदि क्षमा करने का नही तो, कम-से-कम किसी हद तक उचित बताने का भी

प्रयत्न किया; उसने सारा दोष उसकी उम्र को, उसके तेज़ स्वभाव को और उसकी प्रारम्भिक शिक्षा की कमजोरियो को ही दिया; उसने किसी हद तक, और किसी दोहरे उद्देश्य के बिना ही, अपने-आपको भी दोषी ठहराया। "मेरी अपनी बेटी होती, तो यह सब कभी न होता ! उसकी मै अलग ही तरह से देखभाल करती !" सिप्यागिन उसकी बात बडे स्नेह, समवेदना और सख्ती के साथ सुनता रहा; उसने अपनी मुद्रा भी झुकी हुई ही बनाये रखी क्योकि वैलेन्निना ने न तो अपनी बाहे कन्धो से हटाई थी न सिर ही। वह उसे प्यार से थपथपाता रहा, फिर उसके माथे को चूमा और घोषणा की कि गृहस्वामी होने के नाते अपना कर्तव्य पूरा करने के सिवाय और कोई उपाय वह नही देखता; वह एक सहृदय किन्तु सक्रिय व्यक्ति की तरह बाहर चला गया, जिसने कोई अप्रिय किन्तु अनिवार्य कर्तव्य को पूरा करने का निश्चय कर लिया हो।

भोजन के बाद आठ बजे के लगभग नेज्दानौफ अपने कमरे में बैठा अपने मित्र सीलिन को पत्र लिख रहा था. "प्यारे ब्लादीमीर, इस समय मै तुम को अपने जीवन के महत्त्वपूर्ण परिवर्तन के क्षण मे लिख रहा हूँ। मुझे यहाँ से जवाब मिल गया है। मै जा रहा हूँ। पर वह तो कोई बात नहीं थी। मै यहाँ से अकेला नही जा रहा हूँ। जिस लडकी का मै, तुमसे जिक्र कर चुका हूँ, वह भी मेरे साथ जा रही है। हम लोग जीवन मे एक से भाग्य के द्वारा, अपने विचारो और कार्यो की समानता के द्वारा, और साथ ही अपनी परस्पर भावनाओ के द्वारा एक-दूसरे से बँध चुके है। हम लोग एक-दूसरे को प्यार करते हैं; कम-से-कम मेरा विश्वास है कि प्रेम की भावना जिस रूप में इस समय मेरे आगे प्रस्तुत है, उसके अतिरिक्त अन्य किसी रूप में उसे अनुभव कर सकना मेरे लिए सम्भव नहीं है। पर यदि मै तुमसे यह कहूँ कि मेरे मन में एक प्रकार का छिपा हुआ आतक का भाव नहीं है, या मेरा हृदय अजीब तरह से बैठा नही जा रहा है, तो यह झूठ होगा। भविष्य

एकदम अन्धकार में है और हम लोग दोनों एक साथ ही इस अन्धकार में कूद रहे हैं। यह तुम्हें बताने की ज़रूरत नहीं है कि हम लोग किस काम में आगे बढ़ रहे हैं और हमने जीवन के लिए क्या मार्ग चुना है। मेरियाना और मैं सुख की खोज में नहीं हैं; हम लोग मौज नहीं करना चाहते हैं, बल्कि साथ-साथ एक-दूसरे के सहयोग से, पास रहकर संघर्ष करना चाहते हैं। हमारा लक्ष्य हमारे सामने स्पष्ट है; पर किन रास्तों से हम वहाँ तक पहुँचेंगे, यह हम नहीं जानते। क्या हमें, यदि सहानुभूति और सहायता नहीं तो, कम-से-कम कार्य की स्वाधीनता भी मिल सकेगी ? मेरियाना अच्छी, ईमानदार लड़की है; यदि भविष्य ने निर्णय यह दिया कि हम लोग मिट जायें, तो मुझे उसे इस विनाश की ओर ले जाने का कोई पश्चात्ताप न होगा, क्योंकि अब उसके लिए और कोई जीवन सम्भव नहीं है। पर व्लादीमीर ! व्लादीमीर ! मेरा दिल भारी है। मैं संशय से त्रस्त हूँ, अवश्य ही उसके प्रति अपनी भावनाओं के बारे में नहीं, किन्तु······मैं नहीं जानता। जो हो, अब पीछे पैर रखने का समय तो निकल चुका है। दूर से ही अपना मित्रता का हाथ हम दोनों के लिए बढ़ाना, और हमारे लिए धीरज, आत्म-त्याग की क्षमता, और प्रेम······अधिकाधिक प्रेम की कामना करना। और तुम, ओ रूसी जनता, जिसे हम जानते नहीं, पर जिसे हम अपने समूचे अस्तित्व से, अपने हृदय के रक्त की अन्तिम बूँद से प्यार करते हैं, तुम हमें बहुत अधिक निरुत्साह के साथ मत ग्रहण करना, और हमें सिखाना कि तुमसे क्या आशा करें ! अल्विदा, व्लादीमीर, अल्विदा !"

ये थोड़ी-सी पंक्तियाँ लिखने के बाद नेज़्दानौफ़ गाँव के लिए चल पड़ा। अगले दिन सवेरे, अभी जब तक पौ फटी भी न थी कि वह सिप्यागिन के बगीचे से थोड़ी ही दूर पर बर्च के जंगल के पास आकर खड़ा था। उसके थोड़े ही पीछे, एक छोटी-सी किसानों की गाड़ी, जिसमें दो बेलगाम के घोड़े जुते हुए थे, एक चौड़ी हरी-भरी झाड़ी के पीछे खड़ी दिखाई पड़ रही थी। गाड़ी में रस्सी के बने हुए बैठने के

स्थान के नीचे एक घास के गट्ठर पर एक छोटा-सा सफ़ेद बालों वाला बूढ़ा किसान थेगलों भरे ओवर कोट को मुँह पर ढके सोया पड़ा था। नेज्दानौफ़ लगातार सड़क की तरफ़, बगीचे के किनारे पर मजनूँ के पेड़ों के झुरमुट की तरफ़ देखता जाता था। रात की फीकी शांति अभी तक हर चीज़ पर छाई हुई थी, छोटे-छोटे सितारे आसमान की अथाह गहराइयों में खोये से एक-दूसरे से अधिक चमक पड़ने की होड़ में लगे हुए थे, फैले हुए बादलों के निचले गोल किनारों पर पूरब की ओर से एक पीली-सी झलक दौड़ उठी थी, उधर ही से बहुत सवेरे का पहला ठंडा झोंका आ रहा था। एकाएक नेज़्दानौफ़ चौंक पड़ा और एकदम सावधान हो गया; कहीं पास ही पहले तो तीखी-सी चरचराहट की आवाज़ हुई और फिर दरवाजे की धमक सुनाई पडी। एक शाल में लिपटी हुई छोटी-सी नारी-मूर्ति, अपने नंगे हाथों में एक पौटली-सी थामे, मजनूँ की शांत छायाओं में से धीरे-धीरे सडक की मुलायम धूल पर बढ़ी और सड़क को टेढ़ी दिशा में पार करते हुए, स्पष्ट ही अचक-अचक पैर रखती, झुरमुट की ओर मुड़ गई। नेज़्दानौफ़ झपट कर उसके पास पहुँचा।

"मेरियाना ?" उसने फुसफुसाकर कहा।

"हाँ, मै ही हूँ !" लटकते हुए शाल के नीचे से धीमा-सा उत्तर आया।

"इधर, मेरे पीछे आ जाओ," नेज़्दानौफ़ ने उसके पोटली थामे हुए नंगे हाथ को कुछ अजब ढंग से पकड़ते हुए कहा।

वह सिकुड़ गई मानो पाले की ठंड का अनुभव कर रही हो। नेज्दानौफ़ उसे गाड़ी तक ले गया और उसने किसान को जगाया। किसान जल्दी से उछलकर उठ बैठा, फौरन गाड़ीवान की जगह पर जा बैठा और ओवरकोट को बाहों में खिसकाकर रासों का काम देने वाली रस्सियों को उसने थाम लिया। घोड़ों ने अपने-आपको झकझोरा; उसने सावधानी के साथ अपनी अभी भी गहरी नींद से भर्राई हुई आवाज में चलने के लिए हाँक लगाई। नेज्दानौफ़ ने गाड़ी में रस्सी

के बने हुए स्थान पर अपना कोट फैलाकर मेरियाना को उस पर बिठा दिया; गाड़ी के नीचे वाली घास कुछ सीली हुई थी, इसलिए उसके पैरों को उसने एक कम्बल से लपेट दिया, और स्वयं भी उसके पास ही बैठ गया। तब उसने झुककर किसान से धीमे से कहा, "चलो, वही।" किसान ने रासों को झटका दिया और घोड़े हिनहिनाते हुए और अपने आप झकझोरते हुए झाड़ी के पीछे से निकल आये; गाड़ी अपने पुराने छोटे पहियों पर खड़खड़ाती और हचकोले खाती सड़क पर चल पड़ी। नेज्दानौफ़ ने मेरियाना को सहारा देने के लिए एक बाँह उसकी कमर में डाल दी; उसने अपनी ठंडी उँगलियों से शाल थोड़ा सा उठाया और नेज्दानौफ़ की ओर मुड़कर मुस्कराते हुए कहा, "कितना नया-नया और अच्छा लगता है, अल्योशा !"

"हाँ, किसान ने उत्तर दिया, "जोर की ओस पड़ेगी !"

ओस इस समय तक ही इतनी ज़ोर की पड़ चुकी थी कि गाड़ी के पहियों के धुरों में अटक जाने वाली सड़क के किनारे लम्बी-लम्बी घास से पानी की नन्हीं-नन्हीं बूँदों की फुहार-सी झर पड़ती, और घास की हरियाली फीकी नीली-सी दिखाई पड़ रही थी।

मेरियाना फिर शीत से काँप उठी।

"कितना नया, कितना ताज़ा !" उसने बड़ी हलकी आवाज़ में कहा। "और आज़ादी, अल्योशा, आज़ादी !"

सत्ताईस

सालोमिन को जैसे ही किसी ने दौड़कर सूचना दी कि एक छोटी-सी गाड़ी में एक सज्जन और महिला आये हैं और उसे तलाश करते हैं, तो वह तुरन्त कारखाने के फाटक पर झपटता हुआ आया। अपने अभ्यागतों से नमस्कार कहे बिना ही, केवल कई बार अपना सिर उनके प्रति हिलाते हुए, उसने किसान से गाड़ी भीतर अहाते में ले चलने के लिए कहा, और उन्हें सीधे अपने छोटे-से बंगले पर ले जाकर मेरियाना को गाड़ी से उतारा। उसके बाद नेज़दानौफ़ भी कूद पड़ा। सालोमिन उन दोनों को एक तंग, लम्बे, अँधेरे रास्ते और एक तंग चक्करदार सीढ़ी से होकर, बंगले के पिछले हिस्से में दूसरी मंज़िल पर ले गया। वहाँ उसने एक नीचा दरवाज़ा खोल दिया और तीनों ने एक छोटे-से किन्तु काफी साफ और दो खिड़कियों वाले कमरे में प्रवेश किया।

"स्वागत है!" सालोमिन ने अपनी चिर-परिचित मुस्कान के साथ कहा, जो आज हमेशा से अधिक चौड़ी और अधिक उज्ज्वल लग रही थी।

"यह रहा आपका निवासस्थान, यह कमरा, और इधर देखिये एक

यह दूसरा। देखने को कुछ खास नही है, पर उससे कोई हर्ज नही, उनमे रहा जा सकता है, और यहाँ पर कोई आप पर जासूसी नही करेगा। यहाँ पर खिडकी के नीचे, मकान-मालिक के शब्दो मे, एक फूलों का बगीचा है, पर मै उसे तरकारी का बगीचा कहता हूँ। वह ठीक दीवार से लगा हुआ है और दाये-बाये उसके बाडा बना है। अच्छा खासा शाति का स्थान है! फिर एक बार स्वागत है, आपका देवीजी और नेज्दानौफ तुम्हारा भी!"

उसने उन दोनो से हाथ मिलाये। वे निश्चल खडे थे, और अपने ऊपर लिपटे हुए वस्त्र उतारे बिना ही, मौन, अर्ध-चकित, अर्ध-हर्षित भाव से सीधे अपने सामने देख रहे थे।

"तो फिर, अब क्या है?" सालोमिन ने फिर शुरू किया। "अपने ये कपडे उतार दो! सामान क्या है तुम्हारा?"

मेरियाना ने वह पोटली दिखा दी जिसे वह अभी तक हाथ मे लिये हुए थी।

"मेरे पास तो बस यही है।"

"मेरा बक्स और बिस्तर अभी गाडी मे ही पडे है। मैं अभी उन्हे जाकर लिये आता हूँ।"

"ठहरो, ठहरो!" सालोमिन ने दरवाजा खोला। "पवेल!" उसने अँधेरी सीढी की ओर मुँह करके चिल्लाकर कहा। "जाना तो, भइया। गाडी मे कुछ सामान रखा है……उसे ऊपर ले आओ।"

"अभी लाया," उन्हे सर्वत्र विद्यमान पवेल की आवाज़ सुनाई दी।

सालोमिन मेरियाना की ओर मुडा, जिसने अपना शाल उतार दिया था और जो अब अपने लबादे के बटन खोल रही थी।

"सब चीज ठीक तरह से तो हो गई न?" उसने पूछा।

'हर चीज…… किसी ने हमे नही देखा। मै मि० सिप्यागिन के लिए एक पत्र छोड आई हूँ। मै अपने साथ कोई पोशाके या कपड़े नही लाई हूँ, वैसिली फेदोतिच, क्योकि आप हमे भेजने वाले है……"

(मेरियाना न जाने क्यों अपने वाक्य मे 'जनता मे' जोड़ने का निश्चय न कर पाई) "खैर जो भी हो, उनका कोई फायदा न था। पर मेरे पास जरूरी चीजें खरीदने के लिए पैसा मौजूद है।"

"वह सब बाद में हो जायगा……और अब", सालोमिन ने पवेल की ओर इशारा करते हुए कहा, जो नेज़्दानौफ़ का सामान ले आया था, "मैं आपसे अपने सबसे बड़े मित्र का परिचय कराना चाहता हूँ, आप लोग उस पर वैसे ही भरोसा कर सकते है जैसे मुझ पर। तुम तात्याना से चाय के लिए कह आये थे न ?" उसने धीमे से पवेल से कहा।

"अभी फौरन, आती होगी," पवेल ने उत्तर दिया, "और क्रीम तथा सब चीजें।"

"तात्याना इनकी पत्नी है," सालोमिन ने कहा, "और वह भी इन्हीं के समान ही विश्वस्त है। जब तक……यानी……आप थोड़ी-सी अभ्यस्त नहीं हो जातीं, देवीजी, तब तक वह आपका काम-काज कर दिया करेगी।"

मेरियाना ने अपना लबादा कोने में रखे एक छोटे से चमड़े के सोफे पर डाल दिया। "मुझे मेरियाना कहकर पुकारिये, वैसिली फेदोतिच—मै देवीजी नहीं रहना चाहती। और मै किसी से अपना काम-काज भी नहीं कराना चाहती……यहाँ मै नौकर रखने के लिए नहीं आई हूँ। मेरे वस्त्रों को मत देखिये; वहाँ मेरे पास और कुछ था ही नहीं। वह सब बदलना है।"

दालचीनी के रंग के बढ़िया कपड़े की पोशाक बहुत सादी थी; पर पीटर्सबर्ग के दर्जियों की बनी हुई थी और मेरियाना की कमर और कंधों पर उसकी सुन्दर पट्टियाँ-सी आकर पड़ती थीं; कुल मिला कर वह बड़ी फैशनेबिल लगती थी।

"अच्छा नौकर नहीं, पर शायद अमरीकी ढंग से सहायता ही सही, खैर, आप अब चाय तो पीजिये। अभी बहुत सवेरा है, और आप लोग

थक गये होगे । अब मै भी कारखाने मे काम-काज देखने जा रहा हूँ; बाद मे फिर मुलाकात होगी । जिस किसी चीज की भी जरूरत हो पवेल या तात्याना से कह दीजियेगा ।"

मेरियाना ने जल्दी से दोनो हाथ उसकी ओर बढा दिये ।

"किस तरह आपको धन्यवाद दे, वैसिली फेदोतिच ? मेरियाना ने बडे गद्‌गद् भाव से सालोमिन की ओर देखते हुए कहा ।

सालोमिन ने धीमे से उसका एक हाथ थपथपाया । "कहना तो यह चाहिये कि इसमे धन्यवाद की कोई बात नही है······पर यह बात सच न होगी । इसलिए कहता हूँ कि आपके धन्यवाद से मुझे बडी खुशी है । अब हम दोनो बराबर हो गये । अच्छा अब इस समय नमस्कार ! पवेल, चलो ।"

मेरियाना और नेज्दानौफ अकेले रह गये ।

वह उसकी ओर झपट कर बढ आई, और उसकी ओर भी उसने उसी भाव से ताका जिससे उसने सालोमिन की ओर देखा था, बस इस बार उसमे प्रसन्नता, भावावेश और आनन्द अधिक था । "ओह अलैक्सी !" उसने कहा, "······हम लोग अब एक नई जिन्दगी शुरू कर रहे है······आखिरकार ! आखिरकार ! तुम्हे विश्वास नही होगा कि उस घृणित हवेली की तुलना में यह छोटा-सा घर जहाँ हम लोग थोडे ही दिन रहने वाले हैं, मुझे कितना सुन्दर और सुखद लगता है ! सच बताओ, प्रिय, तुम भी सुखी हो न !"

नेज्दानौफ ने उसके हाथो को पकड कर अपने दिल पर दबाकर रख लिया ।

"मै सुखी हूँ, मेरियाना, कि मै यह नया जीवन तुम्हारे साथ शुरू कर रहा हूँ । तुम्ही, प्यारी मेरियाना, मेरी मार्गदर्शक, मेरा सहारा, मेरी शक्ति रहोगी······"

"प्यारे अल्योशा ! पर ठहरो । मै ज़रा हाथ-मुँह धोकर साफ़ हो लूँ । मै अपने कमरे मे जाती हूँ······और तुम यही ठहरो । एक

मिनिट······"

मेरियाना दूसरे कमरे में चली गई और दरवाज़ा भीतर से बन्द कर लिया, पर एक मिनिट बाद ही आधा दरवाज़ा खोलकर उसमें से सिर इधर निकाल लिया और बोली, "और ओह ! सालोमिन कितना अच्छा है न !" फिर उसने दरवाज़ा बन्द कर लिया और ताले में ताली का खटका सुनाई पड़ा ।

नेज़्दानौफ़ खिड़की के पास खड़ा होकर छोटे से बगीचे को देखने लगा······एक पुराने, बहुत ही पुराने सेब के पेड़ पर जाने क्यों उसका ध्यान विशेष रूप से जम गया । उसने अपने-आपको हिलाया, अँगड़ाई ली, और फिर अपना ट्रंक खोलने लगा, पर उसने उसमें से कुछ निकाला नहीं, किसी सोच में डूब गया······

पन्द्रह मिनट में मेरियाना ताज़ा धुला हुआ और मुस्कराता मुख लेकर, प्रसन्नता और फुर्ती की मूर्ति बनी हुई लौट आई; और कुछ ही क्षण बाद पवेल की पत्नी तात्याना ने चाय की केतली, थाली, क्रीम आदि लिये हुए प्रवेश किया ।

अपने जिप्सी जैसे पति से एकदम विपरीत वह पक्की रूसी स्त्री थी, भारी बदन, लाल बाल जिसकी एक सींग की कंघी के चारों ओर कसकर चोटी-सी बंधी हुई थी; सिर पर टोपी न थी, चेहरे की आकृति भारी पर देखने में अच्छी लगती थी, आँखें भूरी और बहुत ही अच्छे स्वभाव की लगती थीं । उसने एक साफ़-सुथरा पर कुछ रंग-उड़ा छींट का गाउन पहन रखा था; उसके हाथ बड़े-बड़े थे पर साफ़ और सुडौल थे; उसने बड़े इत्मीनान के साथ झुककर अभिवादन किया, और दृढ़, निश्चित स्वर में, पर किसी प्रकार की बनावट के बिना बोली, "आपकी तन्दुरुस्ती बहुत अच्छी रहे !" और इतना कहकर चाय का सामान लगानें में लग गई ।

मेरियाना उसकी ओर बढ़ आई ।

"लाओ मैं भी तुम्हारा मदद करूँ, तात्याना । मुझे एक तौलिया

दे दो।"

"कोई जरूरत नही है, बीबीजी, हमे इसका अभ्यास है। वैसिली फेदोतिच ने मुझे सब बातें बता दी हैं। अगर किसी चीज की जरूरत हो तो कृपा करके मुझे बता दीजियेगा; हमसे जो कुछ भी बन पडेगा, खुशी-खुशी करेंगे।"

"तात्याना, देखो मुझ से बीबीजी मत कहो······मैने कपड़े जरूर अमीरों के से पहन रखे है, पर तो भी मैं······मै बिल्कुल······"

तात्याना की पैनी आँखों की स्थिर एकटक दृष्टि से मेरियाना कुछ अचकचा गई, वह बीच ही में चुप हो गई।

"तो फिर आप क्या हैं ?" तात्याना ने अपनी स्थिर आवाज़ में पूछा।

"मै अवश्य ही,······खैर जन्म से तो मैं जरूर अमीर घराने की हूँ; पर मै उस सबसे पीछा छुटाना चाहती हूँ, और तमाम······तमाम सीधी-सादी स्त्रियों की भाँति बनना चाहती हूँ।"

"आह, तो यह बात है ! ठीक है, अब मैं समझ गई। आप उन लोगो मे है जो सीधी-सादी बनना चाहती हैं। आजकल ऐसी बहुत-सी स्त्रियाँ हैं।"

"क्या कहा तुमने, तात्याना ! सीधी-सादी बनना ?"

"हाँ······आजकल हम लोगों मे यह शब्द बहुत चलता है। सीधे-सादे लोगों के समान बनना। जरूर ही यह बडा अच्छा काम है—किसानों को अकल की बातें सिखाना। पर काम जरा कठिन है ! कठिन है ! भगवान् आपको सफलता दे !"

"सीधे-सादे बनना !" मेरियाना ने दोहराया। "सुना तुमने अल्योशा ? तुम और मै अब सीधे-सादे इंसान हो गये है।"

नेज़्दानौफ़ हँसने लगा और उसने दोहराया !

"सीधे-सादे इंसान !"

"और ये आपके कौन है—आपके आदमी या आपके भाई ?"

तात्याना ने अपने बड़े-बड़े चतुर हाथों से सावधानी के साथ प्यालों को धोते हुए और एक अपनत्वपूर्ण मुस्कराहट से नेज़दानौफ़ और मेरियाना की ओर देखते हुए पूछा।

"नहीं," मेरियाना ने उत्तर दिया, "ये न मेरे पति हैं न मेरे भाई।"

तात्याना ने अपना सिर उठाया।

"तो शायद आप लोग, भगवान् की छत्रछाया में रह रहे हैं। आज-कल यह भी बहुत दिखाई पड़ता है। पहले यह नास्तिकों में बहुत हुआ करता था, पर अब और लोगों में भी इसका चलन हो गया है। जहाँ भगवान् का आशीर्वाद हो वहाँ शांति-ही-शांति है! उसके लिए पुरोहित की क्या जरूरत है! हमारे कारखाने में भी कुछ लोग ऐसे ही रहते हैं। और कोई बुरे आदमी नहीं हैं वे लोग।"

"कैसी अच्छी बातें तुम करती हो, तात्याना!......'भगवान् की छत्रछाया में'......यह बहुत अच्छा है। तात्याना, जो मैं चाहती हूँ वह तुम्हें बताती हूँ। मैं तुम्हारी ही सी, या शायद और भी साधारण, एक पोशाक खरीदना चाहती हूँ या बनवाना। और जूते, मोज़े, रूमाल भी सब तुम्हारे ही जैसे। मेरे पास इसके लायक रुपये हैं।"

"जरूर, बीबीजी, इसका तो इन्तज़ाम हो ही सकता है...अच्छा-अच्छा, नहीं कहूँगी, नाराज़ मत होइये। मैं आपको बीबीजी नहीं कहूँगी। पर फिर कैसे पुकारा करूँ?"

"मेरियाना।"

"और पिताजी का नाम क्या है?"

"पिताजी के नाम की क्या ज़रूरत है? मुझे बस मेरियाना कहा करो। वैसे ही जैसे मैं तुम्हें तात्याना कहती हूँ।"

"वैसा ही है भी, और नहीं भी है। आप पिताजी का नाम बता दीजिये।"

"अच्छी बात है। मेरे पिताजी का नाम था विकेन्त; और तुम्हारे

पिताजी का क्यानाम था ?"

"ओसिय ।"

"अच्छा तो मै फिर तुम्हे तात्याना ओसीयोव्ना कहा करूँगी ।"

"और मै आपसे कहा करूँगी मेरियाना विकेन्त्येव्ना । यह बहुत अच्छा रहेगा ।"

"तुम हमारे साथ एक प्याला चाय नही पियोगी, तात्याना ओसीयोव्ना ?"

"इस पहली जान-पहचान के अवसर पर पी भी सकती हूँ, मेरियाना विकेन्त्येव्ना । मै एक छोटा-सा प्याला ले लूँगी, हालॉकि येगोरिच डॉटेगे ।"

"येगोरिच कौन है ?"

"पवेल, मेरे पति ।"

"बैठ जाओ, तात्याना ओसीयोव्ना ।"

"ज़रूर, बैठी जाती हूँ, मेरियाना विकेन्त्येव्ना ।"

तात्याना एक कुर्सी पर बैठ गई और चीनी के टुकडे के साथ अपनी चाय पीने लगी । वह चीनी के टुकडे को लगातार अपनी उँगलियो मे उलटती-पलटती जा रही थी, और जिस तरफ से वह चीनी के टुकडे को कुतरती थी उधर ही आँखें घुमाती जा रही थी । मेरियाना उससे बातचीत करने लगी । तात्याना खुशामदीपन के बिना उत्तर दे रही थी, और अपने-आप ही उससे सवाल भी पूछती और बहुत-सी बाते बताती जा रही थी । सालोमिन की तो वह एकदम भगत थी, पर उसके पति का स्थान भी वैसिली फेदोतिच के बाद ही आता था । पर वह कारखाने की जिन्दगी से तग थी ।

"न तो यहॉ शहर है, न गॉव······अगर वैसिली फेदोतिच न होते तो मै तो यहॉ एक घण्टे भी न ठहरती ।"

मेरियाना ध्यान से उसकी बातचीत सुन रही थी । नेज्दानौफ थोडा एक ओर को बैठा हुआ अपनी सगिनी की ओर देख रहा था और

उसकी उत्सुकता पर उसे कोई आश्चर्य न था। मेरियाना के लिए हर चीज़ नई थी, पर उसको लग रहा था कि उसने ऐसी सैकड़ों तात्यानाएँ देखी होंगी और उनसे सैकड़ों बार बातचीत भी की होगी।

"तुम जानती हो तात्याना ओसीयोव्ना," मेरियाना ने आखिरकार कहा, "तुम सोचती हो हम जनता को सिखाना चाहते हैं; नहीं, हम उनकी सेवा करना चाहते हैं।"

"सेवा कैसे करोगी? उन्हें सिखाओ; यही उनकी सबसे बड़ी सेवा होगी। जैसे मुझे ही ले लो। जब मेरी येगोरिच से शादी हुई तो मैं न लिख सकती थी न पढ़ सकती थी; पर वैसिली फेदोतिच की कृपा से अब मैं सीख गई हूँ। उन्होंने मुझे स्वयं नहीं सिखाया, पर एक बड़े आदमी को मुझे सिखाने के लिए रख दिया। उसी ने मुझे पढ़ाया। मेरी वैसे अभी उम्र अधिक नहीं है, पर दूसरों के लिए मैं आगे बढ़ी हुई हूँ।"

मेरियाना पल भर चुप रही।

"मैं, तात्याना ओसीयोव्ना," उसने फिर शुरू किया, "कोई काम सीखना चाहती हूँ......उसके बारे में भी बात करेंगे। मुझे सिलाई करना भी ठीक से नहीं आता; मैं अगर खाना बनाना सीख लूँ तो कहीं रसोइन बन सकती हूँ।"

तात्याना सोचने लगी।

"पर रसोइन क्यों? रसोइनें अमीरों या व्यापारियों के घरों में ही होती हैं; गरीब लोग तो अपना खाना आप बनाते हैं। पर किसी यूनियन के लिए, मज़दूरों के लिए खाना बनाना—यह तो बस आख़िरी चीज़ है!"

"पर यह भी तो हो सकता है कि मैं किसी अमीर आदमी के यहाँ काम करूँ और ग़रीबों से दोस्ती भी बढ़ा लूँ। नहीं तो मैं उन्हें जानूँगी कैसे? सब लोग हमेशा तुम्हारे ही जैसे थोड़े ही मिलते रहेंगे।"

तात्याना ने अपना खाली प्याला रकेबी के ऊपर उल्टा रख दिया।

"बड़ा कठिन सवाल है," उसने आखिरकार एक लम्बी साँस लेते हुए कहा, "यह यों ही इतनी आसानी से नहीं तय हो सकता। जो कुछ मैं जानती हूँ वह तुम्हें सिखा दूँगी, पर मैं बहुत होशियार नहीं हूँ। इसके बारे में हम लोग येगोरिच से बातें करेंगे। हैं वे ऐसे आदमी! तरह-तरह की किताबें पढ़ते रहते हैं, और पलक मारते ही हर चीज़ की असलियत समझ जाते हैं।" यहाँ उसने मेरियाना पर एक नज़र डाली जो एक सिगरेट बना रही थी······

"और एक बात मैं ज़रूर तुमसे कहूँगी, मेरियाना विकेन्त्येव्ना, अगर तुम बुरा न मानो; अगर तुम सचमुच सीधी-सादी बनना चाहती हो तो तुम्हें यह चीज़ छोड़नी पड़ेगी।" उसने सिगरेट की ओर इशारा किया। "क्योंकि जैसे उदाहरण के लिए रसोइन के काम में यह चीज़ बिलकुल नहीं चलेगी; हर आदमी फौरन समझ जायगा कि तुम कोई पढ़ी-लिखी स्त्री हो। हाँ!"

मेरियाना ने सिगरेट खिड़की के बाहर फेंक दी।

"नहीं पियूँगी······इसे छोड़ना कोई बहुत कठिन काम नहीं है। जनता की स्त्रियाँ सिगरेट नहीं पीतीं, इसलिए मुझे भी नहीं पीनी चाहिए।"

"यह बात तुमने बड़ी सच्ची कही, मेरियाना विकेन्त्येव्ना। मर्द हम लोगों में भी ज़रूर पीते हैं; पर औरतें—नहीं······आह, यह वैसिली फ़ेदोतिच खुद आ रहे हैं। यह उन्हीं के पैरों की आवाज़ है। तुम उन्हीं से पूछो; वह तुम्हारे लिए हर चीज़ अच्छे-से-अच्छे ढंग से तय कर देंगे!"

उसकी बात ठीक थी; सालोमिन की आवाज़ दरवाज़े पर सुनाई दी।

"मैं अन्दर आ सकता हूँ?"

"आइये, आइए," मेरियाना ने पुकारा।

"यह मेरी अंग्रेजी आदत पड़ी हुई है," सालोमिन ने अन्दर आते

हुए कहा। "तो अब कैसा लग रहा है? अभी तक उकताई नहीं? देखता हूँ आप तात्याना के साथ चाय पी रही हैं। उसकी बात आप ज़रूर सुनिए; वह बड़ी समझदार है······पर आज मेरा मालिक मुझसे मिलने आ धमका है······जब उसकी एकदम जरूरत न थी! और वह भोजन के समय तक ठहरेगा। कोई निस्तार नहीं है! मालिक ही ठहरा।"

"कैसा आदमी है वह?" नेज़्दानौफ़ ने अपने कोने से निकलते हुए पूछा।

"ओह ठीक है······नज़र बड़ी तेज़ है। नई पीढ़ी का आदमी है। बहुत मिलनसार है, कफ़ पहनता है, पर हर चीज की देखभाल करने में, पुराने लोगों से ज़रा भी कम नहीं है। पूरा मक्खीचूस है। पर मेरे साथ रेशम की तरह मुलायम रहता है; मैं उसके लिए आवश्यक जो हूँ! इस समय मैं इतना ही कहने आया था कि आज तुम लोगों से मिलने नहीं आ सकूँगा। आपका भोजन यहाँ पहुँच जायगा और अहाते में आप लोग न निकलिए। तुम क्या सोचती हो मेरियाना—सिप्यागिन तुम्हारी तलाश करेगा? क्या बहुत ढूँढ़ मचेगी?"

"मेरा तो ख़याल है कि नहीं करेंगे," मेरियाना ने उत्तर दिया।

"पर मुझे यकीन है कि वे ज़रूर करेंगे," नेज़्दानौफ़ ने कहा।

"ख़ैर जो हो," सालोमिन बोला।

"शुरू में होशियार रहना ही ठीक है। बाद में चाहे जो करना।"

"हाँ; बस एक बात है," नेज़्दानौफ़ ने कहा, "मार्केलौफ़ को मेरा ठिकाना मालूम होना चाहिए; उसे बताना ज़रूरी है।"

"क्यों?"

"इससे बचा नहीं जा सकता; आन्दोलन की माँग है। उसे हमेशा बताते रहना पड़ेगा कि मैं कहां हूँ। इसका वादा किया जा चुका है। पर वह किसी से कहेगा नहीं!"

"बहुत अच्छा। पवेल को भेज देंगे।"

"और मेरे लायक कोई पोशाक तैयार होगी ?" नेज़्दानौफ़ ने पूछा ।

"अपने ठाट-बाट से मतलब है तुम्हारा ? ज़रूर·······ज़रूर । पूरा तमाशा है, पर भाग्य से बहुत कीमती नहीं है । अच्छा नमस्कार; आप लोगों को कुछ आराम मिलना चाहिए । तात्याना, चलो चलें ।"

मेरियाना और नेज़्दानौफ़ फिर अकेले रह गए ।

अट्ठाईस

पहले उन्होंने फिर एक-दूसरे के हाथ पकड़ लिये। फिर मेरियाना बोली, "आओ मैं तुम्हारा कमरा ठीक कर दूँ," और वह बक्स और बिस्तरे से चीज़ें निकालने लगी। नेज़्दानौफ़ ने भी काम में हाथ बँटाना चाहा, पर उसने घोषणा कर दी कि वह अकेले ही सब काम करेगी। "क्योंकि मुझे काम करने की आदत डालनी चाहिए।" और उसने सचमुच उसका कोट एक कील पर टाँग दिया; कील उसे मेज़ की दराज़ में मिली जिसे उसने दीवाल में, हथौड़े के अभाव में, ब्रश की पीठ से ठोक दिया; कपड़े उसने दोनों खिड़कियों के बीच में रखी एक आलमारी में रख दिये।

"यह क्या है?" उसने एकाएक पूछा; "रिवाल्वर? भरा हुआ है? इसकी क्या ज़रूरत है?"

"भरा हुआ नहीं है······पर उसे इधर दे दो। तुम पूछ रही हो इसकी क्या ज़रूरत है? हमारे जैसे काम में रिवाल्वर के बिना कैसे काम चल सकता है?"

वह हँस पड़ी और अपना काम करती रही; हर चीज़ को वह

अलग-अलग फटकार कर और अपने हाथ से पीटकर रखती जाती थी; उसने दो जोड़ी जूते भी सोफ़े के नीचे रख दिये; थोड़ी-सी पुस्तकें, कागज़ों का एक बंडल और कविताओं की छोटी कापी उसने विजय के भाव से, कोने की एक तीन पैर वाली मेज़ पर रख दी और कहा कि यह लिखने-पढ़ने और कामकाज की मेज़ है; दूसरी गोल मेज़ को भोजन और चाय की मेज़ घोषित कर दिया। फिर कविता की कापी को दोनों हाथों से पकड़कर उसने अपने मुख के पास तक उठा लिया, और उसके किनारों के ऊपर से नेज़्दानौफ़ की ओर देखती हुई मुस्कराकर बोली, "इसे हम लोग जब फ़ुरसत होगी तो एक साथ कभी पढ़ेंगे न, ऐं ?"

"वह कापी मुझे दे दो ! मैं उसे जला दूँगा !" नेज़्दानौफ़ ने कहा, "वह और किसी मतलब की नहीं है।"

"तो फिर तुम इसे अपने साथ लाये क्यों ? नहीं, नहीं, मैं तुम्हें इसे जलाने के लिए नहीं दूँगी। हालांकि लोग कहते हैं कि लेखक सदा यह धमकी देते रहते हैं, पर अपनी चीज़ें जलाते कभी नहीं। पर जो हो, इसे मैं अपने पास रखूँगी !"

नेज़्दानौफ़ ने प्रतिवाद करने की कोशिश की, पर मेरियाना कापी लेकर दूसरे कमरे में दौड़ गई और उसे वहीं छोड़कर लौट आई।

वह नेज़्दानौफ़ के पास आकर बैठ गई, पर फिर तुरन्त ही उठ पड़ी। "तुम अभी तक····मेरे कमरे में तो गये ही नहीं हो। उसे देखोगे नहीं ? तुम्हारे जैसा ही अच्छा है। आओ, तुम्हें दिखा दूँ।"

नेज़्दानौफ़ उठकर मेरियाना के पीछे-पीछे चला गया। उसका कमरा, जैसा वह कहती थी, उसके कमरे से थोड़ा छोटा था, पर उसका फ़र्नीचर अधिक नया और साफ़ लगता था, खिड़की में एक काँच का फूलदान रखा था, और कोने में एक छोटा-सा पलंग।

"देखो सालोमिन कितना अच्छा है," मेरियाना ने उत्फुल्ल भाव से कहा, "बस बहुत ज़्यादा आदत बिगाड़ना ठीक नहीं होगा; ऐसा घर हमें हमेशा थोड़ा ही मिलता रहेगा। और मेरे ख्याल से हमें कुछ ऐसा

इन्तज़ाम करना चाहिये कि जहाँ भी जाना पड़े हम दोनों साथ-साथ जा सकें, अलग न होना पड़े। यह कठिन तो ज़रूर होगा," उसने पल भर रुक कर जोड़ा; "पर हम लोग इस पर विचार करेंगे। जो हो, तुम पीटर्सबर्ग तो अब नहीं जा रहे हो न ?"

"पीटर्सबर्ग में मैं अब क्या करूँगा ? यूनिवर्सिटी में जाकर पढ़ाई ? उससे अब क्या फ़ायदा है ?"

"देखें सालोमिन क्या कहता है," मेरियाना ने कहा, "वही सब ठीक तै कर देगा कि क्या करना चाहिये।"

वे लोग फिर पहले कमरे में आकर पास-पास बैठ गये। सालोमिन, तात्याना, पवेल के बारे में वे प्रशंसा के साथ बातें करने लगे। उन्होंने सिप्यागिन का भी जिक्र किया और कहने लगे कि वहाँ की ज़िन्दगी एकाएक ही कितनी दूर, बादलों में छिपी-सी लगती है। उन्होंने एक-दूसरे का हाथ फिर दबाया और हर्षभरी दृष्टि एक-दूसरे पर डाली। फिर वे लोग इस बात पर विचार करने लगे कि किस तरह के लोगों में उन्हें प्रचार-कार्य शुरू करना चाहिये और किस प्रकार का व्यवहार करना चाहिये कि किसी को शक न हो।

नेज़दानौफ़ ने कहा कि इस विषय में जितना कम सोचा जाय, जितनी सादगी से व्यवहार किया जाय, उतना ही अच्छा है।

"ज़रूर !" मेरियाना ने कहा, "क्यों, हम लोग तो सीधे-सादे बनना भी चाहते हैं, जैसा तात्याना रहती है।"

"मैंने उस अर्थ में नहीं कहा था," नेज़दानौफ़ ने शुरू किया, "मेरा मतलब था कि हमें बनावटी व्यवहार नहीं करना चाहिये—"

एकाएक मेरियाना हँस पड़ी।

"मुझे याद आ गया, अल्योशा, कि कैसे मैं हम दोनों को सीधे-सादे प्राणी कह रही थी !"

नेज़दानौफ़ भी मुस्कराया; उसने 'सीधे-सादे' दुहराया, और फिर विचार में डूब गया।

"अल्योशा !" वह बोली ।

"क्या ?"

"हम लोग दोनों कुछ झिझक-सी अनुभव करते हैं । जवान लोग, नव-विवाहित," उसने स्पष्ट करते हुए कहा "अपने विवाह के बाद प्रथम दिन अवश्य ही ऐसा ही अनुभव करते होंगे । आनन्दित, सन्तुष्ट, और कुछ झिझकते हुए ।"

नेज़दानौफ़ मुस्कराया—जबर्दस्ती की मुस्कराहट ।

"तुम भलीभाँति जानती हो, मेरियाना, कि हम लोग उस अर्थ में नये दम्पति नहीं हैं ।"

मेरियाना उठ पड़ी और ठीक नेज़दानौफ़ के सामने आकर खड़ी हो गई ।

"वह तुम्हारे ही ऊपर निर्भर है ।"

"कैसे ?"

"अल्योशा, तुम जानते हो कि जब तुम ईमानदारी के साथ मुझसे कहोगे—और मैं तुम्हारा विश्वास कर लूँगी क्योंकि तुम वास्तव में हो ईमानदार—जब तुम मुझसे कहोगे कि तुम मुझे उस तरह से प्यार करते हो,…उस तरह का प्यार जो एक व्यक्ति को दूसरे के जीवन का अधिकार दे देता है—जब तुम यह कहोगे तभी मैं तुम्हारी हो जाऊँगी ।"

नेज़दानौफ़ का चेहरा लाल हो गया और उसने थोड़ा-सा मुँह फेर लिया ।

"जब मैं तुमसे वह कहूँगा—"

"हाँ तब ! पर यह तुम स्वयं भी जानते हो कि अभी तुम मुझसे वैसे नहीं प्यार करते ।……सच अल्योशा, तुम सचमुच बिलकुल सच्चे आदमी हो । छोड़ो, हम लोग दूसरी अधिक महत्त्वपूर्ण चीज़ों पर बात करें ।"

"पर तुम जानती हो, मैं तुम्हें प्यार करता हूँ, मेरियाना ।"

"इसमें मुझे सन्देह नहीं है……और मैं प्रतीक्षा करती रहूँगी ।

देखो, मैंने तुम्हारी लिखने की मेज अभी तक ठीक से नहीं रखी है। और यह कुछ और है लिपटा हुआ, कुछ कड़ी-सी चीज़।"

नेज़दानौफ़ कुर्सी से उछल पड़ा।

"उसे रहने दो, मेरियाना······कृपा करके······उसे छोड़ दो।"

मेरियाना ने अपना सिर घुमाकर उसकी ओर देखा और विस्मय से उसकी भौंहें चढ़ गईं।

"कोई भेद है ? गुप्त बात ? तुमने कोई बात गुप्त भी रख छोड़ी है ?"

"हाँ······हाँ," नेज़दानौफ़ ने कहा, और बहुत ही अप्रतिभ होकर सफ़ाई के तौर पर जोड़ा, "यह······एक तस्वीर है।"

यह शब्द अनजाने ही उसके मुँह से निकल गया था। मेरियाना के हाथ में, असल में, लिपटा हुआ स्वयं उसी का चित्र था, जो मार्केलौफ़ ने नेज़दानौफ़ को दिया था।

"चित्र ?" उसने प्रत्येक अक्षर पर जोर देते हुए कहा। "किसी स्त्री का ?"

उसने वह छोटा-सा बंडल उसे वापस कर दिया, पर नेज़दानौफ़ ने कुछ ऐसे असमंजस में उसे पकड़ा कि वह उसके हाथ से छूट पड़ा और गिरकर खुल गया।

"क्यों, यह तो······मेरा चित्र है !" मेरियाना ने जल्दी से चीख़कर कहा। "अपना चित्र लेने का तो मुझे हक है।" उसने नेज़दानौफ़ से चित्र वापस ले लिया।

"तुमने बनाया था ?"

"नहीं······मैंने नहीं।"

"तब किसने ? मार्केलौफ़ ने ?"

"हाँ तुम पहचान गईं······उसी ने बनाया था।"

"तुम्हें फिर कैसे मिल गया ?"

"उसी ने दिया मुझे।"

"कब ?"

नेज़्दानौफ़ ने बता दिया कि कैसे और कब वह चित्र उसे मिला था। जिस समय वह बोल रहा था, मेरियाना ने पहले उस पर नज़र डाली और फिर चित्र पर······और दोनों के मन में एक ही विचार बिजली की तरह कौंध गया : "वह यदि यहाँ इस कमरे में होता तो उसे मेरियाना से प्रस्ताव करने का हक होता।"······पर न मेरियाना ने न नेज़्दानौफ़ ने अपना विचार ज़ोर से कहा······शायद इसलिए कि दोनों अनुभव कर रहे थे कि वही विचार दूसरे के मन में भी है।

मेरियाना ने आहिस्ता से चित्र को फिर से कागज़ में लपेटा और उसे मेज़ पर रख दिया।

"वह अच्छा आदमी है।" वह बहुत ही धीरे से बोली······ "आजकल वह कहाँ है ?"

"कहाँ ?······घर पर ही। मैं कल या परसों उससे मिलने जा रहा हूँ, किताबें और पुस्तिकाएँ लेने के लिए। वह स्वयं ही मुझे देना चाहता था, पर जब मैं चलने लगा तब शायद भूल गया।"

"और क्या तुम सोचते हो, अल्योशा, कि तुम्हें यह चित्र देकर उसने सब कुछ त्याग दिया······एकदम सब कुछ ?"

"सोचा तो मैंने यही था।"

"तुम्हें उससे घर पर मिलने की उम्मीद है ?"

"अवश्य।"

"आह !" मेरियाना ने अपनी आँखें नीची कर लीं और हाथ गिरा दिये। "और यह तात्याना हम लोगों का भोजन ला रही है," उसने एकाएक चीख़कर कहा। "कितनी अच्छी स्त्री है वह !"

तात्याना छुरी-काँटे, मेज़ के तौलिया, तश्तरियाँ और प्लेटें लेकर आई। मेज़ पर चीजें सजाते-सजाते उसने बताया कि कारख़ाने में क्या हो रहा है।

"मालिक मास्को रेल से आया, और वह आते ही ऊपर-नीचे हर

जगह पागलों की भाँति दौड़-धूप करने लगा। सच बात यह है कि वह कुछ जानता-वानता नहीं है, पर वह दिखाने के लिए, रौब जमाये रखने के लिए ऐसा किया करता है। पर वैसिली फेदोतिच उससे दूधपीते बच्चे की तरह बर्त्ताव करते हैं। पहले तो मालिक ने सोचा कि उन्हें डाटेंगे। इसलिए वैसिली फेदोतिच ने उसे फ़ौरन झिड़क दिया; "मैं सब फ़ौरन छोड़छाड़ दूँगा," उन्होंने कहा, और हमारे मालिक जी ने फ़ौरन सुर वदल दिया। अब वे लोग एक साथ भोजन कर रहे हैं; मालिक अपने साथ एक दोस्त को भी लेता आया है······और वह हर चीज की तारीफ़ करने के सिवाय कुछ नहीं करता। और जिस तरह से वह चुप रहता है और अपना सिर हिलाता रहता है, उससे लगता है कि यह दोस्त भी, अमीर आदमी होगा और वह मोटा भी है, बहुत मोटा है! पक्का मास्को का रईस है! यह कहावत एकदम सच्ची है; "रूस के हर हिस्से से ढाल मास्को की ही तरह है, हर चीज़ लुढ़क कर वहीं पहुँच जाती है।"

"तुम तो हर चीज़ को देख लेती हो।" मेरियाना ने कहा।

"हाँ, मेरी नज़र काफ़ी तेज़ है," तात्याना ने उत्तर दिया। "आइये आपका भोजन लग गया। आपको यह फले-फूले! मैं यहाँ थोड़ी देर बैठकर देखूँगी।"

मेरियाना और नेज़्दानौफ़ भोजन के लिए बैठ गये। तात्याना खिड़की की देहली के सहारे टिक कर बैठ गई और अपना गाल हथेली पर टिका लिया।

"मैं आपको देख रही हूँ," उसने फिर कहा······"और कितने बेचारे कोमल आप लोग हैं!······आप लोगों को देखना इतना अच्छा लगता है कि मेरा हृदय धड़कने लगता है! ओह! आप लोग अपनी सामर्थ्य से बड़ा बोझा अपने कन्धों पर उठाने जा रहे हैं! आप जैसे लोगों को ही ज़ार के इन्स्पेक्टर जेल में बन्द करने के लिए सदा तैयार रहते हैं।"

"यह सब बेकार है, हमें डराओ मत," नेज़्दानौफ़ ने कहा। "तुम वह कहावत जानती ही हो कि जो कुकुरमुत्ता बनना चाहता है उसे सबके साथ टोकरी में जाना ही पड़ेगा।"

"जानती हूँ,······जानती हूँ; पर आजकल की टोकरियाँ इतनी छोटी हैं, और उनके बाहर रहे आना इतना मुश्किल है!"

"तुम्हारे कोई बच्चे हैं?" मेरियाना ने विषय बदलने के लिए पूछा।

"हाँ, एक लड़का! वह स्कूल जाने लगा है। एक लड़की भी थी; पर वह अब नहीं रही, बेचारी! उसके साथ एक दुर्घटना हो गई; एक पहिये के नीचे जा पड़ी थी। और उससे भी अगर फ़ौरन मर जाती तो भी ठीक था। पर नहीं, बहुत समय तक वह तकलीफ़ में पड़ी रही। तब से मेरा दिल बड़ा कमजोर हो गया है, उसके पहले तो मैं पेड़ की तरह सख्त थी।"

"क्यों, और तुम्हारा आदमी पवेल येगोरिच? उसे तुम प्यार नहीं करती थीं?"

"आह, वह अलग बात थी; एक नौजवान लड़की थी। और तुम,—तुम अपने आदमी को प्यार करती हो?"

"हाँ।"

"बहुत ज़्यादे?"

"हाँ।"

"हाँ?·········"

तात्याना ने नेज़्दानौफ़ की ओर देखा, फिर मेरियाना की ओर, और फिर चुप हो गई।

फिर मेरियाना को ही बातचीत का विषय बदलना पड़ा। उसने तात्याना से कहा कि मैंने सिगरेट पीना छोड़ दिया है, तात्याना ने उसके इस निश्चय की प्रशंसा की। तब मेरियाना ने उससे कपड़ों के बारे में फिर पूछा और उसे याद दिलाया कि उसने खाना बनाना सिखाने

का भी वायदा किया था······

"ओह, और एक बात और; क्या तुम मुझे थोड़ा-सा मोटा सूत ला दोगी ? मैं अपने लिए मोजे बुनूँगी······सादे वाले।"

"तात्याना ने उत्तर दिया कि धीरे-धीरे सब चीज़ हो जायेगी। और मेज़ को साफ़ करके वह अपनी शांत स्थिर चाल से कमरे से बाहर चली गई।

"अच्छा अब हम लोग क्या करें ?" मेरियाना ने नेज़्दानौफ़ की ओर मुड़ते हुए कहा, और फिर उसके उत्तर देने के पहले ही बोली, "क्या कहते हो ? हमारा असली काम कल शुरू होगा, तो आज की शाम हम लोग साहित्य को क्यों न दें ? चलो तुम्हारी कविताएँ पढ़ी जायँ। मैं बड़ी कठोर आलोचक सिद्ध हूँगी।"

बहुत देर तक तो नेज़्दानौफ़ राज़ी नहीं हुआ······किन्तु अन्त में उसने हार मान ली और अपनी कापी में से कविताएँ सुनाने लगा। मेरियाना उसके एकदम पास बैठी थी और पढ़ते समय उसका चेहरा देख रही थी। उसने सच्ची ही बात कही थी; वह सचमुच एक कठोर आलोचक सिद्ध हुई। उसे बहुत थोड़ी-सी ही कविताएँ अच्छी लगीं; उसे बिल्कुल गीतात्मक, छोटी-छोटी, जो उसके शब्दों में उपदेशात्मक नहीं थीं वही पसन्द थीं। नेज़्दानौफ़ पढ़ भी अच्छी तरह से नहीं रहा था; बहुत जोश के साथ पढ़ने की तो उसकी हिम्मत नहीं थी, और साथ ही वह बिल्कुल भावहीन ढंग से भी नहीं पढ़ना चाहता था; परिणाम यह हुआ कि दोनों में से कोई भी चीज़ न हो सकी। मेरियाना ने एकाएक बीच ही में प्रश्न किया, क्या उसने डोब्रोल्यूबौफ़ की वह अद्भुत कविता पढ़ी है जिसकी पहली पंक्ति है, "मुझे मरने दो—उसमें शोक का क्या कारण है ?" और यह कविता उसने पूरी सुना दी; बहुत अच्छी तरह नहीं—बच्चों की सी तरह।

नेज़्दानौफ़ ने कहा कि कविता बहुत तीखी और दर्द-भरी है, और फिर उसने जोड़ा कि वह स्वयं कभी इस तरह की कविता नहीं लिख सकता,

क्योंकि अपनी क़ब्र पर आँसुओं के गिरने से डरने का उसके पास कोई कारण नहीं था······न कोई हो ही सकता है।

"होगा अगर मैं तुम्हारे बाद ज़िन्दा बनी रही," मेरियाना ने धीरे-धीरे कहा; और अपनी आँखें छत की ओर उठाते हुए हल्की-सी चुप्पी के बाद, इतनी धीमी आवाज़ में कि मानो अपने-आप से बातें कर रही हो, उसने पूछा, "उसने मेरा चित्र कैसे खींचा होगा? याद कर करके?"

नेज़्दानौफ़ जल्दी से उसकी ओर घूम गया······।

"हाँ, याद कर करके।"

मेरियाना उसके उत्तर देने से चकित हो उठी।, उसे लगा था कि प्रश्न केवल उसके मन में ही आया है।

"बड़े आश्चर्य की बात है······" वह उसी दबी हुई आवाज़ में बोली; "उसे तो चित्र बनाना बिल्कुल नहीं आता। हाँ, मैं क्या कह रही थी?" उसने ज़ोर से कहा; "ओह, डोब्रोल्यूवौफ़ की कविता के बारे में। कविता तो पुश्किन की सी या डोब्रोल्यूबौफ़ की सी लिखनी चाहिए; वैसे यह कविता नहीं है······पर उतनी ही अच्छी है।"

"और मेरी जैसी कविताएँ," नेज़्दानौफ़ ने कहा, "बिल्कुल लिखी नहीं जानी चाहिए? ऐं?"

"तुम्हारी जैसी कविताएँ तुम्हारे मित्रों को अच्छी लगती हैं, इसलिए नहीं कि वे बहुत बढ़िया हैं बल्कि इसलिए कि तुम अच्छे व्यक्ति हो, और वे कविताएँ भी तुम्हारे जैसी हैं।" नेज़्दानौफ़ मुस्कराया।

"तुमने उन्हें दफ़ना दिया और उनके साथ मुझे भी!"

मेरियाना ने उसके हाथ पर एक चपत जमाई और कहा कि वह बहुत बुरा है······उसके थोड़ी ही देर बाद उसने घोषणा की कि वह थक गई है और जाकर सोयेगी।

"अच्छा तुम जानते हो," उसने अपने छोटे-छोटे घने घुंघराले बाल हिलाते हुए कहा, "मेरे पास एक सौ सत्तर रूबल हैं! और तुम्हारे पास?"

"अट्ठानवे।"

"ओह! हम लोग तो अमीर हैं······सीधे-सादे आदमी के लिहाज़ से। अच्छा, कल तक के लिए नमस्कार!" वह चली गई; पर कुछ ही क्षणों बाद उसका दरवाज़ा ज़रा-सा खुला, और उस तंग सी दरार में से नेज़्दानौफ़ ने पहले सुना, "नमस्कार!" फिर और भी धीमे से, "नमस्कार!" और फिर ताली खटखटा उठी।

नेज़्दानौफ़ सोफे पर गिर गया और उसने अपनी आँखें हाथों से ढक लीं······फिर वह फुर्ती से उठा, दरवाज़े तक गया, और खट-खटाया।

"क्या बात है?" अन्दर से सुनाई पड़ा।

"कल तक नहीं, मेरियाना······पर कल!"

"कल," एक महीन आवाज़ ने उत्तर दिया।

उन्तीस

अगले दिन बहुत सवेरे फिर मेरियाना का दरवाज़ा खटखटाया।

उसके "कौन है ?" के उत्तर में वह बोला, "मैं हूँ; ज़रा बाहर आ सकती हो ?"

"एक मिनिट······अभी आई।"

वह बाहर निकली तो उसके मुख से आश्चर्य की एक चीख निकल गई। पहले मिनिट तो वह उसे पहचान नहीं सकी। उसने एक लम्बा-सा पीले रेशम का, छोटे-छोटे बटन और ऊँची कमर वाला कोट पहन रखा था; बाल उसने रूसी ढंग से, बीच में सीधी माँग निकालकर काढ़ रखे थे; गले में एक नीला रूमाल लिपटा हुआ था; हाथ में एक टूटी हुई बाढ़ की टोपी थी; पैरों में बैल के चमड़े के बिना पोलिश किये हुए ऊँचे बूट थे।

"हे भगवान् !" मेरियाना चीख पड़ी; "कितने······भीषण तुम दिखाई पड़ रहे हो !" और इतना कहकर उसने उसे जल्दी से आलिंगन किया और उससे भी अधिक जल्दी से एक चुम्बन अंकित कर दिया। "पर तुमने यह सब कपड़े क्यों पहन रखे हैं ? तुम कोई

गरीब दुकानदार जैसे······या बिसाती या काम से निकाले हुए घरेलू नौकर जैसे लग रहे हो। यह कोट क्यों पहन लिया है, किसान का साधारण सलूका क्या बुरा होता ?"

"ठीक यही बात है," नेज़्दानौफ़ ने शुरू किया; उसका यह भेष सचमुच फेरी वाले बिसाती का सा लगता था और वह स्वयं भी इस चीज को महसूस करने के कारण मन-ही-मन में बड़ा संकोच और कष्ट अनुभव कर रहा था। इतना संकोच अनुभव कर रहा था कि वह अपने दोनों हाथ की फैली हुई उँगलियों से अपनी छाती को पीट रहा था, मानो अपने-आपको फाड़ रहा हो।

"किसान के भेष में मै फौरन पहचान लिया जाता, पवेल का कहना था; और ये कपड़े······उसके शब्दों में······ऐसे लगते थे मानो ज़िन्दगी में मेरे लिए और कोई पोशाक बनी ही न हो ! कोई बड़ी प्रशंसासूचक बात नहीं लगी, मुझसे पूछो तो।"

"तुम क्या सचमुच फौरन बाहर जाने वाले हो······शुरू करने के लिए ?" मेरियाना ने गहरी दिलचस्पी से पूछा।

"हाँ, कोशिश करूँगा, यद्यपि······वास्तव में······"

"तुम तो बड़े मज़े में हो !" मेरियाना ने बीच में कहा।

"यह पवेल सचमुच अद्‌भुत आदमी है," नेज़्दानौफ़ ने कहा; "वह आपके ऊपर नज़र डालते ही हर बात समझ जाता; और फिर अचानक ही ऐसा मुँह बना लेगा मानो उसे किसी बात से मतलब नहीं—किसी चीज़ में दखल नहीं देना है ! वह स्वयं भी आन्दोलन की सेवा करता है—और सारे वक्त उसका मज़ाक भी उड़ाता रहता है। उसी ने मेरे लिए मार्केलौफ़ से पुस्तिकाएँ ला दीं; वह उसे जानता है और उसे सरजी मिहालोविच कहता है। पर सालोमिन के लिए वह जान पर खेल जाने को तैयार हो जाता है।"

"और तात्याना भी," मेरियाना ने कहा। "लोग उसकी इतनी भक्ति क्यों करते है ?"

नेज़्दानौफ़ ने उत्तर नहीं दिया।

"पवेल तुम्हारे लिए कौनसी पुस्तिकाएँ लाया है ?" मेरियाना ने पूछा।

"ओह ! वही सब चीज़ें। 'चार भाइयों की कहानी'······तथा कुछ और···यही साधारण प्रसिद्ध चीजें। पर हैं ये ही सबसे अच्छी।"

मेरियाना ने चारों ओर कुछ व्यग्रता से देखा।

"और तात्याना का क्या हुआ ? उसने जल्दी ही आने को कहा था।"

"यह आ गई," तात्याना ने एक बंडल लिए हुए कमरे में प्रवेश करते हुए कहा। वह दरवाज़े में खड़ी थी और उसने मेरियाना की बात सुन ली थी।

"ऐसी जल्दी मत करो; कोई बड़ी भारी बढ़िया चीज़ नहीं है।" मेरियाना करीब-करीब उसके ऊपर झपट पड़ी थी।

"ले आई तुम।"

तात्याना ने बंडल को थपथपाया।

"सब इसमें मौजूद है······एकदम तैयार······बस पहनने भर की देरी है······जहाँ ऐसे सजकर निकलीं कि लोग देखते रह जायँगे।"

"आह ! लाओ, लाओ दे दो, तात्याना ओसियोव्ना, प्यारी···"

मेरियाना उसे अपने कमरे में घसीट ले गई।

नेज़्दानौफ़ कमरे में अकेला रह गया, और एक विचित्र प्रकार की डरती-डरती सी चाल से कमरे में टहलने लगा। किसी कारण से उसने कल्पना कर रखी थी कि छोटे दुकानदार इसी तरह चला करते हैं, उसने सावधानी से अपनी बाँह और अपनी टोपी के अस्तर को जरा सा सूँघा और उसकी भौहें चढ़ गईं; उसने खिड़की के पास लटके हुए छोटे से आइने में अपनी शक्ल देखी और सिर हिलाया; वह सचमुच बहुत ही अनाकर्षक लग रहा था। "पर यह अच्छा ही है," उसने सोचा। फिर उसने कुछ पुस्तिकाएँ उठाकर अपने कोट की एक जेब में

ठूँस लीं, और थोड़े से शब्द अपने ही आप एक छोटे दुकानदार के लहजे में बड़बड़ाये। "मेरे ख्याल से ऐसा ही है," उसने फिर सोचा "पर आखिरकार इतने अभिनय की ज़रूरत क्या है ? इस भेष से ही सब काम चल जायगा।" और तभी नेज़्दानौफ़ को एक जर्मन कैदी की बात याद आई जिसे समूचे रूस को पार करके भागना पड़ा था, और वह रूसी भी ठीक से न बोल पाता था; पर बिल्ली की खाल की गोट लगी हुई एक व्यापारी की टोपी के आशीर्वाद से, जिसे उसने एक छोटे से शहर में कहीं खरीद लिया था, उसे हर जगह सौदागर ही समझा जाता और इस प्रकार वह सरहद को पार करने में कामयाब हो गया था।

उसी समय सालोमिन ने अन्दर प्रवेश किया।

"आहा ! भइया एलैक्सी," उसने चीखकर कहा, "तुम अपना पार्ट याद कर रहे हो ! माफ़ करो भाई; इस भेष में ज्यादे इज्जत के साथ बोलना बहुत मुश्किल है।"

"ओह, कृपा करके मुझे अलैक्सी ही कहिए······मैं खुद ही आप से इसके लिए कहने वाला था।"

"अभी इसके लिए बहुत जल्दी है, पर शायद तुम इसकी आदत डाल लेना चाहते हो। तो फिर अच्छी बात है। पर तुम्हें थोड़ी देर अभी इन्तजार करना पड़ेगा, मालिक अभी गया नहीं है, सो रहा है।"

"मैं बाद में जाऊँगा," नेज़्दानौफ़ ने उत्तर दिया। "मैं अभी पास-पड़ौस में ही चक्कर लगाऊँगा जब तक मुझे किसी-न-किसी तरह के आदेश न मिल जाएँ।"

"यह ठीक है ! सिर्फ एक बात तुमसे कहूँगा, भइया अलैक्सी··· तो मैं फिर तुम्हें अलैक्सी कह कर पुकारूँ ?"

"लैक्सी, अगर आपको अच्छा लगे तो," नेज़्दानौफ़ ने मुस्कराते हुए कहा।

"नहीं, जरूरत से ज्यादा नहीं बढ़ाना चाहिए। सुनो ! अच्छी

सलाह रुपये से ज्यादा कीमती होती है, लोग कहते हैं। देखता हूँ तुम्हारे पास कुछ पुस्तिकाएँ भी हैं; तुम उन्हें चाहे जिसको बाँटो, बस केवल कारखाने में नहीं ?"

"क्यों नहीं ?"

"क्योंकि, सबसे पहले तो इसमें तुम्हारे लिए खतरा है; दूसरे मैंने मालिक को बचन दे रक्खा है कि यहाँ इस तरह की कोई चीज़ नहीं होने दी जाएगी, आखिर कारखाना उसी का है तुम जानते हो; और तीसरे, हमने यहाँ कुछ शुरूआत की है—स्कूल वगैरह···और तुम्हारे काम से वह सब बर्बाद हो सकता है। तुम जो चाहे करो, जहाँ इच्छा हो जाओ, मैं तुम्हें नहीं रोकूँगा; पर मेरे कारखाने के मज़दूरों को हाथ मत लगाओ।"

"होशियारी कभी बुरी नहीं होती···हैं न ?" नेज़दानौफ़ ने हल्की सी द्वेषपूर्ण मुस्कराहट के साथ कहा।

सालोमिन के मुख पर उसकी सुपरिचित मुस्कान फैल गई।

"ठीक बात है भइया अलैक्सी, वह कभी बुरी नहीं होती। पर यह मैं किसे देख रहा हूँ ? हम लोग कहाँ आ गए हैं ?"

ये अन्तिम शब्द मेरियाना के बारे में थे जो अपने कमरे के दरवाजे में एक बहुत बार धुला हुआ छींट की गाउन पहने, एक पीला रूमाल अपने कन्धों पर और एक लाल रूमाल अपने सिर पर बाँधे आकर खड़ी हो गई थी। तात्याना उसकी पीठ के पीछे से झाँक रही थी और उसके मुख पर सहज स्नेहपूर्ण प्रशंसा का भाव था। मेरियाना अपनी इस सादी पोशाक में और भी छोटी और सुन्दर लग रही थी, नेज़दानौफ़ को लम्बे कोट की अपेक्षा उसकी यह पौशाक अधिक फबती थी।

"वैसिली फेदोतिच, दया करके हँसिए मत," मेरियाना ने अनुरोध करते हुए कहा, और उसका रंग पोपी के फूल का सा हो गया।

"कैसी सुन्दर जोड़ी है !" तात्याना इस बीच में ताली बजाती हुई कह उठी थी। "बस आप, भइया, नाराज मत होइए। आप अच्छे

हैं, बहुत अच्छे हैं, पर इन बिटिया के आगे आप बिल्कुल नहीं जँचते।

"और सचमुच, कितनी सुन्दर है," नेज़्दानौफ़ सोचने लगा, "ओह! मैं उसे कितना प्यार करता हूँ।"

"और देखिए," तात्याना ने आगे कहा, "इन्होंने मेरे साथ अँगूठी भी बदल ली है। अपनी सोने की मुझे दे दी है और मेरी चाँदी की ले ली है।"

"जनता की लड़कियाँ सोने की अँगूठियाँ नहीं पहनतीं," मेरियाना ने कहा।

तात्याना ने लम्बी साँस ली।

"मैं इसकी हिफाजत करती रहूँगी, डरो मत।"

"अच्छा, बैठिए, बैठिए, आप दोनों," सालोमिन ने शुरू किया, वह इतनी देर से अपने सिर को थोड़ा सा झुकाए मेरियाना की ओर ही ताक रहा था, "पुराने जमाने में तुम्हें याद है कि लोग जब भी कहीं के लिए रवाना होने लगते तो मिलकर थोड़ी देर एक साथ बैठा करते थे। और आप दोनों के सामने एक लम्बा और कड़ा रास्ता पड़ा हुआ है।"

अभी तक लज्जा से गुलाब की तरह लाल मेरियाना बैठ गई, नेज़्दानौफ़ भी बैठ गया; सालोमिन और सबके अंत में तात्याना भी एक काठ के लट्ठे पर बैठ गई।

सालोमिन बारी-बारी से सबकी ओर देखने लगा।

"हम लोग कैसे मज़े में सब यहाँ बैठे हुए हैं" उसने अपनी आँखों को थोड़ा नचाते हुए कहा; और फिर वह एकाएक जोर से खिलखिलाकर हँस पड़ा, पर इतने मीठेपन से कि नाराज होने के बजाय वे सब प्रसन्न हो गए।

पर नेज़्दानौफ़ एकाएक उठ खड़ा हुआ।

"मैं चल दिया," उसने कहा, "अभी इसी मिनिट; हालाँकि यहाँ बड़ा मज़ेदार लग रहा है—बस यह सब कपड़े पहनने के कारण थोड़ी-सी भड़ेती का-सा भाव अवश्य है। परेशान न होइए," उसने सालोमिन की

ओर मुड़कर कहा, "मैं आपके कारखाने वालों से हाथ नहीं लगाऊँगा। मैं आसपास के गाँवों में कुछ बातचीत करूँगा और लौट आऊँगा और मेरियाना, अगर कुछ बताने लायक हुआ तो अपने सब कारनामे तुम्हें सुना दूँगा। सफलता के लिए लाओ अपना हाथ दो !"

"एक प्याला चाय पहले और भी अच्छा रहेगा," तात्याना ने कहा।

"नहीं ! चाय पीना नहीं ! अगर मुझे ज़रूरत हुई तो किसी सराय में या ताड़ीखाने में चला जाऊँगा।"

यात्याना ने अपना सिर हिलाया।

"आजकल सरायें हमारी बड़ी सड़कों पर भेड़ की खाल में मक्खियों की भाँति भरी पड़ी हैं। गाँव सब इतने बड़े हैं—, बाल्मासोवो······"

"अच्छा नमस्कार······भगवान् आपका भला करे !" नेज़्दानौफ़ ने अपने छोटे दुकानदार की भूमिका के अनुरूप जोड़ा। पर उसके दरवाज़े तक पहुँचने के पहले ही पवेल ने झाँककर एक लम्बी-सी पतली छड़ी नेज़्दानौफ़ के हाथ में थमा दी, जिसमें छाल की एक पट्टी चारों तरफ लिपटी हुई थी, और बोला, "इसे लेते जाइए, अलैक्सी दिमित्रिच; चलते समय इसका सहारा लेते रहिएगा; और छड़ी को अपने से जितनी दूर रखेंगे उतना ही ज्यादा अच्छा असर होगा।"

नेज़्दानौफ़ ने बिना कुछ कहे छड़ी ले ली और बाहर निकल गया। उसके पीछे-पीछे पवेल भी चला गया। तात्याना भी जा ही रही थी कि मेरियाना ने उठकर उसे रोक लिया।

"ज़रा ठहरो; मुझे तुमसे काम है।"

"पर मैं अभी एक मिनिट में चाय लेकर आती हूँ। तुम्हारे साथी तो बिना चाय लिए चले गए—ऐसी भारी जल्दी में थे वह······पर तुम क्यों नहीं पियोगी ? बाद में सब चीज़ ठीक समझ में आयगी।"

तात्याना चली गई; सालोमिन भी उठ खड़ा हुआ। मेरियाना उसकी ओर पीठ किये हुए खड़ी थी, और जब वह उसकी ओर मुड़ी—यह सोचकर कि बहुत देर से उसने एक शब्द भी नहीं कहा है—तो

उसने उसके चेहरे पर, अपने मुख पर गड़ी हुई उसकी आँखों में एक ऐसा भाव देखा जो उसने सालोमिन के चेहरे पर पहले कभी नहीं देखा था—एक प्रकार का जिज्ञासा का, आतुरता का, लगभग उत्कंठा का-सा भाव। वह हतप्रभ हो गई और उसका चेहरा फिर लाल हो आया। और लगा कि सालोमिन भी इस बात से लज्जित है कि मेरियाना ने उसके चेहरे के उस भाव को देख लिया, और वह जोर-ज़ोर से बात करने लगा।

"अच्छा, अच्छा, मेरियाना······तो तुम्हारी शुरुआत हो गई।"

"क्या अच्छी शुरुआत है, वैसिली फेदोतिच! इसे कैसे शुरुआत कहा जा सकता है? मुझे एकाएक जाने क्यों बड़ा बेतुका-सा लग रहा है। अलैक्सी ने ठीक ही कहा था; हम लोग एक तरह की भड़ैती-सी कर रहे हैं।"

सालोमिन फिर कुर्सी पर बैठ गया।

"पर मेरियाना एक बात मुझे कहनी है······तुमने किस तरह की तस्वीर अपने मन में बना रक्खी थी—इस शुरूआत की? यह केवल सड़क पर बैरिकेडें खड़ी करके और उनके ऊपर झंडा लगाकर, "हुर्रा! प्रजातंत्र की जय हो!" चिल्लाना भर ही नहीं है। और यह स्त्री का काम भी नहीं है। पर तुम आज किसी लुकेर्या को कोई अच्छी चीज़ सिखाना शुरू करोगी, और क्योंकि लुकेर्या बहुत जल्दी नहीं समझ सकेगी, और वह तुमसे शर्मायेगी, और यह भी सोचेगी कि जो भी कुछ तुम उसे सिखा रही हो वह उसके किसी काम का नहीं है—इसलिए यह काम तुम्हारे लिए काफी कठिन भी होगा; और दो या तीन हफ्ते में तुम किसी दूसरी लुकेर्या से उलझती होगी, और इसी बीच तुम किसी बच्चे को नहलाओगी या उसे अक्षरज्ञान कराओगी या किसी बीमार आदमी को दवाई दोगी······यही होगी तुम्हारी शुरुआत।"

"पर धार्मिक संस्थाओं की स्त्रियाँ भी तो यह सब करती हैं, आप जानते हैं, वैसिली फेदोतिच। फिर इस सब की क्या जरूरत है?"

मेरियाना ने अपनी ओर और अपने चारों ओर एक अनिश्चित मुद्रा से इशारा किया। "मैं कुछ और ही चीज़ का सपना देख रही थी।"

"तुम अपने को बलिदान करना चाहती थीं ?"

मेरियाना की आँखें चमक उठीं।

"हाँ......हाँ......हाँ ?"

"और नेज़्दानौफ़ ?"

मेरियाना ने अपने कंधे हिलाये।

"नेज़्दानौफ़ का क्या ! हम लोग साथ-साथ आगे बढ़ेंगे......या मैं अकेली ही बढ़ूँगी।"

सालोमिन ने गौर से मेरियाना की ओर देखा।

"तुम जानती हो मेरियाना......मेरी बात के कड़वी होने के लिए क्षमा करना......पर मेरे विचार से किसी गंदे लड़के के उलझे हुए बालों में कंघी करना भी बलिदान है, और एक बड़ा बलिदान जो बहुत से लोग नहीं कर सकते।"

"पर मैं वह करने से इन्कार तो नहीं करती वैसिली फेदोतिच।"

"मैं जानता हूँ नहीं करती हो ! हाँ, तुम में वह करने की शक्ति है, और वही तुम कुछ दिनों तक करोगी भी; और फिर बाद में, सम्भव है—कुछ और भी।"

"पर वह सब करना तो मुझे तात्याना से सीखना होगा।"

"जरूर......उससे सीखो। तुम बरतन साफ करोगी। मुर्गी के बच्चों के पंख निकालोगी......और इस प्रकार कौन जानता है...... शायद तुम अपने देश की रक्षा करोगी।"

"आप मेरी हँसी उड़ा रहे हैं, वैसिली फेदोतिच।"

सालोमिन ने धीरे-धीरे अपना सिर हिलाया।

"ओ मेरी सीधी मेरियाना ! मेरा यकीन करो, मैं तुम्हारी हँसी नहीं उड़ा रहा हूँ, मेरी बात एकदम सच्ची है। तुम सब रूसी स्त्रियाँ हम पुरुषों की अपेक्षा अधिक समर्थ और अधिक महान् हो।"

मेरियाना ने अपनी झुकी आँखे उठाईं ।

"मैं आपकी इस आशा को सही कर दिखाना चाहूँगी,······तब फिर—मैं मरने को तैयार हूँ !"

सालोमिन उठ खड़ा हुआ ।

"नहीं जिओ······जिओ ! बड़ी चीज़ वही है । अच्छा, क्या तुम यह नहीं जानना चाहतीं कि तुम्हारे घर पर तुम्हारे भाग आने के बाद से क्या हो रहा है ? क्या वे लोग कुछ करेंगे नहीं ? हमे पवेल को इशारा भर करने की देर है—वह फौरन पता लगा लायेगा।"

मेरियाना को आश्चर्य हुआ ।

"कितना असाधारण आदमी है वह ?"

"हाँ······वह सचमुच ही बड़े मार्के का आदमी है । उदाहरण के लिए, जब तुम अलैक्सी के साथ अपना विवाह करना चाहो—वह उसका भी इन्तज़ाम जोसिम के साथ कर देगा······तुम्हें याद है मैंने कहा था कि यहाँ एक पुरोहित मौजूद है·······पर मेरे ख्याल से अभी फौरन शायद उसकी ज़रूरत नहीं है ? नहीं ?"

"नहीं।"

"तो फिर नहीं।" सालोमिन दोनों कमरों के बीच के—मेरियाना और नेज़दानौफ़ के—दरवाज़े तक गया और झुककर ताले को देखने लगा ।

"वहाँ क्या देख रहे हो ?" मेरियाना ने पूछा ।

"ताला बन्द होता है ?"

"हाँ !" मेरियाना ने धीमे से कहा ।

सालोमिन उसकी ओर मुड़ा, मेरियाना ने अपनी आँखें नहीं उठाईं ।

"तो फिर सिप्यागिन के इरादों का पता लगाने की कोई ज़रूरत नहीं है ?" उसने प्रसन्नतापूर्वक पूछा; "कोई जरूरत नहीं है, ऐं ?"

सालोमिन चलने लगा ।

"वैसिली फेदोतिच······"

"कहो क्या है ?"

"मुझे यह बताइये कि वैसे तो आप इतने चुप रहते हैं; पर मेरे साथ इतनी बातें क्यों करते हैं ? आप नहीं जानते कि इससे मुझे कितनी खुशी होती है।"

"क्यों इतनी बातें करता हूँ ?"—सालोमिन ने उसके दोनों छोटे-छोटे कोमल हाथ अपने बड़े खुरदरे हाथों में ले लिए—"क्यों ?—यह इसीलिए होगा कि तुम मुझे इतनी अच्छी लगती हो। नमस्कार।"

वह बाहर चला गया·······मेरियाना पल भर खड़ी रही, उसे जाते देखती रही, कुछ सोचती रही, और फिर तात्याना के पास चली गई जो अभी तक चाय लेकर नहीं आई थी। उसने तात्याना के पास जाकर उसके साथ चाय पी, साथ ही उसने बरतन मले, मुर्गी के बच्चों के पंख नोंचे और छोटे से बच्चे के उलझे हुए बालों में कंघी भी की।

भोजन के समय तक वह अपने छोटे से घर में लौट आई······नेज्दानौफ़ के लिए उसे देर तक इन्तज़ार नहीं करना पड़ा।

वह लौटा तो एकदम थका हुआ था और धूल से नहा रहा था, आते ही सोफे पर जा गिरा। वह तुरन्त उसके पास जाकर बैठ गई। "तो फिर ? फिर ? मुझे बताओ।"

"तुम्हें वह दो पंक्तियाँ याद हैं," उसने क्षीण कण्ठ से उत्तर दिया।

"यदि यह इतना शोकपूर्ण न होता तो
यह पूरी तरह हास्यास्पद ही होता।"

"तुम्हें याद है ?"

"हाँ, ज़रूर याद है।"

"बस, मेरी पहली यात्रा का यही पंक्तियाँ सबसे उपयुक्त वर्णन हैं, पर नहीं। उसमें निश्चित रूप से हास्यास्पद तत्व अधिक था। पहली बात तो यह है कि मुझे यकीन हो गया कि अभिनय करने से आसान कोई चीज़ नहीं, किसी को मुझ पर स्वप्न में भी शक न हुआ होगा। पर एक बात मैंने नहीं सोची थी—कोई नई कहानी पहले से गढ़ लेना

ज़रूरी होता है······नहीं तो सब लोग पूछते हैं—कहाँ से आये हो, क्या करते हो—और तुम्हारे पास उत्तर तैयार नहीं होते। किन्तु उसकी भी ऐसी खास ज़रूरत नहीं है। शराब की दुकान पर बैठ कर एक गिलास वोदका का प्रस्ताव कर दीजिए और फिर जी चाहे उतनी झूठ बोलिए।"

"और तुमने······भी झूठी बातें कहीं ?" मेरियाना ने पूछा।

"जितना हो सका मैंने भी झूठ बोला। दूसरी बात यह है : जितने भी लोगों से मैंने बातचीत की, वे सब, सारे-के-सारे असंतुष्ट हैं; और कोई इस बात की परवाह नहीं करता कि इस असंतोष को कैसे दूर किया जा सकता है। पर प्रचार के काम में मैं एकदम अनाड़ी हूँ; दो पुस्तिकाएँ तो बस मैंने एक कमरे में चुपचाप रख दीं—एक मैंने एक गाड़ी में ठूँस दी······उनका क्या होगा बस भगवान् ही जानता है। चार आदमियों को मैंने पुस्तिकाएँ देनी चाहीं। एक ने पूछा कि धार्मिक किताब है, और नहीं ली; दूसरे ने कहा कि उसे पढ़ना नहीं आता, पर क्योंकि उसके कवर पर एक तस्वीर बनी थी इसलिए अपने बच्चों के लिए ले गया; तीसरा शुरू में मुझसे बिलकुल सहमत था : 'सही है, एकदम सही है······' फिर एकाएक मुझे गालियाँ देने लगा, और उसने भी पुस्तिका नहीं ली; चौथे ने ले ली और मुझे उसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद भी दिया, पर मेरे खयाल से उसकी समझ में मेरी बात का सिर-पैर कुछ नहीं आया होगा। इसके अतिरिक्त एक कुत्ते ने मेरे पैर में काटा; एक किसान स्त्री जलती हुई लकड़ी लेकर अपनी झोंपड़ी के दरवाज़े से मेरे ऊपर झपटी और चिल्लाने लगी, 'ओफ़! जानवर कहीं का। मास्को का गुण्डा। तेरा सत्यानाश हो!' और एक छुट्टी पर आया हुआ सिपाही भी मेरे पीछे चिल्लाता रहा, 'ज़रा एक मिनिट ठहरो, अभी एक गोली का मज़ा चखाये देता हूँ;' और उसने मेरे ही पैसों से शराब पी थी!"

"और कुछ ?"

"और कुछ ? मेरी एड़ी पर एक बड़ा-सा छाला हो गया है; एक जूता बहुत ही बड़ा है। और अब में भूखा हूँ, और मेरा सिर वोदका के कारण फटा जा रहा है।"

"तुमने क्या बहुत पी ली है ?"

"नहीं बहुत नहीं—बस दूसरों को दिखाने के लिए पी है; पर मैं पाँच ताड़ीखानों में गया। मैं वह गंदी वोदका ज़रा भी बर्दाश्त नहीं कर सकता। और हमारे किसान कैसे इसे पीते हैं, यह एकदम मेरी समझ के बाहर। अगर सीधा-सादा बनने के लिए वोदका पीना ज़रूरी है तो मैं बाबा हाथ जोड़ता हूँ।"

"अच्छा तुम्हारे ऊपर किसी ने शक नहीं किया न ?"

"किसी ने नहीं। एक सफ़ेद-सी आँखों वाले पीले से मोटे सराय वाले ने ज़रूर मेरी ओर संदेह-भरी निगाह से देखा था। मैंने सुना कि वह अपनी बीवी से कह रहा था, 'उस लाल बालों वाले छोकरे पर नज़र रखना···उस भेंड़े पर।' (तब तक मुझे मालूम नहीं था कि मेरी आँखें भेंड़ी भी हैं।) 'कोई ठग मालूम होता है। देख रही हो कि कैसे रौब से शराब पी रहा है ?' उसका 'रौब' से क्या मतलब था मै समझ नहीं सका; पर कोई तारीफ़ की बात नहीं थी यह तय है। शायद इसलिए कहा हो कि मैंने छिपाकर अपनी वोदका मेज़ के नीचे लुढ़का देने की कोशिश की थी। ओफ़। बड़ा कठिन है, एक सौन्दर्यवादी का सच्ची ज़िन्दगी से सम्पर्क स्थापित करना बड़ा ही कठिन है।"

"अगली बार ऐसा नहीं होगा," मेरियाना ने सांत्वना देते हुए कहा। "पर मुझे खुशी है कि तुम अपने पहले प्रयत्न को हास्यप्रधान दृष्टि से देख रहे हो······तुम सचमुच उकताये तो नहीं थे ?"

"नहीं, उकताया बिलकुल नहीं था; सच पूछो तो मुझे मज़ा आ रहा था। पर एक बात निश्चित है कि अब मैं उसके बारे में विचार करने लगूँगा और मेरा मन इतना अस्वस्थ और उदास हो जायगा।"

"नहीं, नहीं ! मै तुम्हें सोचने ही नहीं दूँगी। मैं तुम्हें सुनाऊँगी

कि मैंने क्या-क्या किया। खाना बस अभी आने ही वाला होगा; एक बात तुम्हें बता दूँ कि तात्याना ने जिस बर्तन में शोरबा बनाया था उसको मैंने आज साफ़ करके चमका दिया है······और मैं सब-कुछ खाते-खाते बताऊँगी।"

और उसने सब बताया भी। नेज़्दानौफ़ उसकी बात सुनता रहा और उसकी ओर देखता रहा···यहाँ तक कि कई बार वह रुकी ताकि वह बता सके कि क्यों वह इस तरह देख रहा है······पर वह चुप था।

भोजन के बाद मेरियाना ने उसको स्पीलहैगिन की पुस्तक पढ़कर सुनने का प्रस्ताव किया। पर उसने पहला पन्ना भी पूरा न पढ़ा होगा, कि वह भावावेश में उठा और उसके पास जाकर उसके पैरों पर गिर गया। वह खड़ी हो गई, नेज़्दानौफ़ ने अपनी दोनों बाहों से उसके घुटनों को कस लिया, और आवेशपूर्ण शब्द कहने लगा—असम्बद्ध और निराशा भरे: "मैं मरना चाहता हूँ, मैं जानता हूँ कि जल्दी ही मर जाऊँगा···" मेरियाना निश्चल खड़ी रही, उसने किसी प्रकार की बाधा नहीं दी; शांति के साथ उसने इस आकस्मिक आलिंगन को स्वीकार कर लिया और शांत, बल्कि प्यार-भरी दृष्टि से उसकी ओर देखती रही। उसने अपने दोनों हाथ नेज़्दानौफ़ के सिर पर रख दिए, जो उस पौशाक में छिपा हुआ बुरी तरह काँप रहा था। पर उसकी इस शान्ति ने ही उसके ऊपर कहीं अधिक गहरा प्रभाव डाला, यदि वह उसको हटाने की कोशिश करती—उससे भी अधिक। वह खड़ा हो गया और बहुत धीमे से बोला, "जो कुछ कल और आज हुआ है उसके लिए मुझे क्षमा करो मेरियाना; मुझसे एक बार फिर कहो कि जब तक मैं तुम्हारे प्रेम के योग्य बनूँगा तब तक तुम प्रतीक्षा करने को तैयार हो, और मुझे क्षमा करो।"

"मैं तुम्हें अपना वचन दे चुकी हूँ···और मैं कभी नहीं बदलूँगी।"

"धन्यवाद; नमस्कार।"

नेज़्दानौफ़ बाहर चला गया; मेरियाना ने अपने कमरे में जाकर भीतर से ताला बन्द कर लिया।

तीस

दो हफ्ते बाद उसी स्थान पर, अपनी छोटी तीन टाँग वाली मेज़ के ऊपर एक छोटी सी मोमबत्ती की धुँधली और फीकी सी रोशनी में नेज़दानौफ़ अपने मित्र सीलिन को पत्र लिख रहा था। रात आधी से बहुत अधिक बीत चुकी थी। सोफे और फर्श के ऊपर जल्दी से उतारे हुए कीचड़ सने कपड़े पड़े थे; पानी की झड़ी खिड़की के शीशों पर पट-पट कर रही थी, और एक तेज़ गर्म हवा छत के ऊपर लम्बी साँस भर रही थी।

नेज़दानौफ़ ने लिखा।

"प्यारे ब्लादीमीर,—मैं तुम्हें बिना पते के ही यह पत्र लिख रहा हूँ, और यह पत्र यहाँ से एक आदमी के हाथों किसी दूर के डाकखाने में डालने के लिए भेजा जायेगा, क्योंकि इस स्थान में मेरी उपस्थिति गुप्त है; और तुम्हें बता देने से केवल मेरी ही बर्बादी का प्रश्न नहीं है। तुम्हारे लिए इतना जानना काफी होगा कि मैं पिछले दो हफ्तों से एक बड़े भारी कारखाने में मेरियाना के साथ रह रहा हूँ। जिस दिन मैंने तुम्हें पिछला पत्र लिखा था उसी रोज़ हम लोग सिप्यागिन के

यहाँ से भाग आये थे। यहाँ हमें आश्रय एक मित्र ने दे दिया है। उसका नाम समझ लो वैसिली है। वही यहाँ का प्रधान है, और बड़ा बढ़िया आदमी है। इस कारखाने में हमारा रहना अस्थायी ही है। यहाँ हम आन्दोलन छिड़ने के समय तक ही रहेंगे—हालाँकि अब तक जो कुछ हुआ है उसे देखते हुए यह समय शायद ही कभी आये! व्लादीमीर, मेरा दिल बहुत ही भारी है। पहले तो मैं तुम्हें यह बता दूँ कि हालाँकि मेरियाना और मैं साथ-साथ भागे हैं, पर अभी तक हम भाई-बहिन की तरह रह रहे हैं। वह मुझसे प्रेम करती है······और उसने मुझसे कह दिया है कि जब भी मैं उससे यह कहने का अधिकार अनुभव करूँगा, वह मेरी हो जायेगी।

"व्लादीमीर, मुझे नहीं लगता कि मुझे वह अधिकार है। उसे मेरे ऊपर, मेरी ईमानदारी पर भरोसा है—मैं उसे धोखा नहीं दूँगा। मैं यह जानता हूँ कि उससे अधिक मैंने किसी को प्यार नहीं किया और यह भी बिलकुल निश्चित है कि फिर कभी करूँगा भी नहीं। पर यह सब होते हुए भी मैं अपने साथ उसके भाग्य को सदा के लिए कैसे जोड़ लूँ? एक मुर्दे के साथ जीवित प्राणी? शायद मुर्दा नहीं—एक अध-मरे प्राणी के साथ। कैसे मेरी आत्मा गवाही देगी? तुम कहोगे कि अगर प्रेम प्रबल हो तो आत्मा कुछ नहीं कहेगी। पर यही तो बात है कि मैं एक मुर्दा हूँ, चाहो तो कहो कि एक ईमानदार सदाशयी मुर्दा। मेहरबानी करके यह न कहने लगना कि मैं हमेशा बात को बढ़ा-चढ़ा-कर कहा करता हूँ। मैं तुमसे एकदम सच्ची बात कह रहा हूँ। बिलकुल सच्ची! मेरियाना बहुत ही एकाग्र स्वभाव की है, और अब वह अपने काम में बिलकुल डूबी हुई है, जिसमें उसका विश्वास है···और मैं?

"खैर, प्रेम और व्यक्तिगत सुख की तथा इस तरह की और चीज़ों की बात बहुत हुई। पिछले दो हफ्ते से मैं 'जनता के पास जाता रहा हूँ,' और ओ हो! इससे अधिक बेहूदा चीज़ की तुम कल्पना नहीं कर सकते। यह सही है कि खोट मुझ ही में है, काम में नहीं। मान लिया

कि मैं श्लाभ भक्त नहीं हूँ; मैं उन लोगों में नहीं हूँ जो जनता में, जनता के साथ सम्पर्क में स्वर्ग देखते हैं; मैं जनता को अपने दुखते हुए पेट पर फ़िनेलिन की पट्टी की तरह से रखने के लिए तैयार नहीं हूँ··· मैं उनके ऊपर प्रभाव अवश्य डालना चाहता हूँ; पर कैसे, यह कैसे पूरा किया जाय? ऐसा लगता है कि जब मैं जनता के साथ होता हूँ तो मैं सदा सिर्फ़ उनके आगे झुकता रहता हूँ, और उनकी बात सुनता रहता हूँ; और जब कभी मैं कुछ कहता भी हूँ तो वह हिकारत से दबा रहता है! मुझे खुद लगता है कि मैं किसी काम का नहीं हूँ। मेरी हालत गलत पार्ट करने वाले बुरे अभिनेता की सी है। कर्तव्यपरायणता के लिए यहाँ कोई स्थान नहीं, और न संशयवाद के लिए; अपने ऊपर तरस खाकर हँसने की भी गुंजाइश नहीं दीखती········इस सबकी रत्ती भर भी कीमत नहीं है! मेरा तो याद करके जी मिचलाने लगता है; जिन कपड़ों को मैं अपने बदन पर डालकर घसीटे फिरता हूँ, उन्हें देखकर, जैसा वैसिली कहता है, इस स्वांग को देखकर मुझे मतली आने लगती है! लोग कहते हैं कि पहले जनता की बोल-चाल का अध्ययन करना, उनका चरित्र और उनकी आदतें सीखना ज़रूरी है······वाहियात! वाहियात! वाहियात! आदमी को, पहले जो कुछ कहे उसमें यकीन होना चाहिए, फिर वह चाहे जो कहे। एक बार मुझे एक संकीर्णतावादी पैगम्बर से एक उपदेश सुनने का अवसर प्राप्त हुआ था। बताना कठिन है कि वह कितनी बकवास करता रहा; वह धार्मिक और किताबी भाषा का और सरल किसानी मुहावरों की—वह भी रूसी नहीं बल्कि किसी तरह के सफेद रूसी मुहावरों की—खिचड़ी थी······ और जानते हो वह एक ही चीज़ पर बार-बार दोहराता रहा, 'आत्मा गिर गई है, आत्मा पतित हो गई!' पर उसकी आँखें जल रही थीं। आवाज़ दृढ़ और भर्राई हुई, मुट्ठियाँ बँधी हुईं, वह सारा लोहे का सा मालूम पड़ता था! सुनने वाले उसकी बात समझते नहीं थे, पर उसकी पूजा करते थे! और उसके अनुयायी थे! और जब मैं अपराधी की

तरह बात करता हूँ तो मैं लगातार क्षमा-याचना ही करता रह जाता हूँ। मुझे सचमुच संकीर्ण धार्मिकों के पास जाना चाहिए; उनकी कला महान् नहीं है, पर श्रद्धा, श्रद्धा प्राप्त करने के लिए वही जगह है! मेरियाना में वह श्रद्धा है। वह बड़े सबेरे से तात्याना नाम की एक भले स्वभाव वाली और तेज़ किसान औरत के साथ काम में लगी रहती है; हाँ एक बात और, वह हम लोगों के बारे में कहती है कि हम लोग सीधे-सादे बनना चाहते हैं और हमें सीधे-सादे लोग कहकर पुकारती हैं;—जो हो, मेरियाना इसी स्त्री के साथ व्यस्त रहती है और मिनिट भर के लिए भी नहीं बैठती; पूरी चींटी है! उसे प्रसन्नता है कि उसके हाथ लाल और खुरदुरे हुए जा रहे हैं और वह आवश्यक होने पर किसी दिन फाँसी के तख्ते का भी इन्तज़ार करती रहती है! और फाँसी के तख्ते के इन्तज़ार के साथ-साथ उसने जूते पहनना छोड़ देने का भी प्रयत्न किया था; वह कहीं नंगे पैर गई थी और नंगे पैर ही वापिस लौटी। बाद में मैंने उसे बहुत देर तक अपने पैर धोते हुए सुना; मैं देखता हूँ कि वह आजकल बड़ी होशियारी से चलती है—अभ्यस्त न होने के कारण वे बुरी तरह घायल हो गए हैं; पर वह इतनी प्रसन्न और उत्साहित दिखाई पड़ती है, मानो कोई खजाना मिल गया हो, मानो उसके ऊपर धूप चमक रही हो। सच मेरियाना अपूर्व है! और जब मैं उससे अपने मन की बात कहने की कोशिश करता हूँ तो सबसे पहले तो मुझे शर्म सी लगती है, मानो मैं ऐसी चीज़ पर हाथ डाल रहा हूँ जो मेरी नहीं है; और फिर वह निगाह……ओह, वह भयंकर, निष्ठा-युक्त, प्रतिरोधहीन दृष्टि……'मुझे ले लो,' वह कहती जान पड़ती है……"पर याद रखो! और फिर इस सबकी क्या ज़रूरत है? क्या दुनिया में इससे अच्छी, इससे ऊँची कोई दूसरी चीज़ नहीं है?' यानी दूसरे शब्दों में, 'अपना गन्दा ओवरकोट पहनो और जनता के पास पहुँच जाओ।'……और इस भाँति मैं जनता के पास पहुँच जाता हूँ।

"ऐसे मौकों पर मैं अपनी भावुकता, अपने छुई-मुई संकोची स्वभाव को, अपनी झिझक को, जो सब मैंने अपने अमीर बाप से प्राप्त की है, कितनी गाली देता हूँ। उन्हें मुझे ऐसी चीज़ें देकर इस दुनिया में लाने का क्या अधिकार था जो उन परिस्थितियों के बिलकुल अनुकूल नहीं हैं जिनमें मैं रहता हूँ? एक मुर्गी के बच्चों को अण्डा सेकर तैयार करो और फिर उसे पानी में डाल दो। कीचड़ में पड़ा हुआ कलाकार। एक जनवादी, एक जनता का प्रेमी जिसे उस गन्दी वोदका, 'कच्ची शराब' की गन्ध ही बीमार और बेकार बना देती है?

"देख रहे हो मेरी क्या हालत है—अपने पिता को गालियाँ दे रहा हूँ। और सचमुच जनवादी तो मैं अपने आप बना हूँ; इसमें तो उनका कोई हाथ न था।

"हाँ, ब्लादीमीर, मेरी बुरी हालत है। कुछ भूरे कुरूप विचार मुझे घेरे रहते हैं। तुम पूछोगे कि इन दो हफ्तों में क्या मैंने किसी सांत्वना-दायक, अच्छी चीज़ को, किसी, चाहे जितने मूर्ख पर सजीव व्यक्ति को, नहीं देखा है? मैं क्या कहूँ? इस तरह का कुछ जरूर देखा है ······ एक बहुत ही अच्छे हिम्मत वाले आदमी से भी मेरी मुलाकात हुई है, पर इसको चाहे जैसे कह लो, पुस्तिकाओं को लेकर मैं उससे कोई बात नहीं कर सकता, और मुख्य बात यही है। पवेल का—यहाँ कारखाने का एक आदमी जो वैसिली का दायाँ हाथ है और बहुत ही होशियार और तेज़ आदमी है, आज शायद वही प्रधान बने·········मैंने शायद उसके बारे में लिखा था—उसका एक दोस्त है, एलिज़ार नाम का एक किसान······दिमाग का तेज़, और आजाद तबियत, हर तरह से अच्छा आदमी; पर जैसे ही हम लोग मिले, मानो कोई दीवार सी हमारे बीच खड़ी हो गई। उसके चेहरे पर मेरे लिए बस एक 'नहीं' है। ऐसे ही एक और आदमी से मुलाकात हुई············वह जरा कुछ गर्म मिज़ाज वाला था। 'तो अब जनाब,' उसने कहा, 'मीठी-मीठी बातें नहीं, सीधी बात कहिए, आप अपनी सारी ज़मीन छोड़ने वाले हैं

या नहीं ?' मैंने कहा, 'क्या मतलब है तुम्हारा ? मैं तो कोई जमींदार नहीं हूँ।' (और मुझे याद है मैंने यह भी जोड़ दिया था, 'भगवान् तुम्हारा भला करे !') । वह बोला, 'अगर आप मामूली आदमी हैं तो फिर इस सबका क्या मतलब है ? दया करके मेरा पीछा छोड़ दीजिए।'

"एक और बात है। मैंने देखा है कि अगर कोई बहुत उत्सुकता से आपकी बात सुनने को तैयार हो जाता है, तुरन्त पुस्तिकाएँ ले लेता है, तो यकीन कर लीजिए कि वह गलत आदमी, गधा, निकलेगा; या फिर आपको कोई गप्पी मिल जायगा, पढ़ा-लिखा आदमी जो कुछ चुने हुए शब्द दोहराते रहने के सिवाय और कुछ नहीं कर सकता। उदाहरण के लिए एक ने तो पागल बनाते-बनाते छोड़ा; उसके लिये हर चीज 'उपज' थी। उससे कुछ भी कहिये, वह बस यही कहता, 'जरूर, जरूर उपज है उपज !' ओफ़, शैतान का बच्चा ! एक बात और······'तुम्हें याद है, बहुत दिन पहले, 'फालतू' लोगों के हैमलेटों के बारे में बहुत चर्चा हुआ करती थी ? ज़रा कल्पना करो कि ऐसे 'फालतू' लोग अब किसानों में मिलने लगे हैं। अवश्य ही अपने खास रंग के साथ······इसके अलावा वे लोग ज्यादातर तपेदिक के रोगी होते हैं। बड़े दिलचस्प लोग, और वे जल्दी ही हमारी बात सुनने को तैयार हो जाते हैं, पर आन्दोलन के वे किसी काम के नहीं—ठीक पुराने जमाने के हैमलेटों की तरह। बताओ, फिर कोई क्या करे ? गुप्त छापा-खाना चलाये ? क्यों, अभी इस समय ही किताबों की कौनसी कमी है ? दोनों तरह की मौजूद हैं, 'भगवान् का नाम लो और कुल्हाड़ी सँभालो' प्रकार की, और सिर्फ 'कुल्हाड़ी सँभालो' प्रकार की। तो फिर फुला-फुलाकर किसानों के जीवन के सम्बन्ध में उपन्यास लिखें ? बहुत सम्भव यही है कि उन्हें कोई छापेगा नहीं। या पहले कुल्हाड़ी ही सँभाल लें ?······पर किसके विरुद्ध, किसके साथ, और किसलिए ? इसलिए राष्ट्रीय सैनिक आपको अपनी राष्ट्रीय बन्दूक से मार गिरा सके। यह

तो एक प्रकार की जटिल आत्महत्या हुई। इससे तो स्वयं अपने आप अपना अन्त कर लेना क्या बुरा है? कम-से-कम मुझे कब और कैसे तो मालूम रहेगा, और स्वयं अपने-आप तै कर सकूँगा कि निशाना कहाँ लगाया जाय।······सचमुच, मैं सोचता हूँ कि इस समय अगर कहीं पर आजादी की लड़ाई चल रही हो तो, मैं फौरन वहीं के लिए चल पड़ूँ, किसी को आजाद कराने के लिये नहीं (जब अपने देशवासी स्वाधीन न हों उस समय दूसरों को आजाद कराने की भी बात खूब है!), पर अपना अन्त करने के लिए।

"हमारा दोस्त वैसिली, जिसने हमें यहाँ आश्रय दे रखा है, बड़ा सुखी व्यक्ति है। है वह हमारे ही दल का, और एक तरह बड़ा शान्त किस्म का है। उसे किसी चीज़ की जल्दी नहीं है। कोई और होता तो इस बात के लिए मैं उसे गाली देता····पर उसे नहीं दे सकता। और ऐसा लगता है कि इसकी सारी बुनियाद विश्वासों में नहीं, चरित्र में है। वैसिली का ऐसा चरित्र है इसमें आप छेद नहीं निकाल सकते। खैर, इसमें सन्देह नहीं कि उसकी बात ठीक है। वह हम लोगों के साथ, मेरियाना के साथ बहुत देर तक उठता-बैठता है और यहाँ एक मजेदार बात है। मैं मेरियाना से प्रेम करता हूँ और वह मुझसे (मुझे लग रहा है कि तुम मेरे इस वाक्य पर मुस्करा रहे हो, पर भगवान की सौगन्ध! यह सच है!) पर हमारे पास बात करने को कुछ नहीं रहता। पर वैसिली से वह बहस करती है, तर्क करती है, उसकी बात सुनती रहती है। मुझे उससे कोई ईर्ष्या नहीं है; वह उसे कोई काम दिलाने की कोशिश कर रहा है, कम-से-कम वह उससे कहती तो रहती ही है; पर जब भी मैं उसकी ओर देखता हूँ तो मेरा दिल दर्द करने लगता है। और तो भी मैं कल्पना करता हूँ कि विवाह के बारे में मेरे बस एक शब्द भर मुँह से निकालने की देर है, वह तुरन्त तैयार हो जायगी, और पुरोहित जोसिम प्रकट होगा और मन्त्रध्वनि के साथ बाकायदा सब काम सम्पन्न हो जायगा। बस मेरी परिस्थिति इससे अच्छी न होगी, और हर चीज़

जैसी है वैसी ही बनी रहेगी···इससे कोई निस्तार नहीं है। जिन्दगी ने मुझे बुरी तरह से काट दिया है, प्यारे व्लादीमीर, जैसा तुम्हें याद होगा हमारा वह दोस्त दरज़ी अपनी बीवी के बारे में शिकायत किया करता था।

"यद्यपि मुझे लगता है कि ऐसे बहुत दिन नहीं चलेगा, लगता है कुछ तैयार हो रहा है···

"मैं ही क्या 'कुछ कर डालने' की माँग नहीं करता रहा हूँ ? तो अब हम कुछ करने वाले हैं।

"याद नहीं मैंने तुम्हें अपने एक मित्र के बारे में लिखा था या नहीं, एक साँवला व्यक्ति, सिप्यागिन का रिश्तेदार। बहुत सम्भव है कि वह ऐसी मछलियाँ पका डाले जिन्हें निगलना बहुत आसान सिद्ध न हो !

"मैं सचमुच इस पत्र को पहले ही खत्म कर देना चाहता था, पर नहीं ! मैं कुछ करता नहीं हूँ, बिल्कुल कुछ नहीं, बस कविताएँ घसीटता रहता हूँ। मैं वे मेरियाना को नहीं सुनाता, उसकी उनमें अधिक दिल-चस्पी नहीं है, पर तुम···कभी-कभी उनकी प्रशंसा भी कर देते हो; और सबसे बड़ी बात यह है कि तुम किसी से उनका ज़िक्र नहीं करोगे। मुझे रूस की एक सर्वव्यापी विशेषता ने बड़ा प्रभावित किया है···

"भई क्षमा करना। मैं तुम्हें इतना उदासी-भरा पत्र अन्त में कुछ मजेदार चीज़ लिखे बिना नहीं भेजना चाहता था···अब मैं कब तुम्हें फिर लिखूँगा ? लिखूँगा फिर ? मेरा जो कुछ भी हो, मुझे यक़ीन है तुम अपने सच्चे मित्र को भूलोगे नहीं।

अ० ने०"

"पु०—सच हमारी जनता सोई हुई है···पर मुझे लगता है कि यदि कभी किसी चीज़ ने उसे जगाया, तो वह कोई वह चीज़ न होगी जिसे हम आज सोच रहे हैं···'

अन्तिम पंक्ति लिखने के बाद नेज़दानौफ़ ने अपने-आपसे यह कहते हुए, कलम फेंक दिया, "अच्छा अब सोइये, और यह सब बकवास

भूल जाइये तुक्कड़ महाराज," और वह बिस्तर पर जाकर लेट गया···पर नींद बहुत देर बाद उसकी आँखों में आई ।

अगले दिन सवेरे तात्याना के पास जाते हुए उसके कमरे से निकलती मेरियाना ने उसे जगाया, पर वह कपड़े ही पहन पाया था कि वह फिर लौट आई । उसके चेहरे से प्रसन्नता और उत्तेजना प्रकट हो रही थी, वह बड़ी चंचल दिखाई पड़ रही थी ।

"तुम जानते हो, अल्योशा, कहते हैं कि त—जिले में, यहाँ से थोड़ी ही दूर पर, शुरुआत हो भी गई है ।"

"ऐं ? क्या शुरुआत हो गई है ? कौन कह रहा है ?"

"पवेल । सुना है कि किसानों ने विद्रोह कर दिया है, वे कर देने से इन्कार कर रहे हैं, और भीड़ें जमा होने लगी हैं ।"

"तुमने खुद सुना ?"

"तात्याना ने कहा मुझसे । पर यह पवेल स्वयं रहा । उससे पूछो ।"

पवेल अन्दर आ गया और उसने मेरियाना की कहानी की ताईद की ।

"त—ज़िले में कुछ उपद्रव हुआ है यह सही है !" उसने अपनी दाढ़ी हिलाते हुए और अपनी चमकीली काला आँखें तिरछी घुमाते हुए कहा । "शायद यह सरजी मिहालोविच का काम है । पाँच दिन से वह घर भी नहीं आये हैं ।"

नेज़दानौफ़ ने अपनी टोपी झपटकर उठाई ।

"कहाँ जा रहे हो ?" मेरियाना ने पूछा ।

"कहाँ ?···वहीं," उसने क्रुद्ध भाव और बिना आँखें उठाए उत्तर दिया, "त—ज़िले को ।"

"तो मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगी । मुझे ले चलोगे, ले चलोगे न ? बस मुझे एक बड़ा-सा रूमाल अपने सिर पर बाँध लेने दो ।"

"वहाँ स्त्रियों का काम नहीं है ।" नेज़दानौफ़ ने क्षुब्ध भाव से कहा, और पहले की भाँति ही नीचे देखता रहा मानो झल्ला उठा हो ।

"नहीं।···नहीं! ···तुम्हारा जाना ठीक है, नहीं तो मार्केलौफ़ तुम्हें कायर समझेगा···और मैं भी तुम्हारे साथ जाऊँगी।"

"मै कायर नहीं हूँ," नेज़्दानौफ़ ने उसी क्षुब्ध स्वर में कहा।

"मेरा मतलब था वह हम दोनों को कायर समझेगा। मैं तुम्हारे साथ चल रही हूँ।"

मेरियाना अपने कमरे में रूमाल लेने गई, इधर पवेल ने एक प्रकार से मन-ही-मन चुपचाप सीटी बजाते हुए कहा, "आहा, आहा!" और तुरन्त गायब हो गया। वह सालोमिन को सावधान करने दौड़ा।

मेरियाना अभी लौटी न थी कि सालोमिन ने नेज़्दानौफ़ के कमरे में प्रवेश किया। वह खिड़की के सामने मुँह किए, अपना माथा बाँह पर टिकाये, और बाँह खिड़की के काँच पर रखे खड़ा था। सालोमिन ने उसके कंधे पर हाथ रखा। वह जल्दी से पीछे मुड़ा। बिना हाथ-मुँह धोये और अस्त-व्यस्त नेज़्दानौफ़ के चेहरे पर एक अजीब और विक्षिप्त-सा भाव था। हालाँकि सचमुच सालोमिन भी पिछले दिनों बहुत कुछ बदल गया था। उसका चेहरा पीला और उतरा हुआ लगता था, उसके ऊपरी दाँत हलके से दीखने लगे थे···जितना उसके "सुसंतुलित" स्वभाव के लिए सम्भव था वह भी कुछ उखड़ा-उखड़ा सा लगता था।

"तो मार्केलौफ़ अपने-आपको रोक न सका," उसने शुरू किया। "इसका नतीजा बुरा हो सकता है, खासकर उसके लिए···और दूसरों के लिए भी।"

"मैं जाकर देखना चाहता हूँ कि क्या हाल-चाल है···"नेज़्दानौफ़ ने कहा।

"और मैं भी," मेरियाना ने दरवाजे में प्रकट होते हुए जोड़ा।

सालोमिन धीरे-धीरे उसकी ओर मुड़ा।

"मैं तुम्हें जाने की सलाह न दूँगा मेरियाना। तुम अपना और हम सबका भंडाफोड़ कर दोगी; बिना ऐसा चाहे और एकदम अनावश्यक होते हुए भी। नेज़्दानौफ़ को जाने दो और देख आने दो कि

क्या मामला है···और भी जितना कम हो उतना ही अच्छा !—और तुम्हारे जाने की क्या ज़रूरत है ?"

"उसके जाने पर मैं पीछे रहना नहीं चाहती।"

"तुम उसके काम में भी बाधा डालोगी।"

मेरियाना ने नेज़्दानौफ़ की ओर नज़र डाली। वह निश्चल खड़ा था; उसका चेहरा भी निश्चल और क्षुब्ध था।

"और अगर खतरा हुआ तो ?" मेरियाना ने पूछा।

सालोमिन मुस्कराया।

"डरो मत···जब ख़तरा होगा तो मैं तुम्हें नहीं रोकूँगा।"

मेरियाना ने चुपचाप सिर से रूमाल उतार दिया और बैठ गई।

और तब सालोमिन नेज़्दानौफ़ की ओर मुड़ा।

"तुम भी भइया ज़रा देख-भाल कर जाना। शायद सब योंही अफवाहें हैं। पर होशियार ही रहना, हालाँकि कोई-न-कोई तुम्हारे साथ जायगा ही। और जितनी जल्दी हो सके लौटना। वादा करते हो ? नेज़्दानौफ़ वादा करते हो न ?"

"हाँ।"

"हाँ, पक्का ?"

"हाँ क्योंकि यहाँ पर सभी, मेरियाना और तमाम लोग, तुम्हारी ही बात मानते हैं।"

नेज़्दानौफ़ बिना नमस्कार कहे हुए ही बाहर निकल गया। पवेल भी अंधेरे में से निकलकर उसके आगे-आगे चला। उसके लोहे की कीलों जड़े हुए बूट सीढ़ियों पर बजते जाते थे। तो क्या फिर वही नेज़्दा-नौफ़ के साथ जा रहा था ?

सालोमिन मेरियाना के पास बैठ गया।

"तुमने नेज्दानौफ़ के आखिरी शब्द सुने।"

"हाँ, में उससे ज्यादा तुम्हारी बात सुनती हूँ, इससे वह झल्ला गया है, और वास्तव में यह बात है भी सच। मैं प्यार उसे करती हूँ

पर हुक्म तुम्हारा मानती हूँ। वह मुझे अधिक प्रिय है···पर तुम मेरे अधिक समीप हो।"

सालोमिन ने सावधानी से अपने हाथ से उसके हाथ को थपथपाया।

"यह···बहुत ही बुरी बात हुई," उसने आखिरकार कहा। "अगर मार्केलौफ़ का इसमे हाथ है तो वह तो खत्म····।"

मेरियाना कॉप उठी।

"खत्म ?"

"हाँ···वह कोई काम आधा-पर्दा नही करता, और न वह दूसरो के पीछे छिपने का ही प्रयत्न करेगा।"

"खत्म !" मेरियाना ने फिर आहिस्ता से कहा, और उसके गालो पर आँसू बह निकले।

"ओह वैसिली फेदोतिच ! मुझे उसके लिए बहुत दुख हो रहा है। पर वह जीत क्यो नही सकता ? उसका खत्म होना ही अनिवार्य क्यो है ?"

"क्योकि ऐसे कामो मे, मेरियाना, पहले चलने वाले हमेशा ही मिट जाते है, चाहे वह सफल ही क्यो न हो···और जिस काम में वह लगा हुआ है उसमे तो न केवल पहले और दूसरे बल्कि दसो···बीसवे भी।"

"तो फिर क्या अपनी जिन्दगी मे हम लोग यह सब न देख सकेगे ?"

"तुम क्या सोच रही हो ? कभी नही। अपनी आँखों से, इन ज़िन्दा आँखों से, तो हम कभी भी न देख सकेगे। पर आत्मा की आँखों से अवश्य···पर वह, अलग बात है। उस तरह से हम इस समय भी देखकर अपना मन वहला सकते हैं। उस पर कोई बन्धन नही।"

"तो फिर सालोमिन तुम किस प्रकार—"

"क्या ?"

"तुम किस प्रकार उसी रास्ते पर चल रहे हो ?"

"क्योंकि रास्ता दूसरा नहीं; यानीं ठीक-ठीक कहें तो, मेरा लक्ष्य वही है जो मार्केलौफ़ का, पर हमारे मार्ग अलग-अलग हैं।"

"बेचारा सरजी मिहालोविच !" मेरियाना ने शोकाकुल स्वर में कहा। सालोमिन ने उसको हल्का सा थपथपाया।

"चलो, चलो; अभी कोई ठीक थोड़े ही है। देखें पवेल क्या खबर लाता है। हमारे···इस काम में आदमी को हिम्मत नहीं खोनी चाहिए। अंग्रेजी में कहावत है, 'कभी मत कहो कि मर गए।' अच्छी कहावत है। इस रूसी से अच्छी है, 'मुसीबत आये तो फाटक पूरा खोल दो।' पहले से ही रोना-धोना बेकार है।"

सालोमिन अपनी जगह से उठ खड़ा हुआ।

"और उस काम का क्या हुआ जो तुम मेरे लिए ढूँढने वाले थे ?" मेरियाना ने एकाएक पूछा। आँसू अभी तक उसके गालों पर चमक रहे थे, पर उसकी आँखों में कोई उदासी न थी।

सालोमिन फिर बैठ गया।

"क्या तुम यहाँ से जितनी जल्दी हो सके जाने के लिए इतना बेचैन हो ?"

"ओह नहीं ! पर मैं कुछ उपयोगी बनना चाहती हूँ।"

"मेरियाना, तुम यहाँ भी बहुत उपयोगी हो। हम लोगों को छोड़ कर न जाओ। थोड़ा-सा इन्तजार करो। क्यों, क्या बात है ?" सालोमिन ने तात्याना से पूछा जो उसी समय अन्दर आई थी।

"बात यह है कि कोई एक महिला जातीय चीज़ अलैक्सी दिमित्रिच की तलाश में आई है," तात्याना ने हँसते हुए और मुँह बनाते हुए उत्तर दिया। "मैंने तो कहा कि वह वहाँ नहीं हैं, यहाँ हैं ही नहीं। हम इस नाम के किसी व्यक्ति को जानते ही नहीं, पर वह—"

"कौन है—कौन है वह ?"

"उसने इस कागज़ के टुकड़े पर अपना नाम लिख दिया है और कहा है कि इसे दिखाते ही उसे बुला लिया जायेगा; और उसने यह

भी कहा कि अगर अलैक्सी दिमित्रिच वास्तव में घर पर नहीं हैं तो वह इंतज़ार भी कर सकती है।"

कागज़ के ऊपर बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा था, "मशूरिना।"

"उसे यहाँ ले आओ," सालोमिन ने कहा। "उसके यहाँ आने में मेरियाना, तुम्हें कोई आपत्ति तो नहीं है? वह भी अपने ही दल की है।"

"नहीं, नहीं, बिलकुल नहीं।"

कुछ ही सैकंड बाद मशूरिना ने उसी पौशाक में प्रवेश किया जिसमें हम उसे पहले अध्याय के शुरू में देख चुके हैं।

इकतीस

"क्या नेज्दानौफ घर पर नही है ?" उमने पूछा, फिर सालोमिन को देखकर उसकी ओर बढी और अपना हाथ बढा दिया। "कैसे हो सालोमिन ?" मेरियाना के ऊपर उसने एछ तिरछी नज़र भर डाली।

"जल्दी ही आता होगा," सालोमिन ने उत्तर दिया। "पर एक बात पूछूँ, तुम्हे किससे पता लगा ···?"

"मार्केलौफ से। हालाँकि सचमुच शहर में इस बात को दो-तीन लोग तो जानते ही हैं।"

"सचमुच ?"

"हाँ, किसी ने उड़ा दिया जान पडता है। इसके अलावा लोगों का कहना है कि स्वय नेज्दानौफ को भी पहचान लिया गया है।"

"भेस बदलने का बडा हल्ला मचा रखा था।" सालोमिन ने मन-ही-मन कहा। "आओ तुम्हारा परिचय करा दूँ," उसने जोर से कहा। "मिस सिनेत्स्की, मिस मशूरिन ! बैठ जाइये।"

मशूरिना ने हलका-सा सिर हिलाया और बैठ गई।

"मै नेज्दानौफ़ के लिए एक पत्र लाई हूँ; और तुम्हारे लिए सालो-

मिन, ज़बानी संदेश।"

"कैसा संदेश ? किसके पास से ?"

"तुम्हारे एक परिचित से······तुम्हारे यहाँ क्या हाल है?···सब तैयार है ?"

"कुछ तैयार नहीं है ?"

मशूरिना ने अपनी छोटी-छोटी आँखें जितनी सम्भव थीं उतनी खोल दीं।

"कुछ नही ?"

"कुछ नहीं।"

"तुम्हारा मतलब है एकदम कुछ नहीं।"

"एकदम कुछ नहीं।"

"क्या यही मैं कह दूँ ?"

"हाँ, यही कह देना तुम।"

मशूरिना पल भर सोचती रही और फिर उसने एक सिगरेट अपनी जेब से निकाल ली।

"दियासलाई—है तुम्हारे पास ?"

"यह रही ?"

मशूरिना ने अपनी सिगरेट जला ली।

"उन लोगों ने तो कुछ एकदम अलग ही आशा लगा रखी थी," उसने शुरू किया। "और चारों तरफ—ऐसी हालत नहीं है जैसी तुम बता रहे हो। जो हो, वह तुम्हारा काम है, तुम जानो। मै यहाँ बहुत देर न ठहरूँगी। बस नेज्दानोफ़ से मिलना और यह चिट्ठी देना है।"

"कहाँ जा रही हो तुम ?"

"ओह, यहाँ से बहुत दूर।" वास्तव में वह जिनेवा जा रही थी, पर उसने सालोमिन को यह बात बताई नही। वह उसे पूरी तरह विश्वसनीय नहीं मानती थी। इसके अलावा एक 'बाहर का व्यक्ति' यहाँ बैठा हुआ था। मशूरिना, जो जर्मन भाषा का एक शब्द भी न जानती

थी, जिनेवा मे एक सर्वथा अपरिचित व्यक्ति को दफ्ती का फटा हुआ टुकड़ा, जिस पर अंगूर की बेल अंकित थी और दो सौ उनहत्तर रूबल देने के लिए भेजी जा रही थी।

"आस्त्रोदूमौफ़ कहाँ है ? तुम्हारे साथ है क्या ?"

"नही। वह यहाँ नही है···वह रास्ते में कही अटक गया है। पर ज़रूरत होने पर वह आ जायगा। पीमेन एकदम ठीक है। उसके बारे में कोई चिन्ता की ज़रूरत नहीं है।"

"तुम यहाँ कैसे आई ?"

"एक गाड़ी मे·········और कैसे आती ? एक और दियासलाई देना···।"

सालोमिन ने उसे जलाकर एक दियासलाई दे दी।

"वैसिली फ़ेदोतिच !" अचानक ही एक आवाज़ दरवाजे पर फुस-फुसा उठी। "ज़रा आइये !"

"कौन है ? क्या काम है ?"

"ज़रा आइये," आवाज़ ने आग्रहपूर्ण हठ से कहा। "कुछ अजीब मज़दूर यहाँ आ गये है; वे लोग हो-हल्ला मचा रहे है, और पवेल येगोरिच मौजूद नहीं हैं।"

सालोमिन ने क्षमा माँगी और उठकर बाहर चला गया।

मशूरिना मेरियाना की ओर ताकने लगी, और इतनी देर तक आँखें गड़ाये देखती रही कि बेचारी मेरियाना हतप्रभ हो गई।

"माफ़ करना," उसने अचानक ही अपनी रूखी झटकेदार आवाज़ में कहा; "मै कुछ उजड्ड-सी हूँ, मुझे ठीक से बात कहना नहीं आता। नाराज़ मत होना; और यदि न चाहो तो उत्तर भी न देना। क्या तुम्हीं वह लड़की हो जो सिप्यागिन के यहाँ से भाग गई है ?"

मेरियाना कुछ अचकचा गई; तो भी उसने कहा, "हाँ।"

"नेज्दानौफ़ के साथ ?"

'हाँ।"

"ओहो''''लाओ मुझे अपना हाथ दो। मुझे क्षमा करो। तुम ज़रूर अच्छी होगी, जब वह तुम्हें प्यार करता है।"

मेरियाना ने उसका हाथ दबाया।

"क्या आप नेज़्दानौफ़ को अच्छी तरह जानती हैं ?"

"हाँ, मैं जानती हूँ। पीटर्सबर्ग में मैं उससे मिला करती थी। इसीलिए मैने ऐसी बात कही। सर्जी मिहालोविच ने भी मुझे बताया था—"

"आह, मार्केलौफ़ ! आपकी हाल में उनसे मुलाकात हुई थी ?"

"हाँ, अब तो वह चला गया।"

"कहाँ ?"

"जहाँ जाने का उसे हुक्म मिला।"

मेरियाना ने आह भरी।

"आह, मिस मशूरिन, मुझे उनके लिए डर लगता है।"

"पहली बात तो यह है, मैं 'मिस' नहीं हूँ। तुम्हें ऐसी सब शिष्टाचार की बातें छोड़ देनी चाहियें। और दूसरे''''''तुमने कहा 'मुझे डर लगता है' इससे भी काम नहीं चलेगा। तुम्हें अपने लिए नहीं डरने के लिए मन पक्का करना होगा, और दूसरों के लिए डरना छोड़ना पड़ेगा। हालाँकि एक बात मैं मानती हूँ; मेरे लिए, फेम्ला मशूरिना के लिए, इस तरह से बात करना आसान है। मैं बदसूरत हूँ और तुम अवश्य ही''''''सुन्दरी हो। इसलिए तुम्हारे लिए यह सब कठिन होगा ही।" मेरियाना ने नीची नज़र करली और फिर मुँह फेर लिया। "सर्जी मिहालोविच ने मुझसे कहा था''''''उसे मालूम था कि मेरे पास नेज़्दानौफ़ के लिए एक पत्र है''''''तुम कारखाने मत जाओ' उसने मुझसे कहा था, 'चिट्ठी मत ले जाओ; उससे वहाँ हर चीज़ नष्ट-भ्रष्ट हो जायगी। मत जाओ ! वे दोनों वहाँ सुखी हैं''''''तो उन्हें रहने दो ! बीच में बाधा मत डालो !' मुझे बाधा न डालने से खुशी ही होती''''''पर मैं उस पत्र के बारे में क्या कर सकती हूँ ?"

"आप उसे अवश्य ही दे दीजियेगा," मेरियाना ने कहा, "पर ओह, कितने सज्जन हैं वह, सर्जी मिहालोविच ! क्या यह हो सकता है कि वह मारे जायें, मशूरिना······या साइबेरिया भेज दिये जाये ?"

"ठीक है, पर उससे क्या ? क्या लोग साइबेरिया से वापस नही आते ? और जहाँ तक जान जाने का सवाल है ! जिन्दगी कुछ लोगों को प्यारी होती है और कुछ लोगों को भारी। उसकी जिन्दगी भी कुछ बढ़िया चीनी की बनी नहीं है।"

मशूरिना फिर मेरियाना की ओर एकटक आँखें गड़ाकर देखने लगी।

"हाँ, तुम निस्सन्देह सुन्दर हो," उसने अन्त में जोर से कहा, "छोटी सुन्दर चिड़िया जैसी ! मुझे लग रहा है कि अलैक्सी अभी नही आने वाला है···चिट्ठी मै तुम्हें ही क्यों न दे दूँ ? इन्तज़ार क्यों करूँ ?"

"मैं उन्हे अवश्य दे दूँगी, इसका विश्वास रखें।"

मशूरिना अपने हाथ पर गाल टिकाये बहुत-बहुत देर तक चुपचाप, कुछ भी बोले बिना, बैठी रही।

"अच्छा बताओ," उसने शुरू किया······"माफ़ करना······ तुम क्या उसे बहुत ही प्यार करती हो ?"

"हाँ।"

मशूरिना ने अपना भारी सिर हिलाया।

"और यह तो खैर पूछने की बात ही नहीं कि वह भी तुम्हें प्यार करता है या नहीं। मैं अब चलूँगी, नहीं तो शायद मुझे देर हो जायगी। तुम उससे कह देना कि मै यहाँ आई थी······मेरा अभिवादन उसे जता देना। कहना मशूरिना आई थी। मेरा नाम तो नहीं भूल जाओगी ? नहीं ? मशूरिना। और चिट्ठी······ठहरो ज़रा, कहाँ रख दी मैंने चिट्ठी ?······"

मशूरिना खड़ी हो गई, घूमी और जेबों में ढूँढ़ने का बहाना करते हुए उसने फुर्ती से एक छोटा-सा काग़ज का मुड़ा हुआ टुकड़ा अपने

मुँह में रख लिया और उसे निगल गई। "आह, मेरे राम ! यह कैसी मूर्खता हो गई ! क्या सचमुच मैने खो दिया उसे ? सचमुच खो गया लगता है। कैसी मुसीबत है ! अगर किसी को मिल गया तो !······ नहीं, यहाँ तो कहीं है नहीं। तो फिर आखिर वही हुआ जो सर्जी मिहालोविच चाहता था।"

"फिर से देख लीजिये," मेरियाना ने धीमे से कहा।

मशूरिना ने अपने हाथ हिलाये।

"नहीं ! क्या लाभ है ? खो ही गया !"

मेरियाना उसकी ओर बढ आई।

"अच्छा, आओ मुझे प्यार कर लो।"

अचानक मशूरिना ने मेरियाना को अपनी बाँहों में भरकर अपनी छाती से चिपका लिया; उसके इस आलिंगन में स्त्री से अधिक शक्ति थी।

"यह मै और किसी के लिए नही करती," उसने रुद्ध कंठ से कहा, "यह मेरी आत्मा के विरुद्ध है······यह पहली ही बार है। उससे कहना कि अधिक सावधान रहे।·········और तुम भी समझ गईं। जल्दी ही तुम्हारे लिये यह जगह ठीक नहीं रहेगी, बिल्कुल ठीक न रहेगी। निकल जाओ, तुम दोनों, जब तक···नमस्कार।" उसने तीखी ऊँची आवाज में कहा। "पर एक बात और है···उससे कहना···नहीं, कोई जरूरत नहीं। कोई लाभ नहीं।"

मशूरिना दरवाजे को जोर से बन्द करती हुई बाहर चली गई और मेरियाना कमरे के बीचोंबीच खड़ी सोचती रह गई।

"इस सबका क्या अर्थ है ?" उसने आखिरकार कहा, "क्यों, वह स्त्री तो उसे मुझसे भी अधिक प्यार करती है, ऐसा लगता है। और उसके उन संकेतों का क्या अर्थ था ? और सालोमिन क्यों इतने अचानक ही चले गये और वापिस नही आये ?"

वह कमरे में चहलकदमी करने लगी। अजीब-सा भाव—निराशा,

क्षोभ और आश्चर्य का सम्मिश्रण—उसके ऊपर छा गया। वह नेज्दानौफ़ के साथ क्यों नहीं गई ? सालोमिन ने उसे मना किया था······और वह स्वयं वहाँ गये ? और उसके चारों ओर सब क्या चल रहा है ? मशूरिना ने वह घातक पत्र नेज्दानौफ़ के प्रति हमदर्दी के कारण ही नहीं दिया······पर वह ऐसा अनुशासनहीनता का कार्य कैसे कर सकी? क्या वह अपनी उदारता दिखाना चाहती थी ? इसका क्या अधिकार था उसे ? और वह स्वयं, मेरियाना, उस कार्य से इतनी विचलित क्यों हो गई थी ? क्या वह सचमुच हुई थी विचलित ? एक कुरूप स्त्री एक नौजवान की ओर आकृष्ट हुई·········आखिरकार इसमें ऐसी नई बात क्या थी ? और मशूरिना ने यह कैसे सोच लिया कि मेरियाना का नेज्दानौफ़ के प्रति प्रेम उसकी कर्तव्यपरायणता से अधिक प्रबल है ? शायद मेरियाना ऐसा त्याग बिलकुल ही नहीं चाहती थी। और उस पत्र में क्या लिखा रहा होगा ? तुरन्त संघर्ष का आह्वान ? तो फिर ?

"और मार्केलौफ़ ? वह खतरे में है······और हम लोग कुछ कर रहे हैं उसके लिए ?" उसने अपने मन से पूछा। "मार्केलौफ़ हम दोनों को बचाना चाहता है, हम दोनों को सुखी होने का अवसर देना चाहता है, चाहता है हम लोग जुदा न हों······यह सब क्या है ? यह भी उदारता है···या घृणा है।

"और क्या हम उस वाहियात घर से इसलिए भागे थे कि एक साथ रहें और कबूतरों की तरह चोंच-से-चोंच मिलाकर कूँ-कूँ करते रहें ?"

मेरियाना के मन में ऐसे ही सब विचार आ रहे थे·········और धीरे-धीरे वही झल्लाहट भरे क्षोभ का भाव अधिकाधिक प्रबल होता जा रहा था। इसके अलावा उसके आत्माभिमान को ठेस पहुँची थी। सब लोग उसे अकेला क्यों छोड़ गये हैं···सभी लोग ?

इस मोटी स्त्री ने उसे सुन्दरी कहा था, छोटी-सी चिड़िया······

क्यों नहीं एकदम गुड़िया कह दिया ? और नेज्दानौफ़ पवेल के साथ क्यों गया, अकेला क्यों नहीं गया ? मानो उसे अपनी देखभाल के लिए किसी की जरूरत थी। और सचमुच सालोमिन के असली विचार थे क्या ? वह तो बिलकुल क्रान्तिकारी नहीं लगता। और क्या यह सम्भव है कि स्वयं उसके अपने दृष्टिकोण कोई सच्चा नहीं मानता ?

मेरियाना के उत्तेजित मस्तिष्क में यही सब विचार एक के बाद एक चक्कर काट रहे थे। अपने होठ भींचे और पुरुषों की भाँति अपने हाथ मोड़े वह अन्त में खिड़की के पास बैठ गई, और फिर निश्चल बैठी रही, कुर्सी में पीछे झुके बिना, तीव्रता और चौकन्नेपन की मूर्ति, किसी मिनिट उछल पड़ने को प्रस्तुत। तात्याना के पास जाकर काम वह नहीं करना चाहती थी; वह केवल एक चीज करना चाहती थी—प्रतीक्षा ! और वह प्रतीक्षा करती रही, हठपूर्वक, करीब-करीब बदले की भावना से। बीच-बीच में उसे अपने मन की अवस्था अजब-सी लगती और समझ में न आती······पर इससे कोई अन्तर न पड़ा। एक बार उसके मन में यह भी आया, कहीं ईर्ष्या उसकी इन तमाम भावनाओं की जड़ में न हो। पर बेचारी मशूरिना का रूप-रंग याद करके उसने केवल अपने कँधे उचकाये और मानसिक रूप में हाथ हिलाकर विचार को मन से निकाल दिया।

मेरियाना को बहुत देर तक प्रतीक्षा करनी पड़ी; आखिरकार उसे आदमियों के सीढ़ियों पर चढ़ने की आवाज सुनाई पड़ी। उसने अपनी आँखे दरवाजे की ओर घुमा दीं···आवाज पास आती गई। दरवाजा खुला और नेज्दानौफ़, पवेल की बाँह के सहारे पर, दरवाजे में दिखाई दिया। वह एकदम सफेद पड़ गया था, टोपी उसकी गायब थी; उसके अस्त-व्यस्त बाल भीगी लटों के रूप में उसकी भौंहों पर गिरे पड़ रहे थे; उसकी आँखें अपने ठीक सामने की ओर, शून्य में ताक रही थीं। पवेल उसे कमरे में लाया—उसके पैर अनिश्चित क्षीण ढंग से लड़खड़ाते से पड़ रहे थे—और उसे सोफ़े पर बिठा दिया।

मेरियाना उछल पड़ी ।

"क्या बात है ? क्या हो गया इन्हें ? बीमार हो गये हैं ?"

पर नेज़्दानौफ़ को बैठाते-बैठाते, पवेल ने पीछे मुड़कर मुस्कराते हुये कहा—

"चिन्ता मत कीजिये, मिस; जल्दी ही सब ठीक हो जायगा······ बस अभ्यास न होने के कारण ही है ।"

"पर बात क्या है ?" मेरियाना ने हठपूर्वक पूछते हुये कहा—

"कुछ नशे-से का असर है । खाली पेट पर शराब पी रहे थे और कुछ नहीं ।"

मेरियाना नेज़्दानौफ़ के ऊपर झुक गई । वह सोफे पर अध-लेटा-सा पड़ा था; उसका सिर छाती पर लटक आया था, आँखें डबडबाई सी थीं···उसके पास से शराब की गन्ध आ रही थी, वह नशे में धुत था ।

"अलैक्सी !" उसके मुँह से निकल पड़ा ।

उसने अपनी भारी पलकें जबर्दस्ती उठाईं और मुस्कराने की कोशिश की ।

"आह ! मेरियाना ! उसने हकलाते हुए कहा, "तुम हमेशा सी-सी···सीधे-सादे बनने की बात कहा करती थीं; अब देखो, मैं सचमुच सीधा-सादा हो गया हूँ । क्योंकि जनता हमेशा शराब पिये रहती है इसलिए—"

चुप हो गया; फिर कुछ अस्पष्ट-सा बड़बड़ाया, आँखें बन्द कीं और सो गया । पवेल ने उसे होशियारी से सोफे पर लिटा दिया ।

"चिन्ता मत कीजिये मेरियाना विकेन्त्येव्ना," उसने फिर कहा, "यह दो घण्टे तक सोयेंगे और फिर नये जैसे उठ पड़ेंगे ।"

मेरियाना पूछने ही वाली थी कि यह सब कैसे हुआ; पर उसके प्रश्नों से पवेल को वहीं रुकना पड़ता, पर वह एकान्त चाहती थी··· यानी वह नहीं चाहती थी कि पवेल नेज्दानौफ़ को आवश्यकता से अधिक देर तक इस अपमानित अवस्था में देखे । उसने खिड़की की ओर

मुँह फेर लिया और पवेल ने, जो एक नज़र में सारी परिस्थिति को समझ गया था, होशियारी के साथ नेज्दानौफ़ के पैरों को ढक दिया, एक तकिया उसके सिर के नीचे लगाया, एक बार फिर धीमे से कहा, "कोई बात नही है।" और अचक-अचक बाहर चला गया।

मेरियाना ने घूमकर देखा। नेज्दानौफ़ का सिर भारी-से तकिये में धँसा हुआ था, उसके सफेद चेहरे पर एक तनावपूर्ण निश्चलता दीख रही थी, जैसी किसी सांघातिक रूप से बीमार आदमी के चेहरे पर दिखाई पड़ा करती है।

"यह कैसे हुआ ?" वह सोचने लगी।

बत्तीस

जो कुछ हुआ वह इस प्रकार था।

गाडी मे पवेल के साथ बैठते ही, नेज्दानौफ़ बेहद उत्तेजित हो उठा; और जैसे ही गाड़ी कारखाने के अहाते से बाहर निकली और 'त'—जिले की बड़ी सडक पर चलने लगी, उसने चिल्लाना, उधर से निकलने वाले किसानो को रोकना और संक्षिप्त असंबद्ध वाक्यों में उनसे कुछ-न-कुछ कहना शुरू कर दिया। "उठो! वक्त आ गया है। महसूलो का नाश हो। जमीदारों का नाश हो।" कुछ किसान उसकी ओर भौचक्के-से देखते; कुछ लोग उसकी चीख़-पुकार की ओर ध्यान दिए बिना चलते चले जाते—वे उसे शराबी समझते थे, एक ने तो अपने घर पहुँचकर यह भी कहा था कि रास्ते में उसने एक फ्रान्सीसी को देखा जो कुछ हकलाता-हकलाता बेमाने बाते कर रहा था। नेज्दानौफ़ में इतनी बुद्धि तो थी कि यह देख सके कि जो कुछ वह कर रहा है वह कितना बेवकूफ़ी का और निरर्थक काम है; पर धीरे-धीरे उसने अपने आपको इतना उत्तेजित कर लिया था कि उसके लिए अब यह समझना भी दुश्वार था कि क्या ठीक है और क्या गैर-ठीक। पवेल ने उसको शान्त करने

की कोशिश की, उससे कहा कि सचमुच ऐसे काम नहीं चलेगा, उसने यह भी कहा कि जल्दी ही वे लोग 'त'—जिले की सीमा पर 'लासेस स्प्रिंग्स' नामक एक बड़े गाँव में पहुँच जायेंगे जहाँ हालात का पता लगाया जा सकेगा···पर नेज्दानौफ़ ने एक न सुनी···साथ ही उसका चेहरा अजीब तरह से उदास करीब-करीब निराशा से भरा हुआ था। उनका घोड़ा बहुत ही हिम्मत वाला, छोटा-सा जानवर था जिसकी गर्दन की अयाल छटी हुई थी; वह अपने मज़बूत छोटे पैरों को बडी सक्रियता के साथ चला रहा था और लगाम को खीचता जाता था। मानो वह घटनास्थल पर पहुँचने के लिए जल्दी कर रहा हो और वहाँ महत्वपूर्ण व्यक्तियो को ले जा रहा हो। लासेस स्प्रिंग्स पहुँचने के पहले नेज्दानौफ़ ने सडक से जरा हट कर एक खुले खलिहान में आठ किसानों को देखा; वह तुरन्त गाडी से कूद पड़ा और एकाएक चिल्लाता हुआ और तरह-तरह की मुद्राएँ बनाता हुआ उनकी ओर दौडा। बहुत सारे बेशुमार कुछ भी न समझ मे आने वाले शब्दों के बीच केवल···आज़ादी ! आगे बढो ! कंधे से कंधा मिलाकर ! आदि शब्द भर्राये हुए और ऊँचे स्वर मे समझ मे आते थे। किसान खलिहान के सामने इसलिए इकट्ठे हुए थे कि उसे किस तरह, चाहे ऊपर से देखने में ही सही (वह सम्मिलित खलिहान था और इसलिये खाली था), भरा जाय; वे नेज्दानौफ़ की ओर ताकने लगे और लगता था मानो वे उसके भाषण को बड़े ध्यान से सुन रहे हैं, पर वे मुश्किल से उसकी कोई बात समझ सके होंगे, क्योंकि जब वह आखिरी बार 'आज़ादी!' चिल्लाता हुआ उनके पास से झपटकर हटा, तो उनमे से सबसे तेज़ एक किसान ने बड़े गहरे सोच की मुद्रा में सिर हिलाया और कहा, "बहुत कड़ी बातें कह रहा था न ?" दूसरे ने कहा, "कोई कप्तान मालूम होता है !" तेज़ किसान ने फिर उत्तर दिया "ज़रूर—अपना गला कोई यों ही थोड़ी ख़राब करता। आजकल हमारे रुपये के बदले मे बस यही मिलने लगा है।" नेज्दानौफ़ स्वयं, गाड़ी में चढ़कर पवेल के पास बैठने के बाद सोचने लगा, हे

भगवान्, कितने मूर्ख हैं ! पर हममें से भी तो कोई नहीं जानता कि जनता को कैसे जगाना चाहिए—शायद यही कारण है न ? पर इस समय सोचने-विचारने का समय नहीं है। चीखते हुए बढ़े चलो ! दिल में दर्द होता है ? होने दो !"

ये लोग गाँव की सड़क पर पहुँचे। उसके ठीक बीचों-बीच बहुत सारे किसान एक शराबखाने के आगे भीड़ लगाए हुए थे। पवेल ने नेज़्दानौफ़ को रोकने की कोशिश की; पर वह जैसे सिर पर पैर रख कर गाड़ी से भाग निकला, और एक ज़ोर की आवाज "भाइयो !" लगाता हुआ भीड़ के बीचों-बीच पहुँच गया······भीड़ थोड़ी फट गई; और नेज़्दानौफ़ फिर व्याख्यान फटकारने लगा। वह किसी ओर देख नही रहा था और ऐसे भीषण आवेश में था कि लगता था मानो रो रहा हो।

पर यहाँ जो परिणाम निकला वह बिल्कुल ही अलग था। एक दाढ़ी-रहित किन्तु डरावने चेहरे वाले विशालकाय व्यक्ति, जिसने छोटा कोट, ऊँचे बूँट, और एक भेड़ की खाल की टोपी पहन रक्खी थी, नेज़्दानौफ के पास पहुँचा और उसके कंधे पर पूरे ज़ोर के साथ हाथ मारते हुए गरजती हुई आवाज़ में बोला, "शाबाश ! तुम बढ़िया आदमी हो ! पर ज़रा ठहरो ! क्या तुम जानते नहीं कि सूखे शब्द मुँह को झुलसा देते हैं ? इधर आओ। यहाँ बातचीत करना ज़्यादा आसान है।" वह नेज़्दानौफ़ को शराबखाने में घसीट ले गया; और बाकी भीड़ भी उनके पीछे-पीछे चली। "मिहेइच !" उस छोटे दैत्य ने चिल्लाकर कहा, "ज़रा जल्दी। दो पैग ! मेरी पसन्द वाली ! अपने एक दोस्त की दावत कर रहा हूँ ! वह कौन है, उसका क्या परिवार है, कहाँ से वह आया है, भगवान जाने पर वह ज़मींदारों की कसकर खबर ले रहा है।" "पियो !" उसने नेज़्दानौफ़ की ओर मुड़ते हुए कहा और उसे एक बड़ा-सा भारी ऊपर तक भरा हुआ गिलास थमा दिया, जो बाहर से ऐसे भीगा हुआ था मानो पसीना चू रहा हो। "पियो—अगर तुम्हें हम

जैसों के लिए कोई हमदर्दी है !" "पियो !" बहुत सारे गलों से एक साथ ज़ोर की आवाज़ गूँजी। नेज़दानौफ़ ने गिलास ले लिया। वह जैसे कोई स्वप्न देख रहा था; उसने चिल्लाकर कहा, "दोस्तो ! तुम्हारे स्वास्थ्य के लिए !" और एक घूँट में गिलास खाली कर दिया। ओफ़, उसने वह गिलास उतनी ही हताश वीरता के भाव से खाली किया जिसके साथ वह गोलियों या सगीनों की बाढ के आगे कूद पड़ा होता ······पर उसके भीतर क्या हो रहा था ? कोई चीज उसकी रीढ़ की हड्डी में होकर उसके पैरों तक लपकती हुई, उसके गले में, उसकी छाती में, उसके पेट में आग लगाती हुई, उसकी आँखों में आँसू निकालती हुई लपक रही थी।·······उसका सिर चकरा उठा और वह मतली के कारण काँपने लगा; बड़ी मुश्किल से उसकी मतली रुक सकी······ और कुछ नहीं तो अपने चकराते हुए सिर को काबू में रखने के लिए ही ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगा। शराबखाने का अन्धेरा कमरा अचानक गर्म लगने लगा मानो उसमें बहुत से लोग भर आये हों और दम घुटा जा रहा हो ! नेज़दानौफ़ बातचीत करने लगा। लम्बी अन्तहीन बातचीत; वह ग़ुस्से से चिल्लाता और क्रुद्ध भाव से अपने चौड़े-चौड़े हाथों को हिलाता और सामने खड़े लोगों की लटकती हुई दाढ़ियों को चूमता ···कोट पहने हुए उस भीमकाय नौजवान ने भी उसे चूमा, करीब-करीब उनकी पसलियाँ कुचल दीं। और वह था भी पूरा पक्का राक्षस। उसने गरजकर कहा,"मैं उसका गला और भी खोल दूँगा ! उसका गला और भी खोल दूगा। खबरदार जो मेरे भाई से किसी ने ज़रा भी कुछ कहा! नहीं तो मै उसके सिर का भुर्ता बना दूँगा···सब चें-चें निकल जायेगी ! मेरे लिए कुछ कठिन नही है; मै कसाई रह चुका हूँ; इस तरह के काम में मैं बहुत होशियार हूँ।" और उसने अपना बड़ा-सा घूँसा हिलाया···और तब हे भगवान् ! कोई फिर चिल्ला उठा, "पियो !" और नेज़दानौफ़ उस गन्दे विष को फिर निगल गया। पर इस दूसरी बार हालत भीषण थी। उसे लग रहा था कि बहुत से मोंथरे हुक उसे भीतर ही भीतर

फाड़े डाल रहे है। उसके सिर मे आग लगी हुई थी, उसकी आँखों के आगे हरे चक्कर से घूम रहे थे; उसके कानों में जोर की गरज गूँज रही थी······किन्तु ओह! तीसरा गिलास······क्या यह सम्भव है कि वह भी उसने खाली कर दिया? नीली नाकें उसके नज़दीक खिसक कर उसे चारों ओर से घेरे हुए जान पड़ती थीं, और धूल भरे बालों वाले सिर, तमतमायी हुई गर्दनें और गले जिनके ऊपर झुर्रियों का जाल-सा बिछा हुआ था चारों ओर घिर आया था। उजड्ड हाथों ने उसे पकड़ लिया था। "कहे जाओ!" क्रुद्ध आवाजे चीख रही थीं। "बोलो-बोलो! परसों एक और अजनबी आदमी इसी तरह बोल रहा था। बोले जाओ!······" नेज़्दानौफ़ के पैरों तले की धरती काँप रही थी। उसकी अपनी आवाज़ उसे विचित्र सुनाई पड़ रही थी मानो कहीं बहुत दूर से आ रही थी, क्या यह मृत्यु थी, या कुछ और?

और फिर एकाएक······ताज़ी हवा सी उसे अपने चेहरे पर लगी, अब कोई हल्ला न था, न लाल चेहरे, न शराब की दुर्गन्ध, न भेड की खालों तथा चमड़े की बदबू······और फिर वह गाड़ी मे पवेल के साथ बैठा हुआ था। पहले तो वह छटपटा रहा था और चिल्ला रहा था, "ठहरो! कहाँ चल दिए? अभी मैं उनसे कुछ कह तो पाया ही नही, मुझे समझाना है······" फिर उसने जोडा, "और तुम खुद, तुम छिपे हुए शैतान कही के, तुम अपने विचार तो बताओ!" पवेल ने उत्तर में कहा था, "अगर जमींदार न हों, और जमीन सब हमारी हो तो बहुत ही अच्छा हो—इससे अच्छी तो कोई बात ही नहीं हो सकती। पर अभी तक इस तरह का कोई हुकुम मिला नही", और उसने चुपचाप अपने घोड़े का मुँह मोड़ दिया था और एकाएक जोर से लगाम को उसकी पीठ पर फटकारते हुए उसे सरपट दौड़ा दिया था, उस तमाम शोर-गुल से दूर······उस कारखाने की तरफ़······

नेज्दानौफ़ ऊँघने लगा था और गाड़ी के धक्कों में इधर-से-उधर ढुलक जाता था, पर हवा उसको अपने चेहरे पर मीठी लग रही थी

और उदासी भरे विचारो को आने से रोक रही थी।

बस उसे इसी बात का मलाल था कि वह अपनी बात ठीक से समझा नही सका······और फिर हवा ने उसके गर्म चेहरे को सहला दिया। और फिर मेरियाना का क्षणिक दर्शन, क्षणभर को अपमान का जलता हुआ भाव, और नीद, भारी मौत जैसी नीद······

यह सब पवेल ने बाद में सालोमिन को बताया। उसने इस बात को बिलकुल नही छिपाया कि उसने नेज्दानौफ के नशे में धुत् हो जाने मे कोई अडचन न डाली थी······नही तो वह उसे वहाँ से ला न सकता था। वे लोग उसे जाने ही न देते।

"पर जब वह बहुत कमजोर होने लगा तो मैने बहुत-बहुत झुककर उनसे प्रार्थना की, 'ईमानदार सज्जनो, बेचारे लडके को जाने दीजिये; देखिये बहुत ही कम उम्र है······' और इसलिये उन्होने इसे फिर छोड़ दिया······'अच्छा तो छोडने के लिए आधा रूबल दो,' उन लोगो ने कहा। और वह मैने उनको दे दिया।"

"बिल्कुल ठीक," सालोमिन ने सहमति के साथ कहा।

नेज्दानौफ़ सोता रहा, और मेरियाना खिडकी के पास बैठी छोटे से बाड़े की ओर ताकती रही। और अजीब बात है कि पवेल के साथ नेज्दानौफ के आन के पहले उसके मन में जितने भी क्रुद्ध और बुरे विचार तथा भाव उठ रहे थे वे एकदम गायब हो गये; स्वय नेज्दानौफ़ के प्रति उसके मन में किसी प्रकार की घृणा अथवा क्षोभ का भाव न था, उस पर उसे दया आ रही थी। वह अच्छी तरह जानती थी कि वह शराबी नही था और वह यही सोच रही थी कि जब वह उठेगा तो क्या कहेगी; कोई ऐसी स्नेहभरी बात जिससे वह दुखी और लज्जित न अनुभव करे। "मुझे ऐसे करना चाहिये कि वह अपने-आप बता सके कि यह दुर्घटना कैसे हुई।"

वह उत्तेजित न थी; पर उसे बडा उदास लग रहा था, बहुत ही उदास। ऐसा लगता था मानो जिस वास्तविक दुनिया में पहुँचने के

लिये वह छटपटा रही थी उसकी हवा का एक झोंका उसके ऊपर बह गया हो······और वह उसके भद्दे पन और अँधेरे के ऊपर काँप उठी। यह कौन-सी चीज थी जिसके लिये वह अपना बलिदान करने जा रही है ? पर नहीं। ऐसा नहीं हो सकता। यह कुछ नहीं है; बस संयोग की बात है और फौरन ही खत्म हो जायगी।

यह एक क्षणिक प्रभाव था, जिसने उसके मन को इसलिये प्रभावित किया क्योंकि वह अप्रत्याशित था। वह उठी, सोफ़े तक गई, जहाँ नेज्दानौफ़ लेटा हुआ था, और उसने उसकी पीली भोंह को रूमाल से सहलाया, जो नीद में भी पीड़ा से सिमटी हुई थी; फिर उसने उसके बालों को पीछे कर दिया······

फिर मेरियाना को उसके लिये दुःख अनुभव होने लगा जैसे माँ को अपने बीमार बच्चे के लिये होता है। किन्तु उसे देखकर मेरियाना के मन में एक तरह का दर्द-सा होने लगता था, और वह बीच के दरवाजे को खुला छोड़कर धीरे से अपने कमरे में चली गई।

उसने कोई काम नहीं शुरू किया, बस जाकर बैठ गई और फिर तरह-तरह के विचार उसके मन में आने लगे। उसे लगा समय पिघला जा रहा है, एक के बाद एक मिनट उड़ा चला जा रहा है, यह भावना उसे निश्चित रूप से मधुर लगी, उसका दिल धड़क उठा और मानो वह फिर किसी चीज़ की प्रतीक्षा करने लगी।

सालोमिन कहाँ चला गया ?

दरवाज़ा हल्का-सा चरमराया और तात्याना ने कमरे में प्रवेश किया।

"तुम्हें क्या चाहिए ?" मेरियाना ने करीब-करीब क्रुद्ध स्वर में पूछा।

"मेरियाना विकेन्त्येव्ना," तात्याना ने धीमे स्वर में शुरू किया, "देखिये, परेशान मत होइए, क्योंकि ज़िन्दगी में ऐसी चीजें होती ही रहती हैं—"

"मैं ज़रा भी परेशान नहीं हूँ तात्याना ओसियोव्ना," मेरियाना ने उसकी बात काटकर कहा। "अलैक्सी दिमित्रिच की तबियत ठीक नहीं है; कोई खास बात नहीं···"

"अच्छा यह तो बहुत ही बढ़िया है! पर मैं वहाँ सोच रही थी कि मेरी मेरियाना विकेन्त्येव्ना आई नहीं, क्या हो गया है उन्हें? मैं सोचने लगी। पर तो भी मैं आपके पास इस वक्त नहीं आती, क्योंकि ऐसे मामलों में पहला नियम यह है, 'अपना काम देखो!' पर बात यह है कि कोई आदमी—मैं जानती नहीं कौन—कारखाने में आया है। छोटा सा आदमी और जरा लंगड़ाता है; और वह अलैक्सी दिमित्रिच से मिले बिना किसी तरह से मानना ही नहीं चाहता। बड़ा अजीब लगता है, सवेरे वह औरत उनको पूछती हुई आई थी और अब यह एक लंगड़ा आदमी आया है। वह कहता है, 'और अगर अलैक्सी दिमित्रिच यहाँ नहीं हैं तो वैसिली फेदोतिच से ही मिला दो! मैं बिना मिले नहीं जाऊँगा क्योंकि काम बहुत जरूरी है' हम लोगों ने उसे भी उस औरत की तरह से भगा देने की कोशिश की; कहा कि वैसिली फेदोतिच यहाँ नहीं हैं···कहीं चले गए हैं, पर यह लंगड़ा आदमी बस यही कहता है कि चाहे आधी रात तक मुझे यहाँ बैठना पड़े मैं बिना मिले नहीं जाऊँगा··· इसलिए वह अहाते में घूम रहा है। आइए, यहाँ से देखिए, खिड़की में से आपको दिखाई पड़ जायगा। क्या आप बता सकती हैं कि कैसा आदमी है यह?"

मेरियाना तात्याना के पीछे-पीछे आई और फिर एक बार उसे नेज्दानौफ़ के पास से निकलना पड़ा, और फिर उसने देखा कि उसकी भौंहें कष्ट से सिमटी हुई हैं, और फिर उसने उसे रूमाल से सहलाया। खिड़की के धूल-भरे काँच में से उसको उस व्यक्ति की झलक मिल गई जिसके बारे में तात्याना कह रहा थी। वह उसके लिये अजनबी था। पर उसी समय घर के कोने के मोड़ पर सालोमिन आता हुआ दिखाई दिया।

छोटा-सा लंगड़ा आदमी जल्दी से उसकी तरफ़ बढ़ा और अपना हाथ उसकी ओर बढ़ा दिया। सालोमिन ने उससे हाथ मिलाया। स्पष्ट ही वह उस व्यक्ति को जानता था जो दोनों ही नज़र से ओझल हो गए···

पर अब उनके पैरों की आहट सीढ़ियों पर सुनाई दी···वे लोग ऊपर आ रहे थे···मेरियाना जल्दी से अपने कमरे में चली गई और बीचोंबीच चुपचाप खड़ी हो गई; उससे साँस भी नहीं ली जा रही थी। उसे डर लग रहा था···किस चीज़ का, वह नहीं जान सकी।

सालोमिन का सिर दरवाजे में दिखाई पडा।

"मेरियाना विकेन्त्येव्ना, हम लोग अन्दर आ सकते हैं ? मेरे साथ एक सज्जन हैं जिनसे आपका फौरन मिलना बहुत जरूरी है।"

मेरियाना ने उत्तर में केवल सिर हिला दिया, और सालोमिन के पीछे-पीछे पाकलिन भी अन्दर चला आया।

तेतीस

"मैं आपके पति का एक मित्र हूँ," उसने मेरियाना का झुककर अभिवादन करते हुए और मानो अपने भयभीत और उत्तेजित चेहरे को छिपाए हुए कहा; "मैं वैसिली फेदोतिच का भी मित्र हूँ। अलैक्सी दिमित्रिच सोये हुए हैं; मैंने सुना उनकी तबियत ठीक नहीं है, और दुर्भाग्य से मैं भी बुरे समाचार लाया हूँ जो मैं वैसिली फेदोतिच को बता चुका हूँ और जिनको देखते हुए कुछ चीजें फ़ौरन तय होना जरूरी हैं।"

पाकलिन की आवाज़ बार-बार फट रही थी, उस आदमी की तरह जिसका गला सूखा हुआ हो और जो प्यास से परेशान हो। जो खबर वह लाया था वह सचमुच बहुत खराब थी। मार्केलौफ़ को किसान पकड़ कर शहर ले गए थे। उस मूर्ख क्लर्क ने गोलुशकिन का भंडाफोड़ कर दिया था; वह गिरफ्तार हो चुका था। और अब वह हर आदमी का और हर चीज़ का भंडाफोड़ कर रहा था, पक्का कट्टरपन्थी बनने को तैयार था, हाईस्कूल को विशप फिलारे का चित्र भेंट करने का वचन दे रहा था, और पंगु सैनिकों में बाँटने के लिए पाँच हज़ार रूबल दे जो चुका था। इसमें कोई सन्देह ही नहीं था कि उसने नेज़्दानौफ़ का नाम बता

दिया होगा; किसी भी मिनट पुलिस के फैक्टरी पर छापा मारने की सम्भावना थी। वैसिली फेदोतिच भी कुछ खतरे में था। "जहाँ तक मेरा सवाल है," पाकलिन ने कहा, "मुझे सचमुच ताज्जुब है कि मै अभी तक आजादी से घूम रहा हूँ, हालाँकि यह भी ठीक है कि मैंने न तो कभी ठीक-ठीक कोई राजनीति में ही भाग लिया है, न किसी योजना में ही मेरा हाथ रहा है। मै पुलिस की इस लापरवाही या भुलक्कड़पन का फायदा उठाकर आपको सावधान करने और यह सलाह करने आ गया हूँ कि हर प्रकार की दु:खद घटना से बचने के लिए क्या किया जाना चाहिए।"

मेरियाना आखिर तक पाकलिन की बात सुनती रही। वह तनिक भी भयभीत न थी—वह बल्कि पूरी तरह शान्त थी···पर यह तो ठीक है कि कुछ-न-कुछ इन्तज़ाम तो करना ही चाहिए। उसने सबसे पहले सालोमिन की ओर देखा।

वह भी बहुत शान्त जान पड़ता था; केवल उसके होठ हलके से फड़क रहे थे और उसकी परिचित मुस्कान इस समय मौजूद न थी।

वह समझ गया कि मेरियाना की दृष्टि का क्या अर्थ है, वह उसके कहने का इन्तज़ार कर रही थी कि क्या प्रबन्ध होना चाहिए।

"परिस्थिति अवश्य ही कुछ पेचीदा है," उसने शुरू किया, "मेरे खयाल से यह तो ठीक ही होगा कि नेज़्दानौफ़ को उस समय तक छिपा कर रखा जाय। अच्छा मिस्टर पाकलिन, आपको कैसे पता लगा कि वह यहाँ है?"

पाकलिन ने हाथ हिलाया।

"एक आदमी ने मुझसे कहा। उसने नेज़्दानौफ़ को पास-पडोस में प्रचार करते घूमते देखा था। उसने उस पर नज़र रखी, हालाँकि किसी बुरे इरादे से नहीं। वह भी हमदर्द ही है। मुझे क्षमा कीजिए," उसने मेरियाना की ओर मुड़ते हुये कहा, "पर सचमुच हमारे मित्र नेज़्दानौफ़ ने बड़ी नादानी की है।"

"अब उसे दोष देने से कोई लाभ नहीं।" सालोमिन ने फिर कहना शुरू किया। "बड़े दुख की बात यह है कि इस समय हम उनसे बातचीत नहीं कर सकते; पर उसकी बीमारी कल तक ठीक हो जायेगी और पुलिस अपने कारबार में इतनी तेज नहीं है जितनी आप कल्पना करते हैं। आपको भी, मेरियाना विकेन्त्येव्ना, मेरे ख्याल से उसके साथ ही चले जाना चाहिए।"

"निस्संदेह," मेरियाना ने बैठी हुई आवाज़ में किन्तु दृढ़ स्वर में उत्तर दिया। सालोमिन ने कहा, "हर चीज़ पर विचार करना होगा, और रास्ता ढूँढ़ना होगा।"

"यदि इज़ाजत दें तो एक बात मैं आपके सामने रखूँ," पाकलिन ने कहा।

"विचार यहाँ आते-आते ही मेरे मन में आया है। एक बात बता दूँ कि मैंने शहर के गाड़ी वाले को मील भर पहले ही विदा कर दिया था।"

"आपका विचार क्या है ?" सालोमिन ने पूछा।

"मैं बताता हूँ। मुझे तुरन्त घोड़े दीजिये............और मैं अभी सिप्यागिन के यहाँ जाऊँगा।"

"सिप्यागिन के यहाँ !" मेरियाना ने दुहराया, "............किस लिये ?"

"अभी बताता हूँ।"

"पर आप उन्हें जानते हैं ?"

"नहीं, बिलकुल नहीं। पर सुनिये। मेरे प्रस्ताव पर अच्छी तरह विचार कर लीजिए। मुझे तो बहुत ही बढ़िया तरकीब मालूम होती है। देखिये, मार्केलौफ़ सिप्यागिन का साला है। ठीक है न ? क्या यह सम्भव है कि वह भला आदमी उसे बचाने के लिये कुछ न करेगा ? और इसके अलावा स्वयं नेज्दानौफ़ ही। मान लें कि मिस्टर सिप्यागिन उससे बहुत नाराज हैं तो भी देखिये इस सब के बावजूद आपसे विवाह

करने के कारण नेज्दानौफ़ भी तो उसका सम्बन्धी हो जाता है। और अपने दोस्त के सिर के ऊपर जो खतरा है—"

"मेरा विवाह नहीं हुआ है।"

पाकलिन एकदम चौंक पड़ा।

"क्या, अभी तक नहीं कर पाये। खैर, कोई परवाह नहीं, थोड़ी-बहुत झूठ भी बोली जा सकती है। एक ही बात है; नहीं हुआ है विवाह तो फौरन ही होने वाला है। सचमुच दूसरी कोई तरकीब हो ही नहीं सकती। इस बात पर भी ज़रा ध्यान दीजिये कि सिप्यागिन ने अभी तक आपके खिलाफ़ कोई कार्यवाही नहीं की है। इसका मतलब है कि उसका दिल बड़ा है। देखता हूँ कि मेरी यह बात आपको अच्छी नहीं लगी; अच्छा चलिये कहलें कि उसके मन में थोड़ी-सी उदारता का ढोंग है। क्यों न हम उसको मौजूदा परिस्थिति में इस्तेमाल करें ? सोच लीजिये।"

मेरियाना ने अपना सिर उठाया और अपना हाथ अपने बालों पर फेरा।

"आप मार्केलौफ़ के फायदे के लिये चाहे जो कुछ इस्तेमाल कीजिए, मिस्टर पाकलिन······या फिर अपने फ़ायदे के लिये; पर अलैक्सी और मैं मिस्टर सिप्यागिन की सहायता अथवा संरक्षण दोनों में से किसी की इच्छा नहीं रखते। हम उनका घर छोड़कर इसलिये नहीं आए थे कि फिर भिखारी की तरह उनके घर जाकर उनका दरवाजा खटखटायेंगे। हम मिस्टर सिप्यागिन या उनकी पत्नी के हृदय की विशालता अथवा उदारता के ढोंग के तनिक भी ऋणी नहीं होना चाहते।"

"यह बहुत ही प्रशंसनीय विचार हैं," पाकलिन ने कहा (पर, "वाहवा ! यह तो पक्का गीला कम्बल है।" उसने मन-ही-मन सोचा) "साथ-ही-साथ अगर आप विचार करें······किन्तु मैं आपकी आज्ञा पालन करने को तैयार हूँ। मैं केवल मार्केलौफ़ के लिए, सिर्फ़ अपने प्यारे मार्केलौफ़ के लिये ही प्रयत्न करूँगा। मैं सिर्फ इतना ही कहना

चाहता हूँ कि वह उसका अपना रिश्तेदार नहीं है, बल्कि अपनी पत्नी के कारण सम्बन्धित है, जबकि आप—"

"मि० पाकलिन, मैं आपसे प्रार्थना करती हूँ।"

"ओह, हाँ, हाँ ! पर यह बात कहे बिना मुझसे नहीं रहा जाता कि मि० सिप्यागिन का बड़ा असर है।"

"तो आपको अपने लिए कोई डर नहीं है ?" सालोमिन ने पूछा।

पाकलिन ने अपनी छाती सीधी कर ली।

"ऐसे समय में आदमी को अपने बारे में नहीं सोचना चाहिए," उसने गर्व के साथ कहा। और सारा वक्त वह केवल अपने बारे में ही सोच रहा था। वह, जैसी कहावत है, 'पहले मैदान मारना चाहता था' (बेचारा कमजोर छोटा सा इंसान !)। उसका ख्याल था कि सिप्यागिन इस सेवा से प्रसन्न होकर जरूरत पड़ने पर उसके लिए भी एकाध शब्द कह देगा। क्योंकि ऊपर से वह चाहे जो कहे, वह भी तो फँसा हुआ था। उसने सुना था······बल्कि वह अपने बारे में स्वयं ही चर्चा करता फिरा था।

"मै सोचता हूँ कि आपका विचार इतना बुरा नहीं है," सालोमिन ने आखिरकार कहा, "हालाँकि उसकी सफलता में मुझे बहुत कम विश्वास होता है, पर जो हो आप कोशिश तो कर ही सकते हैं; उससे कोई नुकसान नहीं होगा।"

"बिलकुल नहीं। मान लीजिए कि खराब से खराब परिस्थिति पैदा हुई; और उन्होंने मुझको निकाल दिया···तो उससे क्या नुक्सान होगा ?"

"निस्संदेह इससे कोई नुक्सान न होगा······" सालोमिन ने कहा, "इस समय क्या बजा है ? पाँच बजे हैं। अब वक्त बरबाद मत कीजिए। घोड़े फौरन मँगवाता हूँ। पवेल !"

पर पवेल के बजाय उन्होंने देहली पर नेज़दानौफ़ को देखा। वह

लड़खड़ाता हुआ-सा, और चौखट का सहारा लेता हुआ खड़ा था; उसका मुँह हल्का-सा खुला हुआ था, और वह भौचक्का-सा ताक रहा था मानो उसकी समझ में कुछ न आ रहा हो।

सबसे पहले पाकलिन उसके पास पहुँचा।

"अल्योशा!" उसने कहा, "तुम मुझे पहचानते हो, हो न?"

नेज़्दानौफ़ ने धीरे-धीरे आँख मिचमिचाते हुए उसकी ओर देखा।

"पाकलिन?" उसने आख़िरकार कहा।

"हाँ, हाँ; मै ही हूँ। तुम्हारी तबियत ठीक नहीं है?"

"हाँ··· मेरी तबियत ठीक नहीं है। पर···तुम यहाँ कैसे?"

"मै यहां हूँ···" पर उसी समय मेरियाना ने चुपचाप पाकलिन की कोहनी को छुआ। उसने घूमकर देखा कि वह उसकी ओर इशारा कर रही है···"ओह, हाँ!" उसने बड़बड़ाकर कहा। "हाँ···ठीक है! बात यह है अल्योशा," उसने जोर से कहा, "मैं एक ज़रूरी काम से आया था और फौरन ही मुझे जाना भी है···सालोमिन तुमको सब बात बताएँगे—और मेरियाना···मेरियाना विकेन्त्येव्ना। उन दोनो ने मेरी योजना को पूरी तरह मंजूर किया है—इस बात का हम सब से सम्बन्ध है; यानी, नहीं नहीं," उसने मेरियाना की एक दृष्टि और संकेत के उत्तर में जल्दी से बात बदलते हुए कहा·····"उसका सम्बन्ध मार्केलौफ़ से, हमारे सब के मित्र मार्केलौफ़ से; केवल उसीसे है। पर अब, अच्छा नमस्कार। हर मिनट कीमती है—नमस्कार, दोस्त··· फिर मुलाकात होगी। वैसिली फेदोतिच, क्या आप मेरे साथ घोड़ों का हुक्म देने के लिए चलेंगे?"

"ज़रूर। मेरियाना, मैं तुमसे यह कहने आया था कि हिम्मत मत हारो। पर उसकी कोई जरूरत ही नहीं है। तुम सच्ची लड़की हो।"

"ओह, हाँ! ओह, हाँ! पाकलिन ने भी जोड़ा; "आप काटो के युग की रोमन महिला हैं! उटीका के काटो! पर चलिए, वैसिली फदोतिच, हम लोग चलें।"

"आपके पास बहुत वक्त है।" सालोमिन ने आलस-भरी मुस्कान के साथ उत्तर दिया। नेज़्दानौफ़ उन दोनों को निकलने देने के लिए एक तरफ हो गया······पर उसकी आँखों में अभी भी वैसी ही शून्य-सी दृष्टि थी। फिर वह दो कदम आगे बढ़कर मेरियाना के सामने कुर्सी पर बैठ गया।

"अलैक्सी," वह उससे बोली, "सब चीज़ का भण्डाफोड़ हो गया; मार्केलौफ़ जिन किसानों को भड़का रहा था वे उसे पकड ले गए हैं और वह शहर में गिरफ्तार है, और वही हाल उस व्यापारी का है जिसके साथ तुमने भोजन किया था; बहुत सम्भव है पुलिस यहाँ भी हम लोगों की तलाश में जल्दी ही आती हो। पाकलिन सिप्यागिन के पास गया है।"

"किस लिए ?" नेज़्दानौफ़ ने बहुत ही धीमे बडबड़ाते हुए कहा। पर उसकी आँखें अधिक स्पष्ट थीं, उसके चेहरे पर साधारण भाव लौट रहा था। नशे का खुमार तुरन्त उतर गया था।

"यह पता लगाने के लिए कि वह कोई सहायता करेगा या नहीं।"

नेज़्दानौफ़ संभल कर बैठ गया, "हम लोगों के लिए ?"

"नहीं; मार्केलौफ़ के लिए। वह हम लोगों के लिए भी कहना चाहता था······पर मैंने उसे मना कर दिया। मैंने ठीक किया न अलैक्सी ?"

"ठीक ?" नेज़्दानौफ़ ने कहा और अपनी कुर्सी से उठे बिना ही उसने अपना हाथ मेरियाना की तरफ बढा दिया, "ठीक ?" उसने दोहराया और उसे अपने पास खींचकर तथा उसके चेहरे में अपना सिर छिपा कर एकाएक फूट पड़ा।

"क्या बात है, अलैक्सी ? क्या बात है ? मेरियाना ने चीख कर पूछा। पहले की भाँति ही जब वह आवेश के आकस्मिक ज्वार के फल-स्वरूप हाँफता हुआ-सा उसके घुटनों के पास गिर पड़ा था, अब भी उसने अपने दोनों हाथ उसके काँपते हुए माथे पर रख दिए। पर इस

समय जो वह अनुभव कर रही थी, वह तनिक भी उस दिन का सा न था। उस समय उसने अपने आपको उसे सौंप दिया था। उसने अपने आपको समर्पित कर दिया था, और बस प्रतीक्षा कर रही थी कि वह उससे क्या कहेगा। इस समय उसे नेज़्दानौफ़ के ऊपर करुणा उमड़ रही थी और उसके मन में केवल एक ही बात थी कि किसी तरह से उसे सान्त्वना दे।

"क्या बात है ?" उसने पूछा। "तुम रो क्यों रहे हो ? अवश्य ही इसलिए तो नहीं कि तुम घर उस······विचित्र-सी हालत में लौटे थे ! यह तो हो नहीं सकता ! या तुम मार्केलौफ़ के लिए दुखी हो, और अपने तथा मेरे लिए डर रहे हो ? या तुम हम लोगों की चूर-चूर हो जाने वाली आशाओं के लिए दुखी हो ? तुमने यह तो सोचा न था कि हर चीज़ आसानी से चलेगी !" नेज़्दानौफ़ ने अचानक अपना सिर उठाया।

"नहीं मेरियाना।" उसने अपनी सिसकियों को गले के नीचे निगलते हुए कहा, "मुझे तुम्हारे लिए डर नहीं है, न अपने लिए ही······ पर हाँ······मुझे अफ़सोस है—"

"किसके लिए ?"

"तुम्हारे लिए, मेरियाना ! मुझे अफ़सोस है कि तुमने अपना जीवन एक ऐसे आदमी के साथ बाँध दिया है जो इसके योग्य नहीं है।"

"ऐसा क्यों ?"

"और कुछ नहीं तो इसीलिए कि वह ऐसे अवसर पर भी आँसू बहाता है।"

"यह तुम नहीं रो रहे हो; असल में तुम्हारे दिमाग़ पर बड़ा असर पड़ा है !"

"मेरा दिमाग़ और मैं एक ही चीज़ है ! सुनो मेरियाना, मेरी तरफ देखो; क्या तुम सचमुच कह सकती हो कि तुम्हें अब अफ़सोस नहीं है······"

"किस चीज़ का ?"

"कि तुम मेरे साथ भाग आईं ?"

"नहीं।"

"और तुम मेरे साथ आगे चलोगी ? जहाँ मैं जाऊँ ?"

"हाँ !"

"हाँ ? मेरियाना......हाँ ?"

"हाँ। मैं तुम्हें अपना वचन दे चुकी हूँ, और जब तक तुम वही व्यक्ति हो जिसे मैंने प्यार किया था तब तक मैं अपने वचन से पीछे न हटूँगी।"

नेज़्दानौफ़ कुर्सी पर बैठा रहा; मेरियाना उसके सामने उठकर खड़ी हो गई। उसकी बाहें मेरियाना की कमर में पड़ी हुई थीं और मेरियाना के हाथ उसके कन्धों पर रखे हुए थे। "हाँ, नहीं," नेज़्दानौफ़ सोचने लगा......"पर तो भी—पहले जब मैंने उसे अपनी बाहों में लिया था, ठीक आज ही की तरह, तो कम-से-कम उसका शरीर निश्चल तो था; पर अब मुझे लगता है कि हल्के से और शायद अपनी इच्छा के विपरीत ही वह मुझसे कुछ खिंच-सा रहा है !" उसने अपनी बाहें ढीली करदीं......मेरियाना सचमुच थोड़ा-सा पीछे हट गई, ऐसे कि मालूम पड़ना भी कठिन था।

"मैं एक बात कहता हूँ !" उसने ज़ोर से कहा, "अगर हमें भागना ही है......पुलिस के हाथों में पड़ने से पहले......तो मेरे ख्याल से पहले विवाह कर लेना ज्यादा ठीक होगा। बहुत करके हमें कहीं और ज़ोसिम जैसा मेहरबान पुरोहित शायद न मिल सके।"

"मैं तैयार हूँ," मेरियाना ने कहा।

नेज़्दानौफ़ ने ग़ौर से उसकी ओर देखा।

"रोमन कुमारी !" उसने दुष्टतापूर्ण आधी दुष्टता के साथ कहा, क्या कर्त्तव्य की भावना है !"

मेरियाना ने अपने कन्धे उचकाए।

"हमें सालोमिन से कह देना चाहिए।"

"हाँ······सालोमिन······" नेज़दानौफ़ ने धीरे-धीरे कहा। "पर वह भी तो मेरे ख्याल से खतरे में है। पुलिस उसको भी पकड़ ले जायेगी। मुझे लगता है कि उसने मेरी अपेक्षा काम भी अधिक किया है और उसे मालूम भी अधिक है।"

"मुझे इस विषय में कुछ नहीं मालूम," मेरियाना ने कहा, "वह कभी अपने बारे में बात नही करता।"

"इस मामले मे मुझसे भिन्न है," नेज़दानौफ़ ने सोचा। "उसका मतलब यही था ! सालोमिन······सालोमिन······" उसने बहुत देर चुप रहने के बाद दोहराया। "तुम जानती हो मेरियाना, तुमने जिस आदमी के साथ अपनी जिन्दगी हमेशा के लिए बाँधी है, अगर वह सालोमिन जैसा होता······या स्वयं सालोमिन होता तो मुझे तुम्हारे लिए दुख न होता।"

इस बार मेरियाना ने नेज़दानौफ़ की ओर ग़ौर से देखा।

"तुम्हें यह कहने का कोई अधिकार नहीं था," उसने अन्त में कहा।

"मुझे कोई अधिकार नहीं था ! इन शब्दों से मैं क्या समझूँ ? क्या उनका मतलब है कि तुम मुझे प्यार करती हो, या यह है कि मुझे उस सवाल को किसी तरह छूना ही नहीं चाहिए ?"

"तुम्हें यह कहने का कोई अधिकार नही था।" मेरियाना ने फिर कहा।

नेज़दानौफ़ का सिर लुढ़क गया। "मेरियाना !" उसने कुछ बदली हुई आवाज में धीरे-धीरे कहा :

"कहो !"

"अगर मैं अब······अगर मै तुमसे वह सवाल पूछूँ—तुम जानती हो ?······नहीं, मैं कुछ नहीं पूछता हूँ······नमस्कार।"

वह उठकर बाहर चला गया; मेरियाना ने उसे रोकने की कोशिश नहीं की। नेज़दानौफ़ अपने कमरे में सोफे पर बैठ गया और अपने हाथों

में उसने अपना सिर झुका लिया। उसे अपने विचारों से डर लग रहा था और वह चाहता था कि सोचे नहीं। उसके भीतर केवल एक ही भाव था, कि किसी काले छिपे हुए हाथ ने उसके व्यक्तित्व की जड़ को पकड़ लिया है, और अब छूटता नहीं है। वह जानता था कि जिस मधुर अनमोल स्त्री को वह दूसरे कमरे में छोड़ आया है वह उसके पास बाहर नहीं आयेगी; और उसमें अन्दर उसके पास जाने का साहस नही है। और फिर फायदा भी क्या होगा? वह कहेगा भी आखिर क्या?

किसी के जल्दी-जल्दी दृढ़ कदमों की आवाज़ सुनकर उसने अपनी आँखें खोल दीं।

सालोमिन उसके कमरे में होकर मेरियाना के दरवाजे पर पहुँचा। उसे खटखटाया और अन्दर चला गया।

"अपने से अच्छों के लिए रास्ता छोड़ दो!" नेज़्दानौफ़ ने कड़वाहट के साथ मन-ही-मन कहा।

चौंतीस

शाम को दस बजे आरज़ानो के प्रासाद के ड्राइंगरूम में, सिप्यागिन, उसकी पत्नी और कैलोम्येत्सेफ ताश खेल रहे थे कि एक नौकर ने आकर सूचना दी कि मि० पाक़लिन नामक कोई अपरिचित सज्जन आये हैं और बड़े तात्कालिक और आवश्यक काम से बोरिस ऐन्द्रीइच से मिलना चाहते हैं।

"इस समय !" वैलेन्निना आश्चर्यचकित हो कह उठी।

"ऐं ?" अपनी सुन्दर नाक को सिकोड़ते हुए बोरिस ऐंद्रीइच ने पूछा। "क्या नाम बताया तुमने उन सज्जन का ?"

"उन्होंने पाकलिन कहा था हुज़ूर।"

"पाकलिन !" कैलोम्येत्सेफ़ ने चीखकर कहा। "वास्तविक देहाती नाम। पाकलिन" (यानी भीतर भरना), "......सालोमिन" (यानी छिड़कना), "एकदम देहाती मामला है।"

"और तुम कहते हो," बोरिस ऐंद्रीइच ने उसी अप्रसन्न भाव से नौकर की ओर मुड़ते हुए कहा, "कि उसका काम ज़रूरी है और फ़ौरन का भी ?"

"ऐसा ही उन्होंने कहा है, हुजूर।"

"हूँ······कोई ठग है या भिखारी।"

"या शायद दोनों", कैलोम्येत्सेफ़ बोला।

"बहुत सम्भव है। अच्छा उन्हें मेरे कमरे में ले आओ।" बोरिस ऐन्द्रीइच उठा। "मुझे भई, माफ़ करो। जब तक मैं लौटता हूँ, तुम दोनों ही खेलो या मेरा इन्तजार भी कर सकते हो। मैं फौरन आता हूँ।"

जब सिप्यागिन ने अपने कमरे में पहुँचकर पाकलिन के दयनीय, दुर्बल और छोटे से शरीर को अँगीठी और दरवाजे के बीच दीवार के सहारे गुड़मुड़ हुए बैठे देखा, तो उसके मन में वास्तविक मन्त्री-जनोचित उदात्त करुणा और कृपा का वह भाव उमड़ आया जो पीटर्सबर्ग के ऊँचे अफसरों की विशेषता है।

"हे भगवान्! बेचारा पंखनुची नन्हीं चिड़िया जैसा है!" उसने सोचा, "और मुझे यकीन है कि लँगड़ा भी है।"

"बैठिये," उसने जोर से अपनी आवाज़ के करुणापूर्ण स्वरों को झंकृत करते हुए, और अपने सिर को बड़ी मिलनसारी के साथ पीछे झटका देते हुए कहा; और वह अभ्यागत के सामने एक कुर्सी लेकर बैठ गया।

"आप शायद यात्रा के कारण थक गये हैं; बैठिये और बताइये कि वह जरूरी काम कौनसा है जिसके लिए आपने इस समय आने का कष्ट किया है।"

"महामहिम", पाकलिन ने बड़े सम्भ्रम के साथ एक कुर्सी पर बैठते हुए शुरू किया, "मैंने आपके पास इसलिए आने की हिम्मत की है—"

"जरा ठहरिये, जरा ठहरिये", सिप्यागिन ने बीच में रोकते हुए कहा; "मैंने आपको पहले कहीं देखा है। मैं एक बार देख लेने के बाद किसी चेहरे को भूलता नहीं। हमेशा मुझे याद आ जाता है। ऐं······

ऐं……ऐं……ठीक……कहाँ मैंने आपका देखा है ?"

"आप ठीक कहते हैं, महामहिम……मुझे आपसे पीटर्सबर्ग में मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था……एक ऐसे आदमी के घर पर ……जिसने……तब से……दुर्भाग्यवश……अपने को आपका कोप-भाजन बना लिया है।"

सिप्यागिन तुरन्त अपनी कुर्सी से खड़ा हो गया।

"मि० नेज्दानौफ़ के यहाँ! अब मुझे याद आ गया। अवश्य ही आप उसकी तरफ से नहीं आये हैं ?"

"ओह नहीं, महामहिम; इसके विपरीत……मैं……"

सिप्यागिन फिर बैठ गया।

"यही ठीक है। क्योंकि उस हालत में मैं फ़ौरन आपसे यहाँ से चले जाने के लिए कहता। मैं अपने और मि० नेज़दानौफ़ के बीच किसी पंच की बात सुनने को तैयार नहीं हूँ। मि० नेज़दानौफ़ ने मेरे साथ ऐसी धृष्टता की है जिसे भूला नहीं जा सकता।……मुझमें बदले की भावना नहीं है, पर मैं उनके बारे में कुछ नहीं जानना चाहता, और न उस लड़की के बारे में—जिसका हृदय से अधिक दिमाग़ भ्रष्ट हो गया है"—(इस बात को सिप्यागिन ने मेरियाना के जाने के बाद से कम-से-कम तीस बार दोहराया होगा)—"जो एक नीच बदमाश की रखैल बनने के लिए उसको छोड़ गई, जहाँ उसका पालन हुआ था! उनका यही सौभाग्य है कि मैंने उनको भूल जाना स्वीकार कर लिया है।"

इस अन्तिम वाक्य पर सिप्यागिन ने अपनी कलाई को घृणा के भाव से झटका दिया।

"मैं उनको भूल चुका हूँ, महाशय!"

"महामहिम, मैंने पहले ही निवेदन किया कि मैं उनकी ओर से नहीं आया हूँ, यद्यपि तो भी मैं श्रीमान को यह सूचना दे दूँ कि उन्होंने विधिवत् विवाह कर लिया है।"……("चलो, ठीक है, इससे कोई

अन्तर नहीं पड़ता !" पाकलिन ने सोचा; "मैंने कहा था कि थोड़ी-बहुत झूठ बोलूँगा, बस यही है। ठीक है !")

सिप्यागिन ने अपने आराम कुर्सी के सहारे टिके हुए सिर को बेचैनी के साथ दायें-बायें हिलाया।

"उस बात में मेरी कोई दिलचस्पी नहीं है, महाशय ! दुनिया में मूर्खतापूर्ण शादियों में एक और वृद्धि हुई, बस इतना ही। किन्तु फिर वह अत्यन्त आवश्यक कार्य कौनसा है जिसके लिए आपने पधारने की कृपा की है ?"

"ओफ् ! बिलकुल किसी सरकार विभाग का संचालक है !" पाकलिन ने सोचा। "बदसूरत अँग्रेजी बन्दर की शक्लवाले महाशय जी, अपना आपका यह रौबदाब बहुत हुआ।"

"आपकी पत्नी के भाई साहब को," उसने ज़ोर से कहा, "मि० मार्केलौफ् को उन किसानों ने पकड़ लिया था जिन्हें वह विद्रोह के लिए उकसा रहे थे, और अब वह इस समय गवर्नर के मकान में कैद हैं।"

सिप्यागिन दूसरी बार अपनी कुर्सी से उछला।

"क्या······क्या कहा आपने ?" उसने हकलाते हुए कहा, उसके मंत्रीजनोचित करुणासंकुल कंठ का स्थान एक प्रकार की दयनीय गड़-गड़ाती आवाज ने ले लिया था।

"मैंने कहा कि आपके साले साहब गिरफ्तार होकर कैद हैं। जैसे हीं मुझे इस बात का पता चला, मैं घोड़े लेकर आपको ख़बर देने दौड़ा आया हूँ। मैंने सोचा कि शायद इस प्रकार आपकी और उस अभागे नौजवान की भी जिसे आप शायद बचा सकें, मैं कुछ सेवा कर सकूँगा।"

"मैं आपका बहुत आभारी हूँ," सिप्यागिन ने उसी क्षीण स्वर में कहा, और कुकुरमुत्ते की शक्ल की एक घंटी पर ज़ोर से हाथ मार कर उसने सारे घर को उसकी स्पष्ट टनटनाती आवाज़ से गुंजा दिया। "मैं आपका बहुत आभारी हूँ," इस बार उसने अधिक तीव्रता से दोहराया; "यद्यपि यह मैं आपको बता देना चाहूँगा कि जिस आदमी ने,

मानवीय और ईश्वरीय नियम कानूनों को पैरों तले कुचला है, वह चाहे सौ बार मेरा रिश्तेदार हो, मैं उसे दया का पात्र नहीं समझता; वह अपराधी है।"

एक नौकर कमरे में झपटता हुआ आया।

"हुक्म हुज़ूर ?"

"गाड़ी ! इसी मिनिट गाड़ी और चार घोड़े ! मैं शहर जा रहा हूँ। फिलिप और स्टिगन मेरे साथ जायेंगे !" नौकर झपटता हुआ बाहर चला गया। "हाँ, महाशय, मेरे साले साहब अपराधी हैं ! और मैं शहर उसको बचाने के लिए नहीं जा रहा हूँ ! ओह, नहीं !"

"किन्तु, महामहिम......"

"मेरे सिद्धान्त ऐसे ही हैं, महाशय ! और मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप आपत्ति करने का कष्ट न करें !"

सिप्यागिन कमरे में इधर-से-उधर टहलने लगा, और पाकलिन की आँखें रकेबियों की भाँति गोल हो गईं। "उफ़ शैतान कहीं के !" वह सोच रहा था; "और तुम अपने आपको उदारपंथी कहते हो। क्यों, तुम तो पूरे गरजते हुए शेर हो !" दरवाज़ा खुला और उसमें से जल्दी-जल्दी क़दम रखते हुए पहले वैलेन्निना और फिर कैलोम्येत्सेफ़ ने प्रवेश किया।

"इसका क्या मतलब है, बोरिस ? तुमने गाड़ी जुतवाने का हुक्म दिया है ? शहर जा रहे हो ? क्या हुआ है ? "

सिप्यागिन अपनी पत्नी की ओर बढ़ा, और कलाई तथा कुहनी के बीच उसकी बाँह पकड़ते हुए कहा, "तुम्हें कुछ हिम्मत रखने की ज़रूरत पड़ेगी, माई डियर; तुम्हारे भाई साहब गिरफ्तार हो गए हैं ?"

"मेरे भाई ? सर्जी ? किसलिए ?"

"वह किसानों को समाजवादी सिद्धान्तों का उपदेश दे रहे थे !" यह सुनकर कैलोम्येत्सेफ़ के मुँह से हल्की-सी सीटी की आवाज़ निकल पड़ी। सिप्यागिन ने कहना जारी रखा। "हाँ ! वह क्रान्ति का उपदेश

दे रहे थे ! प्रचार कर रहे थे ! तो किसानों ने उन्हें पकड़कर पुलिस के हवाले कर दिया। अब वह—शहर में हैं।"

"पागल आदमी ! पर तुम्हें यह सब किसने बताया ?"

"मिस्टर...मिस्टर...इनका क्या नाम है ? मि० कानोपाटिन यह खबर लाये हैं ?"

वैलेन्निना ने पाकलिन पर एक नज़र डाली। उसने बड़े संकुचित भाव से झुक कर अभिवादन किया "ओफ्फोह ! कैसी शानदार औरत है !" उसके मन में विचार आया। ऐसे कष्टप्रद क्षणों में थी...बेचारे पाकलिन में नारी के आकर्षण से प्रभावित होने की कितनी क्षमता थी।

"और तुम इस समय, इतनी देर से शहर जाना चाहते हो ?"

"गवर्नर अभी सोने नहीं गए होंगे।"

"मैं हमेशा कहा करता था कि इस सबका यही परिणाम होने को है," कैलोम्येत्सेफ़ ने कहा। "और कुछ हो ही नहीं सकता था। पर हमारे रूस के किसान भी कितने बढ़िया हैं ! बहुत अच्छे !"

"क्या तुम सचमुच जा रहे हो, बोरिस ?" वैलेन्निना ने पूछा।

"और मुझे इसका भी विश्वास है कि," कैलोम्येत्सेफ़ ने आगे कहा, "वह आदमी, वह शिक्षक मि० नेज़्दानौफ़—उसका भी इसमें ज़रूर हाथ होगा। वे सब एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं। वह गिरफ्तार हुआ ? नहीं मालूम ?"

सिप्यागिन ने फिर अपनी कलाई को नीचे की ओर घृणा के भाव से झटका दिया।

"मुझे नहीं पता, और न मैं जानना चाहता हूँ ! और हाँ," उसने अपनी पत्नी की ओर मुड़ते हुए कहा, "उन दोनों ने विवाह कर लिया है।"

"किसने कहा ? इन्हीं सज्जन ने ?" वैलेन्निना ने फिर पाकलिन की ओर देखा, पर इस बार उसने अपनी आँखों को थोड़ा तिरछा कर लिया।

"हाँ।"

"उस हालत में," कैलोम्येत्सेफ़ ने कहा, "यह महाशय यह बात भी ज़रूर जानते होंगे कि वे लोग हैं कहाँ। आप जानते हैं वे कहाँ हैं? आप जानते हैं वे कहाँ हैं? ऍं? ऍं? ऍं? आप जानते हैं?" कैलोम्येत्सेफ़ पाकलिन के आगे इधर से उधर टहलने लगा, मानो उसका रास्ता रोक रहा हो, यद्यपि पाकलिन ने भागने की क्षीणतम प्रवृत्ति भी न प्रकट की थी। "बोलिये! उत्तर दीजिये! ऍं? ऍं? जानते हैं आप? आप जानते हैं?"

"यदि मैं जानता भी हूँ," पाकलिन ने क्षुब्ध भाव से—आखिरकार उसका क्रोध जाग उठा था और उसकी छोटी आँखें चमकने लगी थीं—कहा, "अगर मैं जानता भी हूँ तो आपको बताऊँगा नहीं।"

"ओह……ओह…ओह!" कैलोम्येत्सेफ़ ने बड़बड़ाकर कहा। "सुना आपने…सुना आपने! अरे यह महाशय भी……यह महाशय भी उसी दल के मालूम पड़ते हैं।"

"गाड़ी तैयार है!" नौकर ने ख़बर दी। सिप्यागिन ने बड़े सुन्दर किन्तु दृढ़तापूर्ण भाव से अपनी टोपी उठाई; पर वैलेन्निना बार-बार सवेरे तक जाना टाल देने का इस तरह से अनुरोध करती रही—उसने ऐसे-ऐसे पक्के कारण रखे: सड़क पर अँधेरा होगा, शहर में सब लोग सो गये होंगे, वह केवल अपने-आपको परेशान कर लेंगे, सर्दी होने का डर है—कि अंत में सिप्यागिन उसकी बात मानने को लाचार हो गया और बोला, "आज्ञा शिरोधार्य है।" और यह कह वैसे ही सुन्दर, किन्तु अब दृढ़तापूर्ण नहीं, ढंग से उसने टोपी मेज़ पर वापस रख दी।

"घोड़ों को खोल दो!" उसने नौकर को हुक्म दिया; "पर सवेरे ठीक छः बजे तैयार होने चाहिएँ! सुन लिया? तुम जाओ। ठहरो! मेहमान……इन सज्जन की गाड़ी को छोड़ दो! उसे भाड़ा दे दो! ऍं? आपने कुछ कहा मि० कोनोपाटिन? कल सवेरे मैं आपको ले चलूँगा, मि० कोनोपाटिन! क्या कहते हैं? मैंने सुना नहीं……'कुछ

वोदका तो लीजियेगा न ? मि० कोनोपाटिन के लिए कुछ वोदका लाओ ! नहीं ! आप नहीं पीते ? अच्छा, तो फ्योदोर, महाशयजी को हरे कमरे में ले जाओ ! नमस्कार, मि० कोनो—"

पाकलिन के धीरज का बाँध आखिर टूट गया।

"पाकलिन !" उसने गरजकर कहा, "मेरा नाम है पाकलिन !"

"हाँ, हाँ; खैर कोई खास फर्क नहीं है। बहुत कुछ एकसे ही हैं, आप जानते हैं। पर आपके बदन को देखते हुए आपकी आवाज़ बड़ी ज़ोरदार है ! नमस्कार, मि० पाकलिन......अब तो ठीक है न, ऐं ?"

पाकलिन को हरे कमरे में पहुँचा दिया गया और उसके कमरे का बाहर से ताला भी लगा दिया गया। बिस्तर पर लेटते-लेटते उसने अंग्रेजी ताले में चाबी की टनटनाहट सुनी। अपनी "बड़ी बढ़िया तरकीब के लिए" उसने अपने-आपको ज़ोर से गाली सुनाई, और उसे बड़ी खराब नींद आई।

सवेरे बहुत तड़के, साढ़े पाँच बजे ही उसकी पुकार हुई। काफी उसे वहीं लाकर दे दी गई; जब वह पी रहा था तो कंधे पर कढ़ी हुई वर्दी पहने एक नौकर एक ट्रे हाथ में लिए खड़ा था, और रह-रहकर अपने पैर के सहारे को बदल लेता था, मानो कह रहा था, "जल्दी करो, तुम सबको इन्तजार करा रहे हो !" फिर उसे नीचे पहुँचाया गया। गाड़ी घर के सामने आकर खड़ी हुई थी। कैलोम्येत्सेफ़ की खुली हुई गाड़ी भी वहीं खड़ी थी। सिप्यागिन ऊँट के बालों का गोल गले वाला लबादा पहने सीढ़ियों पर प्रकट हुआ। ऐसे लबादे बहुत बरसों से एक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति को छोड़कर और कोई नहीं पहनता था। सिप्यागिन उसे प्रसन्न करना और उसका अनुकरण करना चाहता था। इसलिए महत्त्वपूर्ण सरकारी अवसरों पर वह इसी लबादे को पहन जाया करता था।

सिप्यागिन ने पाकलिन का काफ़ी प्रसन्न भाव से अभिवादन किया और बड़ी उत्साहपूर्ण मुद्रा से उसे गाड़ी में आकर बैठने का इशारा

किया। "मि० पाकलिन, आप मेरे साथ चलियेगा, मि० पाकलिन ! मि० पाकलिन का बक्स ऊपर रख दो ! मैं मि० पाकलिन को साथ लिये जा रहा हूँ !" उसने पाकलिन शब्द पर, और 'पा' अक्षर पर ज़ोर देते हुए कहा, मानो बता रहा हो, "ऐसा है तुम्हारा नाम और तिस पर लोग उसमें परिवर्तन कर दें तो तुम अपमानित होने का घमण्ड करते हो ! अच्छी बात है तो फिर ! लीजिये, जी भरकर लीजिये ! जितना चाहे लीजिये ! मि० पाकलिन ! मि० पाकलिन !" वह अभागा नाम सवेरे की ठण्डी हवा में गूँजता रहा। हवा इतनी ठण्डी थी कि कैलोम्येत्सेफ़, जो सिप्यागिन के बाद में आया था बार-बार बड़बड़ाता रहा, ब्—र र र ! ब्—र र र ! ब्—र र र !" और अपने लबादे को और भी अच्छी तरह चारों ओर लपेटकर अपनी शानदार खुली गाड़ी में जा बैठा। शयनगृह की अधखुली खिड़कियों से वैलेन्तिना कवि के शब्दों में, "रात्रि के लहराते हुए वस्त्रों में," झाँक उठी।

सिप्यागिन गाड़ी में बैठ गया और उसकी ओर उठाकर अपना हाथ चूमा।

"आप आराम से तो हैं, मि० पाकलिन ? चलो !"

ऊपर से वैलेन्तिना ने फ्रेन्च में कुछ कहा।

उत्तर में कैलोम्येत्सेफ़ ने भी अपनी सफ़र की टोपी के किनारे से, जो उसने स्वयं अपनी पसन्द से बनवाई थी, ऊपर की ओर बड़ी खूबसूरती से झाँकते हुए फ्रेन्च में ही कुछ उत्तर दिया।

"चलो !" सिप्यागिन ने दोहराया। "मि० पाकलिन, आपको ठंड तो नहीं लग रही है ? चलो !"

दोनों गाड़ियाँ चल पड़ीं।

पहले दस मिनिट तक सिप्यागिन और पाकलिन दोनों चुप थे। बेचारा भाग्यहीन पाकलिन अपने बेढंगे सूट और चिकनाई लगी टोपी में, गाड़ी के भीतर जड़े हुए बढ़िया रेशमी कपड़े की गहरी नीली पृष्ठ-

भूमि के कारण और भी दयनीय लग उठा था। चुपचाप वह खूबसूरत आसमानी पर्दों की ओर ताकता रहा जो एक बटन को अँगुली से छूभर ही देने से तुरन्त ऊपर उठ जाते थे; और अपने पैरों के नीचे भेड़ की खाल के सफ़ेद मुलायम कालीन को, सामने लगे हुए लाल लकड़ी के बक्स को, जिसमें चिट्ठियों के लिए एक निकाली जा सकने वाली ट्रे और किताबों के लिए एक आलमारी भी बनी थी, चुपचाप ताकता रहा। (सिप्यागिन अपनी गाड़ी में काम करने का बहुत शौकीन न था, पर वह चाहता था कि लोग समझें कि दूसरों की तरह वह भी गाड़ी में काम करता रहता है।) पाकलिन आतंकित हो गया। सिप्यागिन ने अपने साफ़ शेव किये हुए चमकदार गाल को घुमाकर दो बार उसकी ओर ताका और बड़े रोब के साथ धीरे-धीरे अपने बगल की जेब से एक चाँदी की सिगार की डब्बी निकाली जिस पर पुरानी शैली के अक्षरों में उसका नाम अंकित था; उसने पाकलिन की ओर डिबिया बढ़ाई······पीले कुत्ते की खाल के दस्तानों से ढके अपने हाथ की दूसरी और तीसरी अँगुली के बीच सधा एक सिगार निश्चित रूप से पाकलिन की ओर बढ़ाया।

"मैं नहीं पीता," पाकलिन ने धीमे से कहा।

"आह !" सिप्यागिन बोला, और उसने स्वयं सिगार सुलगा लिया जो, सर्वोत्तम प्रकार का रिगेलिया सिगार था।

"यह मैं फिर कहना चाहता हूँ···मि० पाकलिन," उसने अपने सिगार के कश खींचते हुए और सुगन्धित धुएँ के हल्के छल्के उड़ाते हुए कहना शुरू किया······कि मैं······सचमुच में······आपका बहुत आभारी हूँ······कल शायद······मुझे······आपने······कुछ चिड़चिड़ा महसूस किया हो······हालाँकि वह मेरा······स्वभाव नहीं है।" सिप्यागिन जान-बूझ कर मतलब से अपने वाक्य को काट-काट कर बोल रहा था। "इसका मैं आपको विश्वास दिलाना चाहता हूँ। पर मि० पाकलिन, अपने आपको आप मेरी जगह में रख कर देखिए," यहाँ

सिप्यागिन ने सिगार को मुँह के एक किनारे से दूसरे किनारे की ओर लुढ़का लिया। "मेरी जो स्थिति है उसके कारण······यानी······सब की मुझ पर निगाह रहती है; और एकाएक······मेरी पत्नी के भाई साहब······इस प्रकार अविश्वसनीय ढंग से अपने आपको और मुझे लांछित कर बैठे ! अह ! मि० पाकलिन ? आप शायद सोचते हैं यह कोई बड़ी बात नहीं है ?"

"मैं ऐसा नहीं सोचता, महामहिम।"

"आप नहीं जानते कि ठीक किसलिए और कहाँ गिरफ्तार हुए हैं।"

"मैंने सुना कि त—ज़िले में।"

"किससे आपने यह सुना ?"

"एक······आदमी से।"

"खैर चिड़िया से तो नहीं ही सुना होगा। पर किस आदमी से ?"

"एक गवर्नर के दफ्तर के काम के संचालक के सहकारी से।"

"उसका नाम क्या है ?"

"संचालक का ?"

"नहीं सहकारी का।"

"उसका······उसका नाम है उल्याशेविच। वह बहुत ही अच्छा सरकारी कर्मचारी है श्रीमान जी। मैंने जैसे ही उससे सुना आपके पास दौड़ा।"

"अवश्य-अवश्य ! और मैं फिर कहता हूँ कि मैं आपका आभारी हूँ। पर क्या पागलपन है ! नहीं है पागलपन ? ऐं ? मि० पाकलिन ? ऐं ?"

"पक्का पागलपन," पाकलिन ने कहा, और पसीने की गरम धारा सी उसकी पीठ पर टेढ़ी-मेढ़ी बह गई। "इसका कारण है," उसने आगे कहा, रूसी किसान को तनिक भी न समझना। मि० मार्केलौफ़ 'जहाँ तक मैं उन्हें जानता हूँ, बड़े दयावान और उदार हृदय के व्यक्ति हैं,

पर वह कभी रूसी किसान को नहीं समझ सके।" यह कहकर पाकलिन ने सिप्यागिन की ओर देखा जो उसकी ओर थोड़ा-सा मुड़कर उसके चेहरे के भाव को पढ़ने की कोशिश कर रहा था। उसका मुख भाव-हीन तो था पर विरोधपूर्ण नहीं। पाकलिन ने आगे कहा, "रूसी किसान को किसी प्रकार के उच्च शासक का, किसी प्रकार के ज़ार का नाम लिए बिना विद्रोह के लिए नहीं तैयार किया जा सकता। कोई न कोई कहानी गढ़ना ज़रूरी है—आपको झूठे दिमेत्रियस की याद होगी—सीने के ऊपर दागे हुए किसी राजकीय चिह्न का होना ज़रूरी है।"

"हाँ, हाँ, पुगातचेफ़ की तरह," सिप्यागिन ने बीच ही में कहा; उसका स्वर ऐसा था मानो कह रहा हो, मैं भी इतिहास जानता हूँ··· ज्यादे विस्तार से कहने की ज़रूरत नहीं है।" उसने जोड़ा, "पागलपन है। पागलपन।" इतना कह कर वह अपने सिगार में से उठते हु धुएँ के छल्लों पर मानो विचार करता हुआ चुप हो गया।

"श्रीमान जी!" पाकलिन ने साहस बटोरते हुए कहा, "मैंने अभी-अभी कहा था कि मैं सिगार नहीं पीता हूँ······पर वह बिलकुल ठीक बात न थी। कभी-कभी मैं ज़रूर पी लेता हूँ; और आपके सिगार की गन्ध इतनी बढ़िया है।"

"एँ? क्या? क्या कहा? सिप्यागिन ने मानो जागते हुए कहा; और फिर पाकलिन को अपनी बात दुहराने का अवसर दिए बिना ही उसने यह पूरी तरह सिद्ध कर दिया कि उसने पाकलिन की बात सुन ली थी। और यह सब प्रश्नवाचक शब्द केवल रौब के कारण ही निकाले थे। उसने पाकलिन के आगे अपने सिगार की डिबिया बढ़ा दी।

पाकलिन ने बड़ी शिष्टता से और कृतज्ञता के भाव से एक सिगार उठाकर जला ली।

"अब सोचता हूँ कि अच्छा मौका है," उसने मन-ही-मन कहा; पर सिप्यागिन ने उसके पहले ही बात शुरू कर दी।

"आपने मुझसे एक बात और भी कही थी, आपको याद होगा। उसने लापरवाही के साथ, रुक-रुककर अपने सिगार की ओर देखते हुए और अपनी टोपी को सामने की ओर खिसकाते हुए कहा। "आपने कहा था···ऐं ? आपने कहा था कि···आपके मित्र ने···मेरी भाँजी से शादी कर ली है। आपकी उनसे मुलाकात होती है ? वे लोग क्या यहाँ कहीं पास में ही रहते हैं ?"

"अहा !" पाकलिन ने सोचा, "होशियार।"

"मेरी बस एक बार उनसे मुलाकात हुई है, महामहिम ! वास्तव में वे लोग यहाँ से···बहुत दूर नहीं रह रहे हैं।"

"यह तो आप समझते ही हैं," सिप्यागिन ने उसी ढंग से आगे कहा, "कि उस बेवकूफ लड़की में या आपके मित्र में, जैसा मैं पहले कह चुका हूँ, मुझे अब और कोई ख़ास दिलचस्पी नहीं है। राम-राम ! मेरा ऐसी चीज़ों से कोई विशेष विरोध नहीं है, पर आप मुझसे सह-मत होंगे कि यह हद से बाहर है। आप जानते हैं कि यह मूर्खता है। हालाँकि मेरा खयाल है कि वे लोग और किसी भावना की अपेक्षा राजनीतिक विचारों के कारण एक-दूसरे की ओर अधिक खिंचे हैं, और उसने "राजनीति !" बड़ी झल्लाहट के साथ फिर से कहा।

"सचमुच मेरा भी ऐसा ही खयाल है, श्रीमान जी।"

"हाँ, मि० नेज्दानौफ़ बड़े गर्मागरम प्रजातन्त्रवादी थे। एक बात मैं मानता हूँ कि उन्होंने कभी अपने विचारों को छिपाया नहीं।"

"नेज्दानौफ़," पाकलिन ने हिम्मत की, "शायद थोड़ा बहक गया है, पर उसका हृदय—"

"अच्छा है," सिप्यागिन ने कहा, "अवश्य···अवश्य, मार्केलौफ़ की तरह ही। दिल इन सब का अच्छा होता है। शायद उन्होंने भी इस सब में हिस्सा लिया हो—और वह भी······उन्हें भी बचाने की शायद जरूरत पड़े।"

पाकलिन ने अपने दोनों हाथ सीने के सामने बाँध लिए।

"हाँ, हाँ, जी हाँ श्रीमान जी ! उसके ऊपर भी कृपा कीजिए, सचमुच···उसको भी···आपकी सहानुभूति की आवश्यकता है।"

"हूँ," सिप्यागिन ने कहा, "आप ऐसा सोचते है ?"

"अगर उसके लिए नही तो कम से कम······उसकी पत्नी का ख्याल करके······अपनी भाजी का ख्याल करके ·····!" पर मन-ही-मन पाकलिन सोच रहा था, "हे भगवान् ! हे भगवान् ! मै कितनी झूठ बोल रहा हूँ।"

सिप्यागिन ने अपनी आँखे सिकोड ली।

"देखता हूँ आप बडे सच्चे मित्र है। यह तो बहुत अच्छा है; यह तो बहुत ही प्रशसनीय बात है। और, तो आप कहते हैं कि वे लोग यही कही पास मे ही रहते है।"

"हाँ श्रीमान्, एक बडी-सी जगह मे···" पाकलिन ने अपनी जबान काटी।

"च च······च च······सालोमिन के यहाँ ! तो वे लोग वही है ! मै यह बात जानता था—वास्तव मे मुझे यह बताया गया था, मुझे ऐसे समाचार मिले थे······जी हाँ।" मि० सिप्यागिन को यह बात तनिक भी मालूम न थी और न किसी ने उन्हे यह बताया ही था, पर सालोमिन के आने और उन लोगो की आधी रात तक बातचीत चलने की याद करके उसने यह चारा डाला था······और जिसमे पाकलिन ने फौरन मुँह डाल दिया।

"अब जब यह बात आप जानते ही है," पाकलिन ने शुरू किया, और फिर दूसरी बार उसने अपनी जबान काटी ·····पर तीर अब हाथ से निकल चुका था······सिप्यागिन ने जो नजर उस पर डाली उसी से वह समझ गया कि वह इतनी देर से उसके साथ खेल कर रहा है, जैसे बिल्ली चूहे से करती है।

"परन्तु, श्रीमानजी, मै आपसे यह कह देना जरूरी समझता हूँ," अभागे शैतान ने अटकते हुए कहा, "कि मै असल में कुछ नही जानता।"

"मै तो आपसे कोई सवाल नहीं पूछ रहा हूँ, वास्तव में ! आपका क्या मतलब है ! आप अपने आपको और मुझे क्या समझते हैं ?" सिप्यागिन ने घमण्ड के साथ कहा, और वह तुरन्त अपनी पदानुकूल ऊँचाई पर जा विराजा।

पाकलिन को लगा कि वह जाल में फँसे हुए छोटे-से अभागे प्राणी की भाँति······तब तक उसने अपना सिगार अपने मुँह के एक कोने में सिप्यागिन से दूर ही रखा था और चुपचाप धुआँ एक ओर को निकलता जाता था, अब उसने वह बिलकुल अपने मुँह से निकाल लिया और पीना बन्द कर दिया।

"हे भगवान् !" वह भीतर-ही-भीतर कराह उठा, और उसके कंधों के ऊपर पहले से भी कहीं अधिक पसीना बह निकला।

"मैंने क्या कर डाला ! मैंने हर चीज़ का और हर आदमी का भेद खोल दिया है !······मैं मूर्ख बन गया, एक सिगार के पीछे बिक गया।······मैंने भेदिए का काम किया है······और अब इस नुकसान के असर को दूर करने के लिए क्या किया जाय ? हे भगवान् !"

पर अब कुछ नहीं हो सकता था। सिप्यागिन अपना ऊँट के बालों का लबादा लपेटे हुए उसी रौबीली, गम्भीर, मन्त्रियों के अनुरूप मुद्रा में ऊँघने लगा···और पन्द्रह मिनिट के अन्दर ही दोनों गाड़ियाँ गवर्नर की कोठी के सामने जाकर खड़ी हो गईं।

पैंतीस

स—नगर का गवर्नर एक अच्छे स्वभाव वाला, लापरवाह, दुनियादार जनरल था; उन जनरलों में से था जिन्हें बहुत ही अच्छी तरह धुला हुआ सफेद शरीर और करीब-करीब उतना ही निर्मल हृदय प्राप्त होता है, उन कुलीन, सुशिक्षित मानो एक प्रकार बहुत ही महीन पिसे हुए और गूँधे हुए और बने हुए, जनरलों में से था, जो, यद्यपि कभी 'भेड़ जनता के गडरिये' तो नहीं बनने का प्रयत्न करते, पर तो भी जो काफी मात्रा में प्रशासन-सम्बन्धी योग्यता का परिचय देते हैं; वे लोग काम-वाम कुछ नहीं करते, हमेशा पीटर्सबर्ग के लिए तड़पते रहते हैं, और प्रान्त की सुन्दरियों के पीछे दीवाने रहते हैं,—तो भी अपने प्रान्त के लिए बहुत कुछ उपयोगी सिद्ध होते हैं और पीछे बड़ी सुखद स्मृतियाँ छोड़ जाते हैं। जिस समय उसे सिप्यागिन और कैलोम्येत्सेफ़ के बहुत ही महत्त्वपूर्ण और ज़रूरी काम से आने की खबर मिली, उस समय वह सोकर उठा ही था और एक रेशमी ड्रेसिंग गाउन और एक ढीली-ढाली रात की कमीज पहने शीशे के सामने बैठा, शुरू में ही बहुत सारे गंडे-ताबीजों को उतार कर, अपने चेहरे और गरदन पर यू-डी-कोलोन

मल रहा था। सिप्यागिन से तो उसकी बडी दोस्ती थी, उसे उसके पहले नाम से पुकारता था, बचपन से ही उससे परिचित था और पीटर्सबर्ग के ड्राइंग रूमों मे लगातार मिलता रहता था। कुछ दिनों से तो उसका नाम याद आते ही वह मन-ही-मन एक आदरसूचक 'आह!' कह उठता, मानो किसी भावी राजनीतिक अधिकारी का नाम सुन रहा हो। कैलोम्येत्सेफ़ को वह बहुत कम जानता था और पिछले दिनों उसके बारे में बहुत-सी 'अप्रिय' शिकायतें सुनने के कारण उसका सम्मान तो और भी कम करता था।

उसने अभ्यागतों को अपने कमरे मे लाकर बिठाने का आदेश दिया और तुरन्त ही स्वयं भी वहाँ आ पहुँचा। वह तब भी वही ड्रेसिंग गाउन पहने हुए था, पर उसने ऐसे अनियमित वेश में मिलने के लिए काई क्षमायाचना उनसे नही की; और बडी मिलनसारी से हाथ मिलाया। किन्तु केवल सिप्यागिन और कैलोम्येत्सेफ़ को ही गवर्नर के कमरे में ले जाया गया था; पाकलिन को बाहर बैठकखाने मे ही छोड दिया गया था। उसने गाड़ी से निकलते समय यह कहते हुए चले जाने की भी कोशिश की थी कि उसे घर पर काम है; पर सिप्यागिन ने शिष्ट दृढता के साथ उसे रोक लिया था और उसे अपने साथ अन्दर ड्राइंग रूम मे ले गया था। कैलोम्येत्सेफ ने तो उतरते ही उसके कान में कहा था, 'उसे जाने मत देना!' पर सिप्यागिन उसे अन्दर के कमरे में अपने साथ नही ले गया था और उसी शिष्टतापूर्ण दृढता के साथ उससे अनुरोध किया था कि जब तक उसकी जरूरत न पड़े तब तक वही ड्राइंग रूम में ही ठहरे। पाकलिन को यहाँ से भी खिसक जाने की आशा था, पर कैलोम्येत्सेफ़ के इशारे पर एक तगड़ा-सा सिपाही दरवाज़े पर आकर जम गया था और पाकलिन को वहीं ठहरना पडा।

"तुम निस्सदेह समझ तो गये होगे कि मै किसलिए यहाँ आया हूँ?" सिप्यागिन ने शुरू किया।

"नही, भई नही, मैं तो नहीं समझा," प्रसन्नमुख गवर्नर ने उत्तर

दिया; पर उसके गुलाबी गालों पर एक स्वागत की मुस्कराहट नाच रही थी और उसकी रेशमी मूँछों से आधे ढके चमकीले दाँतों की एक झाँकी सी प्रकट किये दे रही थी।

"क्या ? तुम्हें मार्केलौफ़ के बारे में पता नहीं है ?"

"क्या मतलब है तुम्हारा ?—मार्केलौफ़ ?" गवर्नर ने उसी भाव से दोहराया। पहली बात तो यह है कि उसे ठीक-ठीक याद न था कि परसों जो व्यक्ति गिरफ्तार हुआ था उसका नाम मार्केलौफ़ है; दूसरे वह यह एकदम भूल गया था कि सिप्यागिन की पत्नी का इस नाम का कोई भाई है। "पर तुम खड़े क्यों हो, बोरिस ? बैठ जाओ; चाय नहीं पियोगे ?"

पर सिप्यागिन चाय पीने लायक मानसिक स्थिति में न था।

जब उसने अन्त में बताया कि बात क्या है और वह तथा कैलोम्येत्सेफ़ क्यों इस समय आये हैं, तो गवर्नर ने बड़ी दुखसूचक ध्वनि मुँह से निकाली, अपने माथे को पीटा और उसके चेहरे पर दुख का भाव छा गया।

"हाँ···हाँ···हाँ !" उसने दोहराया; "कैसी गलती हो गई ! और वह आज इस समय थोड़ी देर के लिए यहाँ माजूद भी है। तुम तो जानते हो कि उस तरह के लोगों को हम लोग अपने पास एक रात से अधिक नहीं रखते; पर पुलिस-प्रधान शहर से बाहर हैं इसलिए उसे यहीं रोक लिया गया था········पर कल उसे आगे भेज दिया जायगा। राम राम ! कैसी दुख की बात है ! तुम्हारी पत्नी कितनी परेशान होंगी ! अब क्या इच्छा है तुम्हारी ?"

"यदि नियमविरुद्ध न हो तो मैं उससे यहाँ एक बार मिलना चाहूँगा।"

"अरे भाई ! कानून तुम्हारे जैसे लोगों के लिए नहीं बनाये जाते। मैं सचमुच दुखी हूँ, इस बात के लिए !······"

उसने विशेष प्रकार की घण्टी बजाई। एक हवलदार उपस्थित

हो गया।

"अच्छा बैरन, सुनो—कुछ इन्तजाम करना है।" उसने जो काम था उसे बता दिया। बैरन चला गया। "जरा सोचो, बोरिस, उन लोगों ने मार डालने के सिवाय उसकी और सब दुर्गति कर छोड़ी। उसके हाथ पीछे बाँधे, एक गाड़ी मे चढ़ाया और उसे ले आये! और वह—ज़रा सोचो! उन लोगों से जरा भी नाराज नही है—ज़रा भी क्रुद्ध नहीं—वाह, भई! वह कुल मिलाकर इतना संयत है······कि मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ! पर अब तुम स्वयं ही उससे मिल लोगे। भीषण रूप से शान्त था वह।"

"और भी बुरा!" कैलोम्येत्सेफ़ ने निन्दा के भाव से कहा।

गवर्नर ने उसकी ओर संदिग्ध दृष्टि से देखा।

"अच्छा, मुझे आपसे एक बात कहनी है, सेम्योन पेत्रोविच।"

"क्यों, क्या बात है?"

"ओह, कुछ गोलमाल हो रहा है।"

"पर क्या?"

"खैर, मै कहे ही देता हूँ; तुम्हारा कर्ज़दार, वह किसान जो मेरे पास शिकायत लेकर आया था···"

"तो फिर?"

"वह फाँसी लगाकर मर गया है, आप जानते हैं।"

"कब?"

"इससे कोई मतलब नहीं कि कब; पर यह चीज़ ठीक नहीं है।"

कैलोम्येत्सेफ़ ने कंधे उचकाये और अपने सुन्दर शरीर को बड़े ढंग से एक झटका देकर वह खिड़की की ओर चला गया। उसी समय हवलदार मार्केलौफ़ को अन्दर ले आया।

गवर्नर ने उसके बारे में सच ही कहा था; वह अस्वाभाविक रूप से शांत था। उसकी स्वाभाविक उदासी भी उसके चेहरे से उड़ गई थी और उसका स्थान एक प्रकार की उदासीनता-भरी थकान ने ले लिया

था। अपने बहनोई को देखकर भी उसके मुख के भाव में कोई अन्तर नहीं आया, और उसे लाने वाले जर्मन हवलदार पर जो उसने नज़र डाली थी केवल उसी में पलभर के लिए उस श्रेणी के व्यक्ति के प्रति उसकी पुरानी घृणा चमक उठी थी। उसका कोट दो जगह से फट गया था जिसे किसी मोटे तागे से जल्दी-जल्दी सी लिया गया था; उसके माथे पर, एक भौंह और नाक के ऊपर जमे हुए खून से ढंके छोटे-छोटे घाव दिखाई पड़ रहे थे। उसने हाथ-मुँह नहीं धोया था पर बालों में कंघी की थी। वह अपनी दोनों बाहों में कलाइयों तक हाथ ठूँसे दरवाज़े के पास ही खड़ा हुआ था। उसकी साँस एक-सी चल रही थी।

"सर्जी मिहालोविच !" सिप्यागिन ने दो कदम उसकी ओर बढ़ते हुए और अपना दायाँ हाथ उसकी ओर ऐसे बढ़ाते हुए कि वह तनिक भी आगे बढ़े तो हाथ उससे छू जाय अथवा उसे रोक ले, कुछ विचलित स्वर में कहा, "सर्जी मिहालोविच ! मैं यहाँ तुमसे अपने आश्चर्य की, अपने गहरे दुख की बात कहने नहीं आया हूँ—इसमें तो तुम्हें भी कोई शक न होगा ! अपनी बर्बादी का संकल्प स्वयं तुमने ही किया है ! और तुमने अपने-आपको बर्बाद कर भी लिया है ! पर मैं तुमसे इसलिए मिलना चाहता था कि तुमसे कह सकूँ······अ······अ······कि तुम्हें मित्रता, सम्मान और सद्बुद्धि की बात सुनने का अवसर मिल सके। तुम अब भी अपनी परिस्थिति सुधार सकते हो। और यकीन करो कि मुझसे जो कुछ हो सकता है मैं उठा नहीं रखूँगा, और इस प्रांत के सम्माननीय प्रधान इसमें मेरी सहायता करेंगे।" यहाँ सिप्यागिन ने अपना स्वर ऊँचा किया : "अपनी भूलों के लिए सच्चा पश्चाताप और बिना कुछ छिपाये सब बातों का प्रगटीकरण, जिसको यथास्थान पहुँचाने का पूरा प्रबन्ध किया जायगा······"

"महामहिम," मार्केलौफ़ ने एकाएक गवर्नर को सम्बोधन करके कहना शुरू कर दिया, और उसके गले की आवाज़ तक शांत पर हलकी-सी भर्राई हुई थी, "मैंने सोचा था कि कुछ और जाँच करने के लिए

अथवा किसी और उद्देश्य से आपने मुझे बुलाने की कृपा की है।.... पर यदि आपने मुझे केवल मि० सिप्यागिन की इच्छा पर बुलाया है, तो कृपा करके मुझे वापस ले जाये जाने का आदेश दे दीजिये, हम एक-दूसरे की बात नहीं समझ सकते। जो कुछ वह कह रहे हैं......मेरे लिए एकदम दुर्बोध है।"

"दुर्बोध......अवश्य !" कैलोम्येत्सेफ़ ने घमण्डपूर्ण उच्च स्वर में बीच ही में कहा, "पर किसानों को दंगे के लिए भड़काना आपके लिए दुर्बोध नहीं है ? एं ?"

"आप कौन हैं यहाँ श्रीमान् ? खुफिया पुलिस के कोई जमादार ? एं ? बड़े उत्साही हैं अपने काम में ?" मार्केलौफ़ ने प्रश्नसूचक स्वर में कहा, और एक हलकी-सी प्रसन्नताभरी मुस्कराहट उसके सफ़ेद होठों पर थिरक उठी......

कैलोम्येत्सेफ़ गुस्से से फुफकारता हुआ पैर पटक रहा था......पर गवर्नर ने उसे रोक दिया।

"यह आपकी ही गलती है सेम्योन पेत्रोविच। जिस चीज़ से आपको कोई सरोकार नहीं उसमें दखल ही क्यों देते हैं ?"

"मेरा सरोकार नहीं !...मेरे खयाल से इससे सबका...हम तमाम ज़मींदारों का सरोकार है।..."

मार्केलौफ़ ठण्डी एकटक दृष्टि से देर तक कैलोम्येत्सेफ़ के चेहरे पर आँखें गड़ाये रहा, मानो अन्तिम बार देख रहा हो, फिर वह थोड़ा-सा सिप्यागिन की तरफ मुड़ा। "और क्योंकि आप, मेरे प्यारे बहनोई महोदय, चाहते हैं कि मैं अपने विचार आपके सामने प्रकट करूँ तो लीजिए सुनिये। मैं यह मानता हूँ कि किसानों को यदि मेरी बातें पसंद न थीं तो उन्हें मुझे गिरफ्तार करने और पुलिस के हवाले करने का पूरा अधिकार था। ऐसा करने के लिए वे पूर्णतः स्वतन्त्र थे। मैं उनके पास गया था, वे नहीं आये थे। और सरकार, यदि मुझे साइबेरिया भेजती है...तो मुझे कोई शिकायत नहीं—हालाँकि मैं अपने-

आपको अपराधी नहीं मानता। सरकार अपना काम करेगी क्योंकि इसमें उसकी रक्षा का प्रश्न है। क्या इतना आपके लिए काफ़ी है ?"

सिप्यागिन ने अपने हाथ निराश भाव से उठाये।

"काफ़ी ! क्या बात कही है ! यह सवाल नहीं है, और सरकार के कामों की आलोचना करना हमारा काम नहीं है; जो मैं जानना चाहता हूँ वह यह है कि क्या तुम अनुभव करते हो''''क्या तुम, प्यारे सर्जी, यह अनुभव करते हो," सिप्यागिन ने अब उसकी भावनाओं को उभाड़ने का प्रयत्न करने का निश्चय करते हुए कहा, "कि तुम्हारा प्रयत्न कितना बेमानी और पागलपन का काम था ? क्या तुम अपना पश्चात्ताप कार्य द्वारा सिद्ध करने को तैयार हो ? और क्या मैं सर्जी, तुम्हारे लिए उत्तरदायी, किसी हद तक उत्तरदायी हो सकता हूँ ?"

मार्केलौफ़ ने अपनी घनी भौंहें चढ़ा लीं।

"जो कुछ मुझे कहना था मैं कह चुका'''अब मैं उसे दोहराना नहीं चाहता।"

"पर पश्चात्ताप ! पश्चात्ताप के बारे में क्या कहते हो ?"

एकाएक मार्केलौफ़ बेचैन हो उठा।

"आह ! अपनी इस 'पश्चात्ताप' की चर्चा से मुझे रिहाई दो। तुम क्या मेरी आत्मा के भीतर भी रेंग जाना चाहते हो ? कम-से-कम वहाँ तो मुझे अकेला छोड़ दो।"

सिप्यागिन ने अपने कन्धे उचकाये।

"बस, तुम हमेशा से ऐसे ही हो; तुम कभी अक्ल की बात तो सुनोगे ही नहीं। अब भी बदनामी या बेइज्ज़ती के बिना छुटकारा पाने की सम्भावना है।"

"बदनामी या बेइज्ज़ती के बिना''''''" मार्केलौफ़ ने सघन भाव से दोहराया। "हम इन शब्दों को पहचानते हैं। वे हमेशा आदमी को नीच काम करने के समय सुझाये जाते हैं। यही उनका अर्थ भी है।"

"हमें तो तुम से हमदर्दी है", सिप्यागिन ने फिर भी मार्केलौफ़ को

समझाते हुए कहा, "और तुम हम से घृणा दिखा रहे हो।"

"बड़ी बढ़िया हमदर्दी है। कड़ी क़ैद की सज़ा देकर साइबेरिया भेज दो हमें; अपनी हमदर्दी तुम ऐसे ही प्रगट करो। आह, मेरा पीछा छोड़ दो······मेरा पीछा छोड़ दो, दया करके।"

और मार्केलौफ़ का सिर उसकी छाती पर लटक गया। बाहर से इतना शान्त दिखाई पड़ने पर भी उसके भीतर बड़ी भारी उथल-पुथल मची हुई थी। सबसे अधिक व्यथित और दुखी वह इस विचार से था कि उसका पता और किसी ने नहीं गोलोप्ल्यौक के ऐरेमी ने ही दिया था। ऐरेमी ने जिस पर उसने ऐसे आँख बन्द करके भरोसा कर रखा था। मेंडेली ने उसका साथ नहीं दिया इससे उसे कोई ताज्जुब नहीं था।·······मेंडेली ने शराब पी ली थी और वह भयभीत हो गया था। पर ऐरेमी ! मार्केलौफ़ की आँखों में ऐरेमी रूसी किसानों की साक्षात् मूर्त्ति था······और उसी ने उसे धोखा दिया था। तो फिर मार्केलौफ़ जिस चीज़ के लिए संघर्ष कर रहा था, वह क्या सब ग़लत था, भूल था ? और क्या किस्ल्याकौफ़ झूठा था, और वैसिली निकोलाएविच के आदेश मूर्खतापूर्ण थे और क्या समाजवादी विचारकों की सारी रचनाएँ, लेख, पुस्तकें, जिनका हर अक्षर उसे सन्देह से परे, आलोचना से परे लगता था—वह सब भी क्या बकवास ही था ? क्या यह सम्भव है ? और वह डाक्टर के चाकू के लिए तैयार पके हुए फोड़े वाली उपमा क्या केवल शब्द भर थी ? "नहीं ! नहीं" वह मन-ही-मन बड़बड़ाया, और उसके साँवले गालों पर ईंट की धूल का रंग हलका सा दौड़ गया; "नहीं; वह सब सच है; सब······दोष सब मेरा ही है, मैंने ठीक से समझा नहीं, मैं ही सही बता नहीं सका, मैंने ही ठीक से काम नहीं किया ! मुझे बस केवल आदेश ही देने चाहिए थे, और यदि कोई रोकने या बाधा डालने की कोशिश करता तो उसको गोली से उड़ा देना चाहिए था ! इन सब बातों के समझाने से क्या लाभ है ? जो हमारे साथ नहीं है उसे जीने का कोई अधिकार नहीं है······जासूसों को

कुत्तों की तरह, कुत्तों से बदतर मौत, मरना चाहिए ।"

और अपने पकड़े जाने का सारा चित्र मार्केलौफ़ की आँखों के आगे खिंच गया······पहले चुप्पी, फिर भीड़ के पीछे से आवाज़ें। फिर एक आदमी आगे बढ़ आया था मानो उसे सलाम देने आया हो। और फिर वह एकाएक सबका झपट पड़ना। और कैसे उन्होंने उसे नीचे गिरा दिया था !······"भाइयो !······भाइयो···क्या हो गया है तुम्हें ?" और वे, "लाओ कोई पेटी लाओ ! बाँधो इसे !"······उसकी हड्डियों की चरमराहट······और वह विवशतापूर्ण क्रोध······और वह उसके मुँह में दुर्गन्धभरी धूल, नाक में······"फेंक दो······फेंक दो उसे गाड़ी में !" कोई भारी आवाज़ में चीख रहा था······उफ़।

मैंने ठीक तरीका नहीं अपनाया—काम करने का ठीक तरीका। उसको यही चीज बेचैन और व्यथित कर रही थी; वह स्वयं चक्कर में आ गया था। यह तो केवल व्यक्तिगत दुर्भाग्य की बात थी; इसका आम आन्दोलन से कोई सम्बन्ध न था। उसे तो वह बर्दाश्त कर लेगा··· पर ऐरेमी ! ऐरेमी !

इधर जब मार्केलौफ़ सीने पर सिर लटकाये खड़ा था, उधर सिप्यागिन गवर्नर को एक तरफ ले गया और उसके साथ धीरे-धीरे बातें करने लगा। वह मुँह बनाकर और दो उँगलियाँ अपने माथे के आगे हिलाकर कुछ कह रहा था, मानो यह समझा रहा हो कि बेचारे के इस स्थान में कुछ खराबी है, और पागल आदमी के लिए हमदर्दी नहीं तो कम-से-कम कुछ तरस पैदा करने की कोशिश कर रहा हो। और गवर्नर ने अपने कन्धे उचकाये, अपनी आँखें घुमाईं और फिर आधी बन्द कर लीं, इस विषय में अपनी लाचारी ज़ाहिर की, पर कुछ अनिश्चित से वायदे भी किये······"पूरा ख्याल रखूँगा······अवश्य ही, पूरा ख्याल रखूँगा," उसकी सुगन्ध मूँछों के बीच कहे गए ये शब्द धीमे से सुनाई पड़े······ "पर तुम जानते हो भाई, कानून।" "खैर कानून तो है ही।" सिप्यागिन ने एक प्रकार की तपःपूत विवशता के साथ स्वीकार किया।

जिस समय वे लोग एक कोने में इस प्रकार बातें कर रहे थे, कैलो-म्येत्सेफ़ के लिए चुपचाप खड़े रहना दुश्वार हो रहा था; वह इधर से उधर टहलता रहा, अपना गला खकार साफ किया, हूँ-हाँ करता रहा और इस प्रकार उसने हर तरह से अपनी अधीरता प्रकट की। अन्त में उसने सिप्यागिन के पास जाकर जल्दी से कहा, "उस आदमी को तो आप भूल ही गए।"

"ओह, हाँ !" सिप्यागिन ने ज़ोर से कहा। "बड़ा अच्छा किया जो याद दिला दी। कुछ और भी बातें मुझे महामहिम के सामने रखनी हैं," उसने गवर्नर की ओर मुड़ते हुए कहा। गवर्नर के लिए ऐसा पदानुकूल सम्बोधन उसने जानबूझकर, एक क्रांतिकारी के आगे पदाधिकारी का सम्मान कम न करने के उद्देश्य से किया। "इस बात के लिए मेरे पास काफी कारण हैं कि मेरे साले साहब के इस पागलपन-भरे प्रयत्न की जड़ें कुछ इधर-उधर और भी हैं। एक ऐसी ही जड़, यानी एक और संदिग्ध व्यक्ति इस शहर से अधिक दूर नहीं है।" उसने आहिस्ता से जोड़ा, "उस आदमी को बुला लीजिए······वहाँ आपके ड्राइंग रूम में बैठा है······मैं उसे अपने साथ ले आया हूँ।"

गवर्नर ने सिप्यागिन की ओर देखा और कुछ श्रद्धा के साथ सोचा, "कमाल आदमी है !" और आवश्यक हुक्म दे दिया। एक मिनिट बाद सीला पाकलिन उसके सामने मौजूद था।

सीला पाकलिन ने गवर्नर को हलका-सा झुककर सलाम करना शुरू ही किया था कि उसकी नजर मार्केलौफ़ पर पड़ गई और वह अपना सलाम पूरा न कर सका—वह जैसे का तैसा ही रह गया, आधा झुका हुआ, हाथों में अपनी टोपी मरोड़ता हुआ। मार्केलौफ़ ने एक खोई-सी नज़र उसकी दिशा मे डाली, पर शायद ही उसने उसे पहचाना हो, क्योंकि वह फिर सोच में डूब गया।

"क्या यही है—वह शाखा ?" गवर्नर ने कीमती पत्थर जड़ी हुई अँगूठी वाली अपनी सफ़ेद अँगुली से पाकलिन की ओर इशारा करते

हुए कहा।

"ओह, नहीं!" सिप्यागिन ने आधी मुस्कराहट के साथ कहा। "किन्तु," उसने पलभर सोचकर जोड़ा, "ये, महामहिम, आपके सामने मि० पाकलिन हैं। जहाँ तक मुझे यकीन है यह पीटर्सबर्ग के रहने वाले हैं, और उस व्यक्ति के घनिष्ट मित्र हैं, जो मेरे परिवार में शिक्षक का काम करता था, और जो अपने साथ मेरी एक रिश्तेदार जवान लड़की को—मुझे यह कहते लज्जा लगती है—लेकर मेरे घर से भाग गया।"

"आह! हाँ-हाँ," गवर्नर ने अपने सिर को झटका देते हुए कहा; "मैंने कुछ-कुछ सुना था······काउन्टेस मुझे बता रही थीं·······"

सिप्यागिन ने अपनी आवाज़ ऊँची की—

"उस आदमी का नाम है मि० नेज्दानौफ, और मुझे बहुत शक है कि उसके विचार और सिद्धान्त भी बहुत खतरनाक हैं······"

"एकदम पक्का गुण्डा है," कैलोम्येत्सेफ़ ने जोड़ा।

"उसके विचार और सिद्धान्त खतरनाक हैं।" सिप्यागिन ने और भी साफ-साफ दुहराया; "और अवश्य ही उसका इस प्रचार में भी हाथ है; वह, जैसा कि मुझे मि० पाकलिन ने सूचित किया है, व्यापारी फालेयेफ़ के कारखाने में छिपा हुआ है······"

"जैसा कि मुझे सूचित किया है," इन शब्दों पर मार्केलौफ ने दूसरी बार पाकलिन पर नज़र डाली, पर वह केवल धीरे से और उदासीनता से मुस्कराया।

"क्षमा कीजिए, क्षमा कीजिए महामहिम," पाकलिन ने चीखकर कहा, "और आप भी मि० सिप्यागिन, मैंने कभी नहीं······ये कभी नहीं······"

"तुमने व्यापारी फालेयेफ़ का नाम लिया?" गवर्नर ने सिप्यागिन से पूछा, और पाकलिन की ओर उसने केवल अपनी अँगुलियाँ घुमाईं मानो कह रहा हो, "आप ज़रा सभी चुप रहिए।" "इन्हें क्या हो

गया है, हमारे इन दाढ़ीवाले इज्ज़तदार दुकानदारों को ? कल एक और पकडा गया इसी कारबार में। तुमने शायद सुना हो उसका नाम— गोलुश्किन, अमीर आदमी है। पर वह, वह कभी क्रान्ति-फ्रान्ति नहीं कर सकता। अब वह पैर पकड़कर गिड़गिड़ाने लगा है।"

"व्यापारी फालेयेफ़ का इस मामले में कोई हाथ नहीं है," सिप्यागिन ने कहा। "मै उसके विचारों के बारे मे कुछ नहीं जानता; मै तो सिर्फ उसके कारखाने का ज़िक्र कर रहा हूँ, जहाँ मि० पाकलिन के कथनानुसार मि० नेज़्दानौफ़ इस समय मिल सकते है।"

"मैने ऐसा नहीं कहा था!" पाकलिन ने फिर रिरियाते हुए कहा, "यह तो आप ही खुद कह रहे थे!"

"माफ कीजिए मि० पाकलिन," सिप्यागिन प्रत्येक शब्द उसी अचूक स्पष्टता के साथ कहता गया। "जिस मित्रता की भावना के कारण आप इस बात से इन्कार कर रहे है उसका मै आदर करता हूँ।" (गवर्नर मन-ही-मन सोच रहा था, "अरे यह तो पूरा गिज़ो है!") "पर मै आपके सामने अपने-आपको उदाहरणस्वरूप रखना चाहता हूँ। क्या आप सोचते हैं कि आपके अन्दर मित्रता की भावना से मेरी रिश्तेदारी की भावना कम ज़ोरदार है? पर एक और भी भावना होती है, महाशय, जो ज़्यादा शक्तिशाली होती है, और जिसे अपने सब कार्यो और कामों में हमें अपना मार्गदर्शक बनाना चाहिए—वह है कर्तव्य की भावना!"

"वह भावना जो सबसे बड़ी है," कैलोम्येत्सेफ़ ने समझाया।

मार्केलौफ़ ने दोनों वक्ताओं के चेहरों की ओर ध्यान से देखा।

"गवर्नर महोदय," उसने कहा, "मैं फिर अपनी प्रार्थना दोहराना चाहता हूँ कि कृपा करके मुझे इन बकवास करने वालों के सामने से हटाये जाने का आदेश दीजिए।"

पर इस बार गवर्नर थोड़ा-सा झल्ला उठा।

"मि० मार्केलौफ़!" उसने कहा, "मैं आपको सलाह दूँगा कि

आप जिस स्थिति में है उसको देखते हुए अपनी भाषा को अधिक संयत रखें, और अपनों से बड़ों के प्रति अधिक सम्मान प्रदर्शित करें···विशेष-कर जब वे ऐसे देशभक्ति पूर्ण विचारों को प्रकट कर रहे हैं जो आपने अभी अपने बहनोई के मुख से सुने। मुझे बड़ी प्रसन्नता है प्रिय बोरिस," गवर्नर ने सिप्यागिन की ओर मुड़ते हुए कहा, "मैं तुम्हारे इस काम का जिक्र अवश्य ही मन्त्री महोदय से करूँगा। पर यह मि० नेज़दानौफ़ कारखाने मे कहाँ मिलने वाले है ?"

सिप्यागिन ने अपनी भौहें चढा लीं।

"वह कारखाने के ओवरसियर, किसी एक मि० सालोमिन के साथ ठहरे हुए हैं—ऐसा मि० पाकलिन ने मुझे बताया है।"

बेचारे पाकलिन को तंग करने में सिप्यागिन को विचित्र संतोष मिल रहा था; वह अब गाड़ी में उसे दिए गए सिगार का, उसके व्यवहार में एक तरह की बेअदबी का, और उसके ऊपर खर्च की गई थोड़ी-सी खुशामद का सारा बदला चुकाए ले रहा था।

"और यह सालोमिन भी," कैलोम्येत्सेफ़ ने कहा, "बिना शक एक प्रजातन्त्रवादी और क्रान्तिवाला है, और यदि महामहिम उसकी ओर भी तनिक ध्यान दें तो उचित ही होगा।"

"आप इन लोगों को जानते हैं······सालोमिन······और उसका क्या नाम है······नेज़दानौफ़ को ?" गवर्नर ने कुछ अधिकारपूर्ण नाक के स्वर मे मार्केलौफ़ से पूछा।

मार्केलौफ़ के नथुने क्रोध से फड़क उठे।

"और क्या आप, महामहिम, कन्फ्यूसियस और लिवी को जानते हैं ?"

गवर्नर ने दूसरी तरफ मुँह फेर लिया।

"इनसे बात करना बेकार है।" उसने कन्धे उचकाते हुए कहा। "बैरन, इधर आओ ज़रा !"

हवलदार झपटकर उसकी तरफ गया; और पाकलिन इस अवसर

का लाभ उठाकर लंगड़ाता हुआ सिप्यागिन की ओर बढ़कर धीरे से बोला :

"आप क्या कर रहे हैं ? क्या आप अपनी भांजी को बरबाद करने पर उतारू हैं ? वह उसी के साथ है, नेज़्दानौफ़ के साथ······"

"मैं किसी को बरबाद नहीं कर रहा हूँ महाशय," सिप्यागिन ने ज़ोर से उत्तर दिया; "मैं तो बस पालन कर रहा हूँ, अपनी आत्मा के आदेशों का, और···"

"और अपनी बीबी, मेरी बहिन के आदेशों का, जो आपको अपने अँगूठे नीचे रखती है ?" मार्केलौफ़ ने भी उतने ही ज़ोर से कहा। सिप्यागिन का इस बात पर एक बाल भी नहीं हिला······बात उसकी प्रतिष्ठा के लिए इतनी नीची थी कि उसने ध्यान देने की भी ज़रूरत नहीं समझी।

"सुनिए," पाकलिन ने उसी तरह से फुसफुसाते हुए कहा; उसका सारा शरीर उत्तेजना से और सम्भवतः भय से काँप रहा था; उसकी आँखें घृणा से चमक रही थीं और आँसू उसके गले में जमा होकर अटक गए थे; दया के आँसू दूसरों के लिए, और क्रोध अपने प्रति; "सुनिए, मैंने आप से कहा था कि मेरियाना ने विवाह कर लिया है, यह सही नहीं है···मैंने झूठ ही कह दिया था।···पर यह विवाह अब होने ही वाला है···और अगर आप उसमें अड़चन डालेंगे, अगर पुलिस ने वहाँ धावा बोला तो आपकी आत्मा पर ऐसा धब्बा रह जायगा जो किसी तरह से भी न मिट सकेगा, और आप······"

"जो बात अभी आपने बताई," सिप्यागिन ने और भी ज़ोर से बात काटते हुए कहा, "अगर यह वास्तव में सच है, जिसमें मुझे बहुत संदेह होता है, तब तो मुझे और भी जल्दी वह कदम उठाना चाहिए जो मैं ठीक समझता हूँ ! और जहाँ तक मेरी आत्मा की पवित्रता का सवाल है महाशय, मेरा अनुरोध है कि आप उसकी चिन्ता न करें।"

"उस पर पॉलिश चढ़ी हुई है, भाई," मार्केलौफ़ ने फिर कहा;

"उसके ऊपर पीटर्सबर्ग की बारनिस का पक्का कोट चढा हुआ है, उस पर किसी चीज का असर नही होने का। आह, मि० पाकलिन, आप चाहे जितना फुसफुसाइए, कोई डर नही है, आप अब इस झमेले से बाहर नही निकल सकते।"

गवर्नर ने इन परस्पर गाली-गलौच का अन्त करना ही ठीक समझा।

"मै समझता हूँ," उसने शुरू किया कि "सज्जनो, आप लोग जितना कहना चाहते थे कह चुके और इसलिए हवलदार मि० मार्केलौफ को अब तुम यहाँ से ले जा सकते हो। बोरिस, तुम्हे तो अब और ज़रूरत नही है······?"

सिप्यागिन ने हिकारत का भाव प्रकट किया।

"मुझे जो कहना था कह चुका।"

"बहुत अच्छा······तो फिर हवलदार···"

हवलदार मार्केलौफ़ की ओर बढा, अपने हाथ को सीधा दिखाते हुए बोला······"चलिए।"

मार्केलौफ मुडा और बाहर चला गया। पाकलिन ने—यह स्वीकार करना चाहिए कि केवल कल्पना ही मे, पर तीखी हमदर्दी और करुणा के साथ उससे हाथ मिलाया।

"हम लोग अपने आदमियो को अभी कारखाने भेजते है," गवर्नर ने कहा। "पर एक बात है, बोरिस; मै समझता हूँ कि इन सज्जन—" उसने मुँह के इशारे से ही पाकलिन की ओर संकेत किया—"तुम्हें तुम्हारी भाजी के बारे मे सूचना दी है······शायद वह वही हो, कार-खाने में···अगर ऐसा हो···"

"उसे तो वैसे भी गिरफ्तार नही किया जा सकता है," सिप्यागिन ने गम्भीरता से कहा, "शायद उसको अक्ल आ जायेगी, और वह लौट आये। अगर आप इजाजत दें तो मै उसे एक छोटा-सा पत्र लिख दूँ।"

"लिख दो तो बहुत अच्छा रहे। और अवश्य ही इस बारे में तुम

निश्चिन्त रहो…"

"पर आप सालोमिन के बारे में तो कुछ कर ही नहीं रहे है ।" कैलोम्येत्सेफ ने कुछ करुणा-भरे स्वर मे कहा । वह सारा वक्त बड़े कान लगाकर गवर्नर की सिप्यागिन से अलग से कही गई बातें सुनने की कोशिश कर रहा था ।

"मै आपको यकीन दिलाता हूं कि वही है मुखिया ! इन सब मामलों में मुझको कभी कोई गलती नहीं होती……मै फौरन भाग जाता हूँ ।"

"जरूरत से ज्यादा उत्साह ठीक नही, सेम्योन पेत्रोविच," गवर्नर ने कहा, "टेलिरेन्ड की याद है ? अगर कोई गड़बड़ होगी तो वह भी हमसे बचकर नहीं जा सकता । आप अपने गले के फंदे की ओर ध्यान दें तो अधिक अच्छा है ।" और गवर्नर ने हाथ के इशारे से गले के फंदे का संकेत किया……"और अच्छा," उसने सिप्यागिन की ओर मुड़ते हुए और ठोढ़ी के इशारे से ही पाकलिन की ओर संकेत करते हुए कहा, "यह तो कोई वहुत ख़तरनाक मालूम नहीं होते, उसे जाने दो," सिप्यागिन ने धीरे से कहा । "आप जा सकते हैं जानब," गवर्नर ने ज़ोर से पाकलिन से कहा, "हमें अब और आपकी ज़रूरत नहीं है । अगली मुलाकात तक के लिए नमस्कार ।"

पाकलिन ने सब को झुककर नमस्कार किया और बाहर सड़क पर निकल गया । वह पूरी तरह से अपमानित और कुच-सा हुआ अनुभव कर रहा था । "भगवान् !" इस घृणा ने उसको बिलकुल ख़त्म कर दिया था ।

"मैं क्या हूँ ?" उसने एक अकथनीय निराशा के साथ सोचा; कायर भी और जासूस भी ? ओह नहीं……नहीं……; मै ईमानदार आदमी हूँ ।" सज्जनो, मै बिलकुल मनुष्यत्व से खाली नहीं हूँ ।"

पर यह गवर्नर के मकान की सीढ़ियों पर खड़ा परिचित सा व्यक्ति कौन है, जो उसकी ओर भर्त्सनापूर्ण निराश आँखों से ताक रहा

है ! अरे, यह तो मार्केलौफ़ का बूढ़ा नौकर है। वह शायद अपने मालिक के पीछे-पीछे आया है और उसके कैद होने के स्थान से हटना नहीं चाहता······पर वह पाकलिन की ओर इस तरह क्यों देख रहा है ? उसने तो मार्केलौफ़ के साथ विश्वासघात नहीं किया।

"और मुझे क्या शैतान सवार हुआ कि जहाँ मेरी कोई जरूरत न थी वहाँ अपनी टाँग अड़ाने पहुँचा ?" वह फिर हताश भाव से सोचने लगा। "क्यों न मैं अपने ही काम से मतलब रख सका ? क्यों न मैं चुपचाप बैठ सका ? और अब लोग कहेंगे, और बहुत सम्भव है लिखेंगे : 'एक पाकलिन नाम के आदमी ने सब भेद खोल दिया, उसने उनके साथ विश्वासघात किया······अपने मित्रों को दुश्मन के सुपुर्द कर दिया।' " तभी उसको याद आया कि मार्केलौफ़ ने किस तरह उसकी ओर देखा था और उसके वे अन्तिम शब्द भी याद आये : "डरो मत अब तुम इस झमेले से बाहर न निकल सकोगे। और फिर यह बूढ़ी, निराश, उदास आँखें ! और फिर जैसा कि धर्मशास्त्रों में लिखा रहता है, "वह फूट-फूटकर रोया," और फिर अपनी मरुस्थल की हरियाली की ओर, फोमुश्का और फीमुश्का के पास, स्नानदूलिया के पास चल पड़ा······

छत्तीस

उसी दिन सबेरे जब मेरियाना अपने कमरे के बाहर आई तो उसने देखा कि नेज़दानौफ़ वैसे ही कपड़े पहने हुए सोफे पर बैठा है। एक हाथ से उसने अपना सिर थाम रखा था, और दूसरा कमज़ोर और निश्चल-सा उसके घुटनों पर पड़ा हुआ था। वह उसके पास गई।

"नमस्कार अलैक्सी......तुमने कपड़े नहीं उतारे? तुम सोये नहीं? तुम्हारा चेहरा कितना सफेद लग रहा है।"

उसकी भारी पलकें धीरे-धीरे उठीं।

"नहीं, मैंने कपड़े नहीं उतारे, मैं सोया नहीं।"

"क्या तुम बीमार हो? या कल का ही असर अभी तक बाकी है।"

नेज़दानौफ़ ने अपना सिर हिलाया।

"सालोमिन के तुम्हारे कमरे में जाने के बाद मैं न सो सका।"

"कब?"

"कल शाम को।"

"अलैक्सी, क्या तुम्हें ईर्ष्या हो रही है? यह तो एक नई बात

मालूम पड़ती है। और ईर्ष्या करने के लिए भी तुमने क्या वक्त चुना है। वह मेरे साथ केवल पन्द्रह मिनिट ठहरा होगा······और हम लोग उसके रिश्तेदार पुरोहित के बारे में और हम दोनों की शादी के बारे में ही बात कर रहे थे।"

"जानता हूँ कि वह केवल पन्द्रह मिनिट ही ठहरा था; मैंने उसे बाहर आते देखा था। और मुझे ईर्ष्या भी नहीं हो रही है, ओह नहीं। पर तो भी उसके बाद मैं सो नहीं सका।"

"क्यों ?"

नेज़्दानौफ़ ने कुछ देर उत्तर नहीं दिया।

"मैं सोचता रहा···सोचता रहा···सोचता रहा।"

"काहे के बारे में ?"

"तुम्हारे···और उसके······और अपने······।"

"और तुम किस नतीज़े पर पहुँचे ?"

"क्या तुम्हें बताना ज़रूरी है मेरियाना ?"

" हाँ, मुझे बताओ।"

"मैने सोचा कि मैं तुम्हारे······और उसके······और स्वयं अपने भी रास्ते की बाधा हूँ।"

"मेरे ? उसके ? मैं सोच सकती हूँ कि इस बात से तुम्हारा क्या मतलब है, हालाँकि तुम यह कहते हो कि तुम्हें ईर्ष्या नहीं हो रही है, और तुम्हारे अपने···?"

"मेरियाना, मेरे भीतर दो आदमी हैं, और एक दूसरे को जीवित नहीं रहने देना चाहता। इसलिए मैं सोचता हूँ कि सचमुच ही दोनों ही अगर जीना बन्द कर दें तो अधिक अच्छा है।"

"चलो, चुप करो अलैक्सी, दया करो। तुम क्यों मुझे और अपने-आपको त्रास देना चाहते हो ? इस समय तो हमको यह सोचना ज़रूरी है कि हमें क्या करना चाहिये·······वे लोग हमें यहाँ चैन से न रहने देंगे, तुम जानते हो।"

नेज़्दानौफ़ ने उसका हाथ स्नेह से अपने हाथ में ले लिया।

"मेरे पास बैठ जाओ, मेरियाना, और आओ हम लोग मित्रों की भाँति कुछ बातें कर लें। अभी जब तक कुछ समय है। लाओ मुझे अपना हाथ दो। मै सोचता हूँ कि हम लोग अपनी-अपनी बात समझा दें हालाँकि यह कहा जाता है कि जितना ही समझाइये, उतना हो गोलमाल बढता है, पर तुम सदय भी हो और बुद्धिमान भी; तुम सब बात समझ सकोगी, और जो मै नहीं कह पाऊँगा उसे तुम अपने-आप सोच लोगी। बैठ जाओ।"

नेज़्दानौफ़ की आवाज़ बहुत हल्की थी, उसकी आँखें मेरियाना के ऊपर गढ़ी हुई थीं और उन में एक अजीब तरह की स्नेह-भरी कोमलता मौजूद थी।

"वह खुशी-खुशी उसके पास बैठ गई, और उसके हाथ अपने हाथों में ले लिए।

"धन्यवाद, प्रिय मेरियाना। अब सुनो, मै बहुत देर तक तुम्हें नहीं रोकूँगा। मैं जो कुछ कहना चाहता हूँ उसको रातभर मन-ही-मन दोहराता रहा हूँ। तुम यह मत सोचो कि जो कुछ कल हुआ उसने मुझे बहुत अधिक विचलित कर दिया है; मैने अवश्य ही बड़ा मूर्खतापूर्ण और झल्ला देने वाला व्यवहार किया था; पर मै जानता हूँ तुमने मेरे बारे में कोई गन्दी या घटिया बात नहीं सोची, तुम मुझे जानती हो, मैंने कहा कि जो कुछ कल हुआ उसने मुझे विचलित नहीं किया; यह सही नहीं है, यह बकवास है······उसने मुझे विचलित किया है इसलिए नहीं कि मुझे घर नशे की हालत में लाया गया, बल्कि यह अपनी असफलता का अन्तिम प्रमाण मुझे मिला। और यह केवल इसीलिए नहीं कि मैं उस तरह शराब नहीं पी सकता जिस तरह रूसी पीते हैं, बल्कि हर चीज़ में! हर चीज में! मेरियाना, मै यह कह देना ज़रूरी समझता हूँ कि जो लक्ष्य हम दोनों को समीप खींच लाया था उसमें अब मेरा विश्वास नहीं रहा—जिसके लिए हम दोनों ने वह घर छोड़ा था;

सच बात यह है कि मैं पहले ही हल्का पड़ चला था पर तुम्हारे जोश ने मुझे फिर गर्मा दिया और मुझे फिर उसने झोंक दिया। पर मुझे उसमें कोई विश्वास नही है ! मुझे उसमें कोई विश्वास नहीं है !"

उसने अपने खाली हाथ को अपनी आँखों के ऊपर रख लिया और कुछ पल चुप रहा। मेरियाना भी कुछ न बोली और नीचे देखती रही ···उसे लग रहा था कि नेज़्दानौफ़ ने उससे कोई नई बात नही कही।

"मै सोचा करता था", नेज़्दानौफ़ ने अपनी आँखों पर से हाथ हटाते हुए, पर मेरियाना की ओर बिना देखे ही आगे कहना शुरू किया, "कि मै लक्ष्य में तो विश्वास करता हूँ, पर शक मुझे अपने ऊपर, अपनी शक्ति, अपनी क्षमता पर है; मै सोचता था, मेरी योग्यताएँ मेरे विश्वासों के अनुकूल नहीं है······पर ऐसा लगता है कि इन दोनों चीजों को अलग नहीं किया जा सकता और अपने-आपको धोखा देने से क्या फायदा ? नहीं, मुझे स्वयं लक्ष्य में ही विश्वास नहीं है। तुम्हें उसमें विश्वास है, मेरियाना ?"

मेरियाना सीधी हो गई और उसने अपना सिर उठाया।

"हाँ, अलैक्सी, मुझे उसमें ज़रूर विश्वास है। मै उसमें अपनी आत्मा की पूरी शक्ति के साथ विश्वास करती हूँ, और मै अपना सारा जीवन इस लक्ष्य के लिए ही लगा दूँगी, अपनी आखिरी साँस तक।"

नेज़्दानौफ़ उसकी ओर मुड़ा और उसने एक विह्वल और एक ईर्ष्या भरी दृष्टि से उसे सिर से पैर तक देखा।

"हाँ-हाँ; मैं इसी उत्तर की आशा करता था। इस भाँति तुम देखो कि हमारे पास मिलकर करने के लिए कुछ भी नहीं है; तुमने हमारे सम्बन्धों को स्वयं ही केवल एक आघात से छिन्न-भिन्न कर दिया है।"

मेरियाना कुछ नहीं बोली।

"और सालोमिन", नेज़्दानौफ़ ने आगे कहा, "हालाँकि वह भी विश्वास नहीं करता······"

"क्या ?"

"नहीं ! उसे भी विश्वास नहीं है······पर उसे इसकी ज़रूरत ही नहीं है; वह शान्ति के साथ आगे बढ़ता जाता है। शहर की सड़क पर चलने वाला आदमी अपने-आप से यह प्रश्न नहीं पूछता कि शहर का सचमुच अस्तित्व है भी या नहीं। वह बस बढ़ता ही जाता है; सालोमिन ठीक ऐसा ही है। और इससे अधिक कुछ आवश्यक भी नहीं है। पर मैं······आगे बढ नहीं सकता; पीछे जाना नहीं चाहता; चुप-चाप खड़े-खड़े मैं तंग आ गया। किससे मैं अपना साथी बनने के लिए कहने की हिम्मत करूँ ? तुमने वह कहावत सुनी होगी, लट्ठे का एक-एक सिरा एक-एक आदमी हाथ में ले ले तो बोझ हलका हो जाता है; पर यदि कोई अपने किनारे को न सँभाल सके तो फिर दूसरे का क्या हो ?"

"अलैक्सी", मेरियाना ने कुछ अनिश्चित भाव से कहा, "मै सोचती हूँ कि तुम बहुत बढ़ा-बढ़ाकर कह रहे हो। हम लोग एक-दूसरे को प्यार तो करते हैं, नहीं करते हैं ?"

नेज़दानौफ़ ने गहरी आह भरी।

"मेरियाना······मैं तुम्हारी पूजा करता हूँ······और तुम मेरे ऊपर दया करती हो, और हम दोनों को एक-दूसरे की ईमानदारी में पक्का यकीन है; वास्तव में सचाई यही है ! पर प्रेम हमारे बीच में बिल्कुल नहीं है।"

"ठहरो अलैक्सी, तुम यह सब क्या कह रहे हो ? क्यों आज ही के दिन, जब हमारे लिए तलाशी आने वाली है······हम दोनों कहीं साथ-साथ भाग चलेंगे और कभी नहीं अलग होंगे······"

"हाँ, और जाकर पुरोहित ज़ोसिम को अपनी शादी के लिए बुला-लाएँ, जैसा कि सालोमिन कहता है। मैं भली भाँति जानता हूँ कि तुम्हारी आँखों में यह विवाह पासपोर्ट से अधिक कुछ नहीं। पुलिस की परेशानी से बचने का एक उपाय······पर तो भी एक तरह से यह हमें बाँध देगा······एक साथ जीवन बिताने के लिए, साथ-साथ रह

कर······या अगर यह हमको नहीं भी बाँधता तो कम-से-कम उसमें एक साथ रहने की इच्छा तो शामिल ही है।"

"तुम्हारा क्या मतलब है अलैक्सी ? क्या तुम यहीं रहने वाले हो ?"

"हाँ," नेज़्दानौफ़ के होठों से निकलते-निकलते रह गया, पर उसने अपने-आपको सँभाल लिया और कहा :

"न···न···नहीं।"

"तो फिर तुम यहाँ से जा तो रहे हो, पर वहाँ नहीं जहाँ मैं जाऊँगी ?"

नेज़्दानौफ़ ने अपने हाथ में रखे हुए उसके हाथ को स्नेह से दबाया।

"तुम्हें किसी रक्षक के बिना छोड़ जाना, किसी मार्गदर्शक के बिना, एक अपराध होगा, और मैं चाहे जितना क्षुद्र होऊँ, यह मैं नहीं करूँगा। तुम्हें एक समर्थक अवश्य मिलेगा······इसमें सन्देह मत करो !"

मेरियाना नेज़्दानौफ़ की ओर झुक गई, और उसके मुख के बहुत समीप अपना मुख रखकर उसने उसकी आँखों में, उसके हाथों में—उसकी आत्मा के भीतर तक झाँक लेने की कोशिश की।

"तुम्हें क्या हो गया है अलैक्सी ? तुम्हारे दिल में क्या बात है ? बताओ मुझे !······तुम्हें देखकर मुझे डर लगता है। तुम्हारे शब्द इतने अटपटे, इतने पहेली जैसे हैं······और तुम्हारा चेहरा ! मैंने तुम्हारा ऐसा चेहरा कभी नहीं देखा !"

नेज़्दानौफ़ ने हल्के से उसका मुख दूर हटा दिया और आहिस्ता से उसका हाथ चूमा। इस बार मेरियाना ने विरोध नहीं किया, और न हँसी और अब भी चिन्ता और घबराहट के साथ उसकी ओर देखती रही।

"घबराने की कोई बात नहीं है ! इसमें अजीब क्या है ? सारी कठिनाई यह है : कहते हैं मार्केलौफ़ को किसानों ने पीटा है; उसने

उनके घूँसे का अनुभव किया; उन्होंने उसकी पसलियाँ घायल कर दी····
मुझे किसानों ने पीटा नही है—मेरे साथ तो उन्होने शराब तक पी,
मेरे स्वास्थ्य के लिए शराब पी······पर उन्होंने मार्केलौफ़ की पसलियों
को जितना घायल किया उससे कही ज्यादा मेरी आत्मा को घायल कर
दिया। मै पैदा ही जोड़-जोड़ पर खंडित हुआ था······मैंने अपने को
ठीक करने की कोशिश की, पर अपने-आपको और भी खंडित कर
लिया। मेरे चेहरे में तुम्हें यही चीज़ दिखाई पड़ रही है।"

"अलैक्सी," मेरियाना ने धीरे-धीरे कहा, "मुझसे सब बात खुल
कर न कहना तुम्हारा बहुत ही अत्याचार होगा।" नेज़्दानौफ ने
उसके हाथ पकड लिए।

"मेरियाना, मेरा समूचा व्यक्तित्व तुम्हारे सामने है, एक प्रकार
से तुम्हारे हाथ में है; मैं जो भी करूँगा तुमसे पहले से कह दूँगा,
तुम्हें किसी चीज़ पर चकित नहीं होना पड़ेगा, सचमुच किसी चीज़
पर नही!"

मेरियाना ने चाहा कि इन शब्दों का अर्थ पूछ ले पर उसने पूछा
नही······इसके अतिरिक्त उसी समय सालोमिन ने कमरे में प्रवेश
किया। उसकी चाल हमेशा की अपेक्षा अधिक तीखी और तेज़ थी।
उसकी आँखें चढ़ी हुई थीं, उसके चौड़े होठ कसकर भिचे हुए थे, उसका
समूचा चेहरा अधिक तीखा लग रहा था और उसके ऊपर एक रूखा,
सख्त, करीब-करीब अक्खड़पन का भाव था।

"दोस्तो," उसने कहना शुरू किया, "मै आप लोगों से यह कहने
आया हूँ अब और देर की गुंजाइश नहीं है······आप लोगों के जाने
का वक्त आ गया है। एक घण्टे के भीतर आप लोगों को तैयार हो
जाना चाहिए। आप लोगो को अपने विवाह के लिए जाना चाहिए।
पाकलिन का कोई समाचार नहीं मिला है; जो घोड़े वह ले गया था,
वे पहले तो अर्जानों में ठहरे रहे फिर उन्हें वापिस भेज दिया गया।
वह कोई भेद तो न खोलेगा, यह ठीक है, पर कोई नहीं कह सकता

कि शायद कोई बात उससे निकल जाय। इसके अलावा वे लोग घोड़ों से भी अन्दाज़ लगा सकते हैं। मैंने अपने चचेरे भाई पुरोहित को कह-लवा दिया कि वह आप लोगों का इन्तज़ार करे। पवेल आपके साथ जायगा। वही गवाह भी होगा।"

"और तुम, सालोमिन······वैसिली ?" नेज़दानौफ़ ने पूछा। "तुम नहीं चल रहे हो? देखता हूँ तुमने भी तो यात्रा की पोशाक पहन रखी है," उसने सालोमिन के पैरों में ऊँचे जूते देखकर जोड़ा।

"ओह, मैंने इन्हें पहन लिया······बाहर बड़ी कीचड़ है।"

"पर तुम्हें हम लोगों के लिए जवाबदेही न करनी पड़ेगी? वैसिली।"

"मेरा तो खयाल नहीं है······जो हो वह मेरे ऊपर छोड़ दीजिए। तो घण्टे भर में···। मेरियाना, तात्याना तुमसे मिलना चाहती है। वह वहाँ कोई चीज़ बना रही है।"

"ओह, हाँ! मैं उसके पास जाना ही चाह रही थी···"मेरियाना दरवाज़े की तरफ़ बढ़ी······"

कुछ अजीब, कुछ-कुछ आतंक और त्रास जैसा नेज़दानौफ़ के चेहरे पर छा गया।

"मेरियाना क्या तुम चली जा रही हो?" उसने अचानक डूबती-सी आवाज़ में कहा।

वह रुक गई।

"मैं आध घण्टे में आती हूँ। मुझे सामान बाँधने में देर नहीं लगेगी।"

"हाँ; पर मेरे पास आओ······"

"अवश्य, पर किसलिए ?"

"मैं तुम्हें एक बार और देखना चाहता हूँ।" उसने धीरे-धीरे देर तक उसको देखा।

"नमस्कार, नमस्कार मेरियाना!" वह भौचक्की-सी देखने लगी।

"क्यों ?......मै क्या बताऊँ ? मैं बिलकुल बकवास कर रहा हूँ। अरे आध घण्टे में तो तुम आ ही रही हो, आ रही हो न ? एं ?"

"ज़रूर।"

"ज़रूर ज़रूर......मुझे माफ़ करो। नींद न होने के कारण मेरा सिर चकरा रहा है। मैं भी......फौरन सामान बाँधे लेता हूँ।"

मेरियाना कमरे के बाहर चली गई। सालोमिन भी उसके पीछे-पीछे जाने वाला था।

नेज़दानौफ़ ने उसे रोक लिया।

"वैसिली !"

"कहो ?"

"मुझे अपना हाथ दो, तुम्हारे अतिथि-सत्कार के लिए दोस्त, धन्यवाद।"

सालोमिन हँस पड़ा।

"क्या बात कही है !" पर उसने अपना हाथ बढ़ा दिया।

"साथ ही कुछ और भी," नेज़दानौफ़ ने आगे कहा, "अगर मुझे कुछ हो जाय तो वैसिली, क्या मैं यह भरोसा कर सकता हूँ कि तुम मेरियाना को छोड़ोगे नहीं ?"

"तुम्हारी होने वाली पत्नी को ?"

"हाँ मेरियाना को !"

"पहली बात तो यह है कि मुझे विश्वास है तुम्हें कुछ नहीं होगा; पर तुम निश्चिन्त रहो; मेरियाना मुझे भी उतनी ही प्रिय है जितनी कि वह तुम्हें है।"

"ओह ! यह मैं जानता हूँ......यह मैं जानता हूँ। तब फिर ठीक है। धन्यवाद। तो फिर घण्टे भर में ?"

"हाँ।"

"मैं तैयार रहूँगा। नमस्कार !"

सालोमिन बाहर चला गया और मेरियाना से सीढ़ियों पर ही भेंट

हो गई। उसके मन में नेज़्दानौफ के बारे मे कुछ उससे कहने की बात थी, पर वह चुप रहा। और मेरियाना भी यह अनुभव कर रही थी कि सालोमिन उससे कुछ कहना चाहता है, और वह भी नेज़्दानौफ के बारे में पर वह चुप है, और वह भी चुप ही रही।

सैंतीस

जैसे ही सालोमिन बाहर गया, नेज़्दानौफ़ सोफे से उछलकर खड़ा हो गया, दो बार एक कोने से दूसरे तक टहला, फिर एक मिनिट के लिए एक प्रकार के जड़ीभूत विस्मय से कमरे के बीचोंबीच चुपचाप खड़ा रहा; एकाएक उसने अपने-आपको झकझोरा, जल्दी से अपना स्वांगवाला भेस उतारा और उसे ठोकर मारकर एक कोने में फेंक दिया, और अपने साधारण वस्त्र निकालकर पहन लिये। फिर वह तीन टाँगवाली मेज़ पर गया, दराज में से दो मुहरबन्द लिफाफे और एक छोटी-सी चीज निकाल ली। उस चीज को उसने अपनी जेब में ठूँस लिया, लिफाफो को मेज़ पर ही पड़ा रहने दिया। फिर उसने अँगीठी की तरफ झुककर उसकी छोटी-सी खिड़की खोली।······अँगीठी में राख का ढेर पड़ा हुआ था। नेज़्दानौफ़ की रचनाओं के, उसकी कविता की कापी के, बस यही अवशेष बचे थे······सब उसने रातभर में जला डाला था। पर अँगीठी में ही एक तरफ दीवाल से चिपका हुआ मार्केलौफ़ का दिया हुआ मेरियाना का चित्र था। लगता था कि उस चित्र को भी जलाने का साहस वह नही बटोर पाया था। नेज़्दानौफ़ ने

होशियारी से उसे निकाला और मुहरबन्द लिफाफों के पास ही मेज़ पर रख दिया। फिर उसने दृढ़ता की मुद्रा से अपनी टोपी उठाई और दरवाज़े की ओर चलने लगा······पर फिर बीच ही में रुक गया, पीछे मुड़ा, और मेरियाना के कमरे में गया। वहाँ वह मिनिट भर खड़ा रहा, फिर चारों ओर देखा, और तब उसकी छोटी-सी संकरी खाट के पास पहुँचकर झुका और एक उमड़ती हुई सिसकी को दबाकर अपने होठ, तकिये से नहीं, बिस्तर के पैंताने से लगा दिये······फिर वह तुरन्त उठ खड़ा हुआ, और अपनी टोपी आँखों के ऊपर तक खींचता हुआ झपटकर बाहर निकल गया।

नेज़्दानौफ की बरामदे में या सीढ़ियों पर या नीचे, कहीं किसी से मुलाकात नहीं हुई, और वह पीछे के अहाते मे जा पहुँचा। नीचे लदे हुए बादलों से भरा आसमान फीका-फीका-सा था, नम हवा के झोंकों से घास की फुनगियाँ डोल रही थीं और पेडों की पत्तियाँ काँप रही थीं, कारखाने में उसी समय अन्य दिनों की अपेक्षा आजकल घड़घड़ाहट और शोरगुल था, उसके अहाते से कोयले, तारकोल और चरबी की गंध आ रही थी। नेज़्दानौफ़ ने तीखी, खोजती हुई दृष्टि चारों ओर डाली, और सीधा पुराने सेब के पेड़ की ओर पहुँचा, जिसने उसके यहाँ आगमन के पहले ही दिन, खिड़की से बाहर झाँकने पर उसका ध्यान आकर्षित किया था। इस सेब के पेड़ का तना बेहद सूखी काई से भरा हुआ था; उसकी टेढ़ी-मेढ़ी नंगी डालियाँ, जिनमें इधर-उधर इक्का-दुक्का लाल-हरी पत्तियाँ लटक रही थीं, किसी की बूढ़ी झुकी हुई बाहों सी याचना की मुद्रा में, हवा में टेढ़ी खड़ी थीं। नेज़्दानौफ़ दृढ़ चरणों से पेड़ की जड़ों के आसपास वाली मिट्टी पर खड़ा हो गया, और अपनी जेब में से वह छोटी-सी चीज निकाली जो उसे मेज़ की दराज़ में मिली थी। फिर उसने गौर से छोटे से बँगले की खिड़कियों की ओर देखा···

"अगर कोई मुझे इस क्षण में भी देख ले," उसने सोचा, "तो शायद मैं इसे टाल जाऊँ"······पर कहीं भी किसी मानवीय मुख का

नामनिशान तक न था·····हर चीज़ मरी हुई जान पड़ती थी, हर चीज़ ने उससे मुँह मोड़ लिया था, हमेशा के लिए उसे भाग्य की दया पर छोड़कर जा चुकी थी। केवल कारखाना मानो भारी गले से भन-भन कर रहा था, गुर्रा रहा था, और ऊपर से ठंडे मेह की छोटी-छोटी पैनी बूँदें गिरने लगी थीं।

तब नेज़्दानौफ़ ने जिस पेड़ के नीचे खड़ा था उसकी टेढ़ी-मेढ़ी डालियों के बीच से लदे हुए, फीके निश्चिन्त भाव से अन्धे, भीगे आसमान की ओर देखा, जम्हाई ली, कन्धे झकझोरे और सोचा, "और अब कुछ बाकी नहीं बचा है—मैं पीटर्सबर्ग जेल अब नहीं जाऊँगा।" और अपनी टोपी उतार कर फेंक दी। एक प्रकार की सिसकती हुई-सी भारी, सर्वव्यापी थकान-सी समूचे व्यक्तित्व पर उसे अनुभव हो रही थी; उसने रिवाल्वर अपनी छाती से लगाया और घोड़ा दबा दिया···

लगा कि उसे किसी चीज़ ने धक्का दिया हो, बहुत जोर से भी नहीं·····पर वह पीठ के बल पड़ा सोचने की कोशिश कर रहा था कि उसे क्या हुआ है और कैसे उसने अभी-अभी तात्याना को देखा था··· उसने उसे पुकारने की भी कोशिश की, कहने की भी कि "आह, मैं नहीं चाहता·······" पर उसका सारा शरीर सुन्न पड़ गया था और गहरे हरे रंग का एक चक्कर-सा उसके मुख के ऊपर, उसकी आँखों में, उसकी हड्डियों के भीतर तक ज़ोर से घूम रहा था—लग रहा था कि कोई भीषण भारी चपटी-सी चीज़ उसे धरती के ऊपर लगातार कुचलती जा रही है।

नेज़्दानौफ़ ने तात्याना को ठीक उसी क्षण देखा; जब उसने रिवाल्वर का घोड़ा दबाया। वह एक खिड़की के पास आई थी और उसने नेज्दानौफ़ को सेब के पेड़ के नीचे खड़े देख लिया था। उसे यह सोचने का समय भी मुश्किल से मिला होगा, "इस बरसात में वह नंगे सिर सेब के पेड़ के नीचे खड़ा क्या कर रहा है?" कि वह अनाज की बाली की तरह पीठ के बल लुढ़क पड़ा। उसने गोली की आवाज़ तो नहीं

सुनी—आवाज़ बहुत ही हलकी थी—पर वह तुरन्त समझ गई कि कुछ दाल में काला है और बहुत ही तेज़ी से नीचे बगीचे की ओर झपटी……वह दौड़कर नेज्दानौफ़ के पास पहुँची……"अलैक्सी दिमित्रिच, क्या बात है ?" पर तब तक अँधेरा उसे निगल चुका था। तात्याना उसके ऊपर झुकी तो उसे रक्त दिखाई पड़ा।

"पवेल !" वह चीखी और उसकी आवाज़ उसकी अपनी नहीं थी—"पवेल !"

कुछ ही क्षणों में मेरियाना, सालोमिन, पवेल और दो कारखाने के मज़दूर अहाते में मौजूद थे। उन्होंने फौरन नेज्दानौफ़ को उठाया, उसे बँगले में ले गये और उसे उसी सोफे पर लिटा दिया जहाँ उसने पिछली रात बिताई थी।

वह पीठ के बल लेटा था। उसकी आँखें अधखुली, स्थिर थीं और चेहरा तेज़ी से काला पड़ता जा रहा था। वह धीमी-धीमी भारी-सी साँस ले रहा था, कभी-कभी सिसकी के साथ, मानो उसका दम घुट रहा हो। प्राण अभी उसमें बाकी थे। मेरियाना और सालोमिन सोफे की एक-एक ओर खड़े थे और दोनों का मुख स्वयं नेज्दानौफ़ की भाँति ही फक था। विचलित, उत्तेजित, सुन्न से वे दोनों ही थे—विशेषकर मेरियाना—पर हक्के-बक्के से नहीं थे। "हम लोगों को यह बात कैसे नहीं सूझी!" वे दोनों सोच रहे थे और साथ ही उनको यह भी लग रहा था कि उन्हें……हाँ, उन्हें यह बात पहले से दीख गई थी। जब उसने मेरियाना से कहा था, "मैं जो भी करूँ तुमसे पहले कहकर करूँगा, तुम्हें किसी चीज़ पर चकित न होना पड़ेगा," और फिर जब उसने अपने भीतर दो व्यक्तियों की चर्चा की थी कि वे एक साथ नहीं रह सकते, तो क्या मेरियाना के हृदय में अस्पष्ट आशंका-सी नहीं पल भर को कौंध उठी थी ? क्यों नहीं वह तुरन्त रुककर उन शब्दों पर, उस आशंका पर विचार करने लगी थी ? क्यों अब उसे सालोमिन की ओर देखने का साहस नहीं हो रहा था, मानो इसमें वह भी उसके साथ

शामिल रहा हो······मानो वह भी आत्मा की कचोट अनुभव कर रहा हो ? क्यों वह इस समय नेज्दानौफ़ के लिए न केवल अछोर करुणा अनुभव कर रही थी, बल्कि एक प्रकार की कँपकँपी, भय, लज्जा भी महसूस कर रही थी ? क्या यह सम्भव है कि उसे बचा लेना उसी के हाथ में था ? क्यों उन दोनों में से एक भी कोई शब्द तक न मुँह से निकाल सका था। साँस तक लेने की हिम्मत न हो रही थी ?—और जैसे इन्तजार में थे·······किस चीज के ? दयामय भगवान् !

सालोमिन ने डाक्टर को बुलाने के लिए भेजा पर कोई आशा नहीं है यह साफ़ था। उस छोटे, अब काले और रक्तहीन, घाव पर तात्याना ने ठंडे पानी का बड़ा-सा स्पंज रख दिया; उसने नेज्दानौफ़ के बाल भी ठंडे पानी और सिरके से भिगो दिये। एकाएक नेज्दानौफ़ ने हाँफना छोड़ दिया और थोड़ा हिला-डुला।

"इसे होश आ रहा है," सालोमिन ने फुसफुसा कर कहा।

मेरियाना सोफे के पास घुटनों के बल बैठ गई।

नेज्दानौफ़ ने उसकी ओर नजर घुमाई······अब तक उसकी आँखों में मरते हुए व्यक्ति की स्थिर दृष्टि ही थी।

"ओह, मैं······अभी तक जिन्दा हूँ," वह बहुत ही, इतने क्षीण स्वर में बड़बडाया कि सुनना कठिन था। "फिर भी असफल रहा······ तुम्हें अटकाये हुए हूँ।"

"अल्योशा !" मेरियाना सिसक उठी।

"ओह हाँ······अभी···तुम्हें याद है, मेरियाना, मेरी···कविता··· 'फिर फूलों से मुझे सजा देना····' कहाँ है फूल? पर उसके बदले तुम तो यहाँ हो···वहाँ···मेरे पत्र में···"

एकाएक उसका सारा शरीर काँप उठा।

"आह, यह रहीं···तुम दोनों···एक-दूसरे के हाथ···पकड़ लो मेरे सामने······जल्दी······जल्दी······"

सालोमिन ने मेरियाना का हाथ पकड़ लिया। उसका सिर सोफ़े

पर औंधा, घाव के बहुत समीप पड़ा था ।

सालोमिन सीधा और कठिन भाव से खड़ा हुआ था, रात की तरह अँधियारा ।

"हाँ······ठीक······हाँ······"

नेज़दानौफ़ फिर सिसक उठा, पर एक अजीब, असाधारण ढंग से······उसकी छाती फूल गई, निश्वास बाहर निकली···

वह स्पष्ट ही उन दोनों के जुड़े हुए हाथों पर अपना हाथ रखने की कोशिश कर रहा था, पर उसके हाथ तो निर्जीव हो चुके थे ।

"अब ये जा रहे हैं," तात्याना ने होठों-ही-होठों में कहा । वह दरवाजे में खड़ी थी; और क्रास का चिह्न बनाने लगी थी ।

सिसकियाँ अब संक्षिप्त और कम होती जा रही थीं···वह अब भी अपनी आँखों से मेरियाना को खोज-सा रहा था·········पर एक प्रकार की डरावनी, पथराई हुई सफेदी अब उनके ऊपर छाती जा रही थी······

"ठीक······" उसका अन्तिम शब्द था ।

वह जा चुका था···और मेरियाना तथा सालोमिन के गुँथे हुए हाथ अब भी उसके सीने पर पड़े थे ।

अपने दो अन्तिम पत्रों में वह यह लिखकर छोड़ गया था । एक सीलिन के नाम था और उसमें कुछ ही पंक्तियाँ थीं—

"अन्तिम नमस्कार, भाई, मित्र अन्तिम नमस्कार । जब तक तुम्हें यह कागज का टुकड़ा मिलेगा तब तक मैं मर चुका होऊँगा । यह न पूछो कि क्यों और कैसे, और शोक भी मत करना । विश्वास मानो कि यही अच्छा है । अपेन अमर पुश्किन को उठाकर 'मूज़ीम ओनीजिन' में लेस्की की मृत्यु का वर्णन पढ़ना । तुम्हें याद है ?—"खिड़कियों पर पुताई हो गई है; मालकिन चली गई···।" बस यही है । तुमसे अब और बात करने से कोई लाभ नहीं···क्योंकि मेरे पास कहने को बहुत है, और उसके लिए समय है नहीं । पर मैं तुमसे कहे बिना नहीं जा सकता था,

क्योंकि नहीं तो तुम मुझे अब भी जिन्दा समझते और ये हमारी मित्रता के प्रति अन्याय होता। नमस्कार; जिन्दा रहो।

तुम्हारा मित्र—अ० ने०।"

दूसरा पत्र कुछ लम्बा था। वह सालोमिन और मेरियाना के नाम था। उसमें यह लिखा था—"मेरे बच्चो!" (इन शब्दों के बाद ही कुछ जगह खाली थी; कुछ मिट गया था, या वहाँ धब्बा-सा पड़ गया था। मानो उस पर आँसू गिर पड़े हों)। "तुम लोगों को शायद मेरा यह सम्बोधन अजीब लगे। मैं स्वयं ही बच्चे की भाँति हूँ, और तुम सालोमिन, तुम तो उम्र में मुझ से बड़े हो ही। पर मैं मरने जा रहा हूँ, और जीवन के इस छोर पर खड़ा होने के कारण अपने आप को वृद्ध समझने लगा हूँ। मैं तुम दोनों के आगे बहुत दोषी हूँ, विशेषकर मेरियाना तुम्हारे निकट, कि तुम्हें इतना दुख दे रहा हूँ (मैं जानता हूँ, मेरियाना, कि तुम मेरे लिए शोक करोगी) और तुम्हें इतना परेशान करता रहा हूँ। पर मैं क्या करता? मुझे और कोई रास्ता नहीं नजर आया। मैं अपने-आपको 'सीधासादा' नहीं बना सका; केवल एक ही रास्ता बचा था कि अपने-आपको एकदम मिटा दूँ। मेरियाना, मैं अपने और तुम्हारे दोनों के लिए बोझ बन जाता। तुम्हारा हृदय बड़ा है, तुम इस बोझ को भी प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार कर लेतीं, एक और बलिदान की भाँति······पर मुझे तुमसे ऐसा बलिदान माँगने का कोई अधिकार न था; तुम्हारे सामने बेहतर और अधिक बड़ा काम करने को पड़ा है। मेरे बच्चो, मैं तुम्हें एक कर देना चाहता हूँ, एक प्रकार से अपनी कब्र में से।······तुम लोग एक साथ होकर सुखी हो सकोगे। मेरियाना, तुम अनिवार्य रूप से सालोमिन से प्रेम करने लगोगी; और जहाँ तक उसका प्रश्न है······उसने जब से सिप्यागिन के यहाँ तुम्हें देखा है तभी से वह तुम्हें प्यार करता है। यह बात मुझ से तनिक भी छिपी न थी, यद्यपि कुछ ही दिन बाद हम लोग साथ-साथ वहाँ से भागे हैं। आह, वह सुबह! कितनी शानदार थी वह, कितनी मधुर, कितनी

तरुण ! मेरे निकट रह वह तुम्हारी सम्मिलित—तुम्हारी और उसकी—जिन्दगी की एक निशानी, एक प्रतीक की भाँति है, उस दिन मैं तो केवल संयोगवश ही उसके बजाय वहाँ मौजूद था। पर अब खत्म करने का समय आ गया है······मैं तुम्हारी भावनाओं को नहीं उभाड़ना चाहता······मैं केवल अपने कार्य को स्पष्ट भी करना चाहता हूँ। कल तुम्हारे कुछ बहुत ही दुख के क्षण बीतेंगे······पर उसका कोई उपाय नहीं है। और कोई रास्ता नहीं है, है क्या ? नमस्कार, मेरियाना, मेरी भली सच्ची मेरियाना ! नमस्कार, सालोमिन ! मैं उसे तुम्हारी देखभाल में छोड़े जा रहा हूँ। आनन्द से जीवित रहो—दूसरों की भलाई के लिए; और तुम, मेरियाना, मेरे बारे में सुख के क्षणों में ही सोचना; एक सच्चे और भले आदमी के रूप में मेरी याद करना, जिसके लिए किसी कारण से जीने की अपेक्षा मर जाना ही अधिक उचित था। मैं सचमुच तुम्हें प्यार करता था या नहीं, यह मैं नहीं जानता; पर मैं इतना जानता हूँ कि इससे अधिक गहरी भावना मैंने पहले कभी नहीं अनुभव की है, और यदि वह भावना कब्र में अपने साथ ले जाने के लिए मेरे पास न होती तो मेरे लिए मरना बड़ा ही त्रासदायक होता।

"मेरियाना ! अगर तुम्हारी कभी मशूरिना नाम की लड़की से मुलाकात हो···सालोमिन शायद उससे परिचित है····और हाँ, तुम भी तो उससे मिल चुकी हो···तो तुम उससे कह देना कि मरने के कुछ ही समय पहले मैंने उसे बड़ी कृतज्ञता के साथ याद किया था··· वह समझ लेगी।

"पर अब मुझे यह मोह छोड़ना ही होगा। अभी-अभी मैंने खिड़की के बाहर देखा था; जल्दी-जल्दी भागते बादलों के बीच एक सुन्दर तारा था। बादल चाहे जितनी जल्दी चलते, पर उसे वे छिपा नहीं सकते थे। उस तारे को देखकर मुझे तुम्हारी याद आई, मेरियाना। इस क्षण तुम दूसरे कमरे में सोई हुई हो और तुम्हारे मन में कोई आशंका नहीं है।···मैं तुम्हारे कमरे के दरवाज़े तक गया, कान लगा-

कर सुनता रहा, और मैने कल्पना कर ली कि मुझे तुम्हारी निर्मल, शान्त साँसें सुनाई पड़ रही थीं···नमस्कार, नमस्कार, प्रिय ! नमस्कार मेरे बच्चो, मेरे दोस्तो ! तुम्हारा अ० ।

"धिक्कार ! धिक्कार ! यह कैसे हुआ कि मरने के पहले अपने इस अंतिम पत्र में मैने अपने महान् 'लक्ष्य' का कोई ज़िक्र तक नहीं किया ? शायद इसलिए कि मरते समय आदमी झूठ नहीं बोल सकता······ मेरियाना, मुझे इस 'पुनश्च' के लिए क्षमा करना···मिथ्या मेरे ही भीतर है, उसमें नहीं जिसमें तुम्हारी निष्ठा है !"

"ओह ! कुछ और भी : तुम शायद सोचो, मेरियाना, 'उसे शायद उस जेल से डर लगता था जहाँ उसे अवश्य ही जाना पड़ता, और इसलिए उसने उससे बचने की यह तरकीब सोची ।' नहीं; जेल जाना कोई बड़ी बात नहीं है; पर एक ऐसे लक्ष्य के लिए जेल जाना जिसमें विश्वास न हो···यह सचमुच नादानी है । और मै जेल जाने के भय से अपना अन्त नहीं कर रहा हूँ । नमस्कार, मेरियाना ! ओ मेरी पवित्र, निर्दोष मेरियाना, अन्तिम नमस्कार !"

मेरियाना और सालोमिन ने इस पत्र को बारी-बारी से पढ़ा। उसके बाद मेरियाना ने दोनों पत्र और अपना चित्र जेब में रख लिए और निश्चल खड़ी रह गई ।

तब सालोमिन ने उससे कहा :

"सब कुछ तैयार है, मेरियाना, चलो हम लोग चलें । हमें उसकी इच्छाएँ पूरी करनी चाहिएँ ।"

मेरियाना ने नेज़्दानौफ़ की ओर बढ़कर उसकी शीतल भौंह को अपने होठों से छुआ, और सालोमिन की ओर मुड़कर बोली, "चलो, चलें ।"

सालोमिन ने उसका हाथ पकड़ लिया और वे दोनों एक साथ कमरे के बाहर निकल गये ।

कुछ घण्टों बाद जब पुलिस ने कारखाने पर छापा मारा, तो उन्हें

नेज़्दानौफ़ मिला ज़रूर—पर लाश के रूप में। तात्याना ने शरीर को सजाकर रख दिया था; एक सफेद तकिया उसके सिर के नीचे लगा दिया था और उसके हाथों से क्रास बना दिया था, और एक फूलदान में कुछ फूल भी उसके पास एक छोटी-सी मेज पर रख दिये थे। पवेल को सब जरूरी हिदायतें मिल चुकी थीं, उसने पुलिस वालों का इतनी पक्की चापलूसी और एक प्रकार खिल्ली उड़ाने के-से भाव के साथ स्वागत किया कि उनकी यही समझ में नहीं आया कि वे उसे धन्यवाद दें या उसे भी गिरफ्तार कर लें। उसने उन परिस्थितियों का विस्तार से वर्णन सुनाया जिनमें आत्महत्या हुई थी और उन्हें बढ़िया पनीर और शराब का छक कर आस्वादन कराया। पर इस विषय में उसने अपनी पूरी अज्ञानता प्रगट की कि वैसिली फेदोतिच और जो महिला यहाँ ठहरी हुई थीं वे इस समय कहाँ चले गये हैं। वह बार-बार यही कहता रहा कि काम के कारण वैसिली फेदोतिच कभी देर तक बाहर नहीं रहते। वह आज ही लौट आयेंगे, नहीं तो कल तो ज़रूर ही, और तब वह इस बात की सूचना देने में एक मिनिट की भी देर न करेगा। वह इस विषय में पक्का आदमी है, एक दम भरोसे का।

इस प्रकार योग्य पुलिस अफ़सर बिना कुछ लिए लौट गये, और शव को और शवाधिकारी को भेजने का वचन देकर एक सिपाही के सुपुर्द कर गये।

अड़तीस

इन सब घटनाओं के दो दिन बाद 'आसानी से बात मान लेने वाले' पुरोहित जोसिम के अहाते में एक छोटी-सी गाड़ी आकर रुकी जिसमें एक पुरुष और स्त्री बैठे हुए थे, जिनसे पाठक भली भाँति परिचित हैं। आने के एक दिन बाद ही उनका बाकायदा विवाह हो गया। फिर शीघ्र ही वे लोग वहाँ से ग़ायब भी हो गये और सुयोग्य जोसिम को कभी अपने काम के लिए पछतावा नहीं हुआ। कारखाने में सालोमिन मालिक के नाम एक पत्र छोड़ गया था जो पवेल ने उसे दे दिया; उसमें व्यापार की हालत का (जो बड़े मुनाफ़े में चल रही थी), पूरा-पूरा और विस्तृत वर्णन मौजूद था और तीन महीने की छुट्टी माँगी गई थी। यह पत्र नेज़्दानोफ़ की मृत्यु के दो दिन पहले लिखा गया जिससे पता चलता है कि सालोमिन ने उस समय ही नेज़्दानोफ़ और मेरियाना के साथ ही चले जाने और कुछ दिनों छिपे रहने का निश्चय कर लिया था। आत्महत्या सम्बन्धी जाँच से कुछ पता न चल सका। लाश को दफ़ना दिया गया; और सिप्यागिन ने भी अपनी भानजी की सारी खोज-बीन बन्द कर दी।

नौ महीने बाद मार्केलौफ़ का मुकदमा हुआ। मुकदमे में भी उसने वैसा ही व्यवहार किया जैसा गवर्नर के यहाँ किया था, आत्मसंयम के साथ, सम्मान के साथ और कुछ थकान के भाव से। उसका स्वाभाविक पैनापन कुछ मुलायम पड़ गया था, पर कायरता के कारण नहीं; एक अन्य उच्चतर भावना उसके मूल में थी। उसने अपना कोई बचाव नही किया, कोई पश्चात्ताप प्रकट न किया, किसी को दोष न दिया, कोई नाम नहीं लिए। उसकी निस्तेज आँखों और सूखे हुए चेहरे पर केवल एक ही भाव बना रहा—अपने भाग्य की स्वीकृति और दृढ़ता; उसके हलके पर सीधे और सच्चे उत्तरों ने उसके न्यायाधीशों तक के हृदय में एक प्रकार का सहानुभूति का-सा भाव उत्पन्न कर दिया। जिन किसानों ने उसे पकड़ा था और उसके विरुद्ध गवाही दी—उन्होंने भी इस चीज़ को महसूस किया और उसको 'सीधा' और अच्छे दिल वाला आदमी बताया। पर उसका अपराध तो एकदम ज़ाहिर ही था; वह दण्ड से तो बच ही न सकता था और लगता था कि वह स्वयं अपने को इस दण्ड के योग्य मानता है। उसके थोड़े से सहयोगियों में से मशूरिना तो दिखाई ही नहीं पड़ी; आस्त्रोदूमौफ़ को एक दूकानदार ने, जिसे वह विद्रोह के लिए उकसा रहा था, कुछ 'कठिन-सा' आघात करके, मार डाला; गोलुश्किन को उसके 'सच्चे पश्चात्ताप' को ध्यान में रखते हुए—वह भय और उत्तेजना से लगभग विक्षिप्त-सा हो गया था—हलका-सा दण्ड मिला; किस्ल्याकौफ़ को महीने भर तक जेल में रखकर छोड़ दिया गया और उसके एक प्रान्त से दूसरे में भटकते रहने तक में कोई बाधा नहीं डाली गई; नेज़्दानौफ़ को मृत्यु ने आज़ाद कर दिया; सालोमिन का सबूत के अभाव में कुछ हो तो न सका पर उस पर शक बना रहा। उसने जाँच से बचने की कोशिश नहीं की, और जब उसकी तलाश हुई तो स्वयं ही प्रकट हो गया। मेरियाना का तो इस सिलसिले में कभी कोई जिक्र ही नहीं आया और पाकलिन सब कठिनाइयों से बच गया—वास्तव में उसकी ओर किसी का ध्यान ही नहीं गया।

डेढ़ बरस बीत गया, सन् १८७० के जाड़े आ गये। पाटर्सबर्ग में सिप्यागिन अब राज्यपरिषद् का सदस्य और राज्यभवन का मुख्य प्रबन्धक था और उसकी स्थिति और भी ऊँची हो रही थी। उसकी पत्नी कलाओं की संरक्षिका मानी जाती थी, वह संगीत की दावतें देती और शोरबे की भोजनशालाएँ स्थापित करती थी। मि० कैलोम्येत्सेफ़ भी अपने विभाग के उदीयमान सचिव माने जाते थे। उसी पीटर्सबर्ग में वैसिली औस्त्रौफ़ की एक सड़क पर एक छोटा-सा आदमी फटा-सा बिल्ली की खाल के कालर वाला ओवरकोट पहने लंगड़ाता हुआ चला जा रहा था। वह पाकलिन था। पिछले दिनों वह बहुत अधिक बदल गया था, उसकी बालोंदार टोपी के नीचे लटकती बालों की लटों में अब कुछ रुपहले धागे भी दिखाई पड़ने लगे थे। उसी समय उसकी ओर सामने से सड़क पर एक लम्बे कद और भारी बदन की महिला भी मोटे कपड़े के लबादे में पूरी तरह लिपटी हुई चली आ रही थी। पाकलिन ने पहले तो उसकी ओर ऐसे ही देखा और आगे बढ़ गया······फिर एकाएक खड़ा हो गया, मिनिट भर सोचता रहा और फिर हाथ ऊपर उछालकर जल्दी से मुड़ा और उसके समीप जा पहुँचा और उसकी टोपी के नीचे उसके चेहरे की ओर देखने लगा।

"मशूरिना ?" उसने धीमी आवाज़ में कहा।

महिला ने बड़े रौब से उसको सिर से पैर तक देखा और एक शब्द भी बोले बिना आगे चलती गई।

"अरे मशूरिना, मैं पहचान गया हूँ तुम्हें," पाकलिन उसके पीछे लँगड़ाता और कहता हुआ चला, "पर कोई डरने की बात नहीं है। मैं तुम्हारे साथ विश्वासघात नहीं करूँगा। मैं तुमसे मिलकर बहुत ही प्रसन्न हूँ ! मैं पाकलिन हूँ, सीला पाकलिन। तुम जानती हो, नेज़दानौफ़ का दोस्त······आओ मेरे साथ चलो; मै दो-चार कदम पर ही रहता हूँ। कृपा करके अवश्य चलो।"

"मैं काउंटेस रोका दि सात्रो फियूम हूँ," महिला ने नीची आवाज़

में पर अद्भुत रूप शुद्ध रूसी उच्चारण के साथ उत्तर दिया।

"चलो, बेकार बात मत करो !···क्या क़हने हैं काउंटेस के !··· आओ मेरे साथ चलो। कुछ बात करेंगे······"

"पर तुम कहाँ रहते हो ?" इटली की काउन्टेस ने एकाएक रूसी में पूछा। "मेरे पास समय नहीं है।"

"मैं यहीं, इसी सड़क पर रहता हूँ—वह रहा मेरा मकान, वह भूरा-सा, तीन मंजिलों वाला। बड़ी दया है तुम्हारी कि बेकार रहस्य-मयी ही बनी रहने की ज़िद और नहीं की ! आओ मुझे अपना हाथ दो, चलो। क्या तुम्हें आये बहुत दिन हो गये ? और तुम काउन्टेस किस प्रकार से हो ? क्या तुमने किसी इटली के काउंट से शादी कर ली है ?"

मशूरिना ने किसी इटली के काउंट से विवाह नहीं किया था। उसका पासपोर्ट असल में इस नाम की किसी काउंटेस के नाम में बन-वाया गया था, जो कुछ ही दिन पहले मरी थी। इस पासपोर्ट को लेकर वह बड़े रौब के साथ रूस लौट आई थी, यद्यपि वह एक अक्षर भी इटैलियन का नहीं जानती थी और उसका चेहरा बहुत ही रूसी था।

पाकलिन उसे साधारण से मकान में ले गया। उसकी कुबड़ी बहन भी छोटे से रसोईघर की छोटी-सी ड्योढ़ी से अलग करने वाले परदे के पीछे से मेहमान से मिलने निकल आई।

"ये हैं स्नापोच्का," पाकलिन ने कहा, "मेरी एक बड़ी भारी मित्र; कुछ चाय बनाओ जल्दी-से-जल्दी !"

पाकलिन ने अगर नेज़दानौफ़ का नाम न लिया होता तो वह यहाँ न आती। उसने अपनी टोपी उतारी और अपने अभी भी छँटे हुए बालों के ऊपर अपना पुरुषों जैसा हाथ फेरकर, और झुककर अभिवादन करके चुपचाप बैठ गई। वह बिलकुल भी बदली नहीं थी; वह बल्कि वही पोशाक भी पहने हुए थी जो दो बरस पहले वह पहनती थी। पर उसकी आँखों में एक प्रकार अटल-सी पीड़ा की छाप थी, जिसने उसके

चेहरे की स्वाभाविक कठोरता में दिल पर असर डालने वाली कोई चीज पैदा कर दी थी।

स्नान्दूलिया चाय बनाने चली गई और पाकलिन मशूरिना के सामने बैठ गया; उसने हलके से उसके घुटने को थपथपाया और अपना सिर लटका लिया। पर जब उसने बोलने की कोशिश की तो उसे अपने गले को साफ करना पड़ा, उसकी आवाज़ भर्रा गई और उसकी आँखों मे आँसू झलक आये। मशूरिना निश्चल और सीधी बैठी थी; उसने कुरसी में पीछे सहारा तक न लिया था और वह उदासी से दूसरी तरफ ताक रही थी। "हाँ, हाँ," पाकलिन ने शुरू किया "वे भी कोई दिन थे! तुम्हे देखकर याद आती है······कितनी चीज़ो की, कितने लोगो की, जीवित और मरे हुए; मेरे तोते भी मर गये······पर शायद तुम उन्हे नही जानती; और दोनो एक ही दिन, जैसा मैंने कह ही रखा था। नेज्दानौफ······बेचारा नेज्दानौफ।······ तुम अवश्य ही जानती होगी······?"

"हाँ, मै जानती हूँ," मशूरिना ने दूसरी तरफ ताकते हुए ही कहा।

"और तुम्हे आस्त्रोदूमौफ़ के बारे में भी मालूम है न?" मशूरिना ने केवल सिर हिलाया। वह चाहती थी कि पाकलिन नेज़्दानौफ़ के बारे में ही बातें करता रहे, पर वह यह कहने लायक साहस न जुटा सकी। पर वह बिना कहे ही यह बात समझ गया।

"मैंने सुना था कि जो पत्र उसने छोडा उसमें तुम्हारा भी जिक्र किया था—क्या यह सच है?"

मशूरिना तुरन्त उत्तर न दे सकी।

"हाँ, यह सच है।" उसने आखिरकार किसी तरह कहा।

"बड़ा शानदार आदमी था वह। बस वह अपने रास्ते से भटक गया था। वह क्रान्तिकारी तो बस मेरे जैसा ही था। जानती हो वह क्या था? यथार्थवाद का आदर्शवादी। मेरी बात समझती तो हो?"

मशूरिना ने जल्दी से एक नज़र उस पर डाली। वह उसकी बात

नहीं समझी थी, और वास्तव में वह उसकी बात समझने की तकलीफ करने की इच्छुक भी नहीं थी। यह उसे अजीब और अनुपयुक्त लगा कि वह अपनी तुलना नेज्दानौफ़ से कर रहा था; पर उसने सोचा, "मारने दो इसे शेखी।" हालाँकि वह बिल्कुल भी शेखी नहीं मार रहा था बल्कि अपने ख्याल से तो खुद को कुछ नीचे ही गिरा रहा था।

"सीलिन नाम के एक आदमी ने यहाँ मुझे ढूँढ़ निकाला," पाकलिन ने आगे कहा। "नेज्दानौफ़ ने मृत्यु से पहले उसे भी एक पत्र लिखा था। और यह सीलिन पूछ रहा था कि उसके और कागजात कहीं मिल सकते हैं या नहीं। पर अल्योशा की चीजें तो मुहर लगा कर बंद कर दी गई थीं। इसके अतिरिक्त उनमें कागज कुछ नहीं थे। उसने सब कुछ जला दिया था; अपनी कविताएँ तक। तुम शायद नहीं जानती हो कि वह कविता भी लिखता था? मुझे उनके लिए बड़ा दुख है; मुझे यकीन है कि उनमें से कुछ तो बहुत ही अच्छी रही होंगी। वह सब उसके साथ ही गायब हो गया है, एक सामान्य चक्र में पड़कर सब मिट गया है, सदा के लिये मर गया है! उसके मित्रों की स्मृतियों के अलावा और कुछ बाकी नहीं है, और वह भी तब तक जब तक वे लोग भी नहीं ग़ुज़र जाते।"

पाकलिन थमा।

"सिप्यागिन," उसने फिर शुरू किया, "तुम्हें उस रोबीले, घमण्डी, घृणित अमीर आदमी की याद है? वह अब शक्ति और कीर्ति के शिखर पर पहुँच गये हैं।"

मशूरिना को सिप्यागिन की तनिक भी 'याद' न थी; पर पाकलिन को उन पति-पत्नी दोनों से बड़ी घृणा थी, विशेषकर सिप्यागिन से तो उसे इतनी नफ़रत थी कि वह उनकी 'कसकर खबर लेने' का लोभ किसी तरह नहीं संवरण कर सकता था। "वे कहते हैं कि हमारे घर में कैसा उच्च वातावरण रहता है। वे सदा अपने सदाचार के बारे में ही बात करते रहते हैं। पर मैंने देखा कि जहाँ भी सदाचार की बात होती हो, वह बीमारों के कमरे में बहुत सारी सुगन्धि के समान ही

होती है । जरूर ही वहाँ कोई-न-कोई गंदगी छिपाई हुई रहती है । यह हमेशा ही सन्देहजनक चिह्न है । बेचारा अलैक्सी ! वे ही थे उसको बर्बादी की जड़, वह सिप्यागिन और उसकी बीवी ।"

"सालोमिन का क्या हाल है ?" मशूरिना ने पूछा । अचानक ही उसके बारे में इस आदमी से कुछ भी सुनने की उसकी इच्छा न बची थी ।

"सालोमिन !" पाकलिन ने चीखकर कहा । "वह शानदार आदमी है । वह बहुत ठीक है । उसने अपना पुराना कारखाना छोड़ दिया और अपने साथ ही वहाँ के सब अच्छे-अच्छे मजदूरों को भी ले गया । उनमे एक वहाँ था·······जो सुनते हैं बहुत ही गरम तबियत का था । पवेल था उसका नाम······उसे भी सालोमिन अपने साथ ही ले गया । अब सुना है कि कही पर्म की तरफ उसका अपना छोटा-सा कारखाना है, सहकारिता के आधार पर । वह ऐसा आदमी है कि जिस चीज के पीछे लगेगा उससे चिपका ही रहेगा । वह किसी भी चीज को पूरा करके ही छोड़ेगा । तेज आदमी है, और हाँ, मजबूत भी है । वह है शानदार अव्बल दर्जे का आदमी ! और सबसे बडी बात यह है कि वह सारी सामाजिक बुराइयों को एक ही मिनट में दूर करने के चक्कर में नहीं रहता । क्योंकि तुम जानती हो, हम रूसी लोग अजीब तरह के हैं, हम सब कुछ एक साथ चाहते हैं; चाहते है कि कुछ ऐसा हो जाय, एक दिन कोई ऐसा आ जाय जो हमें तुरन्त चंगा कर दे, हमारे सब घावो को अच्छा कर दे, दुखते हुये दाँत की भाँति हमारी सब बीमारियों को निकाल फेंके । कौन और क्या यह रामबाण होगी—क्यों डार्विनवाद, गाँव पंचायत, अर्हिप पेर्पेन्त्येफ़, महायुद्ध, जो भी तुम चाहो ? बस हमारे दाँत कोई दूसरा आकर निकाल दे । निरी सुस्ती, आलस्य और गंभीर विचारो की कमी है । पर सालोमिन ऐसा नहीं है—नहीं वह नीम हकीम नही है, अब्बल दर्जे का आदमी है ।"

मशूरिना ने अपना हाथ हिलाया मानो कह रही हो, "तो उसको

छोड़ो।"

"अच्छा, और वह लड़की", उसने पूछा, "मैं उसका नाम भूल गई हूँ—जो उसके, नेज्दानौफ़ के साथ भागी थी ?"

"मेरियाना ? ओह वह अब उसी सालोमिन की पत्नी है। उसका विवाह हुये अब तो एक साल से ऊपर हो गया। पहले तो केवल ऊपर से ही था, पर अब सुना है कि सचमुच उसकी पत्नी हो गई है। हाँ, हाँ।"

मशूरिना ने फिर अपना हाथ हिलाया। एक बार उसे मेरियाना से नेज्दानौफ़ के कारण ईर्ष्या हुई थी; अब वह उससे अप्रसन्न थी कि उसने उसकी स्मृति के साथ विश्वासघात किया। "कुछ बाल-बच्चा भी हो गया होगा अब तक।" उसने हिराकत के साथ कहा।

"बहुत सम्भव है, मुझे पता नहीं। पर तुम चल कहाँ दीं।" पाकलिन ने उसे टोपी उठाते देख कर कहा। "थोड़ा सा ठहर जाओ, स्नापोच्का अभी चाय लाती होगी।" वह विशेष रूप से मशूरिना को ही रोक रखने के लिए इतना उत्सुक न था, जितना यह कि जो कुछ उसके भीतर इकट्ठा हो गया था और उमड़ रहा था उसको कह डाले। वह इस अवसर को नहीं खोना चाहता था। पीटर्सबर्ग लौटने के बाद से पाकलिन बहुत कम लोगों से, ख़ासकर नयी पीढी के तो बहुत ही कम व्यक्तियों से, मिलता था। नेज्दानौफ़ कांड ने उसे भयभीत कर दिया था; वह बहुत सावधान हो गया था और सभा-समाज से बचता रहता था; उधर नौजवान लोग भी उसे बड़ी संदिग्ध दृष्टि से देखते थे। एक नौजवान ने तो उसके मुँह पर पुलिस का भेदिया कह दिया था। पुरानी पीढ़ी के लोगों से मिलने की उसे बहुत इच्छा नहीं होती थी। इस तरह से बहुत बार उसे हफ्तों बोलने का मौका न मिल पाता था। अपनी बहन के सामने वह खुलकर बोल न पाता था—यह नहीं कि वह सोचता हो कि वह उसकी बात नहीं समझ सकती, ओह, नही ! उसकी बुद्धि की प्रखरता के बारे में उसकी बड़ी ऊँची धारणा थी······पर

उसके साथ उसे एकदम गम्भीरता और सचाई के साथ बातचीत करनी पड़ती थी। जैसे ही उसने लोगों के कथनानुसार 'तुरप चाल चलना शुरू किया' कि वह उसकी ओर एक अजीब अर्थभरी और करुणापूर्ण दृष्टि से ताकने लगती थी; और उसे शर्म महसूस होने लगती थी। और आदमी थोड़ी-बहुत 'तुरप चाल' के बिना, कभी-कभी हलकी-हलकी सी ही सही, कैसे रह सकता है? इसलिए उसके लिए पीटर्सबर्ग की ज़िन्दगी बड़ी फीकी थकाने वाली सी हो चली थी, और वह कहीं और, शायद मास्को चले जाने की बात सोचा करता था। बन्द झील में पानी की भाँति तरह-तरह के विचार, कल्पनाएँ, उड़ानें, सूझें, चुटकुले, सुन्दर वाक्य उसके भीतर भरे हुए थे……बांध का दरवाज़ा उठाने की नौबत ही न आती थी, पानी अब रुककर सड़ने लगा था। ऐसे ही अवसर पर मशूरिना आ गई……इसलिए उसने बाँध का दरवाज़ा खोल दिया और बात करता गया, बोलता गया।…वह पीटर्सबर्ग के बारे में, वहाँ की जिन्दगी के बारे में, समूचे रूस के बारे में बोलता रहा। कोई भी और कुछ चीज़ भी छूटी नहीं। मशूरिना की इन सबमें बहुत ही कम दिलचस्पी थी, पर उसने न तो कहीं उसे टोका न कोई विरोध ही किया……यही वह चाहता भी था।

"हाँ सचमुच," उसने कहा, "बड़े ही बढ़िया दिन आ गये हैं, मैं तुमसे सच कहता हूँ, समाज में अवरोध पूरा है, हर आदमी पूरी तरह ऊबा हुआ है। साहित्य में खालीपन का अटल साम्राज्य है। आलोचना में……अगर किसी प्रगतिशील तरुण समीक्षक को यह कहना हो कि "अंडे देना मुर्गी की विशेषता है," तो इस महासत्य का उद्घाटन करने में वह बीस पन्ने लेता है, और तब भी बात साफ़ नहीं होती। ये लोग, मैं तुमसे सच कहता हूँ, परों के बिस्तर की तरह मुलायम, और ठण्डे गोश्त की तरह चिकने हैं, और मुँह से झाग निकालते-निकालते साधारण बातें बकते रहते हैं। विज्ञान में……हा! हा! हा! सचमुच हमारा भी एक प्रसिद्ध 'कांट' मौजूद है, पर वह हमारे इन्जीनियरों के कालरों

पर टँके फीते के सिवाय और कुछ नही है। कला मे भी वही हाल है अगर आज तुम संगीत सुनने जाओ तो तुम्हें अपने राष्ट्रीय गायक ऐग्रेमेन्त्स्की का संगीत सुनने को मिल जायगा······वह आजकल बड़े जोरों पर चालू है···और अगर एक भुसभरी मछली को, मै तुमसे सच कहता हूँ कि किसी भुसभरी मछली को, यदि आवाज़ प्राप्त हो जाय, तो वह भी ठीक इन श्रीमान की भाँति गा देगी। और स्कोरोपीहीन भी—अपने समय-सम्मत अरिस्टारकस को तो तुम जानती हो—वह भी उसकी तारीफ़ करता है। उसका कहना है कि यह पश्चिमी कला से सर्वथा भिन्न वस्तु है। वह हमारे निकम्मे चित्रकारो की भी प्रशंसा करता है। उसका कहना है किसी ज़माने में वह योरप के, इटली वालों के पीछे दीवाना था, पर उसने रॉसिनी को सुना है, "फू, फू ?" उसने राफेल के चित्र देखे हैं,—"फू, फू ?" और हमारे नौजवानों के लिए यह 'फू' काफी है, वे स्कोरोपीहीन के पीछे-पीछे 'फू' चिल्लाते फिरते हैं और मगन हैं। और उधर जनता की गरीबी भयानक है, लोग करों के बोझ से कुचले जा रहे हैं, और सुधार के नाम पर बस इतना हुआ कि सब किसानों ने टोपी पहनना शुरू कर दिया है और उनकी बीवियों ने टोपियाँ छोड़ दी हैं···और अकाल ! शराबखोरी ! सूदखोरी !"

पर यहाँ आते-आते मशूरिना जम्हाई लेने लगी और पाकलिन ने देखा कि अब विषय बदलना चाहिये।

"तुमने अभी तक यह तो मुझे बताया ही नहीं," उसने मशूरिना से कहा, "कि तुम पिछले दो बरस रही कहाँ, और तुम यहाँ कितने दिन से हो, और तुम आजकल क्या कर रही हो, और तुम इटैलियन कैसे बन गईं, और······"

"ये सब बातें जानने की तुम्हें कोई ज़रूरत नहीं है," मशूरिना ने बात काटते हुए कहा; "क्या फ़ायदा है ? अब वह सब तुम्हारे क्षेत्र में नहीं रहा।"

पाकलिन को थोड़ा-सा दुख हुआ और अपनी अचकचाहट को

छिपाने के लिए वह थोड़ा-सा जबदस्ता हसा ।

"खैर जैसा तुम चाहो," उसने कहा । "मै जानता हूँ कि मौजूदा पीढ़ी मुझे पुराना समझती है; और निस्संदेह मै अपने-आपको उन लोगों में......नहीं गिन सकता......जो......" उसने अपना वाक्य पूरा नहीं किया । "यह लो स्नापोच्का चाय ले आई । तुम एक प्याला पियो और मेरी बात सुनो......शायद मेरी बातों में तुम्हें कुछ दिलचस्पी की चीज़ भी मिल जाय ।"

मशूरिना ने एक प्याला चाय और एक टुकड़ा चीनी का ले लिया और चाय की चुस्की लेने तथा चीनी को कुतरने लगी ।

इस बार पाकलिन की हँसी सच्ची थी ।

"यह अच्छा ही है कि यहाँ कोई पुलिसवाला नहीं है, नहीं तो इटली की काउन्टेस......क्या नाम है !"

"रोका डि सान्तो फियूम" मशूरिना ने गर्म चाय को पीते हुए अविकल गंभीरता के साथ कहा ।

"रोका डि सान्तो फियूम !" पाकलिन ने दोहराया, "और वह अपनी चाय चीनी का टुकड़ा कुतर-कुतर कर पीती है ! यह बहुत ही अनमेल है ! पुलिस एक मिनट में चौकन्नी हो उठेगी ।"

"हाँ," मशूरिना ने कहा, "विदेश में एक वर्दी वाला मुझे बड़ा तंग करने लगा; वह सवाल पर सवाल पूछे ही चला जाये; आखिरकार मुझसे और सहन न हुआ । मेरा पीछा छोड़िये, भगवान के लिए छोड़िये पीछा !" मैंने कहा ।

"क्या यह तुमने इटैलियन भाषा मे कहा ?"

"नहीं, रूसी में ।

"और उसने क्या किया ?"

"उसने ? क्यों वह चलता बना, बिल्कुल ।"

"शाबास ! पाकलिन ने चीखकर कहा । "काउन्टेस की जय ! और एक प्याला लो ! हाँ, मैं तुमसे कहना यह चाहता था कि तुम

सालोमिन के बारे में बड़े ठंडे स्वर में बोल रही थीं। पर तुम जानती हो कि मैं किस बात का तुम्हें यकीन दिला सकता हूँ! उस तरह के लोग ही—वे ही सच्चे आदमी हैं। शुरू में वे समझ में नहीं आते, पर असली आदमी वे ही हैं; मेरी बात याद रखना, भविष्य उन्हीं लोगों के हाथ में है। वे लोग महापुरुष नहीं हैं; न 'श्रम वीर' ही हैं—जिनके बारे में किसी अजीब चिड़िया ने—किसी अमरीकी या अंग्रेज ने—हम गरीब अभागों के उद्धार के लिए एक किताब तक लिख मारी है। वे लोग जनता के आदमी हैं, मजबूत, अनगढ़ और कुछ नीरस। पर आज केवल उन्हीं की ज़रूरत है! जरा सालोमिन को ही देखो; उसका दिमाग धूप की तरह साफ़ है और वह मछली की तरह तन्दुरुस्त है ······क्या यह ताज्जुब की बात नहीं है? हमारे यहाँ रूस में तो अब तक यही होता आया है कि अगर आप भावना और आत्मा वाले जिन्दा-दिल आदमी हैं तो आप ज़रूर ही अपाहिज होंगे! पर सालोमिन का हृदय, मुझे विश्वास है, उन्हीं चीजों से दुखता है जिनसे हमारा दुखता है, जिन्हें हम घृणा करते हैं उन्हें वह घृणा करता है—पर उसकी नसें शांत रहती हैं, और उसका समूचा शरीर वैसा ही प्रतिक्रिया देता है जैसी देनी चाहिये······इसलिए वह शानदार आदमी है! हाँ, सच-मुच, और आदर्शवाला आदमी, और बेकार की बातें नहीं; शिक्षित—और जनता का भी; सीधा—पर थोड़ा चतुर भी······और क्या चाहिये?······

"और परवाह मत करो," पाकलिन कहता चला; वह अधिकाधिक जोश में आता जा रहा था और वह यह भी नहीं देख रहा था कि मशू-रिना का बहुत देर से उसकी बात पर ध्यान नहीं है और वह फिर एक बार दूर कहीं ताकने लगी है। "कोई परवाह नहीं कि हर तरह के लोग रूस में मौजूद हैं? स्लावभक्त और अफ़सर और जनरल, सादे और विभूषित, आनंदवादी और हर प्रकार के विचित्र-विचित्र जीव-जन्तु! मै एक हावरोन्या प्रिस्तेहौफ़ नामक एक महिला को जानता था जो

बिना किसी तुक-तान के राजभक्त हो गई और हर आदमी को विश्वास दिलाती फिरने लगी कि जब वह मरेगी तो उसका हृदय चीरने पर उसमें हेनरी पंचम का नाम अंकित मिलेगा······हावरोन्या प्रिस्तेहौफ़ के हृदय पर ! तो मशूरिना इन सब की कुछ परवाह मत करो, पर मैं तुम्हें बताता हूँ कि हमारा सच्चा रास्ता सालोमिन जैसों के साथ है, सीधे-सच्चे, गँवार पर समझदार सालोमिन जैसे लोगों के साथ ! ज़रा सोचो कि मैं यह बात तुमसे कब कह रहा हूँ, १८७० के जाड़ों में, जब जर्मनी फ्रांस को कुचलने की तैयारी कर रहा है, जब—"

"सिलुश्का," स्नान्दूलिया की हलकी महीन आवाज़ पीठ-पीछे सुनाई पड़ी, "मेरे ख्याल से अपनी इन भविष्य सम्बन्धी कल्पनाओं में तुम धर्म और उसके प्रभाव को बिल्कुल भूले जा रहे हो······और इसके सिवाय," उसने जल्दी से जोड़ा, "मादाम मशूरिना तुम्हारी बात नही सुन रही है······तुम उन्हें एक प्याला चाय और दो।"

पाकलिन एक़दम सम्हल गया।

"आह, हाँ हाँ, एक प्याला और न लोगी ?"

पर मशूरिना ने धीरे-धीरे अपनी उदास आँखे उसकी ओर घुमाईं और खोयी-खोयी-सी बोली, "मैं तुमसे पूछना चाहती थी, पाकलिन, क्या तुम्हारे पास नेज्दानोफ़ के कुछ पत्र या उसका कोई चित्र है क्या ?"

"मेरे पास एक फोटो है······हाँ, और मेरे खयाल से काफ़ी अच्छा है। मेज़ में हैं, मैं अभी ढूँढकर देता हूँ।"

वह दराज़ उलटने-पलटने लगा। पर स्नान्दूलिया मशूरिना के पास बढ़ आई और सहानुभूति-भरी दृष्टि से उसे देर तक एकटक देखकर उसका हाथ एक साथी की भाँति पकड़ लिया।

"यह रहा ! मिल गया !" पाकलिन ने चीखकर कहा और वह फोटोग्राफ मशूरिना को दे दिया। मशूरिना उसे अच्छी तरह देखे बिना ही और धन्यवाद का एक शब्द भी कहे बिना, एकदम लाल होते हुए, उसे फुर्ती से जेब में रख लिया और टोपी पहनकर दरवाजे की ओर

बढ़ने लगी।

"तुम जा रही हो?" पाकलिन ने पूछा। "कम-से-कम यह तो बता जाओ कि रहती कहाँ हो?"

"जहाँ जगह मिल जाय।"

"समझ गया, तुम मुझे बताना नहीं चाहतीं! अच्छा कम-से-कम एक बात तो बता दो। क्या तुम अब भी वैसिली निकोलाएविच के नेतृत्व में काम करती हो?"

"उससे तुम्हें क्या मतलब है?"

"या शायद किसी और—सिदोरसिदोरिच के नेतृत्व में?"

मशूरिना ने कोई उत्तर नहीं दिया।

"या कोई नामहीन व्यक्ति तुम्हारे काम का संचालन करता है?"

मशूरिना तब तक देहलीज़ के पार निकल चुकी थी।

"शायद वह कोई नामहीन ही है?" उसने दरवाजा ज़ोर से बन्द करते हुए कहा।

पाकलिन बहुत देर तक उस बन्द दरवाजे के आगे खड़ा रहा।

"नामहीन रूस!" उसने आखिरकार कहा।